शिवचरण पटेल

युग निर्माण की रूप रेखा और कार्य पद्धति

शिवचरण पटेल

युग-निर्माण-योजना, मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI SHIVCHARAN PATEL

SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ॐ

युग निर्माण की रूप रेखा

और कार्य पद्धति

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

लेखक
श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक
युग निर्माण योजना, मथुरा

द्वितीयबार] १९७३ [मूल्य २)
१-५०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय–सूची

विषय	पृष्ठ
(१) हमारी असंख्य समस्याओं का एक मात्र हल विचार क्रान्ति	३
(२) युग निर्माण योजना की मूल मान्यतायें	८
(३) व्यक्ति निर्माण के लिये यह करना होगा	१२
(४) प्रगतिशील समाज का आधार और स्वरूप	१५
(५) प्रतिभायें नव निर्माण के लिये आगे आयें	१९
(६) धर्म तंत्र की शक्ति नव निर्माण में नियोजित की जाय	२३
(७) विश्व राष्ट्र, विश्व धर्म, विश्व भाषा की एकात्म भूमिका	२६
(८) मनुष्य और पशु कुटुम्बी बन कर रहें	३०
(९) साम्प्रदायिक अनेकता से धार्मिक एकता की ओर	३३
(१०) नारी का वर्चस्व—विश्व का उत्कर्ष	३६
(११) जन संख्या की वृद्धि एक भयावह अभिशाप	४०
(१२) हमारी अर्थ मान्यता उदारता के साथ जुड़ जाय	४४
(१३) अर्थ व्यवस्था इस तरह सँभलेगी	४८
(१४) प्रजातन्त्र की सफलता के लिये हम यह करें	५२
(१५) ज्ञान यज्ञ इस युग का महानतम अभियान	५९
(१६) ज्ञान यज्ञ और उसकी महान सम्भावनायें	६२
(१७) नव निर्माण के लिये समग्र शिक्षा नितान्त आवश्यक	६६
(१८) प्रखर प्रेरणा भरे साहित्य का सृजन और प्रसार आवश्यक	६९
(१९) कला की शक्ति लोक मंगल में लग जाये	७३
(२०) लोक-रंजन और लोक मंगल का अनुपम संगम	७८
(२१) इन उद्योगों में पूँजी लग सके तो सृजन की सम्भावना बढ़ेगी	८२
(२२) सक्रिय सदस्यों की सुगंठित सेना	८६
(२३) लोक निर्माताओं की सेवा सेना-और उसका निर्वाह	९०
(२४) भावी महाभारत जो नव-निर्माण के लिये लड़ा जायेगा	९४

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राक्कथन

शिवचरण पटेल

वर्तमान विकृतियों, कुत्साओं, और कुण्ठाओं का दम घोटने वाला सिलसिला देर तक चलने वाला नहीं है। युग परिवर्तन एक सुनिश्चित संभावना है। आज मनुष्य में जो स्वार्थपरता, संकीर्णता, विलासिता और अहम्मन्यता की अति हो चली है उसे देर तक चलने दिया जाय तो आदमी आदमी को खाने लगेगा। समाज में जिन दुष्प्रवृत्तियों और दुष्ट परम्पराओं ने जड़ जमाली है उनका सिलसिला आगे भी चला तो इस विश्व को अणु बमों की आग में जल जल कर आत्म हत्या करने के लिए विवश होना पड़ेगा। ईश्वर ने अपनी सर्वोत्तम कला की प्रतीक इस धरती को इसलिये नहीं बनाया है कि उसका ऐसा दुखद अन्त हो और अपने राजकुमार ज्येष्ठ पुत्र मनुष्य को अगणित विभूतियों से इसलिए नहीं संजोया है कि उसे सामूहिक आत्म हत्या करने की चरम मूर्खता का परिचय देना पड़े। इन दिनों स्थिति बिगड़ जरूर गई है पर बिगड़ी स्थिति को सुधारने के लिए समय समय पर अवतरित होती रहने वाली अवतरण सत्ता का क्रम भी टूटा नहीं है। इतिहास में अनेक बार लगभग ऐसी ही विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई हैं जैसी कि आज हैं। उनके हल भी निकले हैं। भगवान ने अपनी विशेष प्रतिनिधि शक्ति देवदूतों के रूप में भेजी हैं और उनने समय के अनुरूप समाधान प्रस्तुत करके इस विश्व की विषम परिस्थितियों से उबारा है। उस परम्परा की आगे भी पुनरावृत्ति होकर रहेगी। अगले दिन ऐसी ही संभावना लेकर युग परिवर्तन का पुण्यप्रकाश अवतरित होने जा रहा है। उसे हम ईश्वर की सन्तुलित व्यवस्था या अवतरण प्रक्रिया कहें तो कुछ भी अत्युक्ति न होगी।

वर्तमान परिस्थितियों में परिवर्तन किस क्रम से होगा और उसका स्वरूप क्या बनेगा, इसका पूर्वाभास इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। कहना न होगा कि आज की विचार पद्धति ही समस्त उलझनों और विपत्तियों का एक मात्र कारण है। प्रस्तुत विचार शैली, मान्यताऐं, अभिरुचियाँ, आकांक्षाऐं, एवं आस्थाऐं ऐसी हैं जिनने मनुष्य को उसके उच्च आसन से गिरा कर पतन के गहरे गर्त में धकेल दिया है और नारकीय अन्तर्द्वन्द्वों की आग में जलने के लिये विवश कर दिया है। इस स्थिति का आमूल चूल परिवर्तन किया जाना है। आज जिस ढर्रे से सोचने के हम आदी अभ्यस्त हो गये हैं उसे पूर्णतः बदलना होगा और एक ऐसी विचार शैली अपनाने के लिए आदमी को विवश करना पड़ेगा जो न्याय, विवेक और औचित्य पर आधारित हो। समय के साथ परम्परायें बदलनी पड़ती हैं। किसी समय उस समय की परिस्थितियों में कोई विचार एवं आचार उपयुक्त समझे गये हों—आवश्यक नहीं कि वे आज भी उतने ही उपयोगी हों। आदर्श सनातन है। उत्कृष्टता अनादि है। पर व्यवस्था तो परिस्थिति के अनुरूप बदलनी ही चाहिए। आज का सोचने का ढंग इस तरह का बन गया है जिसके अतिरिक्त अन्याय और अनौचित्य की मात्रा इतनी अधिक बढ़ गई है कि उसमें भारी हेर फेर करने की आवश्यता अनिवार्य हो गई है। युग निर्माण योजना 'ज्ञान यज्ञ' अभियान के माध्यम से यही सब कर रही है। आशा की जानी चाहिए कि अगले कुछ ही वर्षों में मनुष्य अपने मन मस्तिष्क में भरे कूड़े कचड़े को बुहार फेंकदेगा और उसके स्थान पर औचित्य भरी मान्यता को सजाने में जुट पड़ेगा।

विचारों के परिवर्तन का प्रभाव आचार बदलने के रूप में सामने आना अवश्यम्भावी है। विचार यदि गहराई तक अन्तःकरण में प्रवेश पा सकें और उन्हें आस्थाओं के रूप में प्रतिष्ठापित किया जा सके तो उस आन्तरिक परिवर्तन का प्रभाव निश्चित रूप से आचरण पर पड़ेगा। जैसा सोचा जाता है वैसा किया भी जाता है। आदर्श वादी आस्थाओं को उत्कृष्ट आचरण में प्रस्तुत परिलक्षित होना ही चाहिए सो अगले दिनों जैसे जैसे निकृष्ट विचारणा का स्थान उत्कृष्ट विचार पद्धति ग्रहण करेगी वैसे वैसे ही मनुष्य के वैयक्तिक आचरण बदलेंगे और सामाजिक परम्पराओं में भारी हेर फेर होगा। इस प्रकार के परिवर्तन को किस तरह लाया जा सके और आज की उलझी समस्याओं को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अगले दिनों किस तरह हल किया जायगा ? इसकी मोटी रूप रेखा इस पुस्तक में प्रस्तुत की गई है। समस्त समस्याओं का उल्लेख और उसके समाधान तो आज प्रस्तुत नहीं किये जा सकते पर दिशा जरूर दी जा सकती है। सो दी भी गई है। परिवर्तन के दिनों अगणित नये प्रश्न और नये कारण उठ खड़े होते हैं और उन्हें ध्यान में रखते हुए तात्कालिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए कुछ ऐसा करना पड़ता है जो आरम्भ में सोचे हुए ढर्रे से भिन्न चला जाता है। कार्ल मार्क्स ने तथा उसके समकालीन दार्शनिकों ने जिस तरह के साम्यवाद की कल्पना की थी। व्यवहार ने उसमें बहुत हेर फेर करने की आवश्यकता अनुभव की है और विभिन्न दिशा में उसका प्रयोग विभिन्न सुधार परिवर्तनों के साथ किया जा सकता है। युग परिवर्तन की जो मोटी रूप रेखा इस पुस्तक में प्रस्तुत की गई है, हो सकता है उसमें समयानुसार हेर फेर करना आवश्यक हो जाय किन्तु मूल कल्पना, मान्यता और दिशा जो सोची गई है वह ऐसी है जिसे सिद्धान्तों और आदर्शों की दृष्टि से बदला न जा सकेगा। प्रस्तुत आदर्श वे ही हैं जो अनादि काल से मानवीय सुख शांति का आधार रहे हैं जिनका पग-पग पर प्रयोग परीक्षण होता रहा है—जो हर कसौटी पर खरे सिद्ध हुए हैं और अनन्त काल तक उनकी उत्कृष्टता उपयोगिता अक्षुण्य सिद्ध होती रहेगी।

व्यक्ति के विचार और आचरण में अगले दिनों लगभग आमूलचूल परिवर्तन होने जा रहा है। वर्तमान ढर्रे में औचित्य की मात्रा नगण्य है। उसमें अवांछनीयता ही भरी है, इसे बदले बिना सुख शान्ति के दर्शन दुर्लभ ही रहेंगे। उसी प्रकार समाज का वर्तमान ढांचा जिन आधारों पर खड़ा हुआ है उन्हें भी इतना अधिक बदलना पड़ेगा जिसे आकाश पाताल की तरह भिन्न कहा जा सके। इन दिनों की रीति-रिवाजें, प्रथा-परम्पराऐं, कानून और गतिविधियां अगले दिनों नये सिरे से ही गढ़नी बदलनी पड़ेंगी तभी विश्व की स्थिरता और उज्ज्वल भविष्य की सम्भावना दृष्टिगोचर होगी।

यह सब कैसे, किसके द्वारा, किस तरह होगा इसकी एक रूप रेखा युग निर्माण योजना ने प्रस्तुत की है। प्रस्तुत कर्ता का दावा है कि अगले दिनों इसी पटरी पर प्रगति की रेल गाड़ी द्रुत गति से दौड़ेगी। दूसरे विकल्प सोचे भले जायें पर वे सफलता के लक्ष्य तक पहुंच न सकेंगे। समय बतायेगा कि इस पुस्तक में प्रस्तुत भविष्य की रूप रेखा उतनी सही, सार्थक और सफल होकर रही और उसने विश्व मानव के परित्राण उद्धार में कितना महत्वपूर्ण योगदान दिया। योजना के पीछे ईश्वरीय इच्छा या प्रेरणा की झांकी जो देखते हैं उन्हें भविष्य सही सोचने वाला ही प्रमाणित करेगा।

यह पुस्तक युग निर्माण विद्यालयों की रात्रि पाठशाला के रूप में चलने वाली शिक्षा पद्धति की पाठ्य पुस्तक है। शिक्षक वर्ग के लिए इसे विशेष रूप से मान्यता दी गई है ताकि वे प्राथमिक पाठ्य क्रम के छात्रों को इस विचारधारा से प्रेरित और प्रभावित कर सकें। मानवीय भविष्य में अभिरुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह समान रूप से उपयोगी और प्रकाश दायक सिद्ध होगी ऐसा हमें विश्वास है।

श्रीराम शर्मा आचार्य

शिवचरण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमारी असंख्य समस्याओं का एकमात्र हल—विचार क्रांन्ति

हमारे सोचने का ढङ्ग यदि सही रहा होता तो व्यक्ति और समाज के सामने उपस्थित अगणित समस्याओं और व्यथा वेदनाओं में से एक का भी अस्तित्व दृष्टिगोचर न होता और हम सब ईश्वर के राजपुत्रों की तरह हर्ष और उल्लास का—सुख और शांति का जीवन जी रहे होते। सुरदुर्लभ इस मानव जीवन को नारकीय जीवन की प्रताड़ना भुगतने के लिये विवश करने वाला एक ही अनात्म तत्व है—बुद्धि विपर्यय। हम सब मरघट के प्रेत-पिशाचों की तरह इसी विभ्रम की आग में बुरी तरह जलते,तड़पते जिन्दगी के दिन पूरे कर रहे हैं, यदि इस दुर्भाग्य से बच सकना सम्भव रहा होता तो आज मानव समाज का—समस्त संसार का स्वरूप ही कुछ और होता। तब इस धरती पर निछावर होने के लिये स्वर्ग नीचे उतरता और उसकी परिक्रमा अभ्यर्थना करता।

जबकि वन्य प्रदेशों में स्वच्छन्द निवास करने वाले अभावग्रस्त और कष्ट साध्य जीवन जीने पर भी पशु-पक्षियों में से एक भी बीमार नहीं पड़ता तो मनुष्यों के ऊपर ही क्यों विपत्ति टूटी, जो पूर्ण स्वस्थ कहा जाने वाला कोई नहीं दीखता। चल फिर लेने वाले को बीमार न कहें यह दूसरी बात है पर बारीकी से निरीक्षण-परीक्षण करने पर प्रतीत होगा कि न्यूनाधिक मात्रा में शत प्रतिशत लोग शारीरिक और मानसिक रोगों से ग्रस्त रुग्ण जीवन जी रहे हैं भले ही अभ्यास के कारण वह अखरता न हो।

ऐसा क्यों हुआ ? उत्तर एक ही है—मनुष्य ने अपनी आहार-विहार की आदतों को अवांछनीय अप्राकृतिक ढाँचे में ढाला और अस्वस्थता को निमन्त्रण देकर बुलाया कीमत देकर खरीदा। यदि कोई तीव्र चिन्तन प्रणाली हमें उपरोक्त तथ्य स्वीकार करा सके और आहार-विहार के संयम पर आरूढ़ होने के लिये विवश कर सके तो निस्सन्देह हम सब प्रकृति पुत्रों की तरह स्वच्छन्द, उल्लसित, सुदृढ़ और निरोग जीवन जीने लगेंगे। तब औषधियों की, अस्पतालों की, डाक्टरों की तनिक भी आवश्यकता न रहेगी किंतु रवैया यही रहा वर्तमान अभक्ष आहार ही किया जाता रहा और अस्त-व्यस्त दिनचर्या असंयम एवं कृत्रिमता में रस लेने का क्रम चलता रहा तो बीमारियाँ और भी बढ़ेंगी स्वास्थ्यसंकट और भी सघन होगा। अपनी सारी आमदनी चिकित्सा पर खर्च कर देने के उपरान्त भी कोई चैन की साँस न ले सकेगा उसे अस्वस्थता पटक-पटक कर मारेगी और अपने उलटे रवैयाका दंड पग-पग पर भुगतने के लिये विवश होना पड़ेगा। (हम प्रकृति के कानुन तोड़ने के लिए तो स्वतन्त्र हैं पर उसकी प्रतिक्रिया से—दण्ड व्यवस्था से बच सकना अपने बस की बात नहीं।)

यदि रोगों से छुटकारा पाना हो तो आज या आज से हजार वर्ष बाद मनुष्य को इसी मान्यता को अपनाना पड़ेगा कि प्राकृतिक आहार-विहार अपनानेके अतिरिक्त निरोगरहने एवं दीर्घजीवन का और कोई मार्ग नहीं जिस दिन हम प्रचलित असंयम को-सभ्यता समझने की मान्यता को बदल देंगे अपने सोचने का ढङ्ग सुधार लेंगे उसीदिन मानव जीवन पर लगा हुआ अस्वस्थता का ग्रहण उतर जायगा। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य सुधार के अन्य उपाय—भले ही देखने में कितने ही आकर्षक लगते हों—मात्र मन बहलाने वाली विडम्बना बनकर रहेंगे।

(वह महामानव जो लोगों को आहार-विहार का वर्तमान रवैया छोड़ने और नैसर्गिक जीवन जीने की प्रेरणा दे सके निस्सन्देह दूसरा धन्वन्तरि कहलावेगा। उसका विवेकअनुदान अमृत कलश छिड़क कर समस्त विश्व को मृत से जीवित बनाने का उपाय करेगा। अस्पताल बनने से किसी को सस्ती वाहवाही और अहङ्कार की तुष्टि मिल सकती है, पर रहेंगे सब कोल्हू के बैल के घेरे में ही। दवा लेकर दस-बीस दिन अच्छे रहने के बाद असंयमी जीवन उन्हें फिर बीमार पड़ने के लिये विवश करेगा। रोज दवा—रोज बीमारी का मनोरंजक खेल है तो अच्छा। मनोरंजन की दृष्टि से अस्पताल खोलना भी बुरा नहीं पर बारीकी से देखा जाय तो उसमें हित किसी का कुछ होने वाला नहीं। प्रकृति बीमार का "झटका" कर सकती थी। अस्पताल ने उसे "हलाल"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करने का ढंग बना दिया सिख लोग जानवरको एक ही बार में 'झटका' करके माँस निकालते हैं। जबकिमुसलमान लोग गले पर धीरे-धीरे छुरी चलाकर जिबह करते हैं। घुट-घुट-कर देर में मरने का रास्ता भर अस्पतालों और औषधियों से खुल सकता है। आरोग्य और दीर्घजीवन उसके बलबूते की बात नहीं वह तो संयमी और प्रकृति अनुकूल गति-विधियाँ अपनाने पर ही सम्भव है। यह तथ्य समझने सम-झाने की प्रक्रिया यदि किसी योजना के अन्तर्गत पूरी की जा सकती है तो समझना चाहिये कि संसार के समस्त अस्पतालों औषधि निर्माण शालाओं—मेडीकल कालेज—शोध संस्थान—डाक्टरों से मिलकर जितनी लोक-सेवा हो रही है उसकी अपेक्षा इस विचार परिवर्तन प्रक्रिया से लाख गुनी अधिक सार्थक सेवा हो सकती है।

गरीबी का कष्ट संसार में बहुत है। तीन चौथाई लोग अपने को अर्थ संकट में फंसा हुआ अनुभव करते हैं। इसका कारण राजनीतिक क्षेत्रके नेताओं की अदूरदर्शिता तो है ही साथ ही व्यक्ति की कठोर श्रम से बचने की--आराम तलबी की—ठाठ-बाठ बनाने की सामाजिक कुरीतियों से चिपके रहने की आदत भी इस सङ्कट के लिए कम जिम्मेदार नहीं है। यदि लोग पसीना बहाकर कड़ी मेहनत करने की आदत डाललें तो अपनी यह जमीन दस गुना अधिक उत्पा-दन दे सकती है। शिल्प, व्यवसाय, कारखाने सोना उगलने लग सकते हैं। जापान और इजराइल जैसे छोटे देशों के उदाहरण सामने हैं। वहाँ के नागरिकों ने—श्रम शीलता को अपनी आराध्या देवी बनाया और निरालस्य को देवता कमर कसकर परिश्रम से लिपट गये तो स्वर्ग के देवताओं ने सम्पत्तियाँ, विभूतियाँ और सफलतायें उन पर बरसाईं। अपने यहां घर में अच्छी खेती होते हुए भी लड़के तनिक सी पढ़ाई पढ़ लेने के बाद शहरों में क्लर्की ढूँढ़ने और नरक जैसी गलियों के गन्दे मकानों में सड़ने के लिए लालायित फिरते हैं। यह श्रम की अप्रतिष्ठा और आराम तलबी की आदत का मोटा नमूना है। जब तक यह मनोभूमि बनी रहेगी अपने देश का उत्पादन न बढ़ेगा। गांवों से शिक्षित लड़के पानी में डूब मरने के लिये तालाब की ओर दौड़ने वाले पागल सियारों की तरह—शहरों की ओर भागते रहेंगे। तब तक ८० फीसदी गाँवों में बसा हुआ भारत आर्थिक एवं सामाजिक जीवन में प्रगति करही नहीं सकता।

सामाजिक कुरीतियाँ हमारी हड्डियों को चबाती हैं और नस-नस पर चिपकी हुई जोंकों की तरह हमें दरिद्रता की यन्त्रणा सहते रहने के लिये विवश करती हैं। प्रचलित विवाह प्रथा को ही लीजिये। किसी भी परिवार में आये दिन खड़े रहने वाले विवाह इतना पैसा माँगते हैं कि उनकी पूर्ति साधारण कमाई से नहीं हो सकती। हर किसी को बेईमानी से धन कमाने की बात सोचनी पड़ती है। सोचनी ही नहीं करनी भी पड़ती है। अपने समाज में आधे से अधिक लोग बेईमानी से पैसा कमाने के आदी हैं यह उनकी विवशता भी है। इतना पैसा विवाह शादियों में होली फूँकने के लिये आखिर आये कहाँ से ? आये कैसे ? बेई-मानी ही एकमात्र रास्ता रह जाता है। यों अपना समाज दिन-दिन उसी पाप पंक में डूबता चला जाता है। जो पैसा घर परिवार की उन्नति में शिक्षा-व्यवसाय-स्वास्थ्य संवर्धन आदि में खर्च किया जा सकता था और परिवारों को रूस, अमेरिका, जापान आदि देशों के सुसम्पन्न स्तर पर लाया जा सकता था-वह यदि रूढ़ियों और कुरीतियों में इसी तरह बर्बाद होता रहे तो अभी अपने देश को अर्थ संकट में हजार वर्ष तक और सड़ना पड़ेगा।

उत्पादन के नये आधार ढूँढ़ना अर्थ शास्त्रियों के मस्तिष्कों की कलाबाजी और जिन्हें कुछ करना ही ठहरा उनकी जाँ फिसानी की तरकीबें देखने सुनने में बहुत अच्छी लगती हैं और साधारण मस्तिष्क इसी भ्रम में मोहित हो जाता है कि शायद अगले ही दिनों अपने यहाँ समृद्धि आने वाली है। उत्पादन, व्यवसाय एवं कला-कौशल की भारी योजनाएँ बनते और चलते देखते हुए स्वतन्त्रता प्राप्ति के २२ वर्ष ऐसी ही मृग तृष्णा में चले गये। अभी और हजार वर्ष तक ऐसे ही कमी पूरी होने वाली प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है। यदि लोगों को घोर परिश्रमी, मितव्ययी, सादगी प्रिय और रूढ़ियों को कुचल डालने के लिए प्रेरणा न दी गई और वर्तमान मनोवृत्तियाँ कायम रहीं तो देश से न तो बेईमानी जायगी और न गरीबी। बेईमानी का धन व्यसनों में नष्ट होगा कुरीतियाँ हमें दरिद्र बनायेंगी। आराम तलबी में उत्पादन गिरेगा फिर सम्पदा कोई आस-मान से थोड़े ही टूटने वाली है। कोल्हू के बैल की तरह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हम तथाकथित योजनाओं के चक्कर में घूमते तो मजे में रहेंगे पर बढ़ना एक इञ्च भी आगे न हो सकेगा।

यदि कोई ऐसा पथ-प्रदर्शक संसार में आये या ऐसा विचार प्रवाह फैले जो काम-चोरी-आराम-तलबी-बनावट-फिजूल खर्ची और कुरीतियों की बेवकूफी से लोगों को विरत कर सके तो अपना देश पाँच साल में फिर उसी स्थिति में पहुँच सकता है जिसकी चर्चा सुनकर कोलम्बस के मुँह में पानी भर आया था और इस 'सोने की चिड़िया' भारत को तलाश करने के लिए उसने लम्बी जहाजी यात्रा की थी।

अर्थ दरिद्रता हमारी मानसिक दरिद्रता की प्रतिक्रिया प्रतिच्छाया मात्र है। जब तक विचार पद्धति न सुधरेगी—अर्थ संकट दूर होने की आशा दुराशा मात्र ही बनी रहेगी। कुबेर का खजाना लेकर घर-घर में स्वर्ग भण्डार जमा कर जाने वाले किसी देवदूत की अपेक्षा वह आन्दोलन अधिक गरिमाशील कहा जायगा जो लोगों की वर्तमान सदोष विचार प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन करके रखदे। चाहे व्यक्तिगत समृद्धि की बात हो चाहे समूहगत सम्पन्नता का विषय हो उपाय एक ही है लोगों का वर्तमान दृष्टिकोण बदला जाय। भले ही यह प्रक्रिया आज न सही हजार वर्ष बाद सम्पन्न की जाय पर अर्थ सङ्कट के निवारण के लिये भी उतने ही दिन प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

मन को प्रफुल्लित करने के लिये इस सृष्टि में इतना विस्तृत आधार मौजूद है कि हर घड़ी हर्षोल्लास भरी अनुभूति का आस्वादन करते हुए प्रमुदित पुलकित रहा जासके। आसमान के तारे, धरती पर फैली हुई हरियाली, नदी, पर्वत ऋतुओं के परिवर्तन, सुन्दर खिलौने जैसे पशु-पक्षी लोगों की उदारता और सेवा बुद्धि के आधार पर विकसित होसका अबतक का अपना जीवन, गुलदस्ते जैसे परिवार, सत्पुरुषों के साथ कभी भी सत्संग प्रदान कर सकने वाली स्वाध्याय सुविधा, विज्ञान द्वारा विनिर्मित अगणित सुविधा साधन आदि असंख्य धाराएँ इस संसार की ऐसी हैं जो प्रचुर परिमाण में हमारे चारों ओर विद्यमान बनी रहती हैं और हर घड़ी प्रमुदित होने का अवसर प्रदान करती हैं। भगवान ने मानव जीवन के इर्द-गिर्द बिखरा वातावरण ऐसा सुरुचि पूर्ण बनाया है कि कोई सही मस्तिष्क वाला व्यक्ति जन्म से लेकर मरण पर्यन्त हर घड़ी हर्षोल्लास से भरी हुई बिता सकता है।

पर दुर्भाग्य को क्या कहा जाय जिसने हमारी विचार प्रणाली में विष घोल दिया और हम हर बात को उलटे ढङ्ग से सोचने लगे। फल जो होना था वही हुआ। रंगीन चश्मा पहनने वाले को हर चीज रंगीन दीखती है। दुर्बुद्धि ग्रस्त मस्तिष्क अपने चारों ओर विद्रूप विडम्बना को अट्टहास करती देखता और डरता है। चिन्ता, भय, शोक, संशय, निराशा, उद्वेग के इतने ज्वालामुखी हमारे मस्तिष्क में फूटते रहते हैं कि आत्म-हत्या करने को जी चाहता है। दुःख के कारण उसे वास्तविक दीखते हैं जबकि होते वे बिलकुल अवास्तविक और काल्पनिक हैं। कहावत है कि—'वहम की दवा लुकमान के पास नहीं।' सचमुच इन संशय एवं भ्रांति ग्रस्त मस्तिष्कों को कल्प-वृक्ष के नीचे बिठाकर सारी मनोकामनाएँ पूर्ण करदी जाँय तो भी चैन मिलने वाला नहीं है। उलटी विचारणा कल्प-वृक्ष के नीचे भी दुर्बुद्धि ही सोचेगी और वहाँ भी उसे विपत्ति ही घेर लेगी।

उलटी बुद्धि का एक छोटा सा नमूना देखा जाय। कई लोगों के सन्तान या लड़का नहीं होता। वस्तुतः यह लोग बहुत ही सुखी और सौभाग्यशाली हैं। कन्याओं के विवाह के बाद ढलती आयु निश्चिंत निर्द्वन्द्व और शान्तिमय बिताते हुये अपना समय और धन परमार्थ प्रयोजन में लगाकर लोक-परलोक उज्ज्वल बना सकते हैं। जिनके कोई सन्तान नहीं है वे अतिशय सौभाग्यवान हैं। बढ़ती हुई आबादी में और बढ़ोतरी करना—अन्न के लिये पराश्रित नागरिकों के लिये एक विशुद्ध पातक है। इन दिनों जो जितनी सन्तान बढ़ा रहा है वह देश को उतना ही सङ्कट में डाल रहा है। इस पाप में से जिन्हें अनायास ही छुट्टी मिल गई वे सचमुच सौभाग्यवान हैं। बच्चों के पालन-पोषण से लेकर उन्हें स्वावलम्बी बनाने तक की प्रक्रिया कितनी मँहगी और कष्ट साध्य है इसे सब जानते हैं। जितना श्रम, मनोयोग एवम् खर्च लड़के के लिये करना पड़ता है उतना ही यदि भगवान के लिये किया जाय तो निस्सन्देह इसी जन्म में भगवान मिल सकता है। वही अनुदान यदि परमार्थ प्रयोग के लिये लगाया जाय तो उतने से ही असंख्य लोगों को प्रेरणा देने वाली एक संस्था चल सकती है। आजकल के लड़के बड़े होने पर अभिभावकों को केवल त्रास ही देते हैं। अपने हाथों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की कमाई भी किसी अच्छे काम के लिये खर्च करनी हो तो लड़के उसे रोकते हैं, वे चाहते हैं हराम का सारा माल हमें ही मिले। यहाँ तक कि अपनी बहिनों को देता देखें तो कुढ़ते और विरोध करते हैं। कोई यह चाहता हो कि लड़के का बाप बनकर बुढ़ापे का आधार मिल जायगा तो और भी दुराशा मात्र है। कुत्ता पराये घर रहकर जिसका कुछ प्रयोजन पूरा करता है उसी के यहाँ रोटी पा लेता है। बेटे के ऊपर कुत्ता तक निर्भर नहीं तो मनुष्य के लिये यह सोचना कि बेटे बिना बुढ़ापा न कटेगा नितान्त मूर्खता है।

अपने देश में बेटा न होने पर अति दुःखी लोग हर जगह पाये जाते हैं। इनमें से कितने ही दूसरा विवाह करते कितने ही खानदान का लड़का गोद लेते देखे जाते हैं। उनका सोचना कितना सङ्कीर्ण है कि घृणा आती है। अपने श्रम, समय और धन का लाभ किसी "अपना" कहे जाने वाले लड़के को ही मिले। ऐसा सोचने वाले देश, धर्म, समाज, संस्कृति, ईश्वर आदि को सर्वथा भूले हुए होते हैं। अन्यथा वे अपनी समृद्धि उनके लिये देकर यशस्वी और आत्म-शांति का कदम बढ़ा सकते थे। पर इन अभागे लोगों को क्या कहा जाय जो सङ्कीर्णता की कीचड़ में सिर से पैर तक डूबे हैं और बेटा न होने की रट लगाये रहते हैं। इस अभाव में वे इतने दुःखी रहते हैं मानो विपत्ति के सारे पहाड़ उन्हीं पर टूट पड़े हों।

ऊपर एक उदारण बताया गया है जिसमें सुख सौभाग्य से भरा पूरा मनुष्य भी एक कल्पित अभाव को गढ़कर उस कारण कितना उद्विग्न होता है। ऐसी ही भ्रान्तियाँ पग-पग पर भरी पड़ी हैं। शेयरों से भी अधिक लोगों के मन बीमार हैं। और बीमारियों से मिलने वाले शारीरिक कष्टों से भी बहुत अधिक दुःख उन्हें मनोविकारों द्वारा उत्पन्न भ्रान्त धारणाओं और मान्यताओं के कारण उठाना पड़ता है। यदि कोई ऋषि या अवतार लोगों को सही रीति से विचार कर सकने की पद्धति सिखा सकने में सफल हो जाय तो ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, प्रतिशोध, चिन्ता, भय, निराशा, शोक, उद्वेग, संशय आदि के कारण चिता पर जलती लाशों की तरह अन्तर्व्यथाओं की आग में जलते हुए इन अगणित प्रेत-पिशाचों को मुक्ति दिलाने वाला पुण्य कमा सकता है। भागीरथ ने गंगा लाकर नरक में जलते अपने ६० हजार पूर्वजों को मुक्ति दिलाई थी यदि सद्विचारणा की गंगा कोई ला सके और उसके शीतल जल से हर मस्तिष्क को सींचा जा सके तो उनमें से प्रत्येक में फल-फूलों से लदी एक सुरम्य वाटिका विकसित की जा सकती है।

समाज में अगणित अपराध बढ़ रहे हैं। ठगी, बेईमानी, चोरी, गुण्डागर्दी का ऐसा बोलबाला है कि सामान्य नागरिक को अपनी सुरक्षा भारी पड़ रही है। इसका निवारण अति कठोर दण्ड और फौजी शासन जैसे निर्मम नियंत्रण से तो सम्भव है पर प्रजातन्त्र जैसी प्रणाली में कानूनी कला बाजी देखने वाली पुलिस, कचहरी, जेल से कुछ रोकथाम होने वाली नहीं है। पेशेवर अपराधियों के लिये यह सब सिर्फ मजाक की चीजें हैं। वे उनकी गतिविधियों पर अंकुश लगा सकने में कहाँ समर्थ होती है अपराधों को देखकर अपराध बढ़ते हैं। हमारा नागरिक जीवन इस बढ़ती हुई अनियन्त्रित अपराध वृत्ति के कारण असुरक्षित और अनिश्चित होता जाता हैं। यह विभीषिका वर्तमान अर्थ को सम्मान और महत्व प्रदान करने वाली विचार पद्धति को बदलकर ही रोकी जा सकती है।

"मनुष्य का गौरव, कर्त्तव्य एवं आदर्शवादी परम्परा अपनाने में है। अपनी और दूसरों की समग्र प्रगति सदाचरण और सहयोग पर निर्भर है। पाप कर्मों के कठोर दण्ड से यहाँ बचा भी लिया जाय तो परलोक में नारकीय त्रास अवश्य सहने पड़ेंगे। पापी पर ईश्वर का कोप बरसता है।" ऐसी मान्यताएँ यदि जन-मानस में गहराई तक प्रवेश कर सकें तो अपराधों का आमूल-चूल उन्मूलन वैसी ही हो सकता है जैसा सतयुग में राम राजमें बताया जाता है। बेईमानी की गतिविधियाँ बहुत कठिन हैं और लाभ भी अनिश्चित है। इसकी तुलना में ईमानदारी का रास्ता सरल भी है और सुनिश्चित लाभ प्रदान करने वाला भी यह तथ्य यदि तर्क, प्रमाण उदाहरण सहित लोगों को समझाया जा सकता है तो अपना हित अहित समझने में समर्थ मनुष्य अनैतिक एवं अपराधी गतिविधियों का परित्याग कर सज्जनता की राह पर चल सकता है। इस प्रकार प्रेम, सद्व्यवहार और सहयोग से भरा पूरा समाज स्वर्गीय सुख-शान्ति का आधार बन सकता है। अपराध नियन्त्रण के लिये भले ही राजकीय दण्ड व्यवस्था रहे पर उसका मूलोच्छेदन—कर्तव्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भावना,आत्म गौरव एवं ईश्वरीय न्याय की यथार्थता समझ लेने पर ही सम्भव है । वह व्यक्ति या आन्दोलन संसार की समस्त अदालतों, जेलों, वकीलों, न्यायाधीशों,जेलरों,जल्लादों की मिली जुली शक्ति से भी लाख गुना अधिक उपयोगी सिद्ध होगा जो लोगों को अनैतिकता के विधान की प्रतिक्रिया और नैतिकता की स्वर्गीय सम्भावनाओं का चित्र ठीक तरह खींच सके और उसे जन-मानस में ठीक तरह प्रतिष्ठापित कर सके ।

हमारे घर, परिवार एक छोटे राज्य शासन के-छोटे समाज के—मौडल होते हैं । इस प्रयोगशाला में सज्जनता, सद्भावना, सहकारिता, उदारता एवं व्यवस्था की शिक्षा आरम्भ की जाती है । परिवारों का समूह ही राष्ट्र है । राष्ट्रों का समूह विश्व । परिवारों के सौमनस्य का अगला जमाना सारे संसार को सुधारने और सुखी बनाने का महत्व पूर्ण प्रयोग है । आज हमारे परिवार एक बिल में रहने वाले कई चूहों की तरह, एक सराय की तरह रह गये हैं जिनमें परस्पर विश्वास, सहयोग, त्याग और मोह प्रदान करने की आवश्यकता पूरी होती नहीं दीखती । घर के हर सदस्य को अपने सीमित स्वार्थ की फिक्र रहती है । पूरे परिवार पर उसकी गतिविधियों का क्या प्रभाव पड़ेगा ? इसकी ओर से बहुधा आँखें बन्द ही रखी जाती हैं । यही कारण है कि घरों को छोटे स्वर्ग का नमूना अब नहीं बना पाता और हर सदस्य अवसर मिलते ही उस जेलखाने से निकल भागने की सोचता है । परिवार संस्था का इस प्रकार नष्ट होना वस्तुतः समाज,राष्ट्र एवं विश्व के विघटन का कारण बनता जा रहा है । इस चिन्ताजनक स्थिति का समाधान कैसे हो इसका निर्णय एक ही हो सकता है कि घर का हर सदस्य भोजन,वस्त्र की तरह आरम्भ से ही उत्कृष्ट विचारधारा का आहार आरम्भ से ही पाता रहे और इसकी व्यवस्था हर घर में अनिवार्य रूप से बनी रहे । रोटी,कपड़े, दवा, सवारी फीस आदि की व्यवस्था से परिजनों के शरीर भर की साज सँभाल रह सकती है । मन को विकसित रखने वाली विचारणा की साधन सामिग्री या परिस्थिति घर में न हो तो भूखी आत्मा वाले वे लोग ऊँची बात सोच ही न सकें। और नीचे दृष्टिकोण रखने वाले कभी किसी के सच्चे मित्र नहीं हो सकते । इस तथ्य को भुलाया जाता रहा । परिवारों में ऊँचा सोचने की सुविधा देने वाली कोई प्रक्रिया चली नहीं फलस्वरूप हमारे विकृत परिवार एक समस्या की तरह सिरदर्द बने हुए हैं और समाज की कमजोरी बढ़ा रहे हैं ।

यदि कोई देवदूत या आन्दोलन ग्रह संचालकों को यह मन्त्र सिखा जाय कि वे घर के हर सदस्य को ऊँचा दृष्टिकोण विकसित कर सकने के स्वाध्याय–साधन घर में जमा करें और घरेलू विचार–गोष्ठियों, कथा–कहानियों, शङ्का-समाधानों द्वारा उत्कृष्टता का वीजारोपण करने की व्यवस्था जुटाये रहें तो इसका प्रतिफल एक सुविकसित परिवार के रूप में होगा तो यह प्रक्रिया हर परिवार को सोने चाँदी से लाद देने से बढ़कर है । घर में स्वच्छता की-शिष्टाचार की सहयोग की-सादगी की-परिस्थितियाँ बनाये रखने के लिये जो सचेष्ट रहेंगे वे ही समुचित परिवार का लाभ और आनन्द उठा सकने में समर्थ होंगे ।

शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक,सामाजिक, समस्यायें व्यक्तिगत जीवन को किस तरह प्रभावित करती हैं । विचार विकृतियाँ किस प्रकार अच्छे भले, जीवन-क्रम को नारकीय बना देती है—काम, क्रोध, लोभ, मद मत्सर, अहङ्कार आदि दुर्बुद्धियों से ग्रसित मनुष्य किसप्रकार अकारण अपने ऊपर बरसने के लिए विपत्तियों की घटाएं आमन्त्रित करता है इसे कोई भी विचारशील समझ सकता है । यदि मनुष्य अपनी विचार पद्धति पर नियन्त्रण करले तो उसकी शक्ति, प्रगति समृद्धि हर प्रकार उसकी मुट्ठी में और सुरक्षित रहेगी । युग-निर्माण योजना के अन्तर्गत चल रहे विचार क्रान्ति आन्दोलन—ज्ञान-यज्ञ का यही प्रयोजन है । व्यक्ति और समाज की सर्वांगीण सुख-शांति अपने इसी अभियान की सफलता पर निर्भर है । यदि इस तथ्य को ठीक तरह समझ लिया जाय तो हर कोई यही अनुभव करेगा कि मूल को सींचने की तरह विश्व शान्ति का एक ही मार्ग और एक ही उपाय है । और उस उपाय को कार्यान्वित करने में एक ही अपना दूरदर्शी संगठन लगा हुआ है । भले ही लोग आज उसकी उपयोगिता और महत्ता न समझें पर अगले दिनों जब मानव जाति के उत्थान-पतन का सूक्ष्म विवेचन किया जायगा जब समीक्षकों और अन्वेषकों को एक स्वर से यही स्वीकार करना पड़ेगा कि विकृतियों और उलझनों के इस युग में समस्त विपत्तियों की जननी विकृत विचारधारा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की अभिवृद्धि हैं थी और उसे पलटने के लिए केवल मात्र एक ही प्रयोग द्वारा सुव्यवस्थित रूप से कार्य हुआ। और उस प्रयोग का नाम था-युग-निर्माण योजना द्वारा संचालित—ज्ञान-यज्ञ।

युग-निर्माण योजना की मूल मान्यताएँ

व्यक्ति और समाज की विकृतियों से निपटने के दो मार्ग हैं एक दमन चक्र को अति कठोर बनाकर ऐसी परिस्थितियां पैदा कर देना जिसमें किसी को गड़बड़ करने का अवसर ही न मिले। दूसरा यह है कि-मनुष्यों की आस्थायें ऊँची उठाकर प्रथाओं को परिष्कृत बनाकर-सुख-शान्ति और स्नेह सद्भाव का वातावरण बनाया जाय।

अधिनायकवाद और साम्यवाद की मान्यता यह है कि मनुष्य की दुष्टता को रोकने का एकमात्र उपाय प्रतिबन्ध है। व्यक्ति की स्वतन्त्रता सीमित कर दी जाय, उसके हाथ उतने साधन हीं न रहने दिये जाँय जिनसे अवांछनीय असामाजिक कार्य करने की हिम्मत की जाती है। यह प्रयोग साम्यवादी देशों में हो रहा है। यहाँ व्यक्ति की स्वतन्त्रता एक प्रकार से समाप्त करदी गई है और उसे यंत्रवत् बना दिया गया है। सरकार जो चाहती है वहाँ वही सुनने, पढ़ने, देखने, समझने का अवसर मिलता है। मस्तिष्क एक विशेष ढांचे में ढाले जाते हैं और ऐसी परिस्थितियाँ उपस्थित की जाती हैं जिनमें शासन की निर्दिष्ट दिशा के अतिरिक्त और कुछ समझने-सोचने की गुञ्जायश ही न रहे। कई तरह की चीजें सामने हों तो उनमें से किसी को चुनने पसन्द करने का सवाल आता है पर जब एक ही चीज सामने है तो दूसरी की कल्पना कैसे की जाय? लेखनी वाणी, शिक्षा, मनोरञ्जन, प्रचार, कानून आदि सभी साधनों से व्यक्ति को-समाज को शासन जैसा ढालना चाहता है, उसे वैसा ही ढलने के लिए विवश होना पड़ता है:

सम्पत्ति के ऊपर सरकार का स्वामित्व है और व्यक्ति को उसके निर्वाह भर के साधन दिये जाते हैं। जब फालतू समय तथा धन पास न होगा तो गड़बड़ होगी भी कैसे? कोई स्वभाववश असामाजिक कार्य करे तो उसे मौत के घाट उतार देने या ऐसे ही कठोर दण्ड देकर बुरी तरह बा दिया जाता है और सर्वसाधारण को उन दण्डों से अतिशय भयभीत कर दिया जाता है ताकि कोई दूसरा वैसी हिम्मत न कर सके। अधिकनायकवाद में सुधार का यही तरीका है। दण्ड, दमन, प्रतिबन्ध और नियन्त्रण के अन्तर्गत सारी वैयक्तिक और सामाजिक गतिविधियां सीमाबद्ध कर देने की नीति पर वह प्रक्रिया आधारित है।

दूसरी पद्धति प्रजातंत्र की है। जिसमें वैयक्तिक स्वतंत्रता को अक्षुण्य रखा गया है। और यह मानकर चला गया है कि उपयुक्त बौद्धिक साधन उत्पन्न करके व्यक्ति को श्रेष्ठता की ओर अग्रसर किया जा सकता है एवं उसके स्वेच्छा सत्प्रयत्नों से समाज के लिए अनन्त उपयोगी सत्प्रवृत्तियों को बढ़ाया जा सकता है। अधिनायकतावादी दिशा में समस्त सम्पदा पर सरकार का अधिकार रहने से उसके पास साधन बहुत रहते हैं इसलिये वह बड़ी से बड़ी योजनाएँ चला सकती है। चलानी भी चाहिए। जब साधन किसी के पास है ही नहीं तो कोई कुछकर भी कैसे सकेगा। धर्म अध्यात्म और संस्कृति की उपयोगिता प्रजातन्त्र में स्वीकार की जाती है और व्यक्ति को इन आस्थाओं के अनुरूप विचार और कार्य करने की स्वतन्त्रता रहती है। इस प्रणाली में दण्ड की कठोरता न रहने से अपराधों के बढ़ने और अपराधियों के बचने की गुञ्जायश अधिक रहने का दोष तो है पर गुण यह है कि व्यक्ति की स्वतन्त्र चेतना को कई तरह से चिन्तन करने का अवसर मिलता है और कभी कोई अति महत्वपूर्ण सूझ बूझ सामने आ जाने की गुञ्जायश रहती है। साम्यवाद, ईश्वर, धर्म, दर्शन, अध्यात्म, संस्कृति आदि की उपयोगिता से इनकार करता है और इससे प्रजाको विरत करता है, जबकि प्रजातन्त्र में ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है। इन आस्थाओं की छाया में व्यक्ति की उच्चसम्वेदनाएँ विकसित होने की काफी गुञ्जायश रहती है और उनके आधार पर व्यक्ति को महानता के पथ पर बहुत आगे बढ़ने की गुञ्जायश रहती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हम यह मानकर चलते हैं कि प्रजातन्त्र में जो दोष हैं उन्हें हटाकर उसी प्रक्रिया को जन-जीवन में चलने दिया जाय तो व्यक्ति की मौलिकता और महानता को विकसित हो सकने की सम्भावना अक्षुण्य बनी रह सकेगी। इसलिए हमें ऐसी प्रजातन्त्र प्रणाली को अपनाना चाहिए जिसके साथ धर्म, अध्यात्म और संस्कृति के उच्च आदर्शों को जीवित रहने का अवसर बना रहे।

इस प्रकार की मान्यता रखने में जनता के ऊपर भारी उत्तरदायित्व आता है और उसे जन-स्तर पर व्यक्ति और समाज को संभालने का प्रयत्न करना होता है। प्रजातंत्र में जन तथा धन स्वतन्त्रता के कारण व्यक्ति के पास जो धन और समय की शक्ति बच रहती है उसे लोक--मंगल में अधिकाधिक लगाये जाने की प्रवृत्ति चल पड़े तभी विकास और व्यवस्था की आवश्यकताएँ पूर्ण हो सकती हैं। सरकार के ऊपर सब कुछ करने की आशा प्रजातन्त्र में नहीं की जा सकती है। अधिनायकवादी सरकारें दमन और प्रतिबन्ध के आधार पर व्यक्ति की क्षमता सीमित कर देती है फल-स्वरूप कोई न तो कुछ घृणित काम कर सकता है न श्रेष्ठ। उसे मशीन की तरह जीवित भर रहकर सन्तोष करना पड़ता है पर प्रजातन्त्र में सृजन के साथ विनाश की और उत्कृष्टता के साथ निकृष्टता की संभावना भी विद्यमान रहती है। श्रेष्ठता का अभिवर्धन और निकृष्टता का उन्मूलन प्रजा-तन्त्री शिथिल कानूनों में नहीं हो पाता इसके लिये जन-स्तर पर प्रयत्न करने होते हैं। प्राचीन काल में साधु, ब्राह्मण मनीषि और तत्वदर्शी, महाभागों का एक बड़ा वर्ग निरन्तर इसी कार्य में संलग्न रहता था। जनता की इस तरह की प्रवृत्तियाँ बढ़ाने और उन्हें सहयोग देने के लिये प्रोत्साहित करता था, जिसके आधार पर व्यक्ति और समाज की उत्कृष्टता घटने न पाती वरन् निरन्तर बढ़ती ही रहती थी।

प्रजातन्त्री शासन की सुविधाओं का लाभ उठाने की इच्छुक जनता को लोक-मंगल के लिये बहुत कुछ करना होता है। प्रजा का जन-कल्याण की प्रवृत्तियों में जितना अधिक अनुदान, सहयोग होगा उतनी ही विकास और व्यवस्था की सम्भावनाएँ बढ़ेंगी। प्रजा यदि अपने सार्व-जनिक कर्त्तव्यों के प्रति उपेक्षा किये बैठी रही और सोचती रही कि सब कुछ सरकार कर लेगी तो फिर प्रगति की सम्भावनाएँ समाप्त ही समझनी चाहिए।

नये निर्माण के लिये सरकारों को भी बहुत कुछ करना चाहिए। उसे त्रुटियाँ सुधारने के लिये विवश किया जाना चाहिए पर इससे भी अधिक ध्यान इस बात पर दिया जाना चाहिए कि प्रजातन्त्र अपने सार्वजनिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, नैतिक कर्त्तव्यों को पूरा करने के लिये अधिकाधिक उत्साह प्रदर्शित करें। हर प्रजातन्त्री प्रजाजन की मनोभूमि यह होनी चाहिए कि साम्यवादी देशों में व्यक्ति को किस प्रकार औसत दर्जे का जीवन जीना पड़ता है और अधिक योग्यता का लाभ राष्ट्र को प्रतिबन्धित रूप में छोड़ना पड़ता है, वैसा ही वह स्वेच्छा पूर्वक करे। हम देश की स्थिति को समझें और औसत दर्जे का मनुष्य जितने में काम चलाता है उतने में ही सन्तोष करें और यदि अपनी योग्यता अधिक उपार्जन को समर्थ है तो उसे स्वेच्छा पूर्वक उदारता, देश भक्ति, पुण्य, परमार्थ की भावना से लोक-मंगल के लिए वापस कर दे। व्यक्ति अपने व्यक्तिगत वैभव की आकांक्षा छोड़े और जन-कल्याण के लिये किये गये प्रयत्नों में अपनी गरिमा समझे।

आज अपनी प्रजातन्त्री व्यवस्था साम्यवादी देशों की तुलना में प्रगति की दृष्टि से बहुत पीछे पड़ रही है, इसका प्रधान कारण एक ही है साम्यवादी देशों के व्यक्ति को अपनी योग्यता भर का पूरा उपार्जन करना पड़ता है पर अपने लिये न्यूनतम निर्वाह से ही संतुष्ट हो जाता है। यदि यही मनोभूमि प्रजातन्त्री प्रजा की हो तो लोगों को अपने गुजारे के लिये औसत भारतीय के खर्च पर संतुष्ट होकर अपनी विद्या, बुद्धि, सम्पत्ति प्रतिभा का लाभ समाज को वापस करने की उत्कण्ठा उत्पन्न हो। और उसके द्वारा अनेकों विकासमान रचनात्मक कार्यक्रमों का-पारमार्थिक प्रयोजनों का प्रवाह गतिमान हो सकता है। साम्यवादी देशों के लोगों को जो त्याग बलात् विवशता की स्थिति में करना पड़ता है वही यदि प्रजातन्त्री प्रजा स्वेच्छा पूर्वक करे तो उसे आनंद उत्साह, गर्व, गौरव और संतोष का अनुभव भी होता रहता है और विवशता के स्थान पर स्वेच्छा की स्थापना हो जाने से भावनात्मक प्रगति का वह लाभ मिल सकता है जो साम्यवादी प्रजा को प्रायः नहीं मिल पाता। लोक-मंगल की श्रेष्ठ परम्पराएँ यदि चलती रहें तो एक दूसरे से उस तरह की अनुकरणीय प्रेरणा लेकर पुण्य परमार्थ के सत्कर्मों में रुचि लेकर अधिक उल्लसित और सन्तुष्ट रह सकते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आत्म बल बढ़ाने के लिये यह उदार सेवा साधना कितनी अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती है इसे अनुभव करके ही जाना जा सकता है ।

हमें नव-निर्माण के लिए इसी मनोभूमि की—आस्था निष्ठा तथा दृष्टि को विकसित करने की चेष्टा करनी चाहिए। नव-निर्माण की अपनी योजना इसी पृष्ठभूमि पर बनाई जा रही है । हम मानकर चलते हैं कि शासन तथा व्यवस्था की दृष्टि से प्रजातन्त्री शासन पद्धति अन्य सब पद्धतियों से अच्छी है । हम यह मानकर चलते हैं कि मनुष्य केवल भौतिक साधनों की सुव्यवस्था से ही सन्तुष्ट नहीं रह सकता उसे आत्मिक प्रगति जैसी किसी वस्तु की भी आवश्यकता है । इसके लिए धर्म, संस्कृति और अध्यात्म को जीवित रहना चाहिए । हम नहीं चाहते कि शासन इन तत्वों को नष्ट करके मनुष्य को मात्र मशीन बना दे । हम यह मानकर चलते हैं कि हर मनुष्य के भीतर पशुता की तरह देवत्व भी विद्यमान है और उसे प्रयत्न करके जगाया, बढ़ाया, उठाया जा सकता है । हमारा विश्वास है कि मनुष्य की सर्वोपरि शक्ति 'विचारणा' है उसे यदि उत्कृष्टता की दिशा में मोड़ा जा सके तो धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के उदय की सम्भावनाएँ मूर्तिमान हो सकती हैं । जन सहयोग के द्वारा एकत्रित अनुदानों को हम पहाड़ों से ऊँचा और समुद्र से विशाल मानते हैं और यह विश्वास करते हैं कि यदि इस स्वेच्छ सहयोग को लोक-मंगल के लिये मोड़ा जा सके तो नव-निर्माण के लिये जितने साधनों की आवश्यकता है उससे अधिक ही मिल सकते हैं । हम जानते हैं कि विश्व का नैतिक पुनरुत्थान करने की सर्वतोमुखी क्षमता से सम्पन्न भारत जैसे महान परम्पराओं वाले देश के लिए प्रजातन्त्र प्रणाली ही उपयुक्त हो सकती है, बशर्ते कि इस पद्धति को पश्चिम की नकलची न रहने देकर अपने देश की परिस्थिति के अनुरूप ढाल लिया जाय ।

अपनी इन मान्यताओं के आधार पर हम युग-निर्माण की विशाल योजना बनाते हैं । साम्यवादी सिद्धान्तों के अनुरूप समस्याओं के समाधान सरल हैं । उस पद्धति के अन्तर्गत व्यक्ति स्वतन्त्र व्यक्तित्व नहीं रह जाता वह मशीन का एक पुर्जा मात्र रह जाता है । सरकार जैसा कुछ चाहती है उसी तरह उसे सोचने, करने और रहने के लिये मजबूर होना पड़ता है । समाज की स्थिति व्यक्तियों के कारण नहीं वरन् सरकार की मर्जी से चलती है ऐसी दशा में समस्याएँ उत्पन्न ही नहीं होतीं—होती हैं तो कठोर दमन दण्ड के आतंक से वह देखते-देखते हल हो जाती हैं । प्रजातन्त्र में ऐसा नहीं होता । व्यक्ति समाज को प्रभावित करता है और समाज व्यक्ति को । सरकार का इस संदर्भ में बहुत ही कम प्रभाव रहता है ऐसी दशा में व्यक्ति और समाज के सुधार की जिम्मेदारी जितनी सरकार पर रहती है उससे हजारों गुनी अधिक जनता पर आती है । जन प्रयत्न ही प्रजातन्त्री प्रगति की रीढ़ रहते हैं । व्यक्ति और समाज की अगणित समस्याओं के हल भी जन स्तर पर ही करने होते हैं । इस लिए अपनी योजना में जन-जागरण-लोक-मानस निर्माण की ओर अधिक ध्यान दिया गया है और यह प्रयत्न किया गया है कि लोक चेतना को प्रखर, प्रबुद्ध और प्रगल्भ बनाया जाय लोक शक्ति को प्रबल किया जाय और जन-सहयोग से ऐसी अगणित रचनात्मक प्रवृत्तियों का उद्भव किया जाय जो व्यक्ति और समाज को उच्च से उच्चतम स्थिति की ओर अग्रसर करते चले जाँय ।

भारत की ऐसी अगणित विशेषताएँ एवं परिस्थितियाँ हैं जो दूसरे देशों से उतना स्पष्ट तालमेल नहीं खातीं । जिससे अन्य देशों में हुए प्रयोगों की नकल करके यहाँ की नव-निर्माण योजना बनाई जा सके । इतनी अधिक भाषाओं में, धर्म सम्प्रदाओं में, प्रथा परम्पराओं में ग्रस्त देश दूसरा न मिलेगा । कुरीतियों का भी वह धनी है । एक हजार वर्ष की गुलामी ने यहाँ की विचारणाएँ-मान्यताएँ एवं प्रथा परम्पराएँ ऐसी बना दी हैं जो प्रगति के हर प्रयत्न में रोड़ा सिद्ध होती हैं । दूसरे देशों की मुख्य समस्याएँ आर्थिक थीं--जो उत्पादन उद्योग बढ़ाने से सहज ही हल हो गईं । यहाँ की समस्याएँ मूलतः सामाजिक हैं । हम गरीब इस-लिये नहीं कि यहाँ उत्पादन, उद्योग, श्रम या प्रकृति संपदा की कमी है । यहाँ की गरीबी सामाजिक कुरीतियों की प्रतिक्रिया मात्र है । उदाहरण के लिये विवाह शादियों के रस्म रिवाज को ही लेवें कितने खर्चीले हैं । मध्यम श्रेणी का व्यक्ति दस पाँच हजार रुपया खर्च किये बिना शादी नहीं कर सकता । यदि पाँच बच्चों की शादी करनी पड़ी तो पच्चीस पचास हजार खर्च हो गये । यह पैसा यदि उस परि-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वार के स्वास्थ्य,शिक्षण अथवा व्यवसाय में खर्च हुआ होता तो वही लोग बहुत अच्छा शानदार जीवन जी सकने की स्थिति में होते। पर आज तो वे सारी जमा पूँजी स्वाहा कर, कर्जदार बने, दाने-दाने को मुँहताज बने फिर रहे हैं, यह सब विवाह शादियों का अभिशाप है। ऐसी अनेक कुरीतियाँ हमारे सामाजिक जीवन में जोंक बनकर चिपटी हुई हैं, उनके रहते हमें गरीबी के अभिशाप से कभी भी मुक्ति नहीं मिल सकती। इन्हीं कुरीतियों का पेट पूरा करने के लिये हमें बेईमानी के रास्ते अपनाने पड़ते हैं। पाँच बच्चों का बाप किसी प्रकार उनका पालन, शिक्षण ही कर सकता है उनके व्याह के लिए इतनी बड़ी पूंजी किस प्रकार कहाँ से पाये ? उसके सामने बेईमानी के अतिरिक्त दूसरा चारा नहीं। इन कुरीतियों के रहते अपने देश में ईमानदारी पनपने की कोई सम्भावना नहीं है।

इसी प्रकार स्त्रियों के प्रति लगे पर्दा प्रथा जैसे प्रतिबन्धनों ने आधी जन शक्ति को-आधे शरीर को लकवा मार जाने जैसी अपंग स्थिति में लाकर पटक दिया है। वे पराधीन होकर जीती हैं। अपना भार आप उठा सकने में असमर्थ हैं। इस प्रकार आधा राष्ट्र अपंग ही बना पड़ा है। छुआछूत ने एक तिहाई जनसंख्या को दूसरे दर्जे का नागरिक बनाकर रख दिया है, जो उचित सामाजिक सम्मान एवं उपयुक्त आजीविका संधनों से वंचित ही बने रहते हैं। जिस देश की इतनी बड़ी जन शक्ति इस प्रकार दुर्दशा ग्रस्त पड़ी हो उसे केवल आर्थिक प्रगति की बात सोचते रहने से ऊँचा नहीं उठाया जा सकता।

हम ऐसा नहीं सोचते कि आर्थिक सुविधा साधन बढ़ने पर अपना देश समृद्ध और सुविकसित बन जायगा। आर्थिक बढ़ोतरी के लिये किये गये प्रयत्नों का स्वागत किया जाना चाहिये पर यह न भूल जाना चाहिए कि अपनी वर्तमान विचार पद्धति सामाजिक स्थिति और नैतिक पृष्ठ भूमि में सुधार न किया गया तो समृद्धि बढ़ने पर भी कुछ लाभ न होगा वरन् वह सम्पन्नता दुष्ट दुर्बुद्धि की सहेली बनकर और भी अधिक विकराल परिस्थितियाँ उत्पन्न करेगी। यह हम आँखों के आगे स्पष्ट देख रहे हैं। पिछले दिनों जहाँ जहाँ जितनी-जितनी सम्पन्नता बढ़ी है वहाँ उतने ही वेग से व्यसन, अपराध, अनाचार और विग्रह बढ़े हैं। मुकदमों की अपराधों की संख्या वृद्धि और आर्थिक उन्नति का तालमेल बिठाकर निष्कर्ष निकाला जाय तो यही परिणाम निकलेगा कि सम्पन्नता के बढ़ने से मनुष्य की प्रगति में रत्ती भर भी वृद्धि नहीं हुई। किसानों का अनाज भाव इस मँहगाई की अवधि मे प्रायः १८ गुना बढ़ा है। जबकि दूसरी चीजों की मँहगाई आठ गुनी से अधिक नहीं हुई। इस दृष्टि से मँहगाई का सबसे बड़ा लाभ किसान को मिला है। इस पर भी उसका जीवन स्तर नगण्य ही ऊँचा उठा है। दूरदर्शिता न बढ़ने से वह पैसा कुरीतियों, मुकदमेबाजी तथा दूसरी व्यर्थ बातों में चला गया। यह स्थिति जब तक बनी हुई है तब तक केवल आर्थिक प्रगति की बात सोचते रहने से कुछ काम न चलेगा।

हम विचार क्रान्ति, सामाजिक क्रान्ति और नैतिक क्रान्तिको राजनैतिक क्रान्तिकी ऐसी सहेली मानते हैं जिसके बिना अपूर्णता ही बनी रहेगी। स्वराज्य तब तक अधूरा है जब तक हम बौद्धिक और सामाजिक मूढ़ता के नागपाश से छुटकारा नहीं पा लेते। इसलिये अपनी योजनाओंमें आर्थिक प्रगति को गौण और भावनात्मक प्रगति-सामाजिक स्वच्छता और नैतिक उत्कृष्टताकी अभिवृद्धि को अति आवश्यकतुरन्त ध्यान दिये जाने योग्य कार्य माना गया है। इसका तात्पर्य आर्थिक उन्नति की उपेक्षा नहीं—केवल इतना भर है कि उस एक पक्षको दूसरे सब मिलकर संभालें किन्तु उनकी ओर किसी का ध्यान नहीं है उस उपरोक्त त्रिविध क्रान्ति के कार्यक्रम को हम लोग संभालें और आगे बढ़ायें।

युग-निर्माण योजना को उपरोक्त मान्यताओं के आधार पर विनिर्मित किया गया है। यदि उसे समुचित सहयोग मिल सका तो निस्सन्देह वर्तमान जटिल परिस्थितियों को अगले दिनों सुख-शान्ति समृद्धि और प्रगति से भरा पूरा बनाया जा सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यक्ति निर्माण के लिए यह करना होगा

हमारे आजके विचारों में जो विकृति आगई है, उसको सुधारने और चिन्तन की दिशा परिष्कृत करने के लिए हमें नये सिरे से विचार करना होगा और अनौचित्य का स्थान औचित्य को देना होगा। पिछले अन्धकार का सबसे बड़ा अभिशाप हमारी विचार पद्धति में निकृष्टता घुस पड़ने के रूप में ही मिला है। उसी ने अवसर और अधःपतन की परिस्थितियाँ उत्पन्न की हैं। जब तक उसे समझा और सुधारा न जायगा, वर्तमान दुर्दशा से छुटकारा न मिल सकेगा।

व्यक्तिगत जीवन में आत्म-बोध के सम्बन्ध में हमारी मान्यता यह होनी चाहिएकि हम सच्चिदानन्द परमेश्वर के अंश एवं राजकुमार हैं। उसने अपने सहायक के रूप में—सृष्टि की सुन्दरता शोभा, सुव्यवस्था स्थिर रखने के लिये हमें पैदा किया है। बोलने, सोचने, लिखने, पढ़ने आदि की विशेषताएँ दी हैं तथा शिक्षा, चिकित्सा, वाहन, वस्त्र, उत्पादन, परिवास, मनोरन्जन आदि के विविध साधन दिये हैं वे एक प्रकार की अमानत जैसी विभूतियाँ हैं और वे इस लिये दी गई हैं कि उनका न्यूनतम अंश जीवन निर्वाह के लिये रखने के उपरान्त शेष का उपयोग लोक-मंगल के लिये—विश्व कल्याण के लिये—नियोजित किये रहें। जो कुछ हमें मिला है वह केवल उपयोग के लिये ही नहीं है, यदि ऐसा होता तो परमेश्वर जो प्राणिमात्र को रचता है—केवल मनुष्य को ही इतनी सुविधाएँ देने के कारण पक्ष-पाती कहलाता। विभूतियाँ सिर्फ परमार्थ के लिये मिली हैं। यदि हम इन्हें लोभ, मोह के वशीभूत होकर वासना, तृष्णा की पूर्ति तक सीमित रखते हैं तो यह 'अमानत में खयानत' जैसा अपराध हुआ इसका दण्ड हमें नारकीय दण्डों के रूप में भुगतना पड़ेगा।

जीवन का लक्ष्य,स्वरूप उद्देश्य यदि ठीक तरह समझ में आ जाय,उसे पूरा करने में इस अनुपम स्वर्ण अवसर की सफलता समझली जाय तो मनुष्य इसी अध्यात्म आस्था के आधार पर अपनी गतिविधियाँ और विचारणाएँ उत्कृष्ट प्रयोजनों की दिशा में नियोजित किये रह सकता है।

आज का मनुष्य अपने को शरीर मात्र मानता है,शरीर सुखों में ही जीवन की सफलता देखता है। वाहवाही की लालसा, बड़प्पन का प्रदर्शन, धनी बनने की लिप्सा उसके प्रिय विषय बन गये हैं। पेट और प्रजनन के लिए सारा समय और मनोयोग लगता है। भौतिक उपलब्धियों में ही सफलता दीखती है। परमार्थ में उतनी ही रुचि रहती है जितनी से तुरन्त वाहवाही मिल जाय। इस स्तर का व्यक्ति पशुओं जैसा शिश्नोदर प्रवृत्त जीवन ही जी सकता है। जीवन का स्वरूप ही जिसे मालूम न हो वह उसका सदु-पयोग कर सकने की बात कहाँ सोच सकेगा।

हमारी मान्यता होनी चाहिए कि ईश्वर सर्वव्यापी, न्यायकारी और सत्प्रवृत्तियों को पसन्द करने वाला है। उसकी सृष्टि में पूर्ण न्याय और व्यवस्था है। दुष्कर्म करने वाला कुमार्गगामी व्यक्ति उसके दण्ड से बच नहीं सकता। अनीति का पथ जो भी अपनायेगा उसके कोप का भागी बनेगा। उसे सद्भाव सम्पन्न और सत्कर्म परायण व्यक्ति ही प्रिय है। ईश्वर का विशेष प्यार और अनुग्रह केवल सज्जनों के लिये सुरक्षित है। पूजा आराधना का प्रयोजन ईश्वरको उसके द्वारा दिये हुए मानव जीवन के प्रयोजन को,मानवीय कर्त्तव्य पथ को ध्यानमें रखने और अपने ईश्वरीय दण्ड को ध्यान में रखते हुए सन्मार्गगामिता अपनाने वाली मनोभूमि निर्माण के लिये है। जिस पूजा के द्वारा अन्तःकरण में पवित्रता, उदारता एवं सेवावृत्ति का विकास होता हो उसी को सार्थक समझा जाना चाहिए।

आज लोग ईश्वर को मानवीय दुर्बलताओं से भी अधिक घटिया स्तर का एक मनुष्य मात्र मान बैठे हैं। जो थोड़ी प्रशंसा, भोग प्रसाद, चन्दन पुष्प आदि से लुभाया—फुसलाया जा सकता और पात्रता न होने पर भी मनचाहे वरदान देने के लिए इसी पूजा-पत्री के आधार पर रजामंद किया जा सकता है। लोगों की यह भी मान्यता है कि उसकी प्रतिमाओं के दर्शन करने—लीलाऐं सुनने या नदी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तीर्थ नहाने मात्र से पाप कट जाते हैं और बुरे कर्मों का दण्ड नहीं भुगतना पड़ता। इस ईश्वर सम्बन्धी भ्रान्त धारणा ने लोगों को पराक्रम पुरुषार्थ के कष्ट साध्य मार्ग की उपेक्षा कर कुछ तन्त्र-मन्त्रों द्वारा मनोकामनाएँ पूरी करने की तरकीबें सोचीं और अकर्मण्य बनते चले गये। इसी प्रकार पाप का फल सस्ते कर्मकाण्डों के कारण छूट जाने की बात सूझ पड़ने से लोग पाप करने से निर्भय होते चले गये। आज का ईश्वरवाद अकर्मण्यता और अनैतिकता बढ़ाने में सहायक हो रहा है।

ईश्वर एक नियम, व्यवस्था, विद्या एवं सर्वजनीन चेतना है। उत्कृष्ट भावनाओं के रूप में उसे हर कोई अपने अन्तःकरण में विद्यमान देख सकता है और उन उच्च सम्वेदनाओं को अन्तरात्मा में बढ़ाकर ईश्वर की समीपता का आनन्द अनुभव कर सकता है। पर लोगों ने उसे खुशामदी और रिश्वतखोर जैसी हेय स्थिति का ऐसा व्यक्ति कल्पित कर लिया है जो भक्त नामधारी का हर बात में पक्षपात करने को तैयार रहता है। तथ्य यह है कि ईश्वर एक है, उपासना से—ध्यान की सुविधा की दृष्टि से भक्तों ने उसके नाम रूप ही अलग प्रकार से कल्पित किये हैं। अनेक देवता वस्तुतः एक ईश्वर के ही लोगों द्वारा कल्पित किये गये चित्र विचित्र नाम रूप हैं। वस्तुतः इस सृष्टि में अनेक देवताओं के अलग अस्तित्व नहीं है। यदि इस सृष्टिके संचालक अनेक ईश्वर—अनेक देवता होते तो उनमें भी परस्पर लड़ाई होती रहती और संसारका नियन्त्रण गड़बड़ा जाता। लोगों का अज्ञान ही है जिसने परस्पर विरोधी अगणित देवी देवता रचकर खड़े कर दिये हैं और उनमें से कइयों को तो ऐसे नीचे स्तर तक गिराया है कि पशुबलि जैसे घृणित कर्म से प्रसन्न होते और उस कुकर्मी भक्त की अनैतिक मनोकामनाऐं पूरी करने में नहीं लजाते।

धार्मिक कर्मकाण्डों मान्यताओं एवं विधि व्यवस्थाओं का तात्पर्य केवल इतना है कि मनुष्य सदाचारी, कर्त्तव्य परायण एवं उदार सेवाभावी सज्जन प्रकृति का बन सके। पर आज तो उसे मनुष्य मनुष्य के बीच खड़ी की गई दीवार के रूप में हीं देखा जा सकता है। विभिन्न धर्मानुयायी अनुभव करते हैं कि उन्हीं का मत सही है केवल वे ही धार्मिक हैं और उन्हीं का धर्म मुक्ति या शान्ति दे सकता है। "अपना सही दूसरों का गलत" वाले पक्षपात ने नीर क्षीर विवेक की बुद्धि समाप्त करदी और पक्षपात का भूत सवार हो गया। परिणाम यह हुआ कि लोग अन्य धर्मावलम्बियों को पापी समझकर उन्हें मारने मिटाने में पुण्य समझने लगे। इस प्रकार धर्म के आधार पर जहाँ प्रेम, एकता और सेवा भावनाऐं बढनी चाहिए थी वहाँ घृणा, द्वेष, उत्पीड़न और अनाचार की बढ़ोतरी हुई। हमें ईश्वर और धर्म के इस विकृत स्वरूप को बदलना होगा और तत्सम्बन्धी मान्यताओं को प्राचीन काल की तरह पुनः उसी स्तर की बनाना पड़ेगा जिसमें मानवीय सद्भावना, एकता, सहयोग एवं उदारता बढ़ाने में इस तत्वज्ञान का ठीक तरह उपयोग हो सके।

आत्मा की महानता का ज्ञान हमें होना चाहिये। अपने स्तर का गौरव अक्षुण्य रखने की गरिमा सजीव रहनी चाहिये। हम कोई ऐसा कार्य न करें जिससे आत्मा का गौरव घटता हो, लज्जित होना पड़े, आत्मा धिक्कारे और लोग हमें ओछे स्तर का समझें। आत्म प्रतिष्ठा इसमें है कि हम उच्च आदर्श लेकर शानदार जीवन जियें, भलेही गरीबी या कठिनाई से घिरे दिन गुजारने पड़ें। प्रलोभनों के लिए पतन के गर्त में गिरना मनुष्यता को कलंकित करना है। आदमी की इज्जत इसमें है कि वह हर कीमत पर अपनी महानता, ऊँचाई और आदर्शवादिता की रक्षा किये रहे। विरोध दबाव या अभाव भी जिसे कर्त्तव्य पथ से विचलित न कर सकें, वही सच्चे अर्थों में मनुष्य है। मनुष्यता का गौरव बड़ी से बड़ी हानि उठाकर भी जो अक्षुण्य रख सके उसी को सच्चे अर्थों में नर-रत्न कहा जाना चाहिए।

यह मान्यताएँ हमारे आस्था केन्द्र को प्रकाश प्रदान करने केलिए सजीव बनी रहनी चाहिए। प्रलोभनों के लिये ऐसा मार्ग नहीं अपनाया जाना चाहिये जिसके लिये आत्मा धिक्कारे, सज्जनों की पंक्ति में खड़े होते समय लज्जित होना पड़े और ईश्वर के दरबार में पापों की भर्त्सना सहनी पड़े। यह उचित अनुचित का भेद करने वाली नीर-क्षीर विश्लेषिणी विवेक बुद्धि जिसकी जागृत है वस्तुतः उसी को बुद्धिमान कहना चाहिए। जो औचित्य की अपेक्षा इसलिये करती है कि अनुचित मार्ग पर चलने से जल्दी और अधिक लाभ कमाया जा सकता है—उसे मस्तिष्क पिशाचिनी ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहना चाहिए। उसे बुद्धि की संज्ञा देना असंगत है। बुद्धिमान वह नहीं जिसने अनीति अपनाई और मनुष्य जन्म जैसे सौभाग्य को नष्ट भ्रष्ट कर डाला उसे धूर्त भर कहा जा सकता है। धूर्तता को बुद्धिमत्ता की संज्ञा नहीं दी जा सकती।

मनुष्य वह है जिसमें मानवता के सम्मानित करने वाले गुण, कर्म, स्वभाव का बाहुल्य है। ईमानदारी और सचाई जिसकी जीवन नीति है—जो छल-कपट से दूर रह कर सीधा सरल और स्वच्छ जीवन जीता है, जिसे अपने पसीने की कमाई पर्याप्त और सन्तोषप्रद लगती है—जिसमें धैर्य, साहस, सन्तुलन, शौर्य और विवेक की समुचित मात्रा मौजूद है उसी को खरा व्यक्तित्व कहना चाहिए। जिसे न डरने की आदत है न डराने की। जो हँसने का अभ्यासी है और रोते को हँसाने की कला जानता है उसे मनुष्य कह सकते हैं। जिसका अन्तःकरण उदारता, सरलता, करुणा, ममता और सज्जनता से लबालब भरा रहता है, उसी में मानव जन्म के साथ-साथ मानव हृदय भी पाया समझा जाना चाहिए।

स्वच्छता, नियमितता, व्यवस्था, स्फूर्ति, उत्साह, श्रमशीलता जैसे सद्गुण व्यक्ति की प्रतिभा को निखारते हैं। सादगी, मितव्ययता, सज्जनता, नम्रता, शिष्टाचार और भलमनसाहत जिसके स्वभाव में सम्मिलित हो जाय समझना चाहिए कि मनुष्य की गरिमा को सार्थक बनाने की चेष्टा हो रही है। इसके विपरीत अगणित दोष-दुर्गुणों से भरे घृणित व्यक्तियों का जहाँ बाहुल्य होगा वहाँ प्रत्यक्ष नरक देखा जा सकेगा। जिनसे व्यक्ति का गौरव गिरता हो, ओछापन प्रकट होता है और कुसंस्कारी गतिविधियाँ दीख पड़ती हैं—ऐसी बुरी आदतें मनुष्यता के नाम पर कलङ्क ही लगा सकती हैं। जिस विचारधारा और रीति-नीत के कारण व्यक्तित्वों का स्तर निम्नकोटि का बनता हो उनका विरोध और उन्मूलन ही किया जाना उचित है।

मनुष्यता की सार्थकता इस बात में है कि उसे हर दृष्टि से हर क्षेत्र में प्रामाणिक माना जाय। जो कहे वह सच निकले. जो वायदा करे उसे निबाहे, भीतर और बाहर की वचन और कर्म की स्थिति में अन्तर जहाँ नहीं दीख पड़े समझना चाहिये वहीं मनुष्यता जीवित है। हमें ऐसे ही व्यक्तित्वों का निर्माण करना चाहिये।

धन की जरूरत जीवन निर्वाह के लिए है—इस दृष्टि से उसे कमाया तो जाय पर उसके लिए इतना न ललचाया जाय कि सारा समय उसी के लिये खर्च हो जाय, जीवन लक्ष्य-पूरा करने के लिये अवकाश ही न मिले। लालच ऐसा भी न हो कि नीति-अनीति का उचित-अनुचित का भेद छोड़कर किसी भी तरीके से पैसा इकट्ठा किया जाने लगे। कुटुम्ब कम बढ़ाया जाय। जिन आश्रितों का उत्तरदायित्व कन्धों पर है उन्हें अपनी सामर्थ्य के अनुसार सुविकसित, सुसंस्कृत एवं स्वावलम्बी बनाने का प्रयत्न तो किया जाय पर यह न सोचा जाय कि इनके लिये सात पुश्त तक बैठकर खाने के साधन छोड़कर मरा जाय। अपने और परिवार के उचित निर्वाह के उपरान्त बचा हुआ धन निश्चित रूप से समाज की सम्पत्ति है। उस पर पिछड़े हुए दुःखी और अज्ञान ग्रस्त लोगों का हक है। समर्थ व्यक्ति असमर्थों का ध्यान रखना भूल जाँय तो अमीर और गरीब की खाई कभी भर ही न पायेगी। मानवीय अन्तःकरण में रहने वाली करुणा,ममता, और उदारता का तकाजा यही है कि उचित आवश्यकता पूरी करने के बाद अपनी सम्पदा एवं प्रतिभा का बड़े से बड़ा अंश उन लोगों के लिये लगाया जाय जो परिस्थियों के प्रवाह में पिछड़ गये या भटक गये हैं। हम स्वयं ही ऊँचे उठें, सुखी रहें, सफल बनें इतना ही पर्याप्त नहीं—हमें अपने साथ-साथ दूसरों को साथ उठाने और बढ़ाने की बात नहीं भूलनी चाहिए।

आलस्य, प्रमाद, व्यसन एवं अस्त-व्यस्त गतिविधियों में समय और शक्तियां खर्च करने के बजाय हमें अपने समय श्रम और मनोयोग का उपयोग अपनी शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक शक्तियों के अभिवर्धन में नियोजित करना चाहिए। अमतौर से लोग पैसा कमाने भोग भोगने, शौक-मौज, गपबाजी, क्लेश-कलह आदि कार्यों में ही व्यस्त रहते हैं। न शरीर को निरोग दीर्घजीवी बनाने की बात सोचते हैं, न शिक्षा, विद्या, स्वाध्याय, सत्संग, मनन, चिन्तन आदि के साधन जुटाते है, न प्रतिभा बढ़ाते हैं न सद्गुणों का विकास करते हैं और न आत्म-बल बढ़ाने वाले परमार्थ प्रयोजनों में रुचि लेते हैं। यह नितान्त आवश्यक उपलब्धियाँ प्रायः उपेक्षित ही बनी रहती हैं और लोग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

केवल पैसा भर पाकर सन्तुष्ट रहते हैं वे नहीं जानते कि व्यक्तित्व के समग्र विकास बिना मानव जीवन वस्तुतः अधूरा अपूर्ण और अविकसित ही माना जाता है। जीवन जीने की कला हमें सीखनी चाहिए और भौतिक सम्पदाओं की तुलना में गुण, कर्म, स्वभाव पर अवलम्बित विभूतियों को प्रमुखता देनी चाहिए। महामानव बनने के लिये सद्गुणों की— सद्भावनाओं की विभूति सम्पदा चाहिए। मात्र धन-दौलत ही किसी के बड़प्पन का आधार नहीं बन सकती।

इन्द्रियों का असंयम, लोभ का अतिक्रमण, अहङ्कार का आवेश, निष्ठुर और उद्धत आचरण और अविवेक का आचरण मिल-जुलकर मनुष्य का स्वरूप असुर एवं पिशाच जैसा बना देते हैं। मोह, ममता में डूबा हुआ व्यक्ति दूसरों की हानि एवं पीड़ा को भूल जाता है और अपने लिये अपने के लिये बुरे से बुरा कर्म करने में नहीं झिझकता ऐसी मनोभूमि के रहते आकृति में मानव दीखने वाला व्यक्ति वस्तुतः दानव ही कहा जायगा।

जिन विचारणाओं, आदतों, मान्यताओं, परिस्थितियों अथवा परम्पराओं के कारण मनुष्यता को कलंकित करने वाले दोष दुर्गुण बढ़ने हों उन सबका उन्मूलन किया जाना चाहिए। जो कारण इन दुष्प्रवृत्तियों को बढ़ाते हैं उनका निराकरण किया जाना चाहिए। ऐसी विचारधारा से मानवीय चेतना को प्रभावित किया जाना चाहिये जो व्यक्ति में देवत्व का अभिवर्धन कर सके। हमारे चिन्तन की दिशा इसी ओर बढ़े। बारीकी से यह ढूँढ़ा जाय कि किन कारणों से मनुष्य को निकृष्ट विचार अपनाने और कुमार्ग पर चलने की प्रेरणा मिल रही है, उन सब की एक एक करके जड़ें उखाड़ने में हम जुट पड़ें और उस रिक्तता को पूर्ति उन सत्प्रवृत्तियों से करने लगें जो नर को नारायण बनाने की ओर अग्रसर करती है।

प्रगतिशील समाज का आधार और स्वरूप

व्यक्ति निर्माण के लिए हमें गुण, कर्म, स्वभाव में घुसी हुई अवाँछनीय दुष्प्रवृत्तियों को हटाना होगा। जीवन और उसके उद्देश्य को समझना होगा तथा किस आधार पर किस लिये, किस प्रकार जिया जाय इस दर्शन दृष्टि को परिष्कृत करना होगा। आज पशु और पिशाचों जैसी जीवन दृष्टि बनती चली जा रही है, चिन्तन की प्रणाली ऐसी विकृत बन चली है कि अशुद्ध और अवांछनीय तत्व ही ग्राह्य दीखते हैं। महानता का अमृत पीने की रुचि नहीं रही, निकृष्टता का विष उल्लास पूर्वक पिया जा रहा है। घिनौने जीवन क्रम में सरसता लगती है।

आदर्शवादिता के आधार पर अनुकरणीय जीवन जीने के लिए किसी में उमंग नहीं दीखती। सोचने और प्रेरणा देने वाला अन्तःकरण मानो माया मूर्छा में ग्रस्त होकर एक प्रकार से दिग्भ्रान्त ही बन गया हो, ऐसी है आज के व्यक्ति की स्थिति। इसे बदले बिना कोई रास्ता नहीं। घटिया व्यक्ति घटिया परिस्थियाँ पैदा करेंगे और उसके परिणाम दुःखदायी ही उत्पन्न होंगे। विश्व के सामने प्रस्तुत अगणित समस्यायें वस्तुतः एक ही विष बीज से उत्पन्न वल्लरियाँ हैं। मानवीय आदर्शों की मात्रा चिन्तन और कर्तृत्व में से जितनी घटती चली जायगी, वातावरण उतना ही विषाक्त होता जायगा और विपत्तियों का अन्धकार उतना ही सघन होता जायगा। आज यही हो रहा है सो परिणाम भी सामने है।

संसार को सुखी बनाने के लिए उपार्जन, चिकित्सा, शिक्षा वाहन, शिल्प, कला, विज्ञान, विनोद आदि के साधनों को बढ़ाया जाना चाहिये पर यह नहीं भूलना चाहिए कि कुबेर जैसी सम्पदा और इन्द्र जैसी सुविधा भी यदि हर व्यक्ति पीछे जुटा दी जाय तो भी भावनात्मक स्तर ऊँचा उठे बिना चैन से रहना और शान्ति से रहने देना सम्भव न हो सकेगा। चिन्तन में असुरता और कर्तृत्व में दुष्टता के अंश यदि बने ही रहे तो हर व्यक्तित्व अपने और दूसरों के लिए केवल सङ्कट ही उत्पन्न करता रहेगा। इसलिये हमें मूल बात पर ध्यान देना चाहिये। जन-मानस के भावनात्मक परिष्कार को प्राथमिकता देनी चाहिए। यह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक ही उपाय है जिसके आधार पर विश्व शान्ति की आवश्यकता पूरा कर सकना वस्तुतःसम्भव एवं सुलभ हो सकता है। युग-निर्माण योजना ने सर्व-साधारण का ध्यान इसी ओर खींचा है और ऐसे प्रयोगात्मक प्रयत्न शुरू किये हैं जिन्हें यदि बड़े साधनों में, बड़े परिणाम में आरम्भ किया जा सके तो निर्माण की सही दिशा मिल सकती है और आज की नारकीय परिस्थितियों को कल सुख शान्ति भरे वातावरण में परिवर्तित किया जा सकता है।

व्यक्ति का चिन्तन और कर्तृत्व किस आधार पर बदला जाय इसकी संक्षिप्त चर्चा पिछले लेख में की जा चुकी है। दशा यही है। जब विस्तार में जाना होगा और काम को हाथ में लेना होगा तब इसमें हेर-फेर भी किया जा सकता है आज तो हमें इतना भर जानना है कि मनुष्यता के साथ घुल गये—पशुओं और असुरता के अंशों को बहिष्कृत करना और मानवीय चेतना में देवत्व का अधिकाधिक समावेश करना विश्व निर्माण का प्रथम चरण होगा। आज या आज से हजार वर्ष बाद जब भी हमें सही दिशा मिलेगी, श्रीगणेश यहीं से करना पड़ेगा। चिन्तन को प्रभावित करने वाले समस्त स्त्रोतों को हमें अपने अधिकार में करना चाहिये अथवा अलग से उन आधारों को उच्च स्तरीय प्रेरणा देने की सामर्थ्य सम्पन्न बनाकर खड़ा करना होगा ताकि उनकी तुलना में इन दिनों लोक चेतना को कुमार्ग गामिता की ओर खींचने वाले माध्यम पिछड़ने और परास्त होने की स्थिति में चले जाँय। इस अङ्क में इन्हीं प्रयत्नों की चर्चा की जा रही है।

व्यक्ति की तरह समाज का निर्धारण निर्माण भी नये सिरे से करना होगा। पिछले अज्ञानान्धकार युग ने हमें अगणित ऐसी विकृत प्रथा परम्परायें दी हैं जिनके कारण व्यक्तियों को कुमार्गगामी और पतनोन्मुख होने के लिये विवश होना पड़ रहा है। वह ठीक है कि प्रखर व्यक्तित्व समाज को बदल सकते हैं पर यह उससे भी अधिक ठीक है कि समाज के प्रचलित ढर्रे के अनुरूप जन समूह ढलता चला जाता है। जो हो रहा है उसे देखते-देखते मनुष्य उसका अभ्यस्त हो जाता है और फिर उसे वही ढर्रा उचित एवं प्रिय लगने लगता है। तब उसका विरोध करते भी नहीं बनता। मनुष्य की प्रगति कुछ ऐसी ही है आज अनेकों अवांछनीय प्रथा परम्पराएँ हमारे समाज में प्रचलित हैं पर उनकी बुराई न तो सूझती है और न हटाने की जरूरत लगती है।

न्याय, औचित्य एवं विवेक द्वारा हमें समाज शरीर में प्रविष्ट उन तत्वों पर दृष्टि डालनी होगी जो उसे निरन्तर विषैला और खोखला करते चले जा रहे हैं। खोजने पर यह तत्व आसानी से सामने आ जाते हैं। मनुष्य मनुष्य के बीच उपस्थित की गई नीच-ऊँच की मान्यता ऐसी सामाजिक बुराई है जिसके पीछे कोई तर्क न्याय या औचित्य नहीं है। घोड़ा, गधा, बैल, हिरन आदि की तरह मनुष्य भी एक जाति है। देश, काल, प्रकृति, जल, वायु के कारण रङ्ग और आकृतियों में थोड़ा अन्तर आता है पर इससे उसकी जाति में अन्तर नहीं आता। भाषण, प्रकृति आदि के आधार पर सुविधा के लिये जाति भेद करने भी हों तो भी उनमें नीच-ऊँच ठहराये जाने का कोई कारण नहीं। दुष्ट दुश्चरित्रों को नीच और श्रेष्ठ सज्जनों को ऊंच कहा जाय यहां तक तो बात समझ में आती है पर देश विशेष में पैदा होने के कारण किसी को नीच किसी को ऊँच माना जाय यह मान्यता सर्वथा अन्याय मूलक है। इससे नीच समझे जाने वाले वर्गों का स्वाभिमान गिरता और प्रगति के स्वाभाविक अधिकारों से उन्हें वंचित रहना पड़ता है। कुछ लोग अकारण अपने को ऊँच मानने का अहङ्कार करते हैं।

अपने देश में यह जन्म जाति के साथ जुड़ी हुई ऊँच-नीच की मान्यता अविवेक के अन्तिम चरण तक पहुँच चुकी है। एक जाति के अन्तर्गत भी उपजातियों के भेद से लोग परस्पर ऊँच-नीच का भेद करते हैं। अछूत कहे जाने वाले लोग भी अपनी जनजातियों में ऊँच-नीच का अन्तर मानते हैं। इस मान्यता ने सारे समाज को विसंगठित कर दिया। नारङ्गी बाहर से एक दीखती है भीतर से उसमें फाँकों में से फाँके निकलती चली जाती हैं, इसी प्रकार एक भारतीय समाज कहने भर को एक है वस्तुतः यह जाति भेद ऊँचा नीचा अन्तर के कारण हजारों लाखों टुकड़ों में बँटा हुआ विशृङ्खलित समाज है। ऐसे लोग कभी सङ्गठित नहीं हो सकते जहाँ संगठन न होगा वहां न समर्थता दिखाई देगी न प्रगति की व्यवस्था बनेगी।

इस सामाजिक अन्याय का फल है कि नीच समझे जाने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाले लोग तेजी से हिन्दू धर्म छोड़ते चले जा रहे है और खुशी-खुशी विधर्मी बन रहे हैं। यही स्थिति रही तो छोटी कही जाने वाली तिरस्कृत जाति के लोग विधर्मी बन जायेंगे और अगले दिनों अपने देश में ही सवर्ण हिन्दू अल्प मत में होकर रहेंगे। अथवा पाकिस्तान, नागालैण्ड जैसे टुकड़े कटते चले जायेंगे। समय रहते हमें जन्म जाति के आधार पर प्रतिपादित की जाने वाली नीच-ऊँच की मान्यता के दुष्परिणामों को समझना चाहिए और उसके उन्मूलन का प्रबल प्रयत्न करना चाहिये।

स्त्रियों की पराधीनता अपने समाज का दूसरा अभिशाप है। नारी के रूप में आधी जनसंख्या आज पर्दा प्रथा जैसी कुरीतियों ने अपग बनाकर रख दी है। संसार में सर्वत्र नारी नर के साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर काम कर रही है और अपने समाज को ऊँचा उठाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। एक हम हैं जो नारी को कैदी बनाकर उसे छोटे घरोंदो में कैद किये हुये हैं और मानवोचित सामान्य जीवन जीने में अगणित प्रतिबंध प्रस्तुत कर रहे हैं। शिक्षा, स्वावलम्बन, स्वास्थ्य, अनुभव सभी दृष्टि से भारतीय नारी पिछड़ी हुई हैं। इस दुर्दशा का कारण पुरुषों द्वारा नारी के प्रति अपनाया गया अनुदार एवं अनीति मूलक दृष्टिकोण ही है। इस मान्यता ने राष्ट्र की आधी शक्ति नष्ट कर दी। आज की नारी जो नर के ऊपर भार बनी हुई है, असहाय स्थिति आने पर जो विवशता के आँसू भर बहाकर रह जाती है, यदि पुरुष की तरह सक्षम रही होती तो उसने अपनी अपने परिवार की और समाज की प्रगति में आशाजनक योगदान दिया होता और आज हम इस गिरी स्थिति में पड़े रहने की अपेक्षा न जाने कहाँ से कहाँ पहुँचे होते। नारी को दूसरे दर्जे का नागरिक, पद-दलित, असहाय–प्राणी नहीं रहने दिया जा सकता। उसे मानवीय अधिकार दिलाने के लिये हमें प्रतिगामी रूढ़िवादिता से डटकर मोर्चा लेना पड़ेगा।

अपने समाज में विवाह शादी करने का उत्सव आयोजन एक 'उन्माद' का रूप धारण कर चुका है। देन दहेज की बढ़ी चढ़ी माँग—जाँच और खर्चीली आडम्बरों से भरी विडम्बना आज मँहगाई के युग में भारतीय जीवन पर एक भयङ्कर विपत्ति की तरह छाई हुई है। क्या लड़की क्या लड़का, दोनों के ही विवाहों में दोनों पक्षों को इतना पैसा बर्बाद करना पड़ता है कि उसकी आर्थिक कमर ही टूट जाती है। पैसे के बिना शादी नहीं होती। शादी जरूरी है इस मँहगाई के युग में ईमानदारी से पैसा जुड़ना नहीं। बेईमानी ही एकमात्र तरीका शादियों के लिये पैसा जुटाने का रह जाता है। जो ऐसा नहीं कर सकते उन्हें कर्जदार या दाने-दाने को मुँहताज बनना पड़ता है। अपने समाज पर जो गरीबी और बेईमानी की नीयत बुरी तरह छाई हुई है उसका बहुत बड़ा कारण विवाह शादियों में होने वाला अन्धाधुन्ध खर्च है। यदि यह न होता तो अब तक अपना देश अमेरिका की तरह सम्पन्न हो गया होता। पर इस दुर्भाग्य को क्या कहा जाय जो हमारे सामाजिक जीवन में जड़ जमाकर बैठ गया है और टलने का नाम नहीं लेता। हमें संसार के अन्य सभ्य देशों की तरह विवाह शादियों को एक छोटे सादे, बिना खर्च के पारिवारिक उत्सव के रूप में सीमित करना पड़ेगा और जो धन्धेखोरी, फिजूलखर्ची भरी बेवकूफी चारों तरफ उछलती फिरती है उसे तोड़-मरोड़ कर काबू में करना होगा।

अपने समाज में फैली हुई मूढ़ताओं का अन्त नहीं मृतक भोज, पशुबलि, भूत-पलीत जादू टोना, फलित ज्योतिष, उद्भिज देवी-देवता, पीर फकीर आदि के माध्यम से जन-साधारण की कितनी शक्ति सामर्थ्य नष्ट होती है, और कितने भ्रम जंजाल गले पड़ते हैं, इनका लेखा-जोखा लिया जाय तो पता चलेगा कि इन छोटे-छोटे छेदों में से भी अपनी कितनी उपयोगी शक्ति बर्बाद होती चली जाती है। इसे बचाकर सृजनात्मक दिशा में नियोजित किया जा सकता तो पतन रुकता और उत्थान की दिशा मिलती।

काम करने वाले को छोटा मानना और हरामी को बड़ा मानना, श्रम से घृणा करना अपने समाज का एक ऐसा दोष है जिसके कारण उत्पादन घटता जाता है और आलस्य बढ़ रहा है देहाती लड़के पढ़-लिखकर शहरों में क्लर्की करने भागते हैं, कष्ट के साथ किसानी का कड़ा काम नहीं करना चाहते। धोबी, भंगी, मोची, चमार आदि श्रम जीवियों को जब सामाजिक जीवन में नीच माना जाता है तो उनके लड़के उन कामों को क्यों करेंगे और दूसरे सम्मान के धन्धे क्यों न अपनायेंगे? ढलती उम्र के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लोग, यदि लड़के कमाने लगें तो काम धन्धा करना इसलिये छोड़ देते हैं कि उन्हें-आराम के दिन काटने वाले को मिलने वाला सम्मान मिलने लगे। सन्त, महन्त, सेठ, साहूकार, राजा, रईस अपना बड़प्पन प्रदर्शित करने के लिये ही काम से हाथ नहीं लगाते। बड़े घरों की महिलाएँ हाथ से खाना बनाने, बर्तन साफ करने, झाड़ू लगाने, कपड़े धोने जैसे कामों के लिये भी नौकरों पर आश्रित रहती हैं। इसी में उन्हें अपना गौरव लगता है। हरामखोरी में बड़प्पन देखने की यह आदत हमारी समर्थता के लिये अभिशाप ही सिद्ध हो रही है। संसार के प्रगतिशील देशों और समाजों ने कठोर श्रम द्वारा ही उन्नति की है। अपने देश में भी हमें हरामखोरी का ढर्रा बदल कर कठोर श्रम का सम्मान स्थापित करना पड़ेगा। आलस्य को जन-जीवन में से जब तक बहिष्कृत न किया जायेगा, सम्पन्नता, शिक्षा, स्वस्थता, समर्थता जैसी विभूतियों का लाभ हम उठा न सकेंगे।

स्वच्छता, समय की पाबन्दी, व्यवस्था, सतर्कता, व्यक्तिगत गुण हैं। इन्हें सामाजिक मान्यता मिलनी चाहिए। हर सामाजिक प्रक्रिया में इन प्रवृत्तियों को प्रमुखता मिलनी चाहिए ताकि व्यक्तियों को अपनी रीति-नीति तदनुरूप ढालने के लिये विवश होना पड़े। दफ्तरों से लेकर विश्राम ग्रहों तक हर जगह समय पर काम हो सनय चूकने वाले अपने प्रमाद का समुचित दण्ड पायें ताकि वे बार-बार वैसी भूल न करें। गन्दगी और अव्यवस्था चाहे वह घरों में हो या सार्वजनिक स्थानों पर, व्यक्ति की दृष्टि में खटके और हर देखने वाले उसे हटाने का प्रयत्न करें। भीड़ लगाने के स्थान पर हर काम में लाइन लग कर काम करने का अपना स्वभाव बन जाय। जिसने जिस समय जिस काम को करने का वायदा किया है वह सामर्थ्य भर उस वचन की पाबन्दी का ध्यान रखे ताकि किसी का समय बर्बाद न होने पावे। समय की बर्बादी को धन बर्बाद करने जैसा ही अनुचित माना जाय। प्रगतिशील वर्गों जैसे यह सद्गुण अपनी सामाजिकता के भी अङ्ग बनने चाहिए।

एक दूसरे के प्रति शिष्ट, मधुर और सम्मानजनक व्यवहार करें। नम्रता और सज्जनता से भरा उत्तर दें। सहानुभूति, सद्भावना, शालीनता और उदारता का वैसा पुट हर किसी के व्यवहार में इतना जुड़ा रहे कि उसे सभ्य एवं सज्जनोचित कहा जा सके। अधिक पारिश्रमिक या लाभ भले ही लिया जाय पर तौल-नाप में कमी करने, मिलावट, असली कहकर नकली देने जैसी मनुष्यता को कलङ्कित करने वाली धूर्तताएँ न बरती जाँय। हर वस्तु के मूल्य निर्धारित रहें जिसमें घटा बढ़ी का मोल भाव करने की गुंजायश न रहे। ऐसे चोरों चाण्डालों को घृणित समझा जाय और ऐसे आचरण वाले अस्पर्श जैसे तिरस्कृत किये जाने लगें। व्यक्ति अपनी प्रतिभा और योग्यता के आधार पर कमाये, आगे बढ़े तभी उसे सामाजिक सम्मान मिले। अवाँछनीय तरीके अपनाकर लाभ उठाने वाले न केवल कानून से दण्डित किये जाँय वरन् समाज में भी उन्हें हर जगह घृणा, तिरस्कार और असहयोग का ही सामना करना पड़े। ऐसी सामाजिक रीति-नीति, प्रथा परम्परा हमें विकसित करनी चाहिए।

धन का मान घटाया जाय और मनुष्य का मूल्याङ्कन उसके उच्च चरित्र एवम् लोक-मंगल के लिये प्रस्तुत किये त्याग, बलिदान के आधार पर किया जाय। किसी को सम्मान इसी आधार पर मिले। कोई व्यक्ति कितना ही धनी क्यों न हो इस कारण सम्मान प्राप्त न कर सके कि वह दौलत का अधिपति है। उचित तो यह है कि ऐसे लोगों का मूल्य और सम्मान—लोक-सेवियों की तुलना में बहुत घटाकर रखा जाय। धन के कारण सम्मान मिलने से लोग अधिक अमीर बनने और किसी भी उपाय से पैसा कमाने को प्रेरित होते हैं। यदि धन का सम्मान गिर जाय, संग्रह को कंजूसी और स्वार्थ परता का प्रतीक मानकर तिरस्कृत किया जाय तो फिर लोग धन के पीछे पागल फिरने की अपेक्षा—सामाजिक सम्मान प्राप्त करने के लिए सत्कर्मों की ओर प्रवृत्त होने लगेंगे।

सादगी को सराहा जाय और उद्धत वेशभूषा एवम् भड़कीली शृंगार सज्जा एवम् चित्र-विचित्र बनावट को ओछेपन का प्रतीक माना जाय और जो बचकानी शृङ्गारिकता, भोंड़ी फैशन, परस्ती अर्ध नग्न हिप्पी साज सज्जा पनपी है उसे तिरस्कृत किया जाना चाहिए। इससे खर्चीली एवम् भौंड़ी कुरुचि को प्रश्रय न मिलेगा। शालीनता और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सादगी ही सराही जाय तो निस्सदेह शालीनता का गिरता हुआ स्तर फिर उठने लगेगा ।

केवल सत्वृत्तियाँ सराही जायें, उन्हीं की चर्चा की जाये और उन्हें ही सम्मानित किया जाय । घृणित कर्म करने वाले, उद्धत और दुष्ट किसी की सहानुभूति प्राप्त न कर सकें । उनकी कोई सहायता न करे । बुराइयों का समर्थन और सहयोग परोक्ष रूप से करना भी एक सामाजिक अपराध माना जाय और ऐसे लोग भी अनैतिक अपराधियों की श्रेणी में गिने जाने लगें । समाज में सज्जनता को मान्यता इतनी प्रखर हो तो दुष्टता की आतङ्कवादी रीति-नीति अपनाने का कोई साहस ही न कर सके । धन का अनावश्यक एकत्रीकरण अनेक दुष्प्रवृत्तिओं का जनक है । व्यसन, व्यभिचार, उद्धत आचरण, फिजूल खर्ची, हराम खोरी जैसी प्रवृत्तियाँ वहाँ पनपेंगी और उनका बुरा प्रभाव हजारों पर पड़ेगा । दूसरे लोग वैसी अय्याशी के लिये लालायित होंगे और अनुचित तरीकों से धन कमाना चाहेंगे । ईर्ष्या, द्वेष और अपराधी प्रवृत्ति को अमीरी ही जन्म देती है । इसलिये जो अधिक कमा सकते हैं उन्हें संग्रही नहीं बनना चाहिये उस उपार्जन को लोक मंगल के लिये वापस करके अपनी गरिमा सिद्ध करनी चाहिए । सामाजिक कानून और दबाव इस आधार पर विकसित रहें कि धन का संग्रह और दुरुपयोग कर सकना किसी के लिये सम्भव न रहे । आर्थिक विषमता समाज की जड़ें खोखली करती है इसलिये अमीर और गरीब का अन्तर मिटाने वाली सामाजिक परिस्थितियाँ ही हमें उत्पन्न करनी चाहिए । इसके लिये दान और परमार्थ और हर सामर्थ्यवान् को अधिकाधिक सम्मान रखने के लिये विवश किया जाय ।

सहकारिता के आधार पर परस्पर सहयोग से चलने वाले उद्योग धन्धे, व्यवसाय एवं सार्वजनिक कार्यों को अधिकाधिक प्रोत्साहन मिलना चाहिए । संगठन, सामूहिकता, एकता, कौटुम्बिकता और मिल-जुलकर रहने की अभिरुचि जितनी अधिक विकसित होगी, समाज की समर्थता, सभ्यता उसी क्रम से बढ़ती जायगी । आज इन स्वस्थ परम्पराओं का भारी अभाव है हमें समाज का नया निर्माण करने के लिये प्रचलित अवांछनीय प्रथाओं के विरुद्ध विरोध, संघर्ष का झंडा खड़ा करना पड़ेगा और स्वस्थ परम्पराओं को प्रतिष्ठापित करने का भागीरथी प्रयत्न करना पड़ेगा तभी हम अपने समाज को देवोपम और सुख-शाँति का केन्द्र बिन्दु बना सकने में समर्थ हो सकेंगे ।

—✱—

प्रतिभायें नव निर्माण के लिये आगे आयें

पिछले हजार वर्षों से जिस अज्ञानान्धकार युग में हमें रहना पड़ा है उसके फलस्वरूप हमारे चिन्तन की दिशा में विकृतियों की मात्रा इतनी बढ़ गई है कि प्रगति के लिए किये गये सभी प्रयत्न उलटे पड़ते हैं । सुधार और प्रगति की योजनायें चारित्रिक दुर्बलता से टकरा कर निष्फल हो जाती हैं । कारण की तह तक हमें जाना होगा और भावनात्मक नव निर्माण के लिये एक ऐसा प्रचण्ड अभियान चलाना होगा जो जन मानस को चरित्र निष्ठा, आदर्श वादिता—मानवीय सद्भावना—प्रचण्ड कर्मठता और औचित्य को अपने की साहसिकता से ओत-प्रोत करदे । इस अभियान आन्दोलन को जितनी सफलता मिलती जायेगी उसी क्रम से प्रगति का पथ प्रशस्त होता चला जायेगा ।

इस सन्दर्भ में क्या किया जाना चाहिए, युग-निर्माण योजना इसी तथ्य से सर्व साधारण को परिचित करा रही है । व्यक्ति का आदर्श और समाज का स्वरूप कैसा हो, इसकी अपनी कल्पना स्पष्ट है । उस स्थिति को प्राप्त करने के लिये नैतिक—बौद्धिक और सामाजिक क्रान्ति की त्रिविध कार्य पद्धति से युक्त अपना अभियान चल रहा है । ज्ञान यज्ञ, लोक सेवियों का संगठन, शिक्षा विस्तार, कला परिष्कार, रचनात्मक कार्य, संघर्षात्मक आन्दोलन की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रक्रिया कार्यान्वित की जा रही है । इस व्यापक आन्दोलन के साधन कैसे इकट्ठे किये जायें इसके लिए धर्मतन्त्र के वर्तमान स्वरूप का परिवर्तन, शासन सत्ता का उपयोग, जन साधारण में लोक मंगल के प्रति उत्साह का उद्भव इन तीन साधनों की चर्चा पिछले पृष्ठों पर की जा चुकी है । इसके अतिरिक्त धन शक्ति और जन शक्ति के शक्ति स्त्रोतों को इस पुण्य प्रयोजन में नियोजित करने की एक बात और रह जाती है जिसके बिना नव-निर्माण के प्रयोग सफल होने में बहुत विलम्ब लगा लेंगे ।

हमें जन मानस में प्रबल प्रचार द्वारा यह बात बिठा देनी चाहिए कि मानव जीवन का श्रेष्ठतम सदुपयोग लोक मानस के परिष्कार में अधिकाधिक प्रयत्न पुरुषार्थ—त्याग बलिदान करना ही हो सकता है । कई व्यक्ति ईश्वर भक्ति और साधना उपासना में जीवन की सार्थकता सोचते हैं । उन्हें जानना चाहिए कि विश्व मानव में व्यापक रूप से समाई हुई आत्मा का नाम ही परमात्मा है । जप तप, ध्यान, आदि का प्रयोजन अन्तःकरण को इतना निर्मल बनाता है कि दूसरों के दुःख में अपना दुःख और दूसरों के सुख में अपना सुख जुड़ा हुआ परिलक्षित होने लगे । ऐसा करुण, पवित्रता, उदारता और ममता से भरा हृदय ही ईश्वर के निवास का परमप्रिय स्थान हो सकता है । वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना अन्तरङ्ग में जमाकर स्वार्थ का परमार्थ के लिये उत्सर्ग कर देना यही पूर्णता—आत्म साक्षात्कार और ईश्वर प्राप्ति की स्थिति है । ईश्वर खुशामदी, लालची, या रिश्वतखोर आदमी का नाम नहीं । वह उदात्त भावनाओं का एक उत्कृष्ट प्रवाह मात्र है । जिसके अन्तःकरण में भी वह बहने लगे समझना चाहिए कि उसे ईश्वर प्राप्ति का लक्ष्य प्राप्त हो गया, इस उपलब्धि के लिये साधक को अपनी गति-विधियाँ लोक मंगल में नियोजित करनी चाहिए इस सन्दर्भ में सबसे श्रेष्ठ सत्कर्म की साधना जन मानस को परिष्कृत करने के प्रयत्नों द्वारा ही हो सकती है ।

कई व्यक्ति सोचते है कि धन की वृद्धि होने से लोगों के कष्ट दूर हो जायेंगे । इसलिये वे आर्थिक उन्नति के साधन खड़े करने में दत्त चित्त रहते हैं । इस प्रकार के प्रयत्न अनावश्यक हैं यह नहीं कहा जा रहा,पर इस तथ्य को जान ही लेना चाहिए कि दुर्बुद्धि के साथ बढ़ी हुई सम्पदा साँपको दूध पिलाने की तरह व्यसन, व्यभिचार, अपव्यय, विलास, अहङ्कार, दर्प, कलह आदि बढ़ाने का ही निमित्त बनती हैं । ऐसी सम्पदा ठहरती भी नहीं । बारूद की तरह जल कर देखते-देखते स्वाहा हो जाती है । सम्पदा तभी उपयोगी है जब उसके साथ सद्बुद्धि और सद्भावना भी बढ़े । धन का सदुपयोग तो ऐसी ही स्थिति में सम्भव है । सद्गुणी व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से आवश्यक उपार्जन आसानी से कर लेता है और यदि साधन थोड़े हों तो भी मितव्ययता पूर्वक काम चलाकर आनन्द और सन्तोष के साथ दिन गुजार लेता है । इसलिये धन सम्पत्ति बढ़ाने की योजनायें बनाने में भी पहले सत्प्रवृत्तियां बढ़ाने की बात सोचनी चाहिये । कईव्यक्ति राजनीति को सर्वोपरि मानते हैं और सोचते हैं कि शासन सत्ता अपने हाथ में आ जाय अथवा जो लोग शासन कर रहे हैं वे अपने अनुकूल बन जाँय तो व्यक्ति और समाज का उत्कर्ष हो सकता है । ऐसे लोगों को जानना चाहिए कि जब तक चरित्र की निष्ठा नींव मजबूत न होगी तब तक जो भी व्यक्ति सत्ता सँभालेंगे वे आदर्श हीन ओछी मनोभूमि के कारण कोई ठोस काम न कर सकेंगे । बाहर से सिद्धांतों की लम्बी चौड़ी बातें करते रहेंगे पर भीतर ही भीतर उस तरह के ताने-बाने बुनेंगे जिससे उनकी स्वार्थ साधना सम्भव हो सके । गुटबाजी और गिरोह बन्दी खूब चलती है । उसका प्रभाव सरकारी मशीन पर पड़े बिना नहीं रहता और भ्रष्टाचार आकाश-पाताल को छूने लगता है । प्रश्न दल या वाद का नहीं—नीयत का है । नीयत ऊँची हो तो कोइ भी दल—कोई भी वाद समाज को ऊँचा उठा सकता है और यदि नीयत सावधान न हो तो ऊँचे से ऊँचे वाद को आज भी लोग नीच से नीच कर्म करते देख सकते हैं । बोटर से लेकर अफसरों तक और नेताओं से लेकर नीति निर्धारिकों तक जब तक आदर्श वादिता पर ईमान न लावेंगे तब तक किसी न किसी बहाने सङ्कट ही उत्पन्न किये जाते रहेंगे । एक समस्या सुलझने न पावेगी कि दूसरी खड़ी हो जायेगी आज देश के सामने जितनी समस्यायें हैं उनमें से तीन चौथाई शासकों की आपा-धापी के कारण उत्पन्न हुई हैं । यदि आस्थायें उत्कृष्ट न बनाई जा सकीं तो किसी भी पार्टी का—किसी भी दल का—किसी भी वाद का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शासन हो जाये स्थिति वद से बदतर होती चली जायगी। भावनायें ऊँची हों तो बदनाम राजतन्त्र तक आदर्श हो सकता है। रामराज्य—में राजतन्त्र ही था जिसकी गरिमा गाते हुए हम थकते नहीं हैं। दूसरी ओर आज के पाकिस्तानी प्रजातन्त्र और साम्यवादी चीन की करतूतें हम आँखों सामने देख रहे हैं।

अमुक धर्म वाले लोगों का शासन हो जाने से संसार मे सुख-शान्ति हो सकती है यह सोचना भी व्यर्थ है। योरोप में इस शताब्दी के दोनों महायुद्ध ईसाई धर्मावलम्बियों के बीच ही हुए हैं। भारत में आल्हा ऊदल की सामन्ती लड़ाइयाँ हिन्दू हिन्दू के बीच थीं। देवता और असुर दोनों हिन्दू धर्मानुयायी थे। इन दिनों जोर्डन,सीरिया में खून खराबी चल रही है दोनों ही मुस्लिम देश हैं। इतिहास बताता है कि किसी भी धर्म का लेविल मानवीय श्रेष्ठताकी गारन्टी नहीं हो सकता। आन्तरिक महानता जीवित हो तो धर्म सम्प्रदाय का भेद मानवीय प्रेम, सहयोग और शान्ति प्राप्ति के मार्ग में तनिक भी बाधक नहीं हो सकता।

इन तथ्यों पर गहराई से विचार करने के बाद यह भ्रम आसानी से दूर हो सकता है कि आर्थिक उन्नति, राज सत्ता, सम्प्रदाय अभिवर्धन आदि माध्यमों से प्रस्तुत विषमताओं तथा विभीषिका को दूर किया जा सकता है। हमारा चिन्तन जितना गहरा होगा उतना ही स्पष्ट निष्कर्ष यह सामने आयेगा कि भावात्मक परिष्कार ही वह अमोघ उपाय है जिसके द्वारा समस्त विभीषिकाओं का चिरस्थायी समाधान निकल सकता है। व्यक्तिगत जीवन की सफलता के लिये जिस आस्तिकता, धार्मिकता एवं साधना का प्रतिपादन किया जाता है उसकी सार्थकता एवं सफलता हमारी उत्कृष्ट मनोभूमि पर ही अवलम्बित है। घृणित विचारणा और कार्य पद्धति अपनाये हुए मनुष्य कितने ही धर्मानुष्ठान करता रहे उसे आत्मिक प्रगति की दिशा में एक कदम भी आगे बढ़ने का अवसर न मिल सकेगा।

यह चिन्तन हर विवेकवान व्यक्ति को इस निष्कर्ष पर पहुंचा सकता है कि उसे परमार्थ प्रयोजन के लिये भावनात्मक नव निर्माण के आन्दोलन में एकनिष्ठ भाव से लग जाना चाहिए। आत्म-कल्याण और विश्व मंगल के लिए इससे बढ़कर और कोई उपयुक्त मार्ग हो नहीं सकता। जिनकी मनोभूमि पशु परिधि की है, जो पेट और प्रजनन के अतिरिक्त तीसरी बात सोच समझ ही नहीं सकते उनसे कुछ कहना नहीं, इसी प्रकार जिनकी क्षमता अति स्वल्प और परिवार अति विस्तृत है उनको भी निर्वाह से आगे की बात सोच सकना कठिन है। ऐसे लोग भले मानस की तरह स्वयं जी लें इतना ही पर्याप्त है। उनसे अधिक आशा कैसे की जाय ? पर सभी लोग ऐसे नहीं होते। बहुत लोग ऐसे हैं जिनके मन में देश, धर्म, समाज, संस्कृति, लोक, परलोक, जीवन, लक्ष्य, धर्म, कर्त्तव्य, आत्मा परमात्मा जैसे स्तर के विचार उठते हैं और आदर्शवादिता की भावनायें हिलोर लेती हैं। ऐसे लोगों से अनुरोध है कि वे निर्वाह की समस्या को औसत भारतीय जैसी सादगी के साथ सुलझाने में सन्तुष्ट हो जायें। अमीरी, बड़प्पन, शेखीखोरी, अहंता और अय्याशी की कल्पनाओं के घोड़े से नीचे उतर आवें। शरीर यात्रा की व्यवस्था जुटाने तक ही सीमित रहें और बची हुई क्षमता, योग्यता, प्रतिभा एवं सम्पदा को लोक मंगल के लिये नियोजित करने की बात सोचें।

महा मानवों का—दूरदर्शिओं का—बुद्धिमानों का यही रास्ता है। इस स्तर की गतिविधियाँ अपनाकर ही कोई व्यक्ति मानव जीवन को सार्थक बना सकता है। आत्म सन्तोष और आत्म कल्याण पा सकता है और ईश्वर ने अमानत रूप जो प्रतिभा दी है, उसे परमार्थ प्रयोजन में नियोजित कर असंख्य आत्माओं को कल्याण पथ पर अग्रसर कर सकता है। संसार में व्याप्त कष्टों और संकटों का निवारण करना भी ऐसे ही आदर्शवाद अपनाने वाले लोगों के द्वारा सम्भव होता है।

हमें यह समझ लेना चाहिए कि अगले दिन आर्थिक समता लेकर आ रहे हैं। संसार में धर्म, समाज आदि का स्वरूप जो भी रहे पर आर्थिक समता निश्चित रूप से आकर रहेगी। अगले तीस वर्ष के भीतर संसार में एक भी व्यक्ति अमीर न रह जायेगा। पैसा बँट जायगा, पूँजी पर समाज का नियन्त्रण होगा और लोग केवल अपने निर्वाह मात्र के अर्थ साधन उपलब्ध कर सकेंगे। राजे रईस जिस तरह समाप्त हो गये हमने आँखों देख लिया अब यह भी इन्हीं आँखों से देखने को तैयार रहना चाहिए कि कोई व्यक्ति अमीरी न रख सकेगा, बेटे, पोतों के लिये दौलत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

छोड़ मरना किसी के लिए भी सम्भव न होगा। अन्य दार्शनिक बातों में भले ही साम्यवाद स्वीकार न किया जाय पर आर्थिक क्षेत्र में सारी दुनिया साम्यवादी सिद्धान्तों के ढाँचे में ढल जायगी।

ऐसी सम्भावनाओं के रहते अपना बहुमूल्य समय दौलत जमा करने में बर्बाद करना परले सिरे की मूर्खता ही सिद्ध हो सकती है। नीति अनीति से कमाया जाया और वह फिर बेरहमी से छिन जाय तो रोने कलपने के अतिरिक्त उस विडम्बना से और क्या हाथ लगने वाला है। अस्तु उचित यही है कि हर विवेकवान दूरदर्शी व्यक्ति निर्वाह के स्वल्प साधनों की व्यवस्था बनाकर उतने भर से सन्तुष्ट हो रहे और समय से लेकर प्रतिभा तक—आकांक्षाओं से लेकर सम्पदा तक जो कुछ भी साधन सामिग्री पास है, उसका अधिकाधिक अंश लोक मंगल के लिये देकर-जन मानस के परिष्कार के लिए—पूरी श्रद्धा और तत्परता के साथ जुट जाये।

आज लोभ और स्वार्थ की—अहंता और ममता की हवा बह रही है पर यह हवा मात्र है। कुछ अग्रगामी लोग आगे आयें तो दूसरी तरफ की हवा भी चला सकते हैं। बुद्ध के अनुयायियों ने उत्सर्ग की हवा बहाई तो लाखों युवक युवती यौवन और वैभव का सुख छोड़ परमार्थ प्रयोजन के लिए भिक्षु भिक्षुणी का कष्ट साध्य जीवन जीने के लिए तत्पर हो गये। गान्धी की आँख चली तो आवश्यक कामों और रंगीन सपनों को पैरों तले कुचलते हुए लाखों मनस्वी जेल यातनाऐं और फाँसी, गोली खाने के लिये चल पड़े। हवा स्वार्थ की भी हो सकती है परमार्थ की भी। स्वार्थ के कोल्हू में जिस बुरी तरह पिलाई पिसाई होती है, परमार्थ की रीति—नीति उससे कुछ सरल, सस्ती ही पड़ती है। लोग समझते भर हैं कि वे संकीर्ण स्वार्थ सिद्धि में लगे हुए सुखी हैं, वस्तुतः परमार्थ के लिए उतना श्रम किया जाय और कष्ट सहा जाय तो व्यक्ति सौगुना अधिक सन्तोष और गर्व गौरव प्राप्त कर सकता है। सोचने का ढर्रा भर ही है, जो मनुष्य की गति-विधियों को जकड़े बैठा रहता है यदि उस ढर्रे में आदर्शवादिता का थोड़ा सा पुट जुड़ जाय तो मनुष्य बाल्मीकि डाकू से सन्त बाल्मीकि बनने की प्रक्रिया मिनटों में चरितार्थ करके रख दे। हमें ऐसा ही वातावरण पैदा करना चाहिए कि विवेकशील लोग संकीर्ण स्वार्थपरता की जंजीरें तोड़कर लोक मंगल के परमार्थ प्रयोजन अपनाते हुए दिखाई देने लगें।

नव निर्माण के लिये विवेकशील प्रतिभाओं की बड़ी संख्या में आवश्यकता पड़ेगी। इस अभाव की पूर्ति हमें साहसिक आदर्शवादिता की प्रेरणा को प्रखर बनाकर करना चाहिए। अपने परिवार के हर व्यक्ति को एक घण्टा समय और दस पैसा ज्ञान यज्ञ के लिये नियमित रूप से देने की प्रेरणा देकर हम लोक मानस में इसी सत्प्रवृत्ति के बीज बो रहे हैं। जब यह अंकुरित होंगे—फलेंगे फूलेंगे तो एक से एक बढ़कर प्रखर व्यक्तित्व युग की चुनौती स्वीकार करने के लिये उत्सर्ग के पथ पर अग्रसर होते दिखाई पड़ेंगे। ढलती आयु के लोगों को बड़े बच्चे स्वावलम्बी बनाने और छोटे बच्चे उनके जिम्मे छोड़कर वानप्रस्थ की धर्म परम्परा अंगीकार करनी चाहिए। सादा जीवन जिये और थोड़ी देख-भाल घरकी करें और शेष समय समाज सेवा के लिए लगायें यही वानप्रस्थ परम्परा है यदि यह फिर सजीव हो उठे तो समाज को लाखों अनुभवी और परिपक्व बुद्धि के प्रभावशाली कार्यकर्त्ता अवैतनिक रूप से मिल सकते हैं और नव निर्माण की आवश्यकता पूर्ति में भारी सहायता मिल सकती है।

जिनके पास इतनी संचित सम्पत्ति है कि उसके व्याज भाड़े से काम चल सकता हो उन्हें अधिक उपार्जन का लालच छोड़कर परमार्थ प्रयोजन में ही लगना चाहिए। पेन्शनर प्रोवीडेण्ट फण्ड प्राप्त कर्त्ता—मकान और जमीन के मालिक इन साधनों को अपने निर्वाह में खर्च कर डालें, यह न सोचें कि जो जमा पूँजी है उसे बेटे, पोतों या सम्बन्धी रिश्तेदारों को देकर जायेंगे और मरते दम तक अपनी हड्डी घिसते रहेंगे। यह लालच और मोह किसी व्यक्ति की मनोभूमि की क्षुद्रता ही सिद्ध करेगा भले ही वह पाठ-पूजा की लकीर पीटकर अपने बारे में ऊँची बातें सोचने लगे हों। हमें अध्यात्म की विडम्बना से सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए वरन् व्यावहारिक जीवन में आध्यात्मिक आचरण का प्रयोग करना चाहिए। यह लालच और ममता को घटाने और परमार्थ प्रयोजनों में तत्पर होने से ही सम्भव हो सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिन परिवारों में कई भाई कमाते हैं वे एक भाई का खर्च मिल बाँट कर अपने जिम्मे लेलें और उसे लोक मंगल के लिए काम करने दें। नौकरी करने वाली महिलायें स्वयं घर खर्च चलायें और अपने पतियों को समाज सेवा का काम करने दें। जिन्हें अपनी वासना पर नियन्त्रण हो और जो बिना विवाह काम चला सकते हों वे लोक सेवा के लिए अपना जीवन दान करके उस झंझटसे बच सकते हैं। विवाह अनिवार्य नहीं है। जो नर-नारी उसके बिना रह सकते हों वे अपने जीवनको अधिक उपयोगी कामके लिये खर्च करने का साहस कर सकेंतो उसे प्रशंसनीय ही कहा जायगा। ऐसे भी दम्पत्ति होसकते हैं जो बच्चे पैदा न करें और दोनोंमिल कर लोक मंगल के महान् प्रयोजन में कन्धे से कन्धा मिला कर जुटे रहें। जिनकी आमदनी पर्याप्त है वे लोक सेवी कार्यकत्ताओं का निर्वाह खर्च अपने जिम्मे लेकर उन्हें सेवा करने की सुविधा दे सकते हैं। छुट्टी का दिन तथा नित्य के समय में से थोड़ा समय देकर कार्यव्यस्त लोग भी परमार्थ प्रयोजनों के लिये कुछ समय दान नियमित रूप से करते रह सकते हैं।

आज के व्यक्ति का सारा समय उचित आवश्यकताओं की पूर्ति में ही नहीं लगता, उसे तो कम समय में भी पूरा किया जा सकता है। आधे से अधिक समय तृष्णा और ममता की—अहङ्कार और विलासिता की—गपबाजी और आलस्य, प्रमाद की पूर्ति में लगता है। यदि विवेक जाग पड़े-परमार्थ प्रयोजनों की महत्ता समझ ली जाय तो समय को उस बर्बादी से बचाया जा सकता है, जो आपतौर से हर व्यक्ति करता रहता है। आठ घण्टे-रोटी कमाने के लिये, दस घण्टे शयन, विश्राम के लिये लगाये जाँय, तो कुल १८ घण्टे ही हुए। २४ घण्टे में से ६ घण्टे तब भी बचते हैं। यदि समय की उपयोगिता, महत्ता और उसकी लोक मंगल की गरिमा को समझा जाय तो उसका एक अंश परमार्थ प्रयोजनों के लिए लगाया जा सकना सहज ही सम्भव हो सकता है।

मनुष्य शक्ति का पुञ्ज है। उसकी भावना, प्रतिभा, योग्यता, चेष्टा जिस दिशा में लगेगी उसी में सफलता मूर्ति मान हो जायगी। नव निर्माण के लिए प्रतिभाशाली, भावनाशील, लोक सेवी सज्जनों का समय और सहयोग मिल सके तो निस्सन्देह यह कठिन दीखने वाला कार्य सरल और सफल बन सकता है।

—०—०—

धर्म तन्त्र की शक्ति नव निर्माण में नियोजित की जाय

व्यक्ति और समाज की भावना को व्यवस्थित और परिष्कृत रखने के लिये निस्सन्देह तद्विषयक प्रभाव श्रद्धा के अतिरिक्त विशाल जन-शक्ति और प्रचुर धन-शक्ति की आवश्यकता रहती है। शरीर को निरोग रखने के लिये जिस प्रकार आहार-विहार की सुव्यवस्था जुटाना प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है उसी प्रकार मनोबल एवं दृष्टिकोण ऊँचा बनाये रखने के लिए स्वाध्याय, सत्संग, मनन, चिन्तन आदि का प्रबन्ध रखना भी सर्व साधारण के नित्यकर्म में सम्मिलित रहना चाहिए। पर उतने मात्र से भी काम नहीं चल सकता। स्वास्थ्य रक्षाके लिये सार्वजनिक प्रयत्नों में चिकित्सा विभाग की शोध, अस्पताल, औषधि निर्माण-मेडीकल कालेज आदि कितने ही साधनों की जरूरत पड़ती है उसी तरह लोक मानस को निरोग बनाये रखने के लिये धर्म और अध्यात्म का विशालकाय ढाँचा खड़ा किया गया है।

तत्व दर्शी ऋषि जानते थे कि भीतरी और बाहरी असुरता जन साधारण को पशु प्रवृत्तियों की ओर घसीट ले जा सकती है। उस सम्भावना से बच व करने और देवत्व को सबल बनाये रखने के लिए एक समर्थ शक्ति को खड़ा किया जाना चाहिये। सारा धर्म कलेवर इसी प्रयोजन के लिए विनिर्मित हुआ है। आस्तिकता, ईश्वर उपासना के प्रति जन मानस में श्रद्धा उत्पन्न करने का मूल प्रयोजन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह है कि लोग नियामक शक्ति की न्यायशीलता और सर्व व्यापकता को ध्यान में रखें। राज दन्ड से बच जाने पर भी लोग यह स्मरण रखे रहेंकि ईश्वरके दरबारमें एकदिन जाना है और वहाँ चतुरता काम न करेगी। दुष्प्रवृत्तियों से ईश्वरकी अप्रसन्नता और सत्प्रवृत्तियों से उसकी प्रसन्नता अनुभव करने वाला व्यक्ति पापसे बचना चाहेगा और पुण्य की ओर झुकेगा। स्वर्ग-नरक, कर्मफल का प्रतिपादन करने के लिए धर्म शास्त्रों का विशाल कलेवर सृजा गया है। कथा पुराण सुनने को महत्व इसलिये दिया गया है कि उनके माध्यम से लोग औचित्य को अपनाने और अनौचित्य से बचने की प्रेरणा प्राप्त करें।

धर्म ग्रन्थों, धर्मानुष्ठानों और उपासनात्मक कर्मकाण्डों के पीछे यही मर्म छिपा पड़ा है कि उन प्रक्रियाओं के साथ जुड़ी हुई सदाचरण प्रेरणा और सद्भावनाओं को गहराई तक हृदयंगम किये रहें। विविध विधि साधनायें उपासनायें मनुष्य की आन्तरिक पवित्रता और भावनात्मक उत्कृष्टता बढ़ाने के लिये हैं। यह बढ़ोतरी ही मनुष्य को महा मानव बनाती है और स्वयं सुखी रहने तथा दूसरों को सुखी बनाने की सामर्थ्य प्रदान करती है। व्यक्ति और समाज की शान्ति, समृद्धि एवं प्रगति इन धर्म प्रेरणाओं पर निर्भर रीति-नीति के साथ जुड़ी रहती है इसलिये मनीषियों ने हर व्यक्ति को धार्मिक जीवन जीने और आस्तिकता पर श्रद्धा जमाये रहने पर बहुत बल दिया था।

इस धर्म कलेवर को गतिशील रखने के लिये साधु और ब्राह्मणों का एक बड़ा वर्ग खड़ा गया किया। कार्य की उपयोगिता अनुभव करते हुए लाखों व्यक्ति अपना जीवन इस पुनीत प्रक्रिया के लिए उत्सर्ग करने लगे। योग्यता वृद्धि के लिए स्वाध्याय, आत्मिक पवित्रता के लिए साधना यह नित्यकर्म वे आत्मबल बढ़ाने और अपनी समर्थता अक्षुण्य रखने के लिए करते थे, शेष सारा समय लोक मंगल के लिए—जन मानस का स्तर ऊँचा उठाये रखने के लिए लगाया करते थे। साधु ब्राह्मणों का यह सेवा कार्य समाज में भरपूर सराहा गया। उन्हें उचित सम्मान दिया गया और उसके निर्वाह आदि के लिए दान दक्षिणा की श्रद्धा सिक्त सहायता प्रस्तुत की गई। इस प्रकार धर्म कलेवर द्वारा साधु, ब्राह्मणों का पोषण और उनके द्वारा धर्म प्रक्रिया की अभिवृद्धि। इस प्रकार इस उभय सहयोग से जन मानस की उत्कृष्टता बढ़ने में निरन्तर बहुत सहायता मिलती रही। भारत का प्राचीन इतिहास जिस गौरव गरिमा से भरा पड़ा है उसके पीछे जन साधारण का उज्वल चरित्र एवं उदात्त दृष्टिकोण ही प्रधान कारण था। कहना न होगा कि इस प्रकार के प्रखर व्यक्तित्वों का निर्माण धर्म निष्ठा द्वारा ही सम्भव हो सका और उसे समर्थ बनाने में साधु ब्राह्मणों का सत्प्रयत्न अविछिन्न रूप से सन्निहित था।

धर्म तन्त्र को सुव्यवस्थित रूप से संचालित रखने के लिए जिन सुविधा साधनों की जरूरत पड़ती थी उन्हें तीर्थों, मठों, मन्दिरों, आश्रमों, के तत्वाधान में एकत्रित किया गया। उन पुण्य संस्थानों में वे साधन जमा रहते थे जिनके द्वारा धर्म तन्त्र को व्यापक और व्यवस्थित रूप में सुसंचालित रखा जा सके। लाखों धर्म प्रचारक, अध्यापक उपाध्याय, चिकित्सक, लोक सेवी इन्हीं संस्थानों में निवास निर्वाह करते थे। वे धर्म प्रचारक देश भर में भ्रमण भी करते थे, शिक्षा संस्थायें चलाते थे और विशेष स्थानों में तीर्थ व्यवस्था के आधार पर जनता को आमन्त्रित करके मानवीय आदर्शों के लिए अग्रगामी साहस भरने की प्रेरणा भरते थे।

चिरकाल तक यह क्रम सुव्यवस्थित रूप से चलता रहा और धर्म तन्त्र की महत्ता एवं उपयोगिता को लोग सच्चे मन से स्वीकार करते रहे। उसकी समर्थता बढ़ाने के लिए लोगों ने बड़े-बड़े त्याग भी किये, मन्दिर मठों में लगी हुई अरबों खरबों की सम्पत्ति उसी गहन लोक श्रद्धा का प्रतीक है जिसे धर्म तन्त्र की उपयोगिता ने जन साधारण के मन में गहराई तक बिठाया था। धर्म मंच से लोक श्रद्धा के अनुरूप ही प्रत्युत्तर दिये गये। राज तन्त्र द्वारा जो सेवा सहायता जनता की की जा सकती थी, धर्म तन्त्र ने उससे असंख्य गुनी करके दिखाई। फलतः राजा को जो सम्मान मिलता था साधु को उससे अधिक मिला। शासकों ने अपनी गतिविधियों पर पुरोहितों का नियन्त्रण स्वीकार किया। धर्म तन्त्र के अनुशासनमें राजतन्त्र आजाने से प्रजा को सुविधा और सुख-शांति की वृद्धि में चार चाँद लग गये

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह है हमारे गौरवमय अतीत का संक्षिप्त निष्कर्ष ।

आज स्थिति में विचित्र परिवर्तन आ गया है । धर्म संस्थान जहाँ के तहाँ खड़े हैं, उनकी सम्पत्ति, आजीविका ज्यों की त्यों है । धार्मिक जनता उनका सिंचन पोषण पहले की तरह ही कर रही है पर इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि धर्म संस्थानों ने अपने कर्त्तव्य का एक प्रकार से परित्याग ही कर दिया । अब वहाँ कोई लोक मंगल की अभीष्ट प्रवृत्ति चलती दिखाई न पड़ेगी, मन्दिरों में स्थापित प्रतिमा, उसकी सेवा पूजा, भोग प्रसाद, पूजा-कर्मियों का निर्वाह, यदा कदा छुटपुट उत्सव आयोजन, इतने भर तक धर्म संस्थानों की गति विधियाँ सीमाबद्ध हो गईं । साधु ब्राह्मणों का एक बड़ा वर्ग केवल दान दक्षिणा बटोरने भर में सीमित सन्तुष्ट हो गया । उनके द्वारा लोक मंगल की जो प्रवृत्तियाँ चलाई जाती थीं, उनका अब कहीं पता भी नहीं लगता ।

प्राचीन काल में साधु ब्राह्मणों ने लोक सेवा के द्वारा अपना वर्चस्व बढ़ाया था, पर अब उस कष्ट साध्य प्रक्रिया को अपनाने लायक न तो योग्यता है, न भावना, न तत्परता ऐसी दशा में स्वाभाविक लोक श्रद्धा स्थिर कहाँ रह सकती थी, उसके बिना निर्वाह कैसे चलता । इतना बन नहीं पड़ा कि यदि सेवा की क्षमता नहीं तो मुफ्त का दान क्यों लें । मुफ्त की आमदनी से मोह भी ज्यादा होता है सो उस वर्ग ने अनेक प्रपंच पाखंड रचकर खड़े कर दिये जिनके बहाने उनकी उपयोगिता समझी जाती रहे और दक्षिणा का स्रोत खुला रहे । अंधधर्म के नाम पर ठगने-ठगाने वाले लोगों की भीड़ ही धर्मध्वजा के नीचे एकत्रित मिलेगी । विवेक पूर्वक उच्च आदर्शों के निमित्त जिनने धर्म और अध्यात्म को अपनाया हो ऐसे विचारशील लोग अब इस क्षेत्र में कम ही मिलेंगे ।

यह स्थिति निस्सन्देह दयनीय और दुर्भाग्य पूर्ण है । जो धर्म मंच चिरकाल तक मानव जाति की महानतम सेवा कर सकने में समर्थ रहा वह अब भ्रम-जंजाल फैलाने और भिक्षा वृत्ति पनपाने मात्र का साधन बनकर रह जाय यह कितने कष्ट की बात है । हमें इस स्थिति में आमूल-चूल परिवर्तन करना चाहिए और प्राचीन काल जैसी स्थिति पुनः लानी चाहिए । लोक सेवा का महत्व समझने वालों को यह अनुभव करना चाहिए कि भावात्मक उत्कर्ष ही मानव जाति की—विश्व वसुधा की सबसे बड़ी और सबसे आवश्यक सेवा साधना है । उस मंच के माध्यम से जन-कल्याण का कार्य जितनी अच्छी तरह किया जा सकता है उतना और किसी मंच या माध्यम से नहीं ।

राजनीति भौतिक प्रयोजनों में सफल हो सकती है पर जब भावनात्मक परिष्कार की आवश्यकता पड़ेगी तब श्रद्धा, सचाई, दर्शन, धर्म और अध्यात्म जैसे तत्वों का ही सहारा लेना पड़ेगा । यह कार्य धर्म मंच द्वारा ही सम्पन्न हो सकता है । विवेकशील दूरदर्शी लोगों को इसी क्षेत्र में प्रवेश करना चाहिए । भारतीय जनता की वर्तमान मनोभूमि को देखते हुए नव निर्माण के लिए यही माध्यम सर्वोपरि सिद्ध हो सकता है । देहातों में फैला हुआ अशिक्षित भारत अभी भी राजनीति, समाज शास्त्र, अर्थ शास्त्र आदि को ठीक तरह समझ नहीं सकता । परा धर्म का सहारा लेकर यदि उन्हीं बातों को कहा जाय तो जटिल विषयों को भी उसे समझाया जा सकता है । अपने देश की जनता की मनोभूमि में धर्म सम्बन्धी जो जानकारी और आस्था विद्यमान है उसे आज के अनुरूप दिशा में मोड़ सकना युग-मनीषियों के लिए कुछ कठिन नहीं होना चाहिए । महात्मा गाँधी अपने देश की जनता की नब्ज पहचानते थे उन्होंने स्वराज्य आन्दोलन के साथ धार्मिकता के मन्तव्यों को जोड़ कर आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की थी । इस पीढ़ी में यदि कोई दूसरा उसी स्तर का अभियान खड़ा किया जाना हो तो उसकी पृष्ठभूमि धार्मिकता के साथ जुड़ी होनी चाहिए । नव निर्माण के प्रयत्नशील लोक सेवियों के धर्म माध्यम से अपने कार्यक्रमों को अग्रसर करना चाहिए और जनता की धर्म श्रद्धा, को सही दिशा देनी चाहिए । अभीभी अपना धर्म तन्त्र बहुत समर्थ है । अरबों रुपये की इमारतें खरबों रुपयों की स्थिर सम्पत्ति धर्म संस्थाओं के पास मौजूद है । हर वर्ष करोड़ों रुपये की दान दक्षिणा तथा चढ़ोतरी उन्हें मिलती है । ५६ लाख धर्म जीवी इसी माध्यम से आजीविका पाते हैं । करोड़ों घण्टों का समय नित्य ही धर्मकृत्यों में लगता है । इस विशाल शक्ति भाण्डागार के द्वारा जो सृजनात्मक कार्य हो सकते हैं उनका भी अनुमान लगाया जासकता है । ईसाई मिशनरियों के पास न इतनी धन शक्ति है न जन शक्ति । वे अपने उपलब्ध साधनों का सही प्रयोग भर कर लेते हैं फलस्वरूप पिछली दो शताब्दियों में संसार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की एक निहाई जनता को अपने सम्प्रदाय में ला सकने में वे सफल हो गये हैं। हम भारतीय धर्म तन्त्र का यदि सही उपयोग कर सकें तो प्रस्तुत राजतन्त्र की क्षमता में भी बड़े शक्ति साधन पा सकते हैं। ५६ लाख धर्म जीवियों को जन शक्ति और ३०० करोड वार्षिक की आमदनी—जन शक्ति और धन शक्ति की दृष्टि से धर्म तन्त्र की तुलना में राजतन्त्र को पीछे ही छोड़ देती है।

जनता अभी भी धर्म के नाम पर प्रचुर धन व्यय करती है। सोमवती अमावस्याओं पर हर साल ४-५ बार धार्मिक जनता गंगा स्नान करने जाती है। हर बार में संख्या ५० लाख से कम नहीं होती। ४ पर्वों पर वर्ष में २ लाख व्यक्ति स्नान को गये। हर व्यक्ति के पीछे समय, किराया भोजन खर्च, दान-दक्षिणा का औसत १०) भी मान लिया जाय तो २० करोड़ से अधिक रुपया केवल गंगा स्नान पर खर्च होता है। यदि इस श्रद्धा को सही दिशा दी जा सके और गंगा में पड़ने वाले मल-मूत्र को खेती में ले जाने के लिए वह एक वर्ष का पैसा लग सके तो गंगाजल की पवित्रता अक्षुण्य बन सकती है और उस खाद से करोड़ों रुपयों की उपज बढ़ सकती है। धर्म श्रद्धा के नाम पर हर भारतीय बहुत समय, श्रम, धन खर्च करता है। इसे धर्म प्रयोजन के लिए लगाया जा सकना सम्भव हो सके तो नव निर्माण की सारी आवश्यकतायें उतने भर से पूरी की जासकती हैं।

धार्मिक कर्मकांडों, उत्सव आयोजनों, श्राद्ध, तर्पण, ब्रह्म भोज, तीर्थयात्रा, दान-दक्षिणा, भोग-प्रसाद आदि में करोड़ों रुपया प्रतिदिन खर्च करती हैं और वह राशि सरकार द्वारा वसूल किये जाने वाले राजस्व की अपेक्षा अधिक ही बैठती है कम नहीं। यदि इस धर्म श्रद्धा को—वास्तविक धर्म प्रयोजनों में लगाया जा सकना सम्भव किया जा सके तो इसके फलस्वरूप मनुष्य को सच्चे अर्थों में धर्मात्मा और देश को सच्चे अर्थों में धर्म देश बनाया जा सकना कुछ भी कठिन न रह जायगा।

बेशक आज उस क्षेत्र में अवांछनीय व्यक्ति घुसे बैठे हैं वे जनता की धर्म श्रद्धा का शोषण व्यक्तिगत स्वार्थ साधनों के लिए कर रहे हैं और भोली जनता को अपने चंगुल में जकड़े रहने के लिये भ्रम-जंजालों में फँसाये हुए हैं। यह स्थिति बड़बड़ ने या क्षुब्ध होने से नहीं बदलेगी। आवश्यकता दिशा देने और साधनों का सदुपयोग करने की है। यह तभी सम्भव हो सकता है जब लोकसेवी प्रतिभाशाली व्यक्ति धर्म क्षेत्र में प्रवेश करें और अवांछनीय तत्वों को इस पुनीत वेदी से हटाकर उसे जन-कल्याण के पुण्य प्रयोजनों में नियोजित करदें। धर्म मंच को नव निर्माण के लिए यदि हम प्रयुक्त कर सके तो निस्सन्देह साधनों की कमी का समाधान सहज ही किया जा सकता है।

विश्व राष्ट्र, विश्व धर्म, विश्व भाषा की एकात्म भूमिका

'अनेकता से एकता की ओर' यही अध्यात्म विकास का क्रम है। जब हम बँटते, विभक्त होते और टूटते हैं तो दुर्बल बनते हैं, जब जुड़ते, समीप आते, घनिष्ठ बनते और एक होते हैं तब शक्तिवान बनते हैं और आनन्द, उल्लास अनुभव करते हैं। यह सिद्धान्त सर्वत्र लागू होता है। मानवीय प्रगति पर भी।

जब हम एकता के सूत्र में बँधे थे तब सब प्रकार सशक्त थे। न सुविधाओं की कमी थी, न साधनों की, न सङ्कट सताते थे न विग्रह। पर जब टूटने, बँटने की प्रवृत्ति पनपी तो गँवाने, खोने और त्रस्त रहने की परिस्थितियाँ ही दुःखद दुर्भाग्य के रूप में सामने आती चली गईं। किसी जमाने में एक ही पिता के पुत्र, एक ही धरती की सन्तान बनकर वसुधैव कुटुम्बकम् के आदर्शों को अपनाये सारी मानव जाति प्रेम एकता और आत्मीयता की —स्नेह, सहयोग की भावनाओं के साथ सुख-शान्ति पूर्वक रहती थी। तब इस धरती पर स्वर्ग का वातावरण विद्यमान था। पर जब भेद-भाव रखने, अलग-अलग रहने और भिन्नता प्रथकता की सङ्कीर्णता को अपनाया तो हम टुकड़े-टुकड़े होकर दयनीय दुर्दशा में जा गिरे।

यह सारी धरती एक देश है। सारी मनुष्य जाति का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक वंश है। प्रकृति के प्रदत्त साधनों पर सभी का समान अधिकार है। सबको एक समान धर्म कर्त्तव्यों का पालन करने की ईश्वरीय आज्ञा है। प्रेम और सहयोग के आधार पर ही हम आगे बढ़ने और सुखी रहने की आशा कर सकते हैं। इन सीधे साधे सिद्धान्तों पर यदि हम विश्वास करने लगें और उदारता आत्मीयता एवम् एकता के सुदृढ़ बन्धनों में परस्पर बंधे रहें तो यहाँ सर्वत्र सुख शान्ति ही दृष्टिगोचर हो क्लेश-कलह का कहीं पता भी न चले। भेद-भाव, फूट, प्रथकता और अलगाव का असुर इष्टिकोण ही है जिसने इस मङ्गलमय भू लोक में नारकीय परिस्थितियों को चारों ओर बखेर कर रख दिया है।

नव-निर्माण के लिए हमें अनेकता से एकता की ओर बढ़ना होगा। अनेक सम्प्रदाओं को मिलाकर एक विश्व धर्म बनाना पड़ेगा। उसके नियम, विधान और प्रतिबन्ध ऐसे हों जो नैतिक एवम् उदात्त आदर्शों के आधार पर विनिर्मित किये गये हों। और जो नर-नारी, रंग वंश आदि का भेदभाव न करके सब पर समान रूप से लागू होते हों। जब एक ही ईश्वर सबका पिता है-और सभी मनुष्य उसके समान रूप से प्रिय पुत्र हैं तो इसकी व्यवस्था और रीति-नीति भी सबके लिये एक होनी चाहिए। प्राचीन काल में था भी ऐसा ही। लब लोग छोटे-छोटे वर्गों में बँटने लगे अपने वर्ग के लिए अधिक समिधायें चाहने लगे तो भेदभाव के कानून बनने लगे। पुरुष को वर्चस्व नारीत्व को दासत्व-सवर्ण लोगों को सुविधायें अपवर्णों पर प्रतिबन्ध जैसे भेदभाव ईश्वरीय नहीं हो सकते। यह भेद वर्ग स्वार्थ की दृष्टि से अपने पक्ष के लिये लाभ और विपक्ष के लिये रोक प्रस्तुत करने की दृष्टि से बनाये गये।

ईश्वर अमुक सम्प्रदाय वालों से प्रसन्न रहता है और अमुक मत वालों से अप्रसन्न होता है इस मान्यता में कोई तथ्य नहीं। कुकर्मों से अप्रसन्नता—सत्कर्मों से प्रसन्नता वाली बात समझ में आती है। न्याय, नीति, कर्म, भावना के आधार पर ईश्वर की अनुकम्पा रुष्टता निर्भर रहे तभी वह न्यायकारी और समदर्शी कहा जायगा। यदि किसी सम्प्रदाय विशेष के लोगों को—उनके गुण, कर्म, स्वभाव को बिना देखे अन्धा-धुन्ध अपना प्रिय पात्र बनाले और दूसरे सम्प्रदाय के सज्जनों से भी रुष्ट रहें, तो फिर उसे निष्पक्ष कैसे कहा जायगा? वस्तुतः वर्ण सम्प्रदाय मनुष्यों ने अपनी सामयिक सुविधा के अनुसार बनाये हैं। वे पुराने हो जाते और समय की आवश्यकता पूरी नहीं करते तो बदलते भी रहते हैं। शाश्वत तो धर्म कर्त्तव्य है। सम्प्रदाय तो सामयिक एवम् क्षेत्रीय विधि व्यवस्था मात्र है। इनके जितने विभेद बढ़ेंगे उतनी ही परस्पर प्रेम में बाधक दीवारें खड़ी होती चली जायेंगे।

हमें प्राचीन काल की तरह एक ही सार्वभौम धर्म को स्वीकार करना होगा जो भेदभावों की सारी दीवारें तोड़कर परस्पर एकता सद्भावना और आत्मीयता का प्रतिपादन करता हो। धर्म कर्त्तव्य वे माने जाँय जो हमारे नैतिक और सामाजिक जीवन में उत्कृष्टता उत्पन्न कर सकें। प्रथा परम्पराऐं सर्वत्र एक हों। रहन सहन के तरीके देश काल पात्र के भेद से थोड़े भिन्न भी रह सकते हैं पर जीवन की दिशा और सामाजिक स्थिति सर्वत्र एक सी बनी रहे उसका प्रतिपादन करना ही मानव संस्कृति का प्रयोजन होना चाहिये। जब तक एक धर्म निखर कर स्पष्ट न हो जाय तबतक प्रचलित धर्म सम्प्रदायों का परस्पर सभी लोग आदर करें। कोई किसी पर कटु आक्षेप न करे। उनमें से नीति नियम उतने ही अपनाये जाँय जो आज की परिस्थितियों में उचित, आवश्यक एवम् उपयोगी सिद्ध होते हों। शेष ऐसी प्रथा परम्पराओं पर जोर न दिया जाय जो इन दिनों उपयोगी नहीं रही। इस प्रकार नीर-क्षीर विवेक की नीति अपनाकर केवल उपयुक्त अंशों को ही सब धर्मों में से लेकर एक काम चलाऊ समन्वयवादी नीति अपनाये रह सकते हैं। यह तब तक के लिये जब तक कि समस्त मूर्धन्य तत्त्वदर्शी मनीषी मिल—जुलकर एक धर्म का ढाँचा खड़ा नहीं कर लेते। अन्ततः प्रगतिशील मनुष्य जाति के लिये समस्त विश्व में एक ही धर्म होगा और उसे हर व्यक्ति समान रूप से स्वीकार अंगीकार करेगा।

एक धर्म की तरह आज तक समस्त राष्ट्रों का एक ही सम्मिलित महाराष्ट्र होगा। सारे विश्व का शासन एक ही सरकार चलायेगी। आज के राष्ट्रों की भी सीमायें बदल जायेंगी। भौगोलिक आधार पर—प्रथक प्रान्तों की तरह शासन, सुविधा की दृष्टि से अलग—अलग प्रान्त बनाये जा सकते हैं। पर उनका केन्द्रीय शासन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक जगह ही रहेगा। सारे संसार में न्याय, व्यवस्था, टैक्स आदि की प्रणाली एक ही तरह की रहेगी। एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में जिस तरह एक देश के निवासी बिना किसी प्रतिबन्ध के आते जाते हैं उसी तरह आवागमन का सर्वत्र छूट रहेगी। जो जहाँ बसना चाहेगा बस सकेगा। जनसंख्या के सघन और विरल होने की सुविधा असुविधा का ध्यान रखते हुए बसने पर कुछ प्रतिबन्ध हों तो हों पर कोई व्यक्ति अमुक देश का निवासी है इसलिये उसे दूसरे देश में न जाने दिया जायगा ऐसा प्रतिबन्ध न रहेगा। वस्तुओं का आवागमन या प्रत्यावर्तन बिना प्रतिबन्ध के होता रहेगा। टैक्स उत्पादन कर लगेगा। किसी स्थान का उत्पादन दूसरे स्थान पर बेचने में कोई बन्धन न रहेगा। इस प्रकार अभाव या अधिकता के कारण जो सुविधा असुविधा होगी वह सारी मनुष्य जाति को समान रूप से होगी। आजकल प्रगति सम्पदा का एक देश लाभ उठाता है और अन्य देश उसके अभाव में दुःख पाते हैं यह कृत्रिम विषमता हट जाने से सारे विश्व में एक सी सुविधा असुविधा रहेगी समस्त विश्व उपलब्ध साधनों का समान रूप से उपभोग करेगा।

सेना समस्त विश्व की एक रहेगी और उच्च न्यायालय भी एक होगा। यों अलग देश और वर्गों का अस्तित्व ही न रहेगा इसलिये क्षेत्रीय या वर्गीय समस्यायें ही उत्पन्न न होंगी एक ही धर्म, एक ही समाज, एक ही देश जब समस्त मनुष्य जाति का होगा तो फिर परस्पर लड़ने झगड़ने, आक्रमण और विवाद का कोई कारण ही न रहेगा पर यदि कहीं कोई विवाद उठ खड़ा हो कहीं बगावत फूट पड़े तो उसका नियन्त्रण विश्व सरकार की सेना ही करेगी। इस प्रकार के बड़े विवादों का निपटारा भी विश्व अदालत में भी होगा। स्थानीय अपराधों और गड़बड़ी का नियन्त्रण प्रान्तीय पुलिस कर लिया करेगी। सम्प्रदाय धर्म, वर्ण, वर्ग आदि के न रहने में ८० प्रतिशत सामूहिक उपद्रव तो वैसे ही समाप्त हो जायेंगे, व्यक्तिगत अपराधों के-लड़-झगड़ के विग्रह ही जब तब हो सकते हैं उनके लिए स्थानीय पुलिस पर्याप्त है। विश्व सेना तो किसी क्षेत्र में कोई उपद्रव खड़ा हो जाने या आकस्मिक विपत्ति खड़ी हो जाने के लिये ही रहेगी। वस्तुतः वह सेना युद्धों में प्रयुक्त न होगी। युद्ध तो होंगे ही नहीं। राष्ट्रवाद की स्वार्थपरता युद्ध भड़काती है। जब समस्त विश्व एक परिवार तो फिर युद्ध कौन किस से करेगा? उस समय सेना का काम किसी विशेष क्षेत्र में भूकम्प, बाढ़, महामारी जैसी आपत्ति आ जाने पर उसकी सेवा-सहायता करना ही रहेगा।

समस्त विश्व की एक भाषा होगी। विश्व भर के समस्त व्यक्ति एक ही भाषा बोलेंगे, एक ही लिपि में लिखेंगे। इस प्रकार विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक के व्यक्ति परस्पर एक दूसरे से बड़ी आसानी के साथ वार्तालाप या पत्र व्यवहार कर सकेंगे। ज्ञान सम्पादन का मार्ग सर्व सुलभ हो जायगा किसी भी जगह छपी पुस्तक समस्त विश्व में सुविधा पूर्वक उपलब्ध हो जायगी और बड़ी संख्या में छपने से सस्ती भी पड़ेगी। महत्वपूर्ण ज्ञान भाषा की सीमा संकीर्णता के कारण आज जो सीमित रह जाता है तब वह विश्व में सर्वत्र तत्काल उपलब्ध होने लगेगा। विश्व यात्रा कर सकना विश्व भर में अपनी बात पहुँचा सकना, बिना किसी कठिनाई से तब सर्व सुलभ हो जायगा। हम भारतीय अपनी क्षेत्रीय और प्रान्तीय भाषाओं को महत्व न देकर यदि हिंदी भाषा और हिंदी लिपि अपनाने के लिये देने लगें तो आगे चलकर वही प्रवृत्ति विश्व भाषा के निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकती है।

शिक्षा का पाठ्यक्रम एक रहेगा। उपयोगी तथ्य सर्वत्र उपलब्ध रहेंगे। तब इतिहास शासन का देशों का नाम समस्त विश्व के उत्कर्ष अपकर्ष करने वाली प्रवृत्तियों तथा परिस्थितियों के विश्लेषण का पढ़ाया जाया करेगा। संसार भर के महामानवों के सत्कर्म विश्व में सर्वत्र जाने जा सकेंगे। आज नृशंस शासकों की नृशंसताओं को इतिहास के नाम पर स्कूलों में पढ़ाया जाते हैं इस निरर्थक कूड़े-कचरे को विस्मृति के गर्त में फेंक दिया जायगा आज के ऐतिहासिक कहे जाने वाले व्यक्तियों में से तब सौ वाँ हिस्सा भी महत्वपूर्ण से बचेगा। इतिहास विश्व के विभिन्न प्रवृत्तियों और प्रगतियों के पीछे जुड़े हुए पुरुषार्थों का पढ़ाया जाय तो उससे पढ़ने वाले को समाज विज्ञान और नेतृत्व विज्ञान की अच्छी खासी जानकारी मिल जायगी। भाषा, गणित, भूगोल आदि के उतने अंश पढ़ाये जायेंगे जो सामान्य ज्ञान की दृष्टि से सर्वोपयोगी हैं। जिन्हें किन्हीं बिषयों को विशेषज्ञ बनना है उनकी शिक्षा, व्यवस्था अलग रहेगी। सर्वजनीन माध्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मिक शिक्षा जो अनिवार्य रहेगी ऐसी होगी जिसमें जीवन जीने की कला तथा समाज और व्यक्ति का तालमेल ठीक बनाये रखने की जानकारी भली प्रकार मिल जाय। स्वास्थ्य मानसिक सन्तुलन, विवाह, परिवार, शिशु पालन, अर्थ व्यवस्था, पारस्परिक व्यवहार, सहयोग, कानून शासन, उपार्जन, कला आदि के सभी विषय शिक्षा में अनिवार्य रूप से जुड़े रहेंगे जो सामान्य जीवन जीवन जीने के लिए आवश्यक समझे जाते हैं। सर्वत्र एकसी प्रणाली और पाठ्य पुस्तके रहने से शिक्षकों, शिक्षार्थियों, पुस्तक व्यवसायियों, को आज की तरह उद्विग्न न फिरना पड़ेगा।

जब तक एक विश्व भाषा का समान विकास नहीं हो जाता तब तक सम्पर्क भाषा के रूप में विश्व भाषा रहे और आरम्भिक शिक्षा क्षेत्रीय भाषाओं में चलती रहे। पर यह एक अवधि के लिये ही हो। उस अवधि में क्षेत्रीय भाषाओं से मुक्ति पाकर सब लोग विश्व भाषा के अभ्यस्त बनलें। क्षेत्रीय भाषाओं में जो उत्कृष्ट ज्ञान साहित्य है उसे धीरे-धीरे विश्व भाषा में अनुवादित कर लिया जाय। इस प्रकार साहित्य के नाम पर व्यर्थ ही कागज काले करने वाले निरर्थक जंजाल में मनुष्य का समय और धन बर्बाद न होगा। काम की चीज क्या नई क्या पुरानी सभी उस विश्व भाषा में मिल जायेगी।

संसार की एक भाषा हो जाने से प्रेस व्यवसाय को बड़ी सुविधा रहेगी। एक ही तरह के टाइप, मशीनें सर्वत्र काम देने लगें। टाइप राइटर अनेक भाषाओं के अनेक तरह के बनते हैं। उनकी सीमित बिक्री होने से महँगे भी पड़ते हैं। यदि एक ही लिपि को विश्व मान्यता प्राप्त हो तो टाइप राइटर बड़ी संख्या में बनने के कारण बहुत सस्ते बनने लगें और उनका उपयोग करने से लिखने पढ़ने की प्रणाली बहुत सुविधाजनक बन जाय।

विश्व भाषा, विश्व धर्म और विश्व शासन इन तीनों का समन्वय विश्व मानव को एकता को सम्भव बन सकता है और वसुधैव कुटुम्बकम् का आदर्श केवल कल्पना न रहकर मूर्तिमान हो सकता है। इसके लिये अभी से हमें जन मानस तैयार करना चाहिये। अपने पक्ष की विशेषता प्रतिपादित करते रहने और अपनी मान्यताओं को सर्वश्रेष्ठ बनाने का आग्रह छोड़ना यह इस दिशा की प्रथम तैयारी का प्रथम चरण है। "जो हमारा सो सही" का दुराग्रह आज सर्वत्र व्याप्त है। इसी आधार पर लोग अपने सम्प्रदाय, मत, देश, भाषा आदि की श्रेष्ठता प्रतिपादित करते हैं और अपनी ही नीति परम्परा के लिये आग्रह करते हैं। पक्षपात से पक्षपात बढ़ता है और दुराग्रह से दुराग्रह का जन्म होता है। आज सभी सम्प्रदायों वाले दूसरों से यह आशा करते हैं कि अपना मत छोड़कर उनका मत स्वीकार करलें। ऐसे आग्रह से केवल कटुता और घृणा बढ़ती है। होना यह चाहिए कि 'हमारा सो अच्छा" के स्थान पर 'अच्छा सो हमारा की नीति" अपनाई जाये और जहाँ जो अच्छाई दिखाई दे उसे स्वीकार किया जाय।

पक्षपात रहित मस्तिष्क ही विश्व राज्य, विश्व धर्म, विश्व संस्कृति और विश्व भाषा की बात व्यावहारिक बना सकते है। आग्रह छोड़कर यदि उपयोगिता और विवेक—शीलता को ही कसौटी रखा जाय तो जो सर्वोत्तम हो उसे स्वीकार करने से किसी को भी झिझक न होगी और एकात्म भाव की दिशा में बढ़ सकने और उसका ठोस ढाँचा खड़ा करने का समय जल्दी ही आ जायगा।

भेदभाव, पक्षपात और अलगाव की प्रवृत्तियों ने जन-जीवन को अगणित अठिनाइयों और उलझनों से भर दिया है। विश्व युद्ध की और पारस्परिक विग्रह की जटिलताएँ खड़ी करदी है। कृत्रिम अभाव और कृत्रिम सङ्कट उत्पन्न कर दिये है। यदि एकता की दिशा में हम बढ़ चलें तो जीवनयापन का स्वरूप हर्षोल्लासमय और संसार का वातावरण सुख-शान्तिमय बन सकता है। नव-निर्माण के लिये हमें सार्वभौमिकता की भूमिका अभी से विनिर्मित करनी होगी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य और पशु कुटुम्बी बनकर रहें

प्राणि जगत में अकेला मनुष्य ही नहीं है उसके दूसरे छोटे बड़े भाई भी इसी दुनियाँ में रहने के लिये परमेश्वर ने सृजे हैं। मनुष्य अपनी ही सुविधा के लिये सृष्टि की सारी सुविधाओं को हथिया ले और दूसरों के हिस्से में कुछ न छोड़े यह अनुचित है। न्याय का तकाजा यह है कि मनुष्य अपने पुरुषार्थ से अपने लिये आवश्यक सुविधाऐं उपलब्ध करे और दूसरे प्राणियों को भी अपना साथी सहयोगी समझकर ऐसी व्यवस्था बनाये जिससे अपनी और अन्य प्राणियों की जीवनचर्या में अन्याय, अत्याचार की आवश्यकता न पड़े।

हमारी ही तरह पशु पक्षियों को भी ईश्वर प्रदत्त जीवन प्यारा है उन्हें भी शान्ति पूर्वक जीवित रहने का अधिकार रहना चाहिये। मनुष्य अपने जीवन को प्यार करे और उसे सुखी बनाने का प्रयत्न करे यह उचित है पर इसके लिये इस सीमा का ऐसा अतिक्रमण नहीं होना चाहिए जिससे दूसरों की पीड़ा वेदना का अन्याय और अत्याचार का शिकार बनना पड़े। इस सन्दर्भ में उन पशुओं की समस्या अधिक विचरणीय है जो मनुष्य के आधीन उसके सहयोगी सहचर बनकर रह रहे हैं। इनकी सुविधाओं का ऐसा ही ध्यान रखा जाना चाहिए जैसा कि अपने घर कुटुम्ब वालों का रखा जाता है। वे अपनी बात कह नहीं सकते, शिकायत कर नही सकते इसलिये उन पर अत्याचार की छूट मिल गई नहीं मान ली जानी चाहिये। पालतू पशुओं के साथ न्यायोचित व्यवहार करने का हर मनुष्य को पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए।

पालतू जानवर कितना श्रम कर सकते हैं, उन्हें कितना विश्राम और अवकाश मिलना चाहिये इसका ध्यान न रखा जाय और जितना श्रम वे नहीं कर सकते—जितना बोझ नहीं ढो सकते उसके लिये विवश किया जाय तो यह क्रूरता और दुष्टता ही कहलायेगी। कौन पशु कितनी आसानी से कर सकता है इसका अनुमान उसकी उदासी और थकान के प्रत्यक्ष चिन्ह देखकर आसानी से लगाया जा सकता है। अपना स्वास्थ्य गँवाये बिना और अड़चन अनुभव किये बिना जितना श्रम आसानी से जो कर सके उससे उतना ही श्रम लिया जाना चाहिए, उसकी सुविधा, आहार-विहार का भी वैसा ही प्रबन्ध करना चाहिये जैसा एक जीवधारी को सुविधाजनक जीवन जीने के लिए अभीष्ट है। अत्याचार चाहे पशुओं पर किया जाय चाहे मनुष्यों पर समान रूप से निन्दनीय है।

लोग बैल, घोड़े, गधे, ऊँट आदि पर इतना बोझ लादते हैं, इतनी देर जोतते हैं जिससे उनकी थकान, उदासी और पीड़ा स्पष्ट झलकती है। कई बार तो उनके कन्धे, पीठ आदि में घाव हो जाते हैं। थके पशु से अधिक काम लेनेके लिये बुरी तरह पीटा जाता है उसके क्रूरता पूर्ण चिन्ह भी मनुष्यता पर लगी कलंक कालिमा की तरह अपनी कथा आप कहते रहते हैं। इस प्रकार का उत्पीड़न बन्द किया जाना चाहिये। युग-निर्माण की विधि व्यवस्था में केवल मनुष्य को ही अन्याय से मुक्ति दिलाना शामिल नहीं है। पशुओं को भी अत्याचार से मुक्ति मिलने की बात उनमें सम्मिलित है।

माँस खाना—अपराधों की गणना में सबसे नृशंस स्तर का अपराध मानना चाहिए। चोरी, ठगी, उठाईगीरी, लुट आदि धन सम्बन्धी अपराध किसीकी आर्थिक असुविधा भर उत्पन्न कर सकते हैं। जिसकी पूर्ति अपने पुरुषार्थ, संयम या दूसरों की सहायता से हो सकती है। अपमान, मानहानि, मारपीट, व्यभिचार जैसे अपराधों से किसी को इतनी असुविधा नहीं होती कि जीवित रहना कठिन हो जाय। उन छोटे अपराधों को मनुष्यके साथ किया जाय तो जेल आदि की सजा मिले पर पशुओं का प्राण ले लिया जाय तब भी अनुचित न समझा जाय यह कहाँ का न्याय है? मनुष्य की हत्या कर डालने वाला फाँसी का दण्ड प्राप्त करता है। पर पशुओं की हत्या करने वाला कोई दण्ड न पाये इसे न्यायशीलता कैसे कहा जायगा? अपने वर्ग के लिये लाभ कमाने के लिये दूसरे वर्गों पर अत्याचार करने की पद्धति से ही तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नृशंसता का कलंकी इतिहास लिखा गया है। जिसने अपने या अपने वर्ग के लाभ के लिये दूसरों की कठिनाइयों को ध्यान में नहीं रखा उन्हें हम अत्याचारी कहते हैं। यदि मनुष्य कृत कानून अपने वर्ग की सुविधा के लिये पशुओं की हत्या तक कर डालने को अनुचित नहीं ठहराता तो उसे समग्र न्याय नहीं कहा जायगा ?

पालतू पशु पक्षी जो एक प्रकार से शरणागत हैं और अपने बालक के साथ स्नेह दुलार भरे सहयोगी जीवनयापन की आशा करते हैं। उनके हाथ पैर बाँधकर—बिना संघर्ष का अवसर दिये यों ही कत्ल मार डालना, ऐसी नृशंसता है जिसे करने वाला मनुष्यता के उच्च आदर्श का दम्भ नहीं कर सकता। हिंसक पशु भी बचाव का अवसर पाने वाले शिकार पर हमला करके कुछ तो छूट का अवसर देते हैं जिससे वह चाहे तो अपने पुरुषार्थ से प्राण रक्षा कर सके। कसाई की मारने काटने की प्रणाली नितान्त क्रूरता से भरी हुई है उसे विश्वासघात के साथ जुड़ा हुआ अनर्थ कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी।

मांस खाने के लिए ऐसा क्रूर कर्म किया, जाय, इसमें कुछ भी तुक नहीं। मांस मनुष्य की प्रकृतिके सर्वथा विरुद्ध है। उसकी शरीर रचना विशुद्ध शाकाहारियों की है। न उसके नाखून हिंसक जीवोंकेसे हैं न दाँत। न वह कच्चे माँस को पचा सकता है और न उसकी जीभ रक्त माँस में रुचि लेती है। मिर्च मसालों की सहायता से उबाल पका कर उसे खाने योग्य कोई भले ही बनाले। अपने स्वाभाविक रूप में न माँस मनुष्य को रुचता है न पचता है। प्रकृति के विपरीत आहार यदि जबरदस्ती किया भी जाय तो उससे कभी किसी का कुछ लाभ नहीं हो सकता। वह शारीरिक और मानसिक विकृतियाँ ही पैदा करेगा। मांस की प्रोटीन मनुष्य के लिये सबसे घटिया किस्म की प्रोटीन है। इससे अच्छे जीवन तत्व तो फल, मेवा, शाक, घी, दूध, दाल, अन्न, आदि में मौजूद हैं, जो सस्ते भी हैं, सात्विक भी और पौष्टिक भी। यह भ्रम नितान्त अज्ञान मूलक है कि मांस खाने से मनुष्य बलवान बनता है। यह बुढ़िया मान्यता आज से ५० वर्ष पूर्व के बाल बुद्धि शरीर शास्त्रियों की है। आज की नवीनतम शोधें यह प्रतिपादन बड़े साहस पूर्वक कर रही हैं कि मांस मनुष्य के लिये नितान्त हानिकारक पदार्थ है। शरीर के लिये ही नहीं मानसिक स्थिति को अवांछनीय बनाने का भी उसमें भारी दोष है। अगले दिनों जैसे जैसे शरीर शास्त्र की—आरोग्य शास्त्र की शोध अधिक गहराई से और बारीकी से होने लगेगी तो यह निष्कर्ष पूरी तरह सामने आ जायगा कि माँस मनुष्य का स्वाभाविक भोजन नहीं।

मांस उपार्जन के लिये जो शक्ति लगानी पड़ती हैउससे बहुत कममें अधिक पौष्टिक और अधिक अच्छा खाद्य उगाया जा सकता है। माँस मँहगा है उससे कहीं सस्ते, कहींअधिक स्वादिष्ट, कहीं अधिक पौष्टिक दूसरे पदार्थ मौजूद हैं और वे आसानी से पाये बढ़ाये जा सकते हैं। फिर मांस की ऐसी क्या जरूरत रह जाती है जिसके लिये मनुष्य को जीव हत्या जैसे नृशंस क्रूर कर्म में प्रवृत्त होना पड़े ? अण्डे और माँस का प्रचलन आज फैशन के नाम पर ही बढ़ रहा हैं वस्तुतः उपयोगिता की दृष्टि से यह पदार्थ दो कौड़ी मूल्य के हैं यदि मांसाहार बन्द कर दिया जाय तो न तो स्वास्थ्य को कोई क्षति पहुँचने वाली है और न खाद्य पदार्थोंमें कमी आयेगी मांस से कम श्रम साधनों में पौष्टिक खाद्य कहीं अधिक मात्रा में उगाया जाना नितान्त सरल है। माँस न खाने से खाद्य की कमी पड़ने वाली कल्पना नितान्त भ्रामक और अर्थ शास्त्रों के सिद्धान्तों से सर्वथा विपरीत है।

स्वाद, खाद्य पदार्थ पौष्टिकता आदि माँस के पक्ष में दी जाने वाली सभी दलीलें मनुष्यता की अपेक्षा कर नृशंसता अपनाने की बुराई के सामने अति नगण्य और अति तुच्छ हैं। इतनी बड़ी नैतिक हानि उठाकर यदि मांस खाये बिना जीवित न रहा जा सके तो अच्छा यही है कि हम कम दिन जियें या न जियें। दूसरों के जीवन मूल्य पर तो अपनी जीवन रक्षाभी स्वीकार नहींकी जानी चाहिए। फिर माँसाहार के पक्ष में तो पौष्टिकता स्वादिष्टता जैसी थोथी दलीलें हैं जिनके सही होने में पूरा-पूरा सन्देह व्यक्त किया जा सकता है।

इन दिनों एक विकट प्रश्न जरूर सामने है कि जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है और उसकी खुराक जुटानेके लिये जंगल चारागाह साफ किये जा रहे हैं। इससे कम लाभ दायक पशुओं का निर्वाह कठिन हो जायगा और जब दूध के लिए उनका प्रजनन ही चलता रहेगा तो पशुओं की बढ़ी हुई आबादी का निर्वाह किस तरह होगा ? यह प्रश्न इस-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिये भी जटिल होता जाता है कि पशुओं का श्रम मशीनों से लेने की प्रथा बढ रही है। हल की जगह ट्रैक्टर ले रहा है, सिंचाई के लिये बैलों की जरूरत पम्प पूरी करने लगे हैं। माल ढोने में बैल गाड़ियों का स्थान मोटर,ठेले (ट्रकों) ने ले लिया है ऐसी दशा में दूसरी कठिनाई यह खड़ी होरही है कि जब दुधारू पशुओं के बच्चे पैदा होंगे और वे काम में न आ सकेंगे तो फिर उनका क्या होगा। मांसाहारियों का सुझाव तो यह है कि उन फालतू पशुओं को काटकर मांस, चमड़ा, हड्डी आदि का लाभ उठा लिया जाय। पर हम शाकाहारियों को दूसरे ढङ्ग का हल सोचना पड़ेगा।

निस्संदेह अगले दिनों पशुओं की संख्या घटानी पड़ेगी मनुष्य बढ़ेगा तो पशु घटेंगे। जब मनुष्यों की वृद्धि के लिए ही धरती पर जगह नहीं, तो पशुओं की अनियन्त्रित अभिवृद्धि को ज्यों की त्यों नहीं रखा जा सकता। नियन्त्रण की बात तो इस सन्दर्भ में भी सोचनी पड़ेगी। वह इस प्रकार हो सकती है कि एक सर्वोपयोगी पशु को संरक्षण देकर दूसरों को समयानुसार अपनी मौत मरने के लिए छोड़ दिया जाना चाहिए। उनका प्रजनन बन्द कर दिय जाय। उपयोग रोक दिया जाय, जो जीवित हैं उनके निर्वाह का खर्च थोड़े दिन उठा लिया जाय तो वे नस्लें अपने आप कुछ समय में समाप्त हो जायेंगी। भैंस, बकरी भेड़ आदि का दूध न तो उतना उपयोगी है न पौष्टिक। उनके बच्चे भी किसी महत्वपूर्ण काम में नहीं आते। इसलिये इन नस्लों का अभिवर्धन मांसाहार की पृष्ठभूमि ही तैयार करेगा।

गाय संसार का सर्वोत्तम पशु है। उसके दूध में जिन तत्वों की प्रधानता है उसे देखते हुए मानुषी माता के बाद दूसरे नम्बर का उसी दूध को स्थान दिया जा सकता है। रक्त मांस, हड्डी आदि बढ़ने की ही नहीं—साहस, पौरुष, स्फूर्ति, उत्साह जैसे सद्गुणों की मात्रा स्वभाव में बढ़ाने की भी उसकी विशेषता है। गौ-दुग्ध बुद्धि वर्धक, सतोगुणी प्रवृत्ति और दीर्घजीवन प्रदान कर सकने की शक्ति से भरा है। चंद पिछड़े देशों में ही भैंस, बकरी का दूध प्रयुक्त होता है बाकी सारे संसार में दूध की आवश्यकता एकमात्र गौ दुग्धसे ही पूरी की जाती है। यह प्रधानता उसमें पाये जाने वाले जीवन तत्वों की उत्कृष्टता के आधार पर ही मिली है। गायके बछड़े ही भारत जैसे निर्धन पिछड़े और छोटी देह तों में रहने वाली—छोटी-छोटी ऊंची-नीची जमीन पर बनी जोत के लिए उपयुक्त हो सकते हैं। इसलिए साधन सम्पन्न थोड़े से लोगों को बड़े कामोंमें प्रयुक्त करने के लिए मशीनरी उपकरणों से सुविधा मिलेगी बाकी भार वहन, कृषि आदि के लिए बैल ही काम में आते रहेंगे। इस देश में गौ दुग्ध और बैलों की उपयोगिताकी दृष्टिसे इतनी आवश्यकता चिरकाल तक बनी रहेगी कि गाय की नस्ल बिना कमाई की छुरीके नीचे जाये अपना जीवनयापन कर सके। बुढ़ापे में भी इसका गोबर खाद का काम दे सकता है और मरने के बाद चमड़े, हड्डी आदि की इतनी कीमत उठ सकती है जितनी मे कि उसे बुढ़ापे में बिना काम लिये खिलाने का खर्च चल जाय।

भारतवर्ष में गाय को धार्मिक मान्यता अकारण नहीं दी गई है। गौदुग्ध की पौष्टिकता तथा मनस्विता बछड़ोंका कृषि तथा वाहन उपयोग,गोबर में अन्य पशुओं की तुलना में अधिक स्वच्छता एवम् उत्पादन शक्ति जैसी प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष विशेषताओं को ध्यान में रखकर ही वह प्राथमिकता दीगई है। जनसंख्या वृद्धि के कारण अगले दिनों जब कि अन्य पशुओं की संख्या घटना आवश्यक हो जायगा तब भी गौ अपनी उपयोगिता बनाये रहेगी और गो वंश को संरक्षण मिलता रहेगा।

इसे आश्चर्य ही कहना चाहिए कि जहाँ संसार भरके अन्य देशों में गो वंश की वृद्धि के लिए पूरा ध्यान दिया जा रहा है। औसत गाय ३० पौण्ड दूध देती है और युवा गाय की काटने की बात कोई सोच भी नहीं सकता। वहाँ अपने देश में उसकी दशा दयनीय हो रही है। नस्ल बिगड़ती जा रही है, दूध जरा सा देती है, उन्हें पालना अलाभदायक हो गया है इसलिए लोग गाय की अपेक्षा भैंस पालने हैं, इस उपेक्षा से बछड़े कमजोर मिलते हैं और अच्छे बैलोंकी कीमत बहुत बढ़ गई है। गौ को प्राथमिकता देनी हो तो उसे इतनी लाभदायक बनाना होगा कि उसकी उपयोगिता ही उसका सहज संरक्षण कर सके।

इस दिशामें पहला काम जनता द्वारा यह किया जाना चाहिए कि हर व्यक्ति केवल गौ दुग्ध का ही उपयोग करे। घी की जहाँ आवश्यकता है वहाँ गौ घृत का ही प्रयोग हो। लोगों को गौ दुग्ध और दूसरे पशुओं के दूध में शक्ल एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सी होते हुए भी गुणों में जो जमीन आसमान जैसा अन्तर है उसे समझाया जाय, इसके लिये बड़े पैमाने पर प्रचार की जरूरत है। ताकि जनता वस्तुस्थिति समझकर गौ दुग्ध की उपयोगिता समझ सके। गौ पालने के लिए वैयक्तिक और सामूहिक प्रयत्न किये जाँय और ऐसी व्यवस्था की जाय जिससे हर जगह गौ दुग्ध, गौ घृत आसानी से मिल सके। इस उद्योग में यदि सम्पन्न और समझदार लोग भाग लें तो गायों की नसल सुधारने, उनका पालन पोषण वैज्ञानिक दृष्टि से करने की व्यवस्था बन सकती है। अधिक दूध देने तथा अच्छे बछड़े देने के कारण गाय की उपयोगिता जितनी ही बढ़ती जायेगी माँस या चमड़े के लिये आज जो उसका विनाश हो रहा है वह उस विकसित स्थिति में आर्थिक दृष्टि से भी सम्भव न रहेगा। न कसाई उसे काटने का दुस्साहस करेंगे और न कानून बनाने के लिये आन्दोलन करना पड़ेगा। उपयोगिता ही सुरक्षा तथा प्राथमिकता की सबसे बड़ी गारंटी है। हमें गाय को इतना समर्थ और उपयोगी बना देना चाहिए ताकि अगले दिनों संरक्षण प्राप्त पशु के चुनाव में उसको प्राथमिकता मिल सके।

धार्मिक दृष्टि से गौ भक्ति को महत्व देने वाले, मांसाहार की हिंसात्मक दुष्प्रवृत्ति को रोकने के उत्सुक, पौष्टिक आहार ढूँढ़ने वाले, कृषि व्यवस्था की एक बड़ी आवश्यकता पूरी करने के इच्छुक एवम् मनुष्य तथा पशुओं की बढ़ती संख्या से उत्पन्न विग्रह का अहिंसक सुझाव ढूँढ़ने वाले सभी को गौ संरक्षण की बात आवश्यक प्रतीत होगी। बढ़ती हुई जनसंख्या अन्ततः पशुओं की संख्या सीमित ही रखने को विवश करेगी। ऐसी दशा में दूध का उत्पादन घटता जायगा वह बच्चों भर के लिये कठिनाई से उपलब्ध हो सकेगा इसलिए घी बनाने की प्रथा बन्द करनी चाहिये और उससे पकवान मिठाई बनाने पर तो अभी से प्रतिबन्ध लगाना चाहिए ताकि उस दुर्लभ खाद्य को जायके—चटोरेपन के लिये बर्बाद करने की अपेक्षा स्वास्थ्य संरक्षण के लिये आवश्यक जीवन तत्व उपलब्ध करने के लिये सुरक्षित रखा जा सके।

मांसाहार के शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, नैतिक दुष्परिणामों से जन-साधारण को परिचित कराया जाना चाहिए। लोग यदि यह अनुभव करने लगें कि पशुओं के साथ बरती जाने वाली क्रूरता मानवीय प्रकृति में सम्मिलित होकर परस्पर अनीति बरतने का द्वार खोलती है और उस बढ़ती हुई असुरता से व्यक्तित्वों की शालीनता और समाजगत स्नेह सहकारिता को भारी आघात लगता है तो निस्सन्देह मांसाहार को हर दृष्टि से अनुपयुक्त माना जायेगा। मिथ्या भ्रान्तियों ने मांसाहार को बढ़ाया है, निष्ठुरता ने पशुओं के साथ दुर्व्यवहार बढ़ाया है। इन दोनों ही दुष्प्रवृत्तियों पर कुठाराघात करके हमें वे परिस्थितियाँ पैदा करनी चाहिए जिनमें मनुष्य और पशुओं का शिक्षित और अशिक्षित भाइयों की तरह साथ-साथ प्रेम पूर्वक सहयोग भावना के साथ रह सकना सम्भव हो सके।

—×—×—

साम्प्रदायिक अनेकता से धार्मिक एकता की ओर

धर्मतन्त्र भी राजतन्त्र की तरह एक समर्थ शक्ति है। भौतिक जगत् के व्यवस्थाक्रम के संभालने में अब राजतन्त्र की क्षमता दिन-दिन बढ़ती जाती है। धर्म तन्त्र में व्यक्ति के दृष्टिकोण और समाज के भाव प्रवाह को ऊँचा बनाये रखने की पूरी सामर्थ्य है, भौतिक साधनों से आन्तरिक स्तर और मनोबल की शक्ति असंख्य गुनी अधिक है। आत्मबल की समुचित मात्रा होने पर साधन हीन व्यक्ति भी ऋषि-मुनियों जैसा महान व्यक्तित्व बनाये रह सकता है किन्तु पर्याप्त साधन सम्पन्न व्यक्ति यदि आन्तरिक दृष्टि से गया—गुजरा हो तो न केवल अपने लिये वरन् दूसरों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के लिये भी शोक-संताप का कारण बना रहेगा । हेय व्यक्ति की सम्पदा उसके लिये उलटी विपत्ति ही बढ़ाती है ।

धर्म तन्त्र का समर्थ और परिष्कृत रहना विश्व शाँति और मानवीय प्रगति के लिये आवश्यक है । उसके प्रभाव क्षेत्र में आदर्शवादिता और उत्कृष्टता के साथ-साथ सुख-शान्ति की स्थिर सम्भावना भी बनी रह सकती है । अस्तु हमें धर्म को उपयोगी, समर्थ और व्यापक बनाये रखने का प्रयत्न करना चाहिए ।

आज सभी क्षेत्रों में विकृतियाँ भर जाने की तरह धर्म तन्त्र भी अवांछनीयताओं और मूढ़ताओं से घिर गया है । अन्यथा धर्म मान्यताओं और परम्पराओं को अपनाकर लोग उच्च स्तरीय देवोपम जीवन जी रहे होते ।

धर्म क्षेत्र में घुसी विकृतियाँ उसकी उपयोगिता को नष्ट कर भ्रान्तियों, भ्रष्टताओं, संकीर्णताओं, द्वेष-दुर्भावों को बढ़ाने की विपत्तियाँ उत्पन्न कर रही हैं । धर्म का ऐसा स्वरूप अनुपयोगी ही सिद्ध होगा जो मनुष्य को ऊँचा उठाने की अपेक्षा नीचा गिराने लगे । आज उसका ढाँचा कुछ ऐसा ही बन गया है फलस्वरूप सर्व साधारण के मन में उसके प्रति अश्रद्धा उत्पन्न होती चली जाती है । यह स्थिति दुर्भाग्य पूर्ण है कि मानव जाति की प्रगति और सुख-शांति के लिए अतीव महत्वपूर्ण धर्म तन्त्र इस प्रकार अपनी उपयोगिता खो बैठे, और लोग उससे लाभ उठाने की अपेक्षा दूर रहने की बात सोचें ।

यों धर्म एक है । मानवीय कर्त्तव्यों और आदर्शों को ही धर्म कहते है सद्भावनायें और सत्प्रवृत्तियाँ धर्म की ही दो उपलब्धियाँ हैं । समस्त विश्व के समस्त मानव प्राणियों का धर्म एक है, पर देश काल पात्र के भेद से उन धर्म सिद्धान्तों को कहाँ, कब, किस हद तक, कैसे कार्यान्वित किया जाय इसमें परिस्थिति के अनुसार भेद करना पड़ता है । इससे उसके बाह्य स्वरूप में भेद दिखाई पड़ता है और उस भिन्नता के आधार पर अलग सम्प्रदाय बन जाते है । धर्म सिद्धान्तों की परिस्थिति भेद से प्रयुक्त करने में जो भेद-भाव करना पड़ा उसी ने सम्प्रदायों को जन्म दिया । इतने होते हुए भी उसके मूल सिद्धान्त सार्वभौम एवं सर्वजनीन ही बने रहेंगे ।

पिछले दिनों अन्धकार युग के प्रभाव ने अपना रंग धर्म क्षेत्र पर भी कम नहीं डाला है और उसे कम भ्रष्ट नहीं किया है । स्थिति ऐसी आ गई है कि अब या तो उसे सुधारना पड़ेगा या समाप्त करना पड़ेगा । यथा स्थिति नहीं चल सकती । वर्तमान स्वरूप बनाये रहने पर तो वह अपनी मौत मरेगा । नैतिक, सामाजिक और बौद्धिक क्रांति के सारे आधार धर्म तन्त्र को परिष्कृत करने से बन जाते हैं । श्रेष्ठ मनुष्य और उत्कृष्ट समाज बनाने की सारी संभावनायें धर्म तत्व की मूल मान्यताओं के साथ भली प्रकार जुड़ी हुई हैं । इसलिए हमें धर्म क्षेत्र की विकृतियों को दूर करने के लिये प्रयत्न करना चाहिए और उसे अपने मूल स्वरूप में विकसित कर इस योग्य बनाना चाहिए कि व्यक्ति और समाज को परिष्कृत बनाने की युग आवश्यकता को वह भली प्रकार पूरा कर सकने में समर्थ हो सके ।

हमने युग-निर्माण योजना के अन्तर्गत हिन्दू सम्प्रदाय के क्षेत्र में फैली हुई धर्म विकृतियों के संशोधन का और धर्म तत्व का परिष्कृत रूप प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है । इस आधार पर नव युग के सृजन में हमें बड़ी सहायता मिलती दिखाई दे रही है । अपनी गतिविधियों का प्रभाव यों सर्वत्र पड़ रहा है पर उससे हिन्दू धर्म को प्रगतिशील बनाने में अधिक सहायता मिली है, यह एक तथ्य है ।

हमारी भावना एक सीमित क्षेत्र या वर्ग तक अपनी गतिविधियाँ सीमित करने की कभी नहीं रही । हम हर बात को सार्वभौम और सर्वजनीन दृष्टि से देखते सोचते हैं । किसी धर्म या सम्प्रदाय से हम बँधे नहीं हैं । विश्व मानव से देवत्व का उदय करने का अपना कार्यक्रम सार्वभौम है । फिर हमारी गतिविधियाँ हिन्दू समाज को ही प्रधानता क्यों दे रही हैं ? हम मुसलमान ईसाई पारसी आदि धर्मों के क्षेत्र में क्यों प्रवेश नहीं करते और उनके सुधार का आन्दोलन क्यों नहीं चलाते ? यह एक प्रश्न सहज ही किया जा सकता है ।

इसका कारण यह है कि हमारा प्रभाव परिचय, ज्ञान तथा सम्पर्क हिन्दू समाज से है । हमारा जन्म हिन्दू समाज में होने से वैसा होना स्वाभाविक भी था । जहाँ जिसका प्रभाव परिचय होता है वह उसी क्षेत्र में ठीक तरह काम कर सकता है । सुधार के लिये कटु आलोचनायें लोग अपनों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की ही सुन सकते हैं। बिराने समझे जाने वाले दूसरे वर्ग सम्प्रदाय या देश के लोग दूसरे को सुधारने समझाने का काम करें तो उससे लोग अपना अपमान समझते हैं और उसकी बात सुनने को तैयार नहीं होते। इन जन समाज की मनोवैज्ञानिक कमजोरी को देखते हुए यही ठीक पड़ता है कि अपने-अपने वर्ग, क्षेत्र सम्प्रदाय का सुधार करने के लिए उसी वर्ग के कार्यकर्त्ता आगे आयें। सुधार के आदर्श और सिद्धान्त एक रहें। दिशा एक ही निर्धारित हो पर काम करने का क्षेत्र—कार्यकर्त्ता लोग अपनी सुविधा और सम्पर्क को बाँट लें।

चीनी भाषा जानने वाला ही चीन की जनता को कुछ समझा सकता है। हिन्दी भाषी के बहुत सिर पटकने पर भी उस क्षेत्र की जनता का हित साधन कर सकना कठिन है। इसी प्रकार सुधारक अपने देश, क्षेत्र, धर्म की परिधि में जितनी अच्छी तरह अपना श्रम सार्थक कर सकते हैंवैसा दूसरे क्षेत्रों में नहीं। कुछ समय पूर्व अमेरिका की एक महिला मिस मेयो ने भारत की सामाजिक, नैतिक अवांछनीयताओं का चित्रण करते हुए एक पुस्तक 'मदर इण्डिया' लिखी थी। उस पुस्तक का भारत में विरोध हुआ। उसके जबाब लिखे गये और उसे दुर्भावपूर्ण कहा गया। मुसलमानों द्वारा हिन्दू देवी देवताओं पर आक्षेप करने वाली कुछ पुस्तकें छपी थीं। उनका बहुत विरोध हुआ, जप्त कराई गईं और जवाब में इस्लाम धर्म की निन्दा की गई। दूसरी ओर आर्य समाजी भी हिन्दू धर्म के पुराणों, देवी-देवताओं अवतारों तथा सम्प्रदायों के विरुद्ध बहुत अधिक कडुआ बोलते रहते हैं, कुरीतियों और भ्रान्तियों की समीक्षा बहुत उग्र होकर करते रहते हैं। वे कई बार मुसलमानों के आक्षेपों से भी आगे बढ़ी-चढ़ी होती हैं और अमेरिकन महिला मेयो ने जो लिखा है उससे बहुत अधिक कटु चित्रण अपने समाज सुधारक करते रहते हैं पर आर्य समाजियों या सुधारकों का इतना विरोध नहीं होता, जितना कि अन्य धर्म या देश के लोगों द्वारा कहे लिखे जाने पर होता है। लोग जिन्हें अपना समझ लेते हैं उनकी कटु बात भी सहन कर लेते हैं और उनके प्रयासों को सद्भावना पूर्ण मानते हैं जब कि दूसरों की सच्ची बातें भी दुर्भाग्य पूर्ण लगती हैं।

बात कुछ अटपटी है। सही बात किसी के द्वारा भी अन्य वर्ग के द्वारा भी कही जाय, स्वीकार किया जाना चाहिए और गलत बात चाहे अपने लोग कहें तो भी न मानी जाय। पर अब कुछ मानसिक स्थिति ही उलटी हो गई है। कोई वैश्य ब्राह्मण समाज को बुरा-भला कहे तो ब्राह्मण चिढ़ जायेंगे पर यदि ब्राह्मण ही अपने समाज के दोषों को अधिक कडुए शब्दों में कहे तो उस वर्ग के लोग कुपित न होंगे हम भारतीय अपने देश की दुर्दशा पर अपने लोगों को जी भरकर कोसते रहते हैं पर कोई विदेशी वैसा कहे तो बहुत बुरा लगता है। वी० वी० सी० का दफ्तर इसलिये हिन्दुस्तान से उठाना पड़ा कि उसने हिन्दुस्तान की आन्तरिक दुर्दशा के कुछ चित्र टेलीविजन पर दिखाये थे। वैसे हम स्वयं भी उससे अधिक ही कटु चित्रण करते हैं, तब अपने को इस तरह नहीं रोका जाता। कभी आर्य समाजी मुसलमान धर्म की नुक्ता-चीनियाँ करते थे। भले ही उसका उद्देश्य उस वर्ग के लोगों पर सचाई प्रकट करना हो और बुराई छोड़ने की प्रेरणा जैसा ही रहा हो पर उसे बहुत बुरा माना गया और परस्पर कटुता ही बढ़ी—लाभ कुछ नहीं निकला।

इन ओंधे—तिरछे तथ्यों को ध्यान में रखते हुए अपने काम करने की शैली बहुत सोच-विचार कर बनानी चाहिए और जन मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर कदम उठाने चाहिये। यही किया भी गया है। चूँकि हम हिन्दू हैं, भारत निवासी हैं, इसलिए अपने धर्म और क्षेत्र की स्थिति को सामने रख कर सुधार की आवश्यकताओं को तलाश करते हैं और तदनुरूप कार्य शैली निर्धारित करते हैं। धर्म के सिद्धान्तों से इस देश तथा धर्म में कहाँ-कहाँ विकृतियाँ आई हैं और उनमें क्या-क्या सुधार करके धर्म तत्व के मूल आदर्शों को जन मानस में प्रतिष्ठापित किया जा सकता है इस निष्कर्ष पर ही अपनी गति-विधियाँ विनिर्मित हो रही हैं।

यही क्रिया कलाप हरधर्म,हरदेश हरक्षेत्र और संस्कृति में अपनाया जाना चाहिए और उस कार्य को उसी वर्ग के लोग अपने हाथ में और अपने क्षेत्र में जिन विकृतियों का उभार देखें उनका विरोध करने का कार्यक्रम बनायें। किन आदर्शों की किस वर्ग मे किस हद तक उपेक्षा अव-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हेलना हो रही है उसे देख समझ कर उस वर्ग के लोग अपने आन्दोलन और कार्यक्रम का निर्धारण करें और उसके लिए वैसे ही प्रबल प्रयत्न करें जैसे हम हिन्दू धर्म की, भारतीय समाज की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर कर रहे हैं।

हिन्दुओं में दहेज, मृत्युभोज नीच ऊँच जैसी सामाजिक विकृतियाँ भारी अहित कर रही हैं। मुसलमान समाज में इनमें से कोई कुप्रथा नहीं है, इसलिये उस वर्ग के लिये इस प्रकार के आन्दोलन व्यर्थ हैं। उस वर्ग में पुरुषों को चार पत्नी रख सकने की छूट, पर्दा प्रथा में अधिक कड़े प्रतिबन्ध, माँसाहार का निषेध न होना जैसी बुराइयों के विरुद्ध आन्दोलन होने चाहिए। ईसाई, पारसियो में दूसरी तरह की सामाजिक बुराइयाँ और दार्शनिक अवांछनीयतायें हो सकती हैं। उन्हें उसी वर्ग के लोगों द्वारा अधिक अच्छी तरह समझा और सुधारा जा सकता है

अपनी योजना यह है कि हर देश में से देश भक्त निजलें जो अपने राष्ट्र को धार्मिक और आध्यात्मिक आदर्श पर चलने के लिये प्रेरित करें और इस मार्ग में अड़े हुए अवरोधोंको हटाने के लिए प्रबल प्रयत्न करे। युग-निर्माण योजना हर धर्म, हर सम्प्रदाय में ऐसे कार्यकर्त्ता—मार्ग दर्शक लोक सेवी—जन नेता खड़े कर रही है जो अपने धर्म सम्प्रदाय के ग्रन्थों सन्तों, आदर्शों, परम्पराओं का सहारा लेकर सृजन और सुधार का समान ढाँचा खड़ा करे और उस धर्म के अनेक लोगों को साथ लेकर वैसा ही—उसी स्तर क —आन्दोलन चलायें जैसा कि हिन्दू धर्म का आधार लेकर इस क्षेत्र, वर्ग की जनता को आगे बढ़ाने के लिये हमने चलाया है। समस्त जन समाज को एक ही आदर्श, सिद्धान्त दृष्टिकोण एवं रीति-नीति का अनुयायी बनाने का लक्ष्य रहेगा तो अन्ततः यह सभी आन्दोलन विभिन्न नदियों द्वारा एक ही समुद्र की जल राशि बढ़ाने की तरह एक ही लक्ष्य के पूरक सिद्ध होंगे।

हम अनेकता को हटाकर एकता उत्पन्न करने जा रहे हैं। मनुष्य मात्र का एक धर्म हो, एक संस्कृति, एक आध्यात्म—एक लक्ष्य, एक दिशा और एक मनः स्तर हो। धर्म ऐसी एकता का पूर्णतया प्रतिपादन करता है, उसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की सर्वात्म भाव की ही प्रेरणा है। मनुष्य की व्यक्तिगत संकीर्णता ने धर्म को भी अपने स्तर के अनुरूप संकीर्ण बनाया है। अब जबकि तात्विक धर्म निष्ठा को पुनः सजीव किया जा रहा है तो वह भिन्नता के बीच एकता का आदर्श स्थापित करने में सहायक ही होगी। आरम्भ इसी प्रकार का उपयुक्त है कि एक आदर्श और एक लक्ष्य को लेकर विभिन्न धर्म सम्प्रदाओं के लोग अपने वर्ग क्षेत्र की विकृतियों को सुधारने और दुर्बलताओं को हटाने में लग जाय। युग-निर्माण योजना हिन्दू धर्म तक सीमित नहीं है। उसमें हमारे जैसे अनेक व्यक्ति अपने-अपने क्षेत्रों में प्रचण्ड अभियान आरम्भ करने के लिए तत्पर हो चुके हैं।

—०—०—

नारी का वर्चस्व—विश्व का उत्कर्ष

नर और नारी यों दोनों ही भगवान की दाँई-बाँई आँख—दाँई—बाँई भुजा—के समान हैं। उनका स्तर, मूल्य, उपयोग, कर्त्तव्य, अधिकार पूर्णतया समान हैं। फिर भी उनमें भावनात्मक दृष्टि से कुछ भौतिक विशेषतायें हैं। नर की प्रकृति में परिश्रम, उपार्जन, संघर्ष, कठोरता जैसे गुणों की विशेषता है वह बुद्धि और कर्म प्रधान है। नारी में कला, लज्जा, शालीनता, स्नेह, ममता जैसे सद्गुण हैं। वह भाव और सृजन प्रधान है। यह दोनों ही गुण अपने-अपने स्थान पर महत्व पूर्ण हैं। उनका समन्वय ही एक पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

सामयिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समय-समय पर नर और नारी की इन विशेषताओं का उपयोग किया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाता है। पिछले दिनों के विकास क्रम में कृषि, उत्पादन, पशु पालन, शिल्प, वास्तु, उद्योग, जैसे उपार्जन प्रधान कार्यों की जीवनयापन सम्बन्धी सुविधायें बढ़ाने के लिये आवश्यकता पड़ी सो पुरुष के वर्चस्व को उसमें प्रयुक्त किया गया, उन दिनों बर्बरता की मात्रा अधिक थी। पशुता से मनुष्यता की सेना की प्रगति धीरे-धीरे हो रही थी सो समाज में आसुरी आक्रमणकारी तत्वों का बाहुल्य रहता था। उनसे संघर्ष और युद्ध किये बिना आत्म-रक्षा का कोई उपाय न था। देवासुर संग्राम की कथा, गाथायें, इतिहास, पुराणों के पन्ने-पन्ने पर पाई जाती हैं वे उस समय की परिस्थितियों का दिग्दर्शन कराती हैं,। बस्तियाँ कम और जंगल अधिक थे सो उनमें रहने वाले हिंस्र पशु भी कम कष्ट नहीं देते थे। इनसे भी लड़ना पड़ता था। युद्ध कौशल में पुरुष की प्रकृति ही उपयुक्त थी सो उसे आगे रहना पड़ा। जो आगे रहता है, नेतृत्व भी उसी के हाथ में आ जाता है। जो वर्ग पीछे रहते हैं उन्हें अनुगमन करना पड़ता है। परिस्थितियों ने नर-नारी के समान स्तर को छोटा बड़ा कर दिया पुरुष को प्रभुता मिली—नारी उसकी अनुचरी बन गई। जहाँ प्रेम सद्भाव की स्थिति थी वहाँ वह उस आधार पर हुआ और जहाँ दबाव और विवशता की स्थिति थी वहाँ दमन पूर्वक यही किया गया। दोनों ही परिस्थितियों में पुरुष आगे रहा और नारी पीछे। क्रमशः यह स्थिति सह्य और स्वाभाविक बनती चली गई। यहाँ तक कि धर्म और परम्पराओं में भी उसी स्थिति का समर्थन किया गया और उसे उचित ठहराया गया। पिछले हजारों वर्ष का इतिहास इसी क्रम व्यवस्था का दिग्दर्शन कराता है।

नारी की गर्भ धारण विशेषता ने उसे शारीरिक दृष्टि से अपेक्षाकृत असुविधा जनक स्थिति में डाल दिया। गर्भ धारण करने के दिनों में प्रसव के समय—शिशुपालन की स्थिति में उस पर ही शारीरिक दबाव पड़ता है। इस क्षति की पूर्ति के लिये जिन सुविधा साधनों की आवश्यकता है वे आसानी से पूरे न हो सकने के कारण उसका स्वास्थ्य गिरता चला जाता है। उपार्जन और श्रम की सामर्थ्य घट जाती है। रोग भी उसे घेरते हैं और अकाल मृत्यु का दबाव भी उसी पर अधिक पड़ता है। इस मजबूरी और दुर्बलता ने नारी को पीछे रखा उसे पुरुष की सहायता अपेक्षित हुई और इस सहायता के बदले उसे नर का वर्चस्व, नेतृत्व और नियन्त्रण स्वीकार करना पड़ा। विवशता का लाभ आमतौर से उठाया जाता है। पुरुष ने भी इस सम्बन्ध में कुछ कमी न रखी। नर द्वारा नारी के उत्पीड़न की एक दर्द भरी कथा से लम्बा इतिहास भरा पड़ा है। इससे पीछे नारी की विवशता का नर द्वारा अवांछनीय लाभ उठाने का तथ्य ही अपनी निर्लज्जता का पग-पग पर प्रदर्शन करता है। स्थिति का सही विश्लेषण यही है।

यहाँ हमारा प्रयोजन इतिहास का विश्लेषण या नर नारी के बीच अवांछनीय स्थिति की चर्चा करना नहीं, वरन् उद्देश्य यह है कि नव निर्माण में नारी की महत्ता और विशेषता का उपयोग कैसे किया जाय? पुरुषार्थ परक सृजन बहुत हो चुका। आगे भी उसके होते रहने की गति तीव्र से तीव्रतम होती चली जाती है। बुद्धि को तेज करने और उसके उपयोग करने की तरकीबें एक से एक बढ़िया निकाली और बढ़ाई जा रही हैं। प्रारम्भिक शिक्षा देने वाले स्कूलों के लिये पैसा कम है पर कालेजी तथा तकनीकी शिक्षा देने वाले संस्थानों को काफी पैसा मिल रहा है और उनके द्वारा युद्ध से लेकर यान्त्रिकी, भौतिकी, कानून, शिल्प आदि अगणित विषयों की बहुत सी बातें सिखाई जा रही हैं। बुद्धिमानों की नित नई सेना अभिवृद्धि बढ़ती चली जा रही है, उपयोग की लालसा दिन-दिन उग्र होती जाती है, उसकी पूर्ति के लिए लोग दिन-रात घोर पुरुषार्थ कर रहे हैं। नर की दो ही प्रवृत्तियां प्रधान हैं श्रम और तरकीबें भिड़ाने की चतुरता। जिस हद तक जन जीवन के लिए यह तत्व आवश्यक हैं उनसे वे कम नहीं वरन् अधिक ही मौजूद हैं। भविष्य की सम्भावना को देखते हुए उसमें कुछ बढ़ोतरी ही हो सकती है—कमी नहीं।

पर शान्ति और सुव्यवस्था में जो इन दिनों गतिरोध उत्पन्न हो गया है, उनके दूर करने में न श्रम से काम चलता दीखता है न चतुरता से। भावनात्मक अधःपतन की समस्या न पुरुषार्थ की कमी से पैदा हुई है और न चतुरता में घाटा पड़ने से। भौतिक पदार्थों के अभाव से भी यह संकट उत्पन्न नहीं हुआ। उपरोक्त कमियाँ सिर्फ भौतिक साधनों की न्यूनता रख सकती है। भावनात्मक संकट उनके कारण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्पन्न नहीं हो सकता। गरीब लोगों ने सदा अमीरों की तुलना में अधिक ऊँचे आदर्श प्रस्तुत किये हैं। साधु और ब्राह्मणों का एक विशाल वर्ग प्राचीन काल में भौतिक दृष्टि से अभावग्रस्त जीवनयापन ही करता था पर उसका आंतरिक स्तर हर कसौटी पर प्रखर और समुन्नत ही सिद्ध होता था। इतिहास के पन्ने बताते हैं कि समर्थ और सम्पन्न लोगों ने ही इस दुनिया में कहर ढाये हैं। मनुष्यता को कलङ्कित करने वाला जो कुछ भी विश्व इतिहास में उपलब्ध है उसके कर्ता धर्ता अधिक बुद्धिमान, अधिक समर्थ और अधिक साधन सम्पन्न लोग ही रहे हैं।

आज के भावनात्मक संकट को दूर करने के लिए न सम्पदा की जरूरत है, न श्रम की न कुटिल चतुरता की। इन दिनों सबसे बड़ा सृजनात्मक तत्व सहृदयता, ममता, सेवा और करुणा से ओत-प्रोत कोमल भावनाओं का पुञ्ज ही हो सकता है। यह खनिज हमें नारी अन्तःकरण के अतिरिक्त अन्यत्र कहाँ मिल सकते हैं। सेवा, करुणा और दूसरों को सुखी बनाने में ही प्रायः उसका सारा जीवन बीतता है। बचपन में भाई बहिनों के लिए वही बहुत कुछ करती है, युवावस्था आते ही अपना सारा तत्व पति के चरणों पर समर्पण कर देती है। प्रसव के मृत्यु तुल्य कष्ट को भावी बालक के लिए की जा सकने वाली सेवा साधना की मधुर कल्पना के लिए खुशी-खुशी सह लेती है। बालकों को अपना लाल रक्त श्वेत दूध के रूप में बदल कर मिला सकने और उस अनुदान के प्रति किसी अहसान का भाव तक मन में न लाना केवल नारी के लिए ही सम्भव है। क्षमा, ममता, आत्मीयता, सेवा के अगणित निर्झर हर नारी के जीवन पर्वत से फूटते और बहते दिखाई दे सकते हैं। कोई उसकी कोमल भावनाओं को छू सके तो सहज ही बड़े से बड़ा त्याग बलिदान करते देख सकता है। नारी का शोषण, उत्पीड़न, प्रताड़ना से कम, किन्तु कष्ट प्रवाह में बहा कर उसका सब कुछ छीन लेने की दुरभिसन्धि द्वारा ही अधिक होता देखा जा सकता है।

भावनात्मक दृष्टि से—आन्तरिक उदारता और उत्कृष्टता की दृष्टि से नारी का स्तर नर की तुलना में बहुत ऊँचा स्वभावतः है। यह विशेषता भरा अनुदान उसे प्रकृति प्रदत्त उपहारके रूपमें मिला है। नर का उद्धत व्यक्तित्व नारी की कोमल सरसता की उपलब्धि बिना अधूरा और अपूर्ण ही रह जाता है। सतीदहनके बाद पत्नीवियोग से शंकर भगवान का विक्षिप्त हो उठना और उस मृत शरीर को कन्धे पर रख कर ताण्डव नृत्य करने लग जाना यह बताता है कि नारी के सहयोग का अभाव ऊँचे से ऊँचे व्यक्तित्व को कितना बेचैन, विचलित कर सकता है। यह अकारण नहीं यह नारी की स्वाभाविक विशेषता है जो पिता, भाई, पति, पुत्र को ही नहीं—साथिन सहचारियों को ही नहीं—समस्त विश्व को कोमल भावनाओं से परिप्लावित करती है और एक प्रकार से भौतिकता की शुष्क रिक्तता को अपने ममता भरे अध्यात्म से सरल सुषमा के रूपमें बदलती है। भौतिक सृष्टि में जो सरसता दीखती है वह जल का चमत्कार है। चेतन जगतमें जो मधुरिमा, तृप्ति, सद्भावना दीख पड़ती है उसका मूल उद्गम नारी का अस्तित्व ही है। उसके अभाव के बाद नर जो कुछ रह जाता है उसकी तुलना मरघट में रहने वाले भूत बैतालों से ही की जा सकती है।

नव सृजन का जो स्वरूप होगा उससे प्रसुप्त रूप करुणा और ममता को जगाने की बात को ही प्राथमिकता मिलेगी। इन दिनों मनुष्य कंगाल केवल भावनात्मक दृष्टि से ही हुआ है। पिछले दिनों सम्पन्नता तेजी से बढ़ी है, गिरावट तो केवल सद्भावनाओं में ही आई है। और समस्त सङ्कट इसी अभाव ने उत्पन्न किया है। हमें अपने चारों ओर शोक संताप की, क्लेश-कलह की, भ्रष्टाचार अनाचार की—शोषण, उत्पीड़न की, अज्ञान अभाव की जो सर्वग्राही सघन घटायें छाई दीखती हैं उनका एक मात्र कारण सद्-भावनाओं की घटोतरी होते जाना ही है। यदि सज्जनता, सहायता और स्नेह सहकारिता के उच्च आदर्श हमारे मनों में भर जायें तो दुनिया में जितनी कुछ साधन-सामग्री उपलब्ध हैं, उतने को मिल बाँटकर उपभोग करने के आधार पर सर्वत्र शांति और सुव्यवस्था रह सकती है और हर कोई सुख-शांति का जीवन जी सकता है।

इस अभाव की पूर्ति के लिए नारी को आगे लाना पड़ेगा। उसी के हाथ में विश्व का नेतृत्व सौंपना पड़ेगा। जिसके पास जो विशेषता है वही उसे दे सकने में समर्थ हो सकता है। पुरुष के पास जो कर्कशता थी, उससे उसने गृह युद्ध से लेकर विश्व युद्ध तक की विभीषिकाऐं विनिर्मित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करदीं और उन्हीं को सुलझाने में हमारी लगभग आधी शक्ति खर्च हो जाती है। अवांछनीयता, अन्याय और अनौचित्य से लड़ने में हमारा जो शक्ति भाग खर्च होता है उसे सृजन में लगाया जा सकना सम्भव हो गया होता तो आज इस दुनिया की दशा कुछ दूसरी ही होती तथा स्वर्गीय सतयुग के दृश्य सर्वत्र बिखरे दिखाई पड़ते। नर के नेतृत्व के नजारे चिरकाल से देखते चले आ रहे हैं। उसकी प्रतिभा ने भौतिक दृष्टि से कुछ उपलब्धियाँ दी हैं उनसे इनकार नहीं किया जा सकता। नारी के नेतृत्व को अवसर नहीं मिला। यदि मिला होता तो भौतिक उपलब्धियों में सम्भव है कुछ न्यूनता रह जाती पर भावनात्मक अभाव कहीं दिखाई न पड़ता। नारीने अपने नेतृत्वमें जो काम सँभाला होता उसमें घर के सँभालने, सँजोने और स्नेह सिक्त करने की भावना रही होती—करुणा और ममता सर्वत्र छलकती होती और जो भी ढाँचा खड़ा किया जाता उसमें स्नेह-सद्भाव, सृजन और सम्मिलन के अतिरिक्त दूसरी कोई प्रवृत्ति अग्रसर न हुई होती। पूतना, ताड़का और सूर्पणखायें तो उनमें भी होती हैं और रक्त का खप्पर भर कर पीने वाली मातंगी तो उनमें भी देखने को मिल जाती हैं, पर वे अपवाद हैं। स्वाभाविक रूप से नारी का अर्थ दया-करुणा, उदारता, ममता सेवा-रचना जैसी सत्प्रवृत्तियाँ ही हो सकती हैं। उसे नेतृत्व का अवसर मिला होता तो संसार में एक भी युद्ध और महायुद्ध न हो सका होता, धरतीपरनृशंसताओं वीभत्स घटनाओंसे भरा एकभी इतिहास का पन्ना देखनेको न मिलता। नारी का स्वाभाविक ढाँचा सहृदयता से परिप्लावित है। वह यदि विश्व की व्यवस्था करने का अवसर पासकी होती तो निस्सन्देह सर्वत्र आत्मीयता और ममता ही देखने को मिलती। सर्वत्र सृजन ही सृजन हो रहा होता। सर्वत्र सद्भाव और सहयोग ही बिखरा पड़ा होता, नर ने अपने पुरुषार्थ और चातुर्य को कुटिलता में मिलाकर निस्सन्देह अपनी गरिमा को खो दिया है। समय आ गया है कि उसे पदच्युत किया जाय और नारी को वह अवसर दिया जाय जिससे वह भाव शून्यता के कारण उत्पन्न हुई वर्तमान विभीषिका को हल करनेकी अपनी योग्यता सिद्ध कर सके।

युगनिर्माणके लिये नारी को आगे आना और ऊपर उठना होगा। उसके पैरों में बँधी बेड़ियाँ—हाथों में जकड़ी हथकड़ियाँ—गले की जंजीरें कटनी चाहिए। अति अन्याय पूर्ण प्रतिबन्धों ने उसकी प्रतिभा को सहस्राब्दियों से पैरों तले कुचला है अब उस दुष्टता का अन्त होना चाहिये और सामान्य मानव प्राणी के सभी स्वाभाविक अधिकार उसे मिलने चाहिये जिनका अपहरण निर्लज्जता पूर्वककर लिया गया है। यह स्वीकार किया जाना चाहिये कि नारी—मनुष्यता से बहिष्कृत नहीं—हाँ—उसे मनुष्य की तरह जीने का हक है और जो हक नर का है उससे कम किसी भी क्षेत्र में नारी का नहीं होना चाहिये। यदि पतन के गर्त में गिरने की नर को स्वाधीनता है तो वैसी ही नारी को देने में किसी को आपत्ति न होनी चाहिये। नागरिक अधिकारों की समानता और स्वाभाविकता का उपयोग नर की तरह नारी को भी करने का अवसर मिलना चाहिए। ईमानदारी और न्याय का तकाजा यही है। नर अपनी सुविधा के लिये नारी के प्रति बेईमानी औरअनीति भरे प्रतिबन्ध लगाये वह अवांछनीय और असह्य घोषित किया जाना चाहिये। मर्यादाओं और प्रतिबन्धों की एक दूरदर्शिता पूर्ण आचार संहिता बनानी चाहिये और उसे पालन करने के लिये नर और नारी को समान रूप से बाध्य होना चाहिये। उसके उल्लंघन का दण्ड दोनों के लिए ही एक समान निर्धारित किया जाना चाहिये। पक्षपात पूर्ण नियम प्रतिबन्धों के समर्थन के लिये जो भी तर्क और प्रमाण प्रस्तुत किये जायें उन्हें अप्रमाणिक और कुतर्क मात्र ठहराया जाना चाहिये। न्याय की, विवेक की, औचित्य की, समानता की माँग देर तक अब न दबाई जा सकेगी इसलिये अब सामान्य न्यायोचित स्थिति ही पैदा की जानी चाहिये। इसके बिना नारी को अपनी महत्ता और विशेषता को प्रमाणित करने का अवसर कैसे मिलेगा?

नव युग में नारी को विलास सामग्री—रमणी—बन्दी, दासी, अपङ्ग, असहाय, पराश्रित और पददलित स्थितिमें पड़ी कराहती हुई नहींदेख सकते। हमारा स्वप्नहै कि नारी अगले दिनों अपना स्वाभाविक स्थान प्राप्त करेगी, इतना ही नहीं वर्तमान भाव सङ्कट को दूर करने के लिये नेतृत्व की बागडोर उसके हाथ में सौंपी जायगी। नर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपजाऊ करेगा और जहाँ प्रतिरोधक अवसर आयेंगे वहाँ उसका संघर्षात्मक उपयोग किया जायगा। भौतिक सृजन वह करे यह क्षेत्र उसके लिये उपयुक्त भी है और पर्याप्त भी। नारी के हाथ में वे सारे सूत्र सौंप दिये जाने चाहिये जो भाव क्षेत्र से सम्बन्ध रखते और उसे प्रभावित करते हैं। शिक्षा पर पूरा अधिकार उसी का होना चाहिए। शिक्षा पद्धति के निर्धारण से लेकर प्रशिक्षण तक का सारा उत्तरदायित्व वह ऐसी अच्छी तरह सम्भाल सकती है कि सज्जनता, सहृदयता, सद्भावना और सहकारिता की सत् प्रवृत्तियों से हर शिक्षार्थी ओत-प्रोत-दिखाई देने लगे। कला में आज उसकी मजबूरी से लाभ उठाकर उसे कुत्सित स्तर पर प्रस्तुत किया जाता है। कल जब कला क्षेत्र का नेतृत्व उसके हाथ में सौंपा जायेगा तो शालीनता, उत्कृष्टता, आदर्श वादिता, मानवता और सद्भावनाओं के अतिरिक्त उस महान मंच की अभिव्यक्तियाँ नीचे आ ही नहीं सकतीं। तब कला केवल मानव अन्तरात्मा का स्पर्श करके उसे पशुता से देवत्व की ओर ही अग्रसर करने में संलग्न दिखाई देगी।

साहित्य का सृजन महिलाऐं करें—कवित्व उनके अन्तःकरण से फूटे, संगीत उनकी आत्मा गाये, चित्र उनके सपनों के रंगे जाँय तो फिर इस धरती पर श्रेष्ठता और सहृदयता के अतिरिक्त यहाँ और कुछ भी दीख न पड़ेगा। शासन उनके हाथ में सौंपा जाय तो पीड़ितों, शोषितों, पिछड़े हुए पक्षों और असहायों को अपने दुखों से निवृत्ति का एक स्वर्गीय स्वप्न साकार होता दीखेगा। जो आतङ्क, शोषण, भ्रष्टता, अहङ्कार कुटिलता और छलना को राजनीति का अङ्ग मानते हैं और इसी आधार पर शासनसत्ता का उपभोग करते हैं उन्हें अपना विचार और आचार बदलना होगा। माता अपने असंख्य पुत्रों को इस प्रकार अनर्गल आतङ्क के कोल्हू में नहीं पिलने देगी। दुष्टता को स्वेच्छा या विवशतासे पलायन करना होगा। तबराजनीति को धर्मनीति का पोषक और पूरक बनकर रहना पड़ेगा।

समाज की नई व्यवस्था बनाने में नारी का मस्तिष्क और कौशल काम करेगा तो प्रथा परम्पराओं में एक अभिनव बसन्त का आगमन दीखेगा। तब पुत्री का जन्म दुर्भाग्य पूर्ण न माना जायेगा—तब कन्या का विवाह करने के लिये किसी को पैसा जुटाने और दहेज देने की चिन्ता न करनी पड़ेगी, तब करोड़ों की संख्यामें आज की बन्दी और अपङ्ग बनी बैठी महिलाऐं—पुरुष के—कन्धे से कन्धा मिलाकर कामकर रही होंगी और अपने उत्पादन से संसार की शोभा, सुसज्जा, व्यवस्था और शान्ति का एक नया ही आविर्भाव कर रही होंगी। न्याय जब उनके हाथ में आयेगा तो अन्याय का बोल,बाला कैसे होगा। चिकित्सा वे करेंगी तब हर रोगी को अपने ऊपर ममता बरसती देखकर दुःख को भूल जाने का अवसर क्यों न मिलेगा? तब अस्पताल के रोगी अपने को स्नेह सिक्त स्वर्ग में पाप-तापों से मुक्ति पाने का लाभ क्यों न ले रहे होंगे? जब अध्यात्म और धर्म का नेतृत्व नारी के हाथ में होगा तो प्रपंचियों को अपने जाल-जंजाल समेटते ही बनेंगे।

नये युग के लिये हमें नई नारी का सृजन करना होगा जो विश्व के भावनात्मक क्षेत्र को अपने मजबूत हाथों में संभाल सके और अपनी स्वाभाविक महत्ता का लाभ समस्त संसार को देकर नारकीय दावानल में जलने वाले कोटि-कोटि नर पशुओं को नर नारायण के रूपमें परिणत करना सम्भव करके दिखा सकें। नारी के उत्कर्ष वर्चस्व को बढ़ा कर उसे नेतृत्व का उत्तरदायित्व जैसे-जैसे सौंपा जायेगा वैसे वैसे विश्व शान्ति की घड़ी निकट आती जायेगी।

—०—०—

जनसंख्या की वृद्धि--एक भयावह अभिशाप

धरती एक सीमित मात्रा में प्राणियों का भार वहन कर सकती है, उसकी उत्पादन क्षमता और परिधि सीमित है। उसे चाहे जितना नहीं बढ़ाया जा सकता पर मनुष्यकी उत्पादन शक्ति पर ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है। सामान्यतया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लड़कियाँ १७-१८ वर्ष की आयु से प्रजनन आरम्भ कर देती हैं और वह क्रम प्रायः ४५ वर्ष की आयु तक चलता रहता है। लगभग ३० वर्ष की युवावस्था ऐसी रहती है जिसमें बच्चे पैदा किये जाते रह सकते हैं। ३ वर्ष पीछे एक बच्चे का क्रम माना जाय तो इस अवधि में दस बच्चे हो सकते हैं। इनमें से यदि आधे ही जीवित रहें तो एक जोड़ा पाँच का उत्पादन क्रम आसानी से चला सकता है।

यह उत्पादन प्रक्रिया यदि यथावत जारी रहे तो २५ वर्ष में बदलने वाली प्रत्येक पीढ़ी, नये बच्चे पैदा करने में लग सकती है और ५×५×५×५==६२५ वर्ष की चार पीढ़ियों में एक जोड़े द्वारा चक्रवृद्धि गति से ६२५ बच्चे हो गये। चूँकि यह औसत नर-नारी के एक जोड़े-पर दो व्यक्तियों पर फैलाया गया है इसलिये आधा करने पर हर व्यक्ति की प्रजनन औसत १०० वर्ष में ३१२ हो सकती है। इसमें से रोग, अकाल मृत्यु, बन्ध्यत्व आदि के माध्यम से होने वाली मृत्यु से कितनी ही बड़ी कटौती की जाय, जन-संख्या निश्चित रूप से बढ़ती ही रहेगी। उस बढ़ोतरी के हिसाब से खाद्य-पदार्थों का उत्पादन असम्भव है। जंगल तोड़कर या बेकार जमीन को काम में लाकर, रासायनिक खाद, सिचाई व्यवस्था, यन्त्र उपयोग बढ़ाकर कृषि उत्पादन कितना ही क्यों न बढ़ाया जाय। जनसंख्या वृद्धि के हिसाब से वह पीछे ही रहेगा और खाद्य की कमी पड़ने लगेगी।

अपने देश में जन्म दर तेजी से बढ़ रही है। पिछले सौ वर्षों में आबादी प्रायः तीन गुनी हो गई। यह तो तब हुआ है जब पिछले दिनों दुर्भिक्ष, भूकम्प, महामारी, उपद्रव, दंगे, युद्ध, दुर्घटनाऐं करोड़ों मनुष्यों को अपने पेट में आकस्मिक रूप से भर ले गये। सामान्य स्थिति रही होती तो जनसंख्या और भी अधिक बढ़ सकती थी।

जंगल तोड़कर या अनुत्पादक जमीनों को उत्पादन योग्य बनाकर जो खेती बढ़ाई गई वह बहुत स्वल्प है। उससे जो अधिक उत्पादन हुआ वह बढ़ती हुई जनसंख्या की तुलना में नगण्य ही कहा जा सकता है। अन्न की कमी बढ़ती ही जाती है। विदेशों से दान में तथा खरीद कर भारी मात्रा में अन्न मँगाना पड़ता है। वह कभी राजनैतिक कारणों से बन्द भी हो सकता है ऐसी दशा में भूखों मरने के अतिरिक्त और क्या चारा रह जायगा?

चीजों की जरूरत बढ़ती है और उत्पादन कम होता है तो उसके दाम मँहगे होते चले जाते हैं। इस अर्थ सिद्धान्त के अनुसार अन्न की मँहगाई बढ़ती चली जा रही है और एक से दूसरी का सम्बन्ध जुड़ा रहने से ही हर चीज की मँहगाई बढ़ती है। चीजों की कीमतें पिछले ३०-३५ वर्षों से प्रायः १० गुनी हो गई हैं। इसके अन्य कारण भी हो सकते हैं पर एक बड़ा कारण यह भी है कि जनसंख्या जिस तेजी से बढ़ी उस अनुपात से खाद्य पदार्थों का उत्पादन बढ़ सकना सम्भव न हो सका। आगे यह प्रक्रिया इसी ढङ्ग से जारी रहे तो खाद्य वस्तुएँ कम पड़ती जायेंगी। उनके दाम और बढ़ेंगे तथा उस कमी के कारण स्वल्प साधन वालों को बेमौत मरना पड़ेगा।

खाद्य सम्बन्धी एक ही समस्या जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न नहीं होती वरन् अनेक आवश्यकतायें सामने आती हैं। निवास के लिये मकानों की जरूरत पड़ती है। इनमें पूँजी लगती है, स्थान घिरता है। जो पूँजी उद्योग व्यवसाय बढ़ाने में लग सकती थी, जो जमीन खाद्य उगा सकती थी वह नये मकान बनाने में घिरती चली जाती है। आबादी के हिसाब से मकान न बढ़े तो लोगों के निवास की कठिनाई बढ़ती है और किराया मंहगा होता चला जाता है। बड़े नगरों में आज एक गृहस्थ के लिये कठिनाई के साथ गुजारा कर सकने के लिये भी १००) से कम में मकान नहीं मिलता। दो तीन सौ कमाने वाले को अपनी आमदनी का एक बड़ा अंश किराये में देना पड़ता है, और बचे हुए में निर्वाह कठिन पड़ता है। देहात में किराये की बात तो नहीं है पर वहां भी गाँव दिन दिन अधिक बिचपिच होते जाते हैं। हवा और रोशनी घिचपिच में स्वभावतः कम पड़ेगी। सफाई की एक तो अपनी आदत ही कम है, सरकारी साधनों में साधन और उत्साह दोनों ही कम रहने से सघन निवास स्वभावतः अधिक अस्वच्छ रहने लगता है। यह अस्वच्छता स्वभावतः अस्वस्थता बढ़ावेगी। बीमारी बढ़ेंगी, लोग कमजोर और अनुत्पादक बनते चले जायेंगे। जनसंख्या बढ़ने से खाद्य की तरह निवास की समस्या भी जटिल होती चली जायगी।

यातायात की समस्या बढ़ती है। लोगों को इधर-उधर जाना ही पड़ता है। सवारियाँ कम पड़ेंगी, उनमें भीड़

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बढ़ेगी, किराया बढ़ेगा, साथ ही असुविधा भी। आज रेलों में, बसों में कहीं भी आप जाँय धकापेल भीड़ मिलेगी। और बीमार, कमजोरों के लिए, बाल वृद्धों के लिये यह यातायात भारी असुविधाजनक सिद्ध होगा। वस्त्र आदि की माँग बढ़ने से मिल फैक्टरियाँ बढ़ेंगी, रेल, मोटर चलेंगी उनका धुआँ वायु-मण्डल को निरन्तर दूषित करेगा। फैक्टरियों का गन्दा पानी नदियों में ही डाला जाता है, बड़े नगरों का मलमूत्र भी नदियों में पड़ता है। इस अस्वच्छता की मात्रा बढ़ते जाने से पानी की गन्दगी भी बढ़ती चली जायगी। अमेरिका आदि बड़े देशों के व्यापारिक नगरों में यह वायु और जल की अशुद्धि इतनी अधिक बढ़ गई है कि उसे एक भयानक स्वास्थ्य सङ्कट के रूप में देखा जा रहा है और इस कारण उत्पन्न हो रही विपत्ति से कैसे बचा जा सकता है इस पर भारी मन्त्रणाएँ हो रही हैं और अति गम्भीरता के साथ हल सोचे जा रहे हैं। यह समस्या हर जगह आयेगी। बढ़ती हुई आबादी से गन्दगी की मात्रा बढ़ेगी और उससे प्रत्यक्ष अस्वच्छता ही नहीं आकाश और जल में भी मलीनता के अंश बढ़ने से कठिनाइयों में एक नया दौर जुड़ता चला जायगा।

स्कूल, अस्पताल, पुलिस, जेल, कचहरी, डाक, फैक्टरी आदि का बढ़ना, बढ़ती आबादी के साथ नितान्त स्वाभाविक है। इनसे कुछ लोगों को आजीविका मिलती है यह ठीक है पर उनसे बढ़ने वाले खर्च जितने बढ़ते हैं उस अनुपात से रोजगार नहीं बढ़ता। इनके लिये टैक्स बढ़ते हैं, वेतन अधिक देना पड़ता है अन्ततः वह लौट पलट वस्तुओं की मँहगाई के रूप में सामने आ खड़ी होती है। उद्योग बढ़ने के लिये पूँजी भी चाहिये और निकासी के लिए क्षेत्र भी। वह कम हो तो उद्योग भी बड़े पैमाने पर नहीं बढ़ सकते फलस्वरूप काम की कमी रहती है, बेकारी बढ़ती चली जाती है। कहना न होगा कि बेकारी में अनैतिकता बढ़ती है और अपराध पनपते हैं। अपराधों की बढ़ती हुई संख्या के बारे में सरकारी रिपोर्ट पढ़ी जाँय तो वे आबादी के अनुपात में कुछ अधिक बढ़ती चली जा रही हैं। ऐसे अनैतिक आचरण जो कानूनी पकड़ में नहीं आते उनकी ओर दृष्टिपात किया जाय तो उससे जनसंख्या के साथ बढ़ती हुई बेकारी के दुष्परिणाम बहुत ही स्पष्ट हो जाते हैं। यह क्रम बढ़ता रहा तो परस्पर स्नेह, सहयोग के स्थान पर छल, कपट, असहयोग, आक्रमण आदि की आशङ्काएँ ही बढ़ती चलेंगी और हर व्यक्ति अपने को असुरक्षित अनुभव करेगा।

धरती में मनुष्य के भार वहन की शक्ति सीमित मात्रा में ही है। वह अपनी सीमा के अनुरूप ही जनसंख्या को पोषण दे सकती है इसलिये बुद्धिमत्ता का तकाजा यही है कि मानवीय विवेक इस बात को स्वीकार करले कि जनसंख्या बढ़ाने की बात पर यदि नियन्त्रण न किया गया तो हर स्तर की विपत्तियाँ बढ़ेंगी जननी का स्वास्थ्य चौपट होगा औ पिता की आर्थिक कमर टूटेगी अब बच्चों का पालन सरल नहीं रहा। उनके लिए अन्न, वस्त्र ही काफी नहीं होता। क्षिक्षा, चिकित्सा, शादी और आजीविका के साधन जुटाने के कर्त्तव्य पालन करना पिता के लिये इतना मँहगा पड़ता है कि मरते दम तक उसको अर्थ चिन्ता उद्विग्न किये रहती है माताओं के शरीर में पौष्टिक आहार के अभाव में उतने जीवन तत्व नहीं रहते कि बार-बार बच्चे पैदा करने पर भी अपने स्वास्थ्य को ठीक रख सकें। एक दो बच्चा पैदा होने के बाद ही लड़कियों का यौवन प्रायः सदा के लिये चला जाता है और तीन चार बच्चों के बाद तो उन्हें कभी अच्छा न होने वाले—अनेक रोगों से घिरी हुई—जिन्दगी के दिन रो-झीक कर काटने वाली बुढ़िया की तरह मौत के दिन पूरे करने पड़ते हैं। अस्वस्थ शरीर को लेकर कई बच्चों को जनने और पालने का कष्ट कितना होता है उसे भुक्त भोगी ही जान सकता है। मोह, ममता ही किसी प्रकार उन्हें जीवित रखती है अन्यथा दूसरों के लिये उतना करना पड़े तो जीना दूभर बन जाय। प्रसव कष्ट से मरने वाली स्त्रियों की संख्या इतनी अधिक है कि लगता है यह विपत्ति प्राण सङ्कट लेकर ही आती है जो बच जाय उसे मौत से लड़कर जान बचा लेने वाली सौभाग्यशालिनी ही कहना चाहिए। अब वे स्वास्थ्य नहीं रहे जिनमें प्रसव प्रजनन हँसी खेल था। आज की गई बीती तन्दुरुस्ती में तो महिलायें यह जोखिम अपनी जान हथेली पर रखकर ही उठा पाती है।

हर समझदार व्यक्ति को सोचना चाहिए कि जिन बच्चों की हम उचित शिक्षा सुविधा, चिकित्सा, शादी,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आजीविका आदि की जिम्मेदारियाँ ठीक तरह नहीं उठा सकते उन्हें पैदा ही क्यों करें ? उपयुक्त क्षमता न होने पर भी प्रजनन का दुस्साहस करना अपने साथ–अपनी सन्तान के साथ–समस्त समाज के साथ अन्याय करना है । उपयुक्त साधन जिन बालकोंको न मिल सकेंगे वे शारीरिक, मानसिक दृष्टि से दुर्बल रहेंगे और समाज के लिये भार भूत एवम् अभिशाप ही सिद्ध होंगे ।

इन सब तथ्यों पर यदि कोई गम्भीरता से विचार कर सके तो उसे यही प्रतीत होगा कि आज की परिस्थितियों में बच्चे पैदा करने का दुस्साहस करना हर प्रकार की विपत्ति को आमन्त्रित करना है । यदि इसके बिना काम न चले तो न्यूनतम एक दो की संख्या से ही सन्तुष्ट हो जाना चाहिये । वस्तुतः जरूरत तो उसकी भी नहीं है । ऐसे अविवेकी लोग अपने समाज में भरे पड़े हैं जिन्हें आगा पीछा–उचित अनुचित कुछ नहीं सूझता और पशु पक्षियों की तरह अन्धाधुन्ध अण्डे बच्चे पैदा करते चले जाते हैं ।वे भूल जाते हैं कि पशु पक्षियोंके अभिभावकों पर कोई खास जिम्मेदारी नहीं आती, बच्चे प्रकृति के प्रकोप और शिकारियों की भूख बुझाने का साधन होने से जन्मने की तरह मरते भी रहतेहैं वे किसी के लिये कोई संकट उत्पन्न नहीं करते । मनुष्यको अनेक जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं इसलिये उसे हर काम समझ सोचकर ही करना चाहिये । जिन्हें इस प्रकार की सोचने समझने की जरूरत नहीं पड़ती, प्रकृति प्रेरणा से प्रजनन में लगे रहते हैं, उनके लिये किन शब्दों का प्रयोग किया जाय यह समझ में नहीं आता । जो हो, ऐसे लोग ही अपने समाज में अधिक हैं जो अनियन्त्रित प्रजननमें लगे हुए हैं । समझदार लोग इन्हें ही अपने बच्चे मान लें और स्वयं बच्चे पैदा न करके इन अभावग्रस्त व उद्विग्न बालकों काभरण पोषण करने लगें तो आनन्द भी अधिक पा सकेंगे और कर्त्तव्य निष्ठा की दृष्टि से भी अग्रणी रहेंगे ।

"प्रजातन्त्र में जिस वर्ग की आबादी होगी उसी का शासन होगा इसलिये हमें शासक बनने के लिये सन्तान बढ़ानी चाहिए ।" इस तर्क को नितान्त खोखला ही कहा जा सकता है । शासन सशक्त करते हैं भले ही वे थोड़े हों दुर्बल और अयोग्य बहुसंख्यकों को थोड़े सशक्तों के पैरों तले कैसे कुचला जाता है इसका उदाहरण बाहर नहींढूँढ़ना है हमें अपने हजार वर्ष के पहले इतिहास को देख लेना चाहिए कि थोड़े से मुसलमान अँग्रेज इतने बड़े देश पर कैसा नृशंस शासन किस निर्भयताके साथ करते रहे । फिर अयोग्यों के बहुमत से चुनाव जीतने वाली आज की प्रजातन्त्र पद्धति में भी अगले दिनों भारी हेर-फेर होने जा रहा है, जिसमें इस तरह की आकाक्षाएँ सर्वथा निर्मूल सिद्ध होंगी ।

आज की परिस्थितियाँ हर समझदार व्यक्ति से अनुरोध करती हैं कि वह बच्चे पैदा न करे । करे तो उनकी संख्या न्यूनतम रखे । विवाह दो साथियों के पारस्परिक सहयोग के लिये किया जाना चाहिए। बच्चे पैदा करने के लिये नहीं । बिना प्रजनन के विवाहों को अधिक सफल और सराहनीय माना जाना चाहिये । बड़ी और परिपक्व आयु में ही विवाह किये जाँय । विवाह के बाद जब तक प्रजनन टाला जा सकता हो, टाला जाय । अपनी शारीरिक आर्थिक तथा मानसिक परिस्थितियों पर विचारकर जितना उत्तरदायित्व उठा सकने की क्षमता हो उससे कम ही बोझ उठाया जाय । ३०-३५ वर्ष की आयु में बच्चों की उत्पत्ति बिलकुल बन्द करदी जाय ताकि पचास वर्ष की आयु होने तक घर परिवार की जिम्मेदारियों से निवृत्त होकर वान प्रस्थ परम्परा अपनाने और लोक मङ्गल के लिये आवश्यक कर्त्तव्य पालन का अवसर मिल जाय । यह तथ्य है कि ढलती आयु में पैदा हुई सन्तान स्वयं दुःख पाती है और पैदा करने वालों को चिन्ता विक्षोभ का कारण बनाती है । जिनकी सन्तान अपने आप ही नहीं हो रही उन्हें आज की परिस्थितियों में ईश्वरका परम प्रिय कृपापात्र माना जाना चाहिए । अभागे वे हैं जो जीवन में कुछ महत्वपूर्ण काम करनेकी अपेक्षा सारा समय पेट और प्रजननकी पशु प्रवृत्ति पर निछावर करके–पाप की गठरी सिर पर लादे असफल जीवन जीकर कीट-पतगों की तरह मौत का ग्रास बनकर ससारसे रोते कलपते विदा होगये । ऐसा प्रजनन जो जीवन का सारा आनन्दनष्ट करके समाज सेवाकी संभावना समाप्त करदे किस कामका,समाज को अच्छे बच्चे देने का जिनका मन होवे यह कार्य अपने बच्चों से ही करें यह क्या जरूरी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। असंख्य दुर्भाग्य ग्रस्त बालक इन प्रकार की सहायता के लिये प्रतीक्षा कर रहे हैं, यदि अपने में सेवा, सद्भावना, वात्सल्य या दूसरी उच्च भावनाएँ वस्तुतः विद्यमान हों तो उन्हें असंख्य असहाय बालकों के लिये खुशी-खुशी त्याग किया जा सकता है।

नव-निर्माण के लिए हमें युग धर्म के रूप में प्रजनन को अनुत्साहित करने की बात पूरी तरह ध्यान में रखनी चाहिए। अन्यथा बढ़ती हुई आबादी का प्रवाह, निर्माण की व्यवस्था बनना तो दूर, जो है उसे भी स्थिर रखना असम्भव कर देगा।

—×—

हमारी अर्थ मान्यता उदारता के साथ जुड़ जाय

जल, वायु, प्रकाश, भूमि, नदी, समुद्र, धरती, आकाश, सूर्य, चन्द्र आदि की तरह सम्पदा भी सार्वजनिक सम्पत्ति है। क्योंकि उसके उत्पादन का श्रेय भर किसी को भले ही मिल जाय किंतु उसका उत्पन्न होना अगणित ज्ञात अज्ञात व्यक्तियों के प्रत्यक्ष—परोक्ष में ही सम्भव होता है। यों मनुष्य की सारी प्रगति ही पारस्परिक सहयोग और अनुदान प्रदान करने की सत्प्रवृत्ति द्वारा सम्भव हुई है। पर सम्पत्ति उपार्जन में तो निश्चित रूप से असंख्यों जीवित और मृत व्यक्तियों का सहयोग जुड़ा होता है।

छोटा सा कृषि कार्य ही लें। देखने में अमुक किसान ने अपने अमुक खेत में इतना अनाज पैदा कर लिया। पर बारीकी से देखने पर पता चलता है कि उस उत्पादन के पीछे अगणित लोगों का बौद्धिक और शारीरिक श्रम जुड़ा हुआ है। मनुष्य संवेदनशील होते हुए भी जो कुछ जानता, सीखता है उसमें दूसरों का सहयोग ही अपेक्षित रहता है। किसान जिसने खेत में अनाज कमाया, परोक्ष रूप में असंख्य लोगों के सहयोग से ही लाभान्वित होकर उस उपार्जन का लाभ प्राप्त कर सकने में समर्थ हुआ है।

चिरकाल पूर्व किसी की समझसूझ से जमीन में बीज बोकर अन्न उगाने की बात समझ में आई होगी। तत्सम्बन्धी प्रयोग करके खाद, पानी, जुताई, निराई गुड़ाई, सिंचाई कटाई, मिड़ाई, रखवाली आदि की विधि व्यवस्थाओं का विकास करने में बीसियों पीढ़ियों के अध्यवसाय ने एक व्यवस्थित कृषि शास्त्र का स्वरूप दिया होगा। धीरे-धीरे उसमें सुधार—शोध कार्यों की शृङ्खला जुड़ती रही होगी। हल, पटेला, कुआँ खोदना, घिर्री जगत खड़ी करना, चरस, रस्से आदि के प्रयोग से सिंचाई की व्यवस्था बनाना। पशुपालन की विधि निकालना, उसके श्रम का कृषि में उपयोग करना जैसे अनेक आविष्कार करने पड़े होंगे। इसमें न जाने कितने लोगों का चिंतन, श्रम, प्रयोग, अनुभव, जुड़कर एक कृषि पद्धति का ढाँचा खड़ा हुआ होगा। आज जिन कृषि उपकरणों का प्रयोग होता है उनमें से प्रत्येक की आज की स्थिति भी अनेक लोगों के सहयोग पर सम्भव है। हल में लगने वाली लोहे की फाल को ही लें। उसके बनाने में लुहार का ही श्रम नहीं लगा वाहनों का, लोहा शोधन करने वाली फैक्टरी का, उस फैक्टरी को बनाने वाले कारीगर, इञ्जीनियरों का—उन इञ्जीनियरों को पढ़ाने वाले—अध्यापकों का, उन अध्यापकों को सुयोग्य बनाने वाली किताबों का—उन किताबों को बनाने, छापने के लिए प्रेस तथा कागज वालों का—उन लोगों को सक्रिय बनाने के लिए निर्वाह के साधन जुटाने वालों का सहयोग जुड़ा हुआ है। इस प्रकार प्रकारान्तर से लाखों करोड़ों व्यक्तियों का श्रम सहयोग उस छोटी सी हल की फाल को बनाने में लग जाता है तब कहीं वह एक उपकरण बनकर तैयार होता है। कृषि कर्त्ता को अपने निर्वाह तथा उद्योग को चलाने के लिये असंख्यों वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है। उन्हें जुटाने के लिये असंख्य के श्रम सहयोग की आवश्यकता पड़ती है। वह न मिले तो अपना एक भी काम न चल सके और उपार्जन तो दूर—जीवित रह सकना भी कठिन हो जाय।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमें यह तथ्य ध्यान में रखना ही चाहिए कि मानवीय स्थिरता और व्यवस्था तभी सम्भव हो सकती है जब सारे समाज का प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग हमें मिले, जुकाम की छोटी सी दवा खरीदना यों अपना निजी और पैसे खर्च करके किया हुआ काम मालूम पड़ता है पर बारीकी से देखने पर उस छोटीसी दवा के निर्माण, शोध, स्थानान्तरण आदि में जो सहयोग मिला है उसमें करोड़ों व्यक्ति जुड़े दिखाई देंगे। एकाकी रहने वाला व्यक्ति इन दिनों जीवित तक नहीं रह सकता। गुफाओं में रहने वाले साधु भी आसन कम्बल, लोटा, चिमटा, कुल्हाड़ी, माला, माचिस आदि जिन साधनों के सहारे गुजर करते है वे भी असंख्य लोगों के श्रम सहयोग से ही विनिर्मित होते हैं। बिना दूसरों के सहारे यों एक भी काम हमारा नहीं चलता पर धन उपार्जन तो निश्चित रूप से मजदूर कारीगरों से लेकर, परिवहन वाले और ग्राहक व्यापारी, उपभोक्ताओं तक अनेकों के सहयोग से ही वह प्रक्रिया चल पाती है। फिर धरती तो मनुष्य की अपनी बनाई नहीं है। मूलतः वह ईश्वर की है और उसे सभी पुत्रों के उपयोग के लिये उसने बनाया है। वर्षा, धूप, मौसम या हमारे दूसरे उत्पादन में सहायता करने वाली प्राकृतिक सुविधायें भी ईश्वर प्रदत्त हैं उनके न मिलने पर कोई किसान क्या फसल उगा सकेगा ? इन बातों पर विचार करते हुए इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि जो हमने कमाया है वह पूर्णतया अपना नहीं है उस उपलब्धि के पीछे अगणित ईश्वरीय और मानवीय सहयोग अनुदान जुड़े हुए हैं। अस्तु यह मानकर ही चलना चाहिए कि उपार्जन का लाभ जो हम उठाते हैं वस्तुतः वह मात्र अपने ही पुरुषार्थ का फल नहीं है। उसमें अनेकों का साझा है और उसे साझे की चीज मानना चाहिये। साझे की चीजों का उपयोग उपभोग भी एकाकी नहीं करना चाहिए वरन् दूसरों को भी उसका उचित लाभ मिले। इस मनोवृत्ति के साथ कमाया और जमा किया धन ही वस्तुतः उचित और प्रशंसनीय कहा जा सकता है।

प्रकृति प्रायः उतनी ही वस्तुएँ उत्पन्न करती है, जिससे सब लोग मिल जुलकर आसानी से जीवन निर्वाह कर सकें। इसका मिल बाँट कर उपयोग करना चाहिए। जो अधिक कमा सकता है उसकी सूझ-बूझ और मेहनत को सराहा जाय इतने भर लाभ से उसे सन्तुष्ट हो जाना चाहिए। उसे यह प्रयत्न नहीं करना चाहिए कि जो हमने कमाया है उसका उपभोग स्वयं ही करेंगे। ऐसी संकीर्णता मनुष्य को धनी और संग्रही बनाती है। जहाँ जितना ज्यादा पैसा बढ़ेगा आमतौर से वहाँ उतना ही अधिक अहंकार अपव्यय, विलास, व्यसन आदि अवांछनीय प्रवृत्तियों के बढ़ने की संभावना रहेगी। इससे उस धनी व्यक्तिका आत्मिक अधःपतन होगा और अनावश्यक धन जमा होने के कारण जो उद्धत आचरण आरम्भ हुए हैं उनका दुष्प्रभाव दूर-दूर तक होगा। धनी की विलासी और शानदार व्यवस्था देखकर दूसरे अनेकों को वैसा ही बनने की इच्छा उत्पन्न होती है और जल्दी धनी बनने के लिये लोग उचित अनुचित का अन्तर छोड़कर किसी भी तरह धनी बनने की तैयारी करते हैं। इससे आर्थिक भ्रष्टाचार बढ़ता है। अपराध करने की घटनायें बढ़ती हैं और वैसी प्रवृत्तियाँ तीव्र होती हैं। यदि सब लोग समान अर्थ स्तर का सामान्य जीवन क्रम निबाहें तो परस्पर ईर्ष्या, द्वेष की—अपराध शोषण की—लालच, लिप्सा की गुञ्जायश ही न रहेगी। इसलिये धन संचय की—उसके एकाधिकार की—स्वच्छन्द उपयोग की वर्तमान छूट पर नियन्त्रण किया जाना चाहिए। लोग कमा तो सकें पर उसका उपभोग नियन्त्रित रहे। अतिरिक्त उपार्जन दान या टैक्स के रूप में समाज को वापिस करना ही उचित माना जाय।

धन की असमानता समाज में अनेक विकृतियाँ पैदा करती और अगणित उलझनें खड़ी करती है। यदि उसका वितरण समान हो तो सभी को औसत दर्जे का जीवन जी सकने की सुविधा मिल जाय। ऊँची दीवार उठाने के लिये जो ईंटें बनानी पड़ती हैं उनके कारण कहीं-कहीं उतना ही गहरा गड्ढा बन जाता है। अमीरी कहीं भी इकट्ठी हो उसके लिये किसी न किसी जगह उतनी ही गरीबी की मजबूरी बन गई होगी। ब्याज-भाड़े की-वस्तुओं के विनिमय का हाथ फेर करने की—जुआ लाटरी की—उत्तराधिकार की सुविधायें पाकर आलसी और अकर्मण्य व्यक्ति भी अमीरी की सुविधायें भोग सकते हैं जबकि निरन्तर कठोर श्रम करने वाला ईमानदारी का जीवन जीने वाला व्यक्ति भर पेट रोटी भी नहीं पा सकता। यह अर्थ प्रणाली

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का—धन सम्बन्धी सामाजिक रीति-नीति का दोष है। इसे सुधारा जाना चाहिए। यदि अमीरी बढ़ाने पर रोक न लगी तो गरीबी को मिटाया जा सकना सम्भव न हो सकेगा।

प्राचीन काल में अमीरों पर कानूनी प्रतिबन्ध न था पर लोग यह नैतिक कर्त्तव्य मानते थे कि औसत दर्जे की आवश्यकता पूरी करने के बाद जो बचे उसे दान के रूप में समाज को वापिस करते रहें। स्नान, मल विसर्जन आदि की तरह उन दिनों दान एक आवश्यक प्रक्रिया थी जिसे अधिक उपार्जन करने वाला हर व्यक्ति जल्दी-जल्दी ही पूरा करता रहता था। ऐसी स्वेच्छा उदारता यदि बनी रहे तो प्रतिबन्धों की जरूरत न पड़े और व्यक्तिगत रूप से उदारता का परिचय देने का आनन्द भी मिलता रहे। पर यदि व्यक्ति लालची, संग्रही और अपव्ययी बन कर धन, का उद्धत उपयोग करने पर उतारू हो तो समाज का कर्त्तव्य है कि कानूनी या सामाजिक अनुबन्ध लगाकर उसकी इस प्रवृत्ति को रोके।

इस प्रतिबन्ध प्रणाली को साम्यवादी अर्थ व्यवस्था कहते हैं। उसके अन्तर्गत सारी सम्पत्ति राष्ट्र की हो जाती है। सारे उपार्जन कार्य सरकार के नियन्त्रण में रहते हैं। व्यक्ति एक कर्मचारी के रूप में काम करता है और औसत व्यक्ति के स्तर जैसे निर्वाह साधन शासन के द्वारा उपलब्ध करता है। शिक्षा, चिकित्सा, वृद्धता, आकस्मिक विपत्ति जैसे उत्तरदायित्वों को भी सरकार सँभालती है और मनुष्य काम करने तथा निर्वाह पाने की परिधि तक सीमित हो जाता है। आजकल आधी से अधिक दुनिया में अर्थ पद्धति चल रही है। चीन, रूस, युगोस्लोविया, रूमानिया, बलगेरिया, हंगरी, पोलैण्ड, चेकोस्लोविया, अलबानिया, तिब्बत, उत्तरी कोरिया, पूर्व जर्मनी, क्यूबा आदि देशों में इसी आधार पर अर्थ व्यवसाय को नियन्त्रित किया गया है। इन देशों की आबादी संसार की आबादी की दृष्टि से आधी से अधिक है। इन देशों ने गरीबी और अमीरी दोनों की ही जड़ खोद कर फेंक दी है वहाँ हर नागरिक को औसत दर्जे का जीवन जीने की सुविधा उपलब्ध है। अब वहाँ भाग्यवाद का कोई आधार शेष नहीं रहा। गरीबी पूर्व जन्मों का पाप भोग और अमीरी पुण्य फल है ऐसा कहने मानने या देखने की वहाँ कोई गुंजायश नहीं रही और पता चल गया कि भाग्यवाद की बात अमीरों की स्वच्छन्दता और गरीबों की बेवशी को आपस में टकराने न देने के लिए खड़ी की गई थी। गरीब और पीड़ित अपने भाग्य को कोसते चुपचाप सब कुछ सहते रहे इतना भर ही भाग्यवाद के दार्शनिक जाल-जंजाल का प्रयोजन था, अब तथ्य पर अधिकाधिक लोग यकीन करते चले जाते हैं।

यों ही हमें अगले दिनों अमीरी को प्रतिबन्धित करना होगा ताकि गरीबों को कष्ट भोगने के लिये कोटि-कोटि जनता को विवश न होना पड़े। इसके लिये साम्यवादी तरीका सब कुछ कानून की नोंक से साफ करता है। इससे मनुष्य की विवशता भर रह जायगी उसे उदारता प्रदर्शित कर सकने के आत्म-लाभ से वंचित होना पड़ेगा और अनुकरणीय परम्पराओं के प्रेरणाप्रद उदाहरणों की एक प्रकार से समाप्ति ही हो जायेगी। आत्मिक दृष्टि से मनुष्य जाति की यह एक बहुत बड़ी हानि होगी। युग-निर्माण योजना दोनों का समन्वय सोचती है। अमीरी के दुष्परिणामों को हम जानते हैं इसलिये उसके साथ हमारी रत्तीभर भी सहानुभूति नहीं है। वह मिटनी ही चाहिए। पर उसे मिटाने में व्यक्ति को यह अवसर देना चाहिए कि वह स्वेच्छा उदारता की प्रवृत्ति को अधिकाधिक मात्रा में प्रदर्शित कर सकने की सुविधा प्राप्त करता रहे।

उचित साधनों से न्यायानुकूल जीविका कमाने का अधिकार बना रहना चाहिए। इससे लोगों में अपनी प्रतिभा, योग्यता, कुशलता और कर्मठता बढ़ाने की प्रवृत्ति बनी रहेगी। अधिक समर्थ और अधिक सफलता सिद्ध करने की पारस्परिक प्रतिस्पर्धा यदि जीवित रहे तो उससे जन साधारण को एक प्रकाश ही मिलेगा जोश और उत्साह की मनोभूमि बनी रहेगी, जो साम्यवादी प्रतिबन्धों की विवशता से जीवित नहीं रह सकती। आदमी योग्यता बढ़ाने और अधिक कमाने में जितना गौरव समझे उससे भी अधिक गौरव इस बात में समझना चाहिए कि औसत भारतीय की स्थिति में अधिक से अधिक खर्च न करने का कितना अधिक नियन्त्रण, संयम अपने ऊपर रखा और जो बचाया कमाया गया था उसे देश का पिछड़ापन दूर करने के लिये खुले दिल से दे डाला गया। बेटे पोतों के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जोड़ने जमा करने और दौलत उड़ाने की दुष्प्रवृत्ति को यदि हटा दिया जाय और लोग अपनी कमाई में सबका साझा अनुभव करते हुए उसे उदारता पूर्वक लोक मंगल के लिए दान करने लगें तो यह व्यवस्था साम्यवादी अर्थ प्रतिबन्धों की अपेक्षा अधिक श्रेयस्कर सिद्ध होगी और उससे व्यक्तियों को महामानव बनने की—प्रतिभाशाली और उदार बनने की गुंजायश बनी रहेगी।

हमें अभी एक प्रयोग करना चाहिये कि अर्थ तन्त्र के बारे में भारतीय धर्म परम्परा के अनुरूप आदमी का जीवन जीते हुए सौ हाथों से कमाने और हजारों हाथों से दान करने की पुण्य परम्परा को वापिस लाया जा सकता है यही हमारा विश्वास है कि आदर्शवादिता और उत्कृष्टता की प्रखर विचार धारा से जन मानस को ओत-प्रोत करने का अपना अभियान जोर पकड़ जाय तो लोक वृत्ति को मोड़ सकना और लालची न बन कर उदार रहने की मान्यता स्थिर कर सकना सम्भव हो सकता है। लोगों को यह समझाया जा सकता है कि केवल ईमानदारी से परिश्रम का पैसा कमायें—औसत भारतीय जैसा सादगी, शालीनता और सज्जनता का निर्वाह करें, अपव्यय की उद्धतता—न बरतें और अधिक उपार्जन की अपनी क्षमता का उदार लाभ सत्प्रवृत्तियाँ पनपाने के लिए समाज को वापिस करदें। इस आदर्श को अपनाने वालों के साहसिक कदमों की सार्वजनिक चर्चा की जाय और प्रोत्साहित किया जाय। धनी होने के नाते किसी को सम्मान न दिया जाय। अमीरों के बारे में यह मान्यता बनाई जाय कि निष्ठुर हुये बिना समाज की आवश्यकताओं की ओर से आँखें बन्द किये बिना कोई व्यक्ति अमीर नहीं बन सकता। कंजूसी और संकीर्णता ही अमीरों के पीछे अट्टहास करती है। ऐसे व्यक्ति किसी सम्मान के अधिकारी न माने जाँय। उन्हें अपराधियों में नहीं तो, अनुपयुक्त वर्ग में अवश्य गिना जाय और सार्वजनिक दृष्टिकोण उनके प्रति तिरस्कार का नहीं तो उपेक्षा का जरूर रहे। ऐसा लोक मानस अमीरों को लोक मंगल की दिशा दे सकने में समर्थ हो सकता है।

जो बेटे कमाने लगे हैं वे बाप-दादे की छोड़ी हराम की कमाई को लेना अपने लिये अपमान जनक समझें और प्राचीन कालके श्राद्ध दर्शन के अनुसार किसी परमार्थ कार्य के लिये उसे श्रद्धापूर्वक समर्पित करदें। उत्तराधिकार का प्रलोभन आज के परिवारों को जैसा विषाक्त करता चला जा रहा है उसमें इस प्रकार के परित्याग से एक नया मोड़ मिलेगा।

लोग न मानें अपनी अड़ पर अड़े रहें, अमीरी का लोभ छूट न सके तो अन्तिम उपाय प्रतिबन्ध ही रहेगा। सरकार के हाथों अर्थ नियन्त्रण चले आने और व्यक्ति को निर्वाह मात्र पाने की साम्यवादी व्यवस्था आँधी तूफान की तरह बढ़ती आ रही है। लोग न सुधरे तो प्रगति, वर्चस्व, आदर्श, परमार्थ आदि के माध्यम से जो उल्लास, आनन्द मिल सकता है उसे खो बैठेंगे। अमीरी देर तक जिन्दा न रहेगी। राजा, जमीदार, ताल्लुकेदारों की तरह कुछ समय में धनी अमीर वर्ग का भी खात्मा होने जा रहा है ऐय्याशी की—जमाखोरी की—शान—शौकत की हविस अन्तिम श्वासें गिन रही है उन मृत परम्पराओं को छाती से लगाने की मूर्खता किसी को भी नहीं करनी चाहिए। अनावश्यक पूँजी जहाँ भी जेवर, जायदाद में, बैंक या जमीन में दबी पड़ी हो उसे उभर कर ऊपर आना चाहिये और नव निर्माण के लिए समर्पित होना चाहिए। एक ओर जहां इस प्रकार की उदारता को प्रोत्साहन दिया जाय—कार्यान्वित किया जाय दूसरी ओर वहाँ सरकारी प्रतिबन्धों को कड़ा करने और सम्पन्नता के प्रति लोक तिरस्कार के भाव भी जमाने चाहिए। इस त्रिविधि प्रक्रिया द्वारा यह सम्भव है कि धन का आदर्शवादी परम्परा के अभिवर्धन से पूर्व काल जैसा प्रयोग होने लगे। यह प्रयोग असफल होने पर अर्थ तन्त्र के क्षेत्र में सारी दुनिया में साम्यवाद छा जायगा फिर चाहे वह धार्मिक या आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश कर सकने में भले सफल न हो सके। लोभी और स्वार्थी मनुष्य ही वस्तुतः साम्यवाद के आह्वान कर्ता हैं। यदि अर्थ पराधीनता का साम्यवाद भारत में आया तो उसकी पूरी जिम्मेदारी आज के धनी वर्ग पर ही होगी और समय न रहने पर भी नासमझी दिखाते रहने की हठ के लिए उसे ही दोषी ठहराया जायगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थ व्यवस्था इस तरह सँभलेगी

जीवन निर्वाह के आर्थिक साधन जुटाने की समस्या अब दिन-दिन जटिल होती जा रही है। बेरोजगारी और मँहगाई का कुचक्र इतनी तेजी से घूमने लगा है कि साधारण नागरिकों के लिये अपने परिवार का निर्वाह कर सकना कठिन हो रहा है।

कोई जमाना था कि आबादी कम और जमीन बहुत थी। लम्बे-चौड़े वन प्रदेश पड़े थे। पशु पालन का सस्ता धन्धा करके कोई भी व्यक्ति निर्वाह के साधन जुटा लेता था। पशुओं के लिये जगलों में घास और वनस्पतियाँ इतनी थी कि उनके लिये अलग से कुछ सोचना करना न पड़ता था। पशु चराने में कोई बहुत बारीकी भी नहीं थी। इसी प्रकार दूसरा उद्योग कृषि इस देश का था। उर्वर भूमि के विशाल खण्ड सर्वत्र खाली पड़े थे। जो जितनी अधिक कृषि करले उसे उतना ही पुरुषार्थी माना जाता था। जमीन की न कमी थी न रोकथाम। जहाँ जिसे पसंद वहीं खेती जमा ली। पैदावार का एक छोटा अंश शासन व्यवस्था के लिये पहुँचा दिया। बाकी जो बचा वह परिवार के निर्वाह के लिये पर्याप्त सिद्ध होता था। वस्त्र, बर्तन, औजार, वाहन, शिक्षा, पठन, चिकित्सा आदि के उपकरण जुटाने में भी कितने ही व्यक्तियों को काम मिलता था। काम धन्धे इतने थे कि किसी को बेकारी की बात सोचने की आवश्यकता ही न था।

समय बदला और अपने साथ अगणित समस्यायें लेकर आया। जनसंख्या बढ़ी और उद्योगों पर सम्पन्न लोगों ने विशालकाय यन्त्रों तथा कारखानों द्वारा कब्जा कर लिया। बढ़ती हुई प्रजा की भूख शान्त करने के लिये जंगल कटे और खेत बढ़े। हर व्यक्ति के हिस्से में उसका अनुपात घटता गया। पीढ़ी दरपीढ़ी बँटवारा होते होते छोटी-छोटी जोतें अलाभ कर हो गईं। थोड़ी जमीन में भी समय तो उतना ही लगा, उत्पादन इतना न हो सका जो उस परिवार का खर्च चलाता। गरीबी बढ़ी। साधनों के अभाव में खेती को आवश्यक खाद, पानी जुताई के साधन न मिल सके और वह क्रमशः अपनी उर्वरा शक्ति खोती चली गई। दूसरे देशों की तुलना में अपने देश का औसत उत्पादन बहुत ही कम है। प्रजा का पेट भरने के लिये अन्न पर्याप्त न पड़ा तो बाहर से उधार, नकद. दान, सहायता जैसे भी मिला, लिया गया। अन्न की दृष्टि से भी जो लोग परावलम्बी हैं उन्हें निर्बल निर्धन होना ही चाहिए।

जंगल न रहे तो पशु पालन सस्ता कैसे पड़े। घर बाँध कर मँहगा चारा खिलाना साधारण लोगों के लिये कठिन हो गया। केवल कृषक ही अपनी फसल के साथ उगे चारे भूसे के आधार पर पशु पालन कर सके, जो बच्चों के दूध और खेती के लिये बछड़े भर के लिए भी कम पड़ा। सर्व साधारण के लिये पशु पालन सम्भव न रहा। इसलिये प्रजा की अर्थ व्यवस्था स्थिर रखने का वह व्यापक आधार भी एक प्रकार से समाप्त ही हो गया। माँस,चमड़ा भर उगने के लिये कुछ लोग इस व्यवसाय को करते जरूर रहे पर मानवीय करुणा गँवा बैठने की कीमत पर वह लोभ अन्ततः हानिकारक ही सिद्ध हुआ। माँसाहारी और मांसोत्पादक अपनी निष्ठुरता का—अपने व्यवहार क्षेत्र में प्रयोग किये बिना कैसे रह सकते थे। दुष्टता, दुर्बुद्धि और दुष्कर्म अप्रत्यक्ष रूप से इतनी उलझनें पैदा करते हैं जो आगे चल कर आर्थिक दृष्टि से भी बहुत हानिकारक सिद्ध होती हैं। मांस उत्पादन और उपभोग किसी देश की स्थिर अर्थ प्रगति में कभी रत्ती भर भी सहायक नहीं हो सकता, सो अपने यहां भी नहीं हो रहा है। पशु पालन का दूरगामी लाभ भी तभी होता जब पालतू पशु भी मानव परिवार के सदस्य बनकर स्नेह सहयोग के आधार पर जीवनयापन कर सके होते।

कृषि और पशु पालन के अतिरिक्त जीवनोपयोगी उत्पादन के लिये प्रयुक्त होने वाले उपकरणों का जो निर्माण था, उसे उद्योग धन्धे, शिल्प कला आदि का क्षेत्र कह सकते हैं। वस्त्र, औजार, बर्तन, शिक्षा, चिकित्सा वाहन, परिवहन विनोद, सुसज्जा, शासन आदि अनेक आवश्यकताओं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के लिये अगणित वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है। इनके उत्पादन को उद्योग और वितरण को व्यापार कहा जा सकता है। इस माध्यम से लोग अपनी रोटी कमाते हैं। अगणित व्यक्ति अपनी श्रम साधना कौशल और पूँजी के समन्वय से जो उत्पादन करते थे उससे लोगों की जरूरतें भी पूरी होती थीं और गुजारे का साधन भी जुटता था। 'गृह-उद्योग' एक तीसरा माध्यम था जो कृषि और पशु पालन के बाद प्रजा जनों की आजीविका की समस्या हल करता था।

विज्ञान ने दैत्याकार यन्त्र बनाये और पूँजी-पतियों ने उनके द्वारा विशालकाय कारखाने खड़े किये। इन कारखानों में लगे सैकड़ों कर्मचारियों के द्वारा इतना अधिक और इतना सस्ता काम हो सका कि उसकी प्रतिस्पर्धा में गृह-उद्योगों की कमर टूट गई। बड़े कारखाने, बड़ी पूँजी, बड़ी मशीन और बड़ी सुविधा के कारण जितनी सुन्दर और सस्ती चीजें बना सकते हैं, उतनी साधन हीन शिल्पकार कैसे बना पायें? कारखानों से प्रतिस्पर्धा गृह-उद्योग कर नहीं सकते थे, कर भी नहीं सके। जहाँ कारखानेदारों की अमीरी बढ़ी वहाँ साधन हीन बेकारों और गरीबों की संख्या द्रुतगति से बढ़ती गई।

शिक्षा जहाँ छात्रों की प्रतिभा विकसित करके उन्हें बौद्धिक और आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी बना सकती थी वहाँ उसकी भी दिशा उलटी हो गई। हर विद्यार्थी ने नौकरी चाही और वैसी ही योग्यता जुटाई। शिक्षा का विकास विस्तार जैसे जैसे हुआ वैसे वैसे नौकरी के इच्छुक नवयुवकों की भीड़ बढ़ती गई। इन्हें इतनों को नौकर कौन रखे? किस काम के लिये रखे? सरकारी नौकरियों की भी एक सीमा है, असीम नौकर तो वह भी नहीं खपा सकती। बेकार शिक्षितों का विशाल समुदाय अपने उपयुक्त काम न पाकर रुष्ट, असन्तुष्ट और क्रुद्ध बना निरुद्देश्य विचरण करने लगा। ऐसे लोगों का विशाल वर्ग देश के लिये समस्याऐं ही उत्पन्न कर सकता था सो कर भी रहा है।

श्रमिक वर्ग—उत्पादन कर्त्ताओं को अपना श्रम बेचकर अथवा दर्जी, नाई, धोबी, मोची, हलवाई, सुनार, लुहार, भंगी, बढ़ई जैसे दैनिक आवश्यकता के साधन जुटाने वाला वर्ग अपने जो अर्थ साधन जुटाता था, उन पर अभी विशेष आँच नहीं आई है, पर समाज में उस वर्ग को तिरस्कृत किया गया श्रम अधिक और आजीविका स्वल्प होने के कारण उस ओर से रुचि घटती गई। फलस्वरूप वे कार्य चलते रहे हैं पर उत्साह के अभाव में वह क्षेत्र भी दिन-दिन अस्त-व्यस्त होता चला जाता है।

सर्व साधारण के उपयुक्त अर्थ साधन न मिलने से बेकारी और गरीबी बढ़ती है और उस बढ़ोतरी का निश्चित परिणाम अनैतिकता एवम् अपराधों की वृद्धि के रूप में तत्काल देखा जा सकता है। जो कानून की पकड़ में न आये और दण्ड से बच जाय वह अनैतिकता और जो अधिक वेग संवेग के साथ आँधी धाँधी उठ खड़ी हो वह अपराध प्रवाह कहा जायगा। एक को मन्द दूसरे को तीव्र विष कहा जा सकता है। दोनों से न्यूनाधिक मात्रामें व्यक्ति का अधः पतन और समाज का विनाश ही होता है। अस्तु, आवश्यक है व्यक्ति को निर्वाह के समुचित साधन मिलें और किसी को भी बेकारी बेरोजगारी का शिकार न बनना पड़े।

अपने देश की स्थिति को देखते हुए हमें अर्थ व्यवस्था सुधारने के लिये कारगर कदम उठाने पड़ेंगे। सबसे प्रथम कृषि और पशु पालन की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए। अभी भी पुराने जमींदारों की तरह अनेक व्यक्ति किराये पर या बटाई पर जमीनें उठाते हैं। जिन्हें स्वयं कृषि करने का अवकाश नहीं, उनके हाथ से भूमि लेली जानी चाहिए और उन्हें दी जानी चाहिए जो उसके साथ अपनत्व मिलाकर उत्साह पूर्वक उत्पादन कर सके। किराये पर ली हुई जमीन को खाद, जुताई, मेंड, सिंचाई आदि के प्रबन्ध परायेपन की भावना के कारण नहीं किये जा सकते। इसी प्रकार छोटी जोतें भी अलाभदायक होती हैं। जितनेमें एक परिवार की गुजर न हो सके, उससे कम की कृषि सदा अलाभदायक रहेगी और उत्पादन कम देगी। अंग विधवाऐं या ऐसे ही लोगों को जमीन किराये पर उठने की छूट मिलनी चाहिए। इस प्रकार के भूमि सुधार किये बिना काम न चलेगा। सिंचाई का प्रबन्ध विशेष आयोग के जिम्मे छोड़ा जाय। किसान कुँए आदि के नाम पर तकावी दूसरे काम में खर्च कर डालते हैं। सरकारी ठेकेदार दूने चौगुने पैसे वसूल करते हैं। इस कार्य के लिए अर्ध सरकारी एक ऐसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तन्त्र खड़ा किया जाय, जिसे हिमाद्र का व्यौरा जन-साधारण के सामने भी प्रस्तुत करना पड़े और फिजूल खर्ची रोकने के लिए किसी को भी सुझाव देने का अवसर रहे। कुँए, बाँध, छोटे तालाब आदि से ही इस देश की सिंचाई समस्या हल होगी। बड़े बाँधों में लगाया हुआ धन जितना उपयोगी सिद्ध होता है उसकी तुलना में ऐसे छोटे प्रयोग कहीं अधिक सस्ते और फलप्रद हो सकते हैं।

तमाखू जैसी हानिकारक चीजों के लिए कम से कम कृषि बर्बाद न होने दी जाय, व्यसन करने वालों को मँहगी चीजें मिलें तभी वे निरुत्साहित होंगे। हानिकारक उत्पादन में लगे हुए व्यक्ति देखने में कुछ आजीविका प्राप्त करने लगते हैं पर वस्तुतः उस विघातक श्रम से इतनी हानि होती है जितनी उन श्रमिकों के बेकार रहने पर भी न होती। नशेबाजी से सम्बन्धित समस्त उत्पादन और उद्योग बन्द करके उस पूँजी मेहनत और जन शक्ति को उन कार्यों में लगाया जाना चाहिए जिनकी अभी भारी आवश्यकता है।

अब यह सोचना व्यर्थ है कि भारत निर्यात करके विदेशी मुद्रा कमा सकेगा। इस क्षेत्र में अमेरिका, जर्मनी, जापान आदि बहुत आगे हैं। उनकी प्रतिस्पर्धा कर सकने योग्य ज्ञान, अनुभव और धन जुटाने में हम बहुत दिन तक पिछड़े रहेंगे। इसलिये निर्यात के मोह जंजाल में फंसकर हमें बड़े कारखानेमें बड़ा उत्पादन न करने की बात सोचना छोड़ देना चाहिये। निर्यात से जितना लाभ होता है उससे हजार गुनी हानि यह हो जाती है कि बड़े कारखानों की प्रतिस्पर्धा में न ठहरने के कारण छोटे उद्योग मर जाते हैं और लाखों करोड़ों की रोटी छिन जाती है। कुछ सौ कारखानेदार अमीर बनते चले जाँय और उसके बदले असंख्यों को बेकारी गरीबी की आग में जलना पड़े तो यह कोई बुद्धिमत्ता की बात नहीं है। भारत की वर्तमान परिस्थिति का तकाजा यही है कि यहाँ हर चीज छोटे उद्योगों के रूप में विकसित की जाय ताकि उनका फैलाव छोटी देहातों में भी हो सके। बिजली अगले दिनों अधिक उत्पन्न होगी और सस्ती पड़ेगी। मनुष्य के श्रम को बचाने में बिजली की सहायता ली जानी चाहिये। जापान में जिस तरह घर-घर विद्युत संचालित गृह उद्योग चलते हैं वैसे ही इस देश में भी चलाये जाँय। उस उत्पादन में पूँजी लगाने और विक्रय करने के लिये एक अलग तन्त्र रखा जाये। उत्पादन कच्चा माल लेकर पक्का बना देने भर का बोझ उठाये, पूँजी प्रतिस्पर्धा, मन्डी आदि की चिन्ता से उन्हें मुक्त रखा जाय। तभी गृह उद्योगों को सफलता मिल सकेगी।

जैसे जैसे उत्पादन बढ़ताजाय और खपत कम होती जाये तो श्रम के घन्टे कम कर दिये जायें.कार्म ८ घन्टे की जगह सात, छै या पाँच घन्टे हुआ करे। उससे सबको काम मिलता रहेगा और बेकारी न फैलेगी। देश की आवश्यकता देश में ही पूरी होती रहे इस दृष्टि से हमें अर्थ योजनाएँ बनानी चाहिए। जिस तरह सेना को सुन्दर छावनियों में बिखरा रखा जाता है ताकि शत्रु के आक्रमण के अचानक शिकार न हो जायें। इसी प्रकार बड़े बाँध, बड़े कारखाने कभी भी विशेष संकट के समय बर्बाद हो सकते है, उन्हें भी हमें विकेन्द्रित ही रखना चाहिए।

सहकारी आन्दोलन को बल दिया जाय। ताकि लोग आपस में मिल-जुलकर रहना, काम करना और सोचना सीखें। उत्पादन ही नहीं विक्रय भी सहकारी समितियों के माध्यम से किया जाय। व्यक्ति के हाथ यों धन्धे रहने से वह व्यक्तिगत लाभ के लिए अवांछनीय तरीके अपना सकता है पर जब बहुतों का सम्मिलित स्वार्थ जुड़ा होगा तो कीमतों में हेर-फेर, मिलावट, कम तोल नाप आदि की आशङ्का न रहेगी। बेईमान कर्मचारी ही कुछ गड़बड़ कर सकते हैं सो उनकी नियुक्ति से लेकर जाँच पड़ताल और अनुचित कार्य करने पर कड़ी सजा जमानत की जब्ती आदि के ऐसे नियम बनाये जायें जिससे उन्हें बेईमानी, कामचोरी या बहाने बाजी का दुस्साहस करने की गुंजायश न रहे। व्यक्ति के हाथ से निकल कर यदि उत्पादन और विक्रय सहकारी संगठनों के हाथ चला जाय तो जमाखोरी, कृत्रिम मंहगाई, जैसी अनेक अड़चनाइयों से बचा जा सकता है। लोगों को उचित मूल्यों पर सही चीजें मिलेंगी और मोल भाव करने के लिए दुकान-दुकान पर धक्के खाने की जरूरत न रहेगी। समय बचेगा और सही चीज उचित दाम पर मिल जायगी इससे सर्वसाधारण को बहुत राहत मिलेगी। व्यक्ति व्यवसाय करने वाले भी घाटे में न रहेंगे वे अपनी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पूँजी सहकारी समितियों में जमाकर ब्याज, मुनाफा आदि कमा सकते हैं और अपना श्रम उसमें लगाकर उचित वेतन ले सकते हैं। इस प्रकार वे प्रतिस्पर्धा और मँहगी-सस्ती के ज्वार भाटेसे बचकर शान्तिमय आजीविकाकमा सकेंगे। इस तरह कुछ कम मिल जाय तो भी उन्हें बुरा न लगेगा।

विलासिता की वस्तुओं का उत्पादन रोका और महंगा किया जाय। जीवनोपयोगी अनेक वस्तुएँ जो आज या तो मिलती नहीं अथवा बहुत महँगी मिलती हैं उनका उत्पादन बढ़ाया जाना चाहिए ताकि व्यक्ति को जीवन विकास में अधिक सुविधा मिल सके। व्यायाम,खेलकूद,संगीत,साहित्य, धुलाई, सिलाई आदि घरेलू काम काज के यन्त्र,छोटे टैक्टर मोटर पम्प, घड़ी, कागज, मशीनें आदि पचासों चीजे ऐसी हैं जिनका उत्पादन कई गुना हो जाने पर भी खपता रहेगा इस प्रकार के उद्योगों के लिए पूँजी एवम् व्यवस्था सुलभ की जानी चाहिए। एक वस्त्र व्यवसाय ही यदि बड़े कारखानों से छीनकर छोटे गृह-उद्योगों को सौंप दिया जाय तो आज की सारी बेकारी दूर हो सकती है और खुशहाली का एक दृश्य सारे देश में दीखने लग सकता है। उद्योगों का विकेन्द्रीकरण और उनके लिये पूँजी तथा मंडी जुटाने वाला तन्त्र खड़ा करना यदि सम्भव हो सके तो निस्सन्देह देश की अर्थ व्यवस्थामें एक क्रान्तिकारी परिवर्तन प्रस्तुत हो सकता। कृषि और पशु पालन को तो हर हालत में प्रधानता देनी ही पड़ेगी।

टैक्स वसूल करने का जो तरीका आज है उसमें अशिक्षित देश का सामान्य नागरिक फिट नहीं बैठता। इसमें रिश्वतखोरी की भारी गुंजायश है। बहीखाता ठीक से न जानने वाला या थोड़ी सी लापरवाही करने वाला इतना बड़ा दण्ड भुगत सकता है कि उसे अपनी आजीविका के स्रोत ही समाप्त करने पड़ें। अपने देश में अप्रत्यक्ष टैक्स होने चाहिये। उत्पादन पर जितना औचित्य हो टैक्स लगा दिया जाय। स्टाक रखने की सीमा निर्धारित कर दी जाय। सम्पत्ति खरीद फरोख्त पर टैक्स बढ़ाये जाँय। पर सभी तरीके ऐसे हों जिनमें बहीखातों का अधिक जंजाल न बढ़े। आज की स्थिति में तो दो बहीखाते रखने की कला और अफसरों को खुश रखने की चतुरता में प्रवीण व्यक्ति ही कुछ धन्धा पानी कर सकते हैं। इतने जाल जंजाल न जानने वाले को तो कोई धन्धा करने का साहस ही नहीं होता। इस कठिनाई का हल नये सिरे से सोचा जाना चाहिए। एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त को माल ले जाने पर प्रतिबन्ध लगाने की बात तो ऐसी ही है मानो हर प्रान्त अलग देश हो इस प्रवृत्ति में अन्तप्रान्तीय तस्कर व्यापार पनपता है और प्रांतीयता का विष बढ़ता है। ऐसे प्रतिबंध हटने ही चाहिये।

देश की अर्थ व्यवस्था को नष्ट करनेमें सामाजिक कुरीतियाँ बहुत बड़ा कारण हैं। जो कमाया जाता है उसका लगभग आधा भाग विवाह शादी, अल-चल्न, रस्म रिवाज मृतक भोजन आदि में बर्बाद हो जाता है। उनकी पूर्ति के लिये कितनों को ही कर्ज लेना पड़ता है और उनकी ब्याज चुकाते-चुकाते हैरान हो जाते है। शिक्षा, चिकित्सा जैसी आवश्यकता में कटौती करके जहाँ कुरीतियों का पेट भरना पड़े वहाँ गरीबी और बेईमानी का बढना पनपना स्वाभाविक है। इन मूर्खता पूर्ण अन्ध-विश्वासों और रूढ़ियों को नियन्त्रित किया ही जाना चाहिए। भले ही वह कठोर कानून द्वारा हो अथवा सामाजिक आन्दोलनों की प्रखरता द्वारा। हर हालत में खर्चीली कुरीतियो से पिण्ड छुड़ायाही जाना चाहिए अन्यथा प्रचलित अगणित प्रबल कुरीतियों के कारण "चलनी में दूध दुहने की तरह हमारी गरीबी और बेकारी को चिरकाल तक यथावत बनाये रहेंगे।

इसी प्रकार वैयक्तिक अपव्यय पर भी नियन्त्रण होना चाहिए ताकि विलासिता और फिजूल खर्ची से बचा धन व्यक्ति के निर्माण तथा उत्पादन कार्यों में लगाया जासके। सीमित डिजायनों के कपड़े, सीमित किस्म की सिलाई, सीमित प्रकार के शृङ्गार साधन, बर्तन, फर्नीचर, रेल—गाड़ियों में एक ही तरह की क्लास जैसी सीमित किस्म की उपलब्धियाँ रहने से सर्व साधारण को एक से स्तर पर रहने की आदत पड़ती है—पैसा बचता है और ईर्ष्या हिर्स की गुंजायश नहीं रहती। फिजूल खर्ची जो आज अमीरी और बड़प्पन का चिन्ह मान लिया गया है। लोग मँहगे होटलों में ठहरना,मंहगे नाच घरों में जाना, मंहगी पोशाक और सजधज जमाने और महंगी पार्टियाँ करने में अपनी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शान समझने हैं। इससे कितनी ही चारित्रिक और सामाजिक बुराइयाँ उत्पन्न होती हैं। इसलिए सादगी को प्रोत्साहन देना और सजधज को निरुत्साहित किया जाना हर दृष्टिकोण से आवश्यक है।

बचे हुए समय में लोक-मङ्गल के सार्वजनिक कार्यों के लिये श्रमदान करने की प्रथा को जितना अधिक प्रोत्साहन और व्यावहारिक रूप मिल सके उतना ही अच्छा है। जो कार्य करोड़ों रुपयों की व्यवस्था से भी पूरे हो सकनेकठिन हैं वे हँसी-खुशी के वातावरण में थोड़ी-थोड़ी मेहनत करके बड़ी आसानी से किये जा सकते हैं। इससे स्वावलम्बन, कर्त्तव्य परायणता, देश भक्ति, पुण्य परमार्थ की प्रवृत्ति पनपती है और आगे चलकर थोड़ी सुविकसित होने पर व्यक्तित्व को महान बनाने और समाज के उज्ज्वल भविष्य की रचना में बड़ी कारगर सिद्ध हो सकती है।

—०—०—

प्रजातन्त्र की सफलता के लिये हम यह करें

प्रजातन्त्र की सफलता का आधार मतदाता की देश भक्ति और दूरदर्शिता पर निर्भर रहता है। यह तत्व जन-मानस में जितने अधिक विकसित होंगे उसी अनुपात से वे शासन तन्त्र सँभालने के लिए अधिक उपयुक्त व्यक्ति चुनने में सफल हो सकेंगे। श्रेष्ठ व्यक्तित्व ही किसी महत्वपूर्ण काम को ठीक तरह संभालने में समर्थ हो सकते हैं। अधिक सही, अधिक योग्य और अधिक सुयोग्य हाथ में शासन तन्त्र रहे तो प्रजा जन उस सरकार के अन्तर्गत सुख-शान्ति और प्रगति का लाभ प्राप्त करेंगे। इसके विपरीत यदिअवांछनीय तत्वों ने शासन पर कब्जा कर लिया तो वे उसका उपयोग व्यक्ति गत स्वार्थों के लिए—अपने गुट के लिए करेंगे और उस दुरुपयोगके कारण जो अवांछनीय अव्यवस्था बढ़ेगीउसकी चपेट में सरकरी कर्मचारी भी आवेंगे। उनका स्तर भी गिरेगा और इस गिरावट का अन्तिम दुष्परिणाम जनताको ही भोगना पड़ेगा। इसलिये जहाँ भी प्रजातन्त्री शासन हो वहाँ सबसे प्रथम आवश्यकता इस बात की पड़ती है कि वहाँ का वोटर इतना सुयोग्य बन जाय कि अपने वोट का राष्ट्र के भविष्य को बनाने बिगाड़ने की चाबी के रूप में—राष्ट्रीय पवित्र धरोहर के रूप में केवल उचित आधार पर ही उपयोग करे।

दुर्भाग्य वश अपने देश में ऐसा न हो सका। यहाँ निरक्षरता का साम्राज्य है। केवल २३ प्रतिशत पढ़े लिखे लोग हैं। इनमें से अधिकांश ऐसे हैं जो अपने जीवननिर्वाह के लिए जितना आवश्यक है। उतना ही लिखना पढ़नायाद रखते हैं। विचारशीलता बढ़ाने या व्यक्ति समाज की समस्यायें सोचने सुलझाने वाला साहित्य पढ़ने की न उन्हें रुचि होती है न वैसी सामिग्री मिलती है। हिसाब किताब चिट्ठी नौकरी, धन्धा भर के लिये लोग पढ़ने लिखने की आवश्यकता समझतेहैं। इसके बाद पढ़ना हुआ तो घटिया मनोरंजन करने वाली पुस्तकें या पत्रिकाएँ जो आसानीसे मिल जाती हैं पढ़लीं। इससे आगे की दिशा निर्धारण करनेवाला साहित्य तो इन पढ़े लिखों में से तीन चौथाई को नही मिलता फिर अशिक्षितों को उसकी सुविधा कैसे मिले? जनता की विचार शक्ति बढ़ाने के लिए शिक्षा की—विशेषत: प्रौढ़ शिक्षा की—भारी आवश्यकता थी। सरकारी या गैर सरकारी स्तर पर यदि इस आवश्यकता को प्राथमिकता दी गई होती तो निस्सन्देह अपने देशकी शिक्षा स्थिति बहुत सँभल गई होती। हर जगह प्रेरणाप्रद पुस्तकालय रहे होते और उनका संचालन लोक रुचि जगाने और मोड़ने वाले लोक-सेवी कर रहे होते तो इन २२ वर्षों में अपनी जनता की मनोभूमि बहुत ऊँची उठ गई होती और वोट की महत्ता एवम् उसकी उपयोगिता और प्रयोग करते समय दूरदर्शिता से काम ले सकने की योग्यता उसमें विकसित हो गई होती। ऐसी दशा में हमारे चुने हुए प्रतिनिधि एक से एक ऊँचे स्तर के शासन तन्त्र को संभालते और उनके पुण्य प्रयत्नों द्वारा देश में सुराज्य के मङ्गलमय दृश्य देखने को मिल रहे होते।

आज चुनाव जीतना एक विशेष कलाके अन्तर्गत आता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । नासमझ लोगों को बहकाने के लिए जो हथकंडे काम में लाये जा सकते हैं उन्हें ही चुनाव जीतने के लिये आमतौरसे प्रयुक्त किया जाता है। जाति,बिरादरी वाली संकीर्णता की बात पिछले आर्य समाजों और कांग्रेसी आन्दोलनों ने काफी हलकी करदी थी, पर जब से चुनाव हथकंडे सामने आये हैं इस विष को फैलाकर आसमान पर चढ़ा दिया गया है। सचाई यह है कि अब चुनाव बिरादरी वाद के विद्वेष को भड़काकर लड़े और जीते जाते हैं। बाहर से कोई सिद्धान्त वाद की लम्बी चौड़ी बातें भले ही करता फिरे चुनाव जीतने के वक्त जातिवाद को भीतर ही भीतर खूब भड़-काया जाता है। बहुमत वाली जाति से उसका उम्मेदवार अपनों को वोट देने की बात कहता है। और दूसरी बिरा-दरी को वोट न जाय इसलिये उनकी ओर से अपने लोगों के कटु वचन कहने या चुनौती देने की मनगढंत अफवायें फैलाता है। इसी विषाक्त वातावरण में चुनाव लड़े जाते हैं और बिरादरी वाद को उत्तेजित और संगठित कर लेने वाले बाजी मार ले जाते हैं। राजनैतिक दल अपने उम्मेद-वार खड़े करते समय इस बिरादरी-स्थिति को ही ध्यान में रखकर आमतौर से उम्मेदवार खड़े करते हैं। इस प्रवृत्ति को भड़का कर योग्यता और उत्तमता की दृष्टि ही नष्ट कर दी गई। अपनी बिरादरी वाले को जिताने के उन्माद का लाभ केवल हथकंडे बाज और तिकड़मी लोग ही उठा पाते हैं और जीत जाने पर अपना उल्लू सीधा करने की तरकीबें भिड़ाने में लग जाते हैं।

चुनाव के दिनों सिद्धान्तों की बात तो सिर्फ ऊपर-ऊपर से कही सुनी जाती है। वस्तुतः वोटरों को अपने पक्ष में करने के लिए उस क्षेत्र के प्रभावशाली लोगों पर डोरे डाले जाते हैं और उन्हें तरह तरह के हाथों हाथ या आश्वा-सनों के प्रलोभन देकर अपनी गिरोहबंदी में शामिल किया जाता है। वे अपने प्रभाव परिचय का उपयोग भोले भाले लोगों से वोट प्राप्त करने में करते हैं और सहज ही वे बह-काये हुए किसी के पीछे चलकर किसी को भी वोट दे आते हैं और कोई भी जीत जाता है। वोट के दिनों वोटरों को सवारी, भोजन, चाय-पानी, नवदी, खुशामद आदि के रूपमें कई तरह के छोटे-बड़े प्रलोभन दिये जाते हैं सब नहीं तो उनके अगुआ इन सुविधाओं को थोड़े समय के लिये ही सही—प्राप्त करके अपना मान बढ़ा समझ लेते हैं।

वोटर में न तो स्वयं की इतनी चेतना विकसित हुई होती है कि राष्ट्र के भाग्य भविष्य का निर्माण कर सकने वाले सुयोग्य व्यक्ति को ही वोट देकर अपना कर्त्तव्य पालन करें। और न उनकी इस प्रकार की योग्यता विकसित करने के लिये कोई संगठित प्रयत्न किये जाते हैं। तत्काल भड़काने वाली कुछ स्थानीय या सामयिक चर्चाएँ ही वोटरों का विचार बनाती मोड़ती हैं। इन हथकंडों के साथ गिरोहबन्दी जोड़ तोड़ और दौड़-धूप करना हर किसी का काम नहीं है। उसमें खर्च भी बहुत पड़ता है, उसे कोई लोक-सेवक निस्पृह व्यक्ति कैसे जुटा पाये। जीतते वो लोग हैं जो चुनाव में अन्धाधुन्ध पैसा इस ख्याल से खर्च करते है कि जीतने पर ब्याज समेत वसूल कर लेंगे। जिनने यह सोचकर पैसा और समय खर्च किया है वे जीतने पर यदि कुछ लाभ कमाना चाहें तो इसमें बेजा भी क्या है यह निश्चित है कि जिनके सहयोग से अनुचित स्वार्थ सिद्ध किया गया है उनको भी वैसा ही लाभ उठाने की छूट मिलेगी इस प्रकार ऊपर से नीचे तक भ्रष्टाचार की शृङ्खला का सिलसिला बंध जायगा। जनता उस चक्की के पाटों के बीच पिसती कराहती रहेगी।

सभी वोटर ऐसे होते हैं या सभी चुनाव जीतने वाले ओछे तरीके ही अपनाते हैं यह नहीं कहा जारहा, सज्जनता का बीज नाश कभी नहीं होता इसलिए अपने चुनावों में भी बहुत जगह बहुत लोग सही तरीके अपनाते और जीतते देखे जाते हैं। पर वे अपवाद ही हैं। अधिकतर ऐसी ही भेड़िया धसान चल रही है जैसी कि ऊपर चर्चा की गई है। उसका प्रधान कारण भारतीय जनता को प्रबुद्ध और प्रगल्भ बनाने की दिशा में बरती गई उपेक्षा ही है। जब तक इस आवश्य-कता को पूरा न किया जायगा—जन मानस को राजनैतिक उत्तरदायित्व सँभालने के प्रथम प्रजातंत्री कर्त्तव्य मतदान का महत्व और दूरगामी परिणाम विदित न होगा तब तक स्थिति के सुधरने की आशा नहीं की जा सकती। प्रजातन्त्र स्विटजरलैण्ड जैसे प्रबुद्ध नागरिकों के देश में ही सही तरह सफल हो सकता है। जनता का स्तर यदि घटिया है तो घटिया लोग ही चुने जायेंगे और इनके द्वारा चलाया हुआ शासन, स्वराज्य कहला सकता है पर उसके द्वारा सुराज्य की आवश्यकता पूरी नहीं हो सकती।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस कठिनाई को हल करने का स्थिर उपाय तो यही है कि जनता को साक्षर, शिक्षित, प्रबुद्ध एवं दूरदर्शी बनाने के लिये युग-निर्माण योजना द्वारा संचालित जन-मानस परिष्कार अभियान को अधिकाधिक समर्थ और सफल बनाने में पूरा जोर लगाया जाय। जनता जितनी दूरदर्शी, देशभक्त कर्त्तव्य-निष्ठ और नागरिक कर्त्तव्यों को ठीक तरह पालन कर सकने में समर्थ बनती जायगी उतना ही वोट का सदुपयोग होगा। और सही व्यक्ति सही ढङ्ग से शासन तन्त्र चलाने के लिये नियुक्त किये जा सकेंगे। जब तक जन-मानस का स्तर गिरा हुआ रहेगा। जब तक उसके द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि भी उसी स्तर के रहेंगे। दल-बदल, पदलोलुपता, भाई-भतीजा वाद, पक्षपात, स्वार्थ साधन, भ्रष्टाचार की अनेक शिकायतें हमें अपने शासन संचालकों से रहती हैं। इसका मूल दोष जनता की अपरिपक्व मनः स्थिति को ही दिया जा सकता है। जब तक उसमें सुधार परिष्कार न होगा, शासन तन्त्र अनुपयुक्त व्यक्तियों के हाथों में ही बना रहेगा। जैसा दूध होगा मलाई भी उसी स्वाद की बनेगी जनता का स्तर ही चुनाव में विजयी होकर आता है। यह सिद्धान्त विश्व-व्यापी है। भारतवर्ष का ही नहीं, जहाँ भी प्रजातन्त्र है वहाँ यही सिद्धान्त लागू होंगे। अस्तु दोष न वोटर का है न चुनाव जीतने वालों का पिछड़ेपन की परिस्थिति ही ऐसी है जिसमें जनता से अधिक ऊँचे स्तर का शासन मिल सकना सम्भव ही नहीं हो सकता।

इस स्थिति में आपत्तिकालीन स्थिति की तरह एक सामयिक उपाय दूसरा भी है कि वोट देने का तरीका प्रत्यक्ष न रखकर अप्रत्यक्ष कर दिया जाय। इसमें वोटरों को बरगलाने का खतरा कम और विवेक से काम लेने का अवसर अधिक है। आरम्भ ग्राम पंचायतों से किया जाय। वहाँ भी वोट डालने का तरीका ऐसा हो जिसमें दूसरे किसी को पता भी न चलने पाये कि किसे वोट दिया गया। चुनाव दो तिहाई पर सफल माना जाय। आजकल आधे वोट मिलने पर चुनाव जीतने का जो कायदा है उसे बढ़ाकर दो तिहाई कर दिया जाय। इससे लोकप्रिय व्यक्ति ही चुने जा सकेंगे। प्रयत्न सर्व सम्मत चुनाव का किया जाय। यह भी हो सकता है कि एकबार प्राथमिक परीक्षण दूसरी बार अन्तिम चुनाव। प्राथमिक परीक्षण में कितने ही लोग खड़े हो सकते हैं। उस चुनाव में लोकप्रियता का पता चल जायगा। इनमें जिनके सबसे अधिक वोट हों ऐसे दो प्रतिद्वन्दी ही अन्तिम चुनाव में खड़े रहें और उनमें से जिसे दो तिहाई वोट मिलें उसी को सफल घोषित किया जाय। अच्छा तरीका यह है कि दोनों में से विवेकशीलता, चरित्र और सेवा की दृष्टि से जिसका पिछला स्तर ऊँचा रहा हो उस एक को ही सर्व सम्मति से चुना जाय। इससे चुनाव के कारण जो कटुता उत्पन्न होती है उससे बचा जा सकेगा।

इस ग्राम पंचायत चुनाव में चुने हुए लोग क्षेत्र पंचायत का—क्षेत्र पंचायत वाले, जिला पञ्चायत का—जिला पंचायत वाले, प्रान्त पञ्चायत का—और प्रान्त पंचायत वाले देश पंचायत का चुनाव कर लिया करें। इससे यह लाभ होगा कि अधिक ऊँची पञ्चायत के लिए अधिक उत्तरदायी और अधिक योग्य वोटर रहेंगे और उनसे अधिक विवेकशीलता और जिम्मेदारी की आशा की जा सकती है। यह तरीका—आज के सीधे चुनाव के तरीके की अपेक्षा भारत जैसे पिछड़े देश के लिए अधिक उपयुक्त रहेगा।

राष्ट्रपति का चुनाव ग्राम पञ्चायत के प्रतिनिधि करें ताकि किसी एक पार्टी के वोटों पर निर्भर वह न रहे। बहुमत पार्टी का चुना राष्ट्रपति उसी का पक्षपात करे यह आशङ्का बनी रहेगी। जबकि संविधान की रक्षा के लिये पूर्ण निष्पक्ष राष्ट्रपति की आवश्यकता है। अपने यहाँ अमेरिका के ढंग से चुना राष्ट्रपति होना चाहिए और उसके अधिकार भी सार्थक होने चाहिए। मात्र बहुमत पार्टी का समर्थक या प्रवक्ता राष्ट्रपति रहे तो शासन में निरंकुशता बढ़ेगी।

चुनाव में खड़े होने के लिए हर वोटर की कुछ योग्यता निर्धारित होनी चाहिए जिसमें शिक्षा, चरित्र और सेवा इन तीनों को आधार बनाया जाय। जैसे-जैसे चुनाव का स्तर ऊँचा होता जाय यह प्रतिबन्ध अधिक कड़े होते जाँय। धनिक एवं व्यवसायी वर्ग को क्रमशः चुने जाने में प्रतिबंधित किया जाता रहे क्योंकि वे अपने निहित स्वार्थों के लिये सत्ता का दुरुपयोग कर सकने में अधिक आगे तक बढ़ सकते हैं। सत्ता में जाने के बाद किसने अपने या अपने परिवार के लिए कितना धन कमाया और उसमें कुछ अनु-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चित तो नहीं था, इस बात की अधिक कड़ी निगरानी रखे जाने की व्यवस्था हो। इस प्रकार के प्रतिबन्धों से चुने प्रतिनिधियों का स्तर अधिक ऊँचा रखा जा सकेगा। दल-बदल करना हो तो स्तीफा देकर नया चुनाव ही लड़ा जाना चाहिए।

किसी जमाने में राजतन्त्र का प्रभाव प्रजा की सुरक्षा तक सीमित था। बाहर के आक्रमणकारियों से युद्ध और भीतर के चोर, डाकू, दुष्ट, दुराचारियों को दण्ड, प्रायः इतना ही कर्त्तव्य राजा लोग निबाहते थे। इन्हीं प्रयोजनों के लिए शस्त्र सज्जा, सेना जुटाये रहते थे। उस सुरक्षात्मक शासन व्यवस्था का व्यय भार प्रजाजन टैक्सों के रूप में अदा करते थे। जन मानस को सुव्यवस्थित और लोक प्रवृत्तियों को परिष्कृत करने का काम धर्म तन्त्र सँभालता था, शिक्षा, चिकित्सा, लोक मंगल के व्यक्तिगत और सामूहिक कार्यों का संचालन, सन्त मनीषियों द्वारा सम्पन्न होता था। उनका व्यय भार जनता श्रद्धासिक्त दान-दक्षिणा के रूप में पूरा करती थी। राजकोष में जो पैसा बच जाता था, वह उन्हीं धर्म पुरोहितों को दे दिया जाता था, वे समय और आवश्यकता के अनुरूप जिन कार्यों में उचित समझते थे, उस दान धन का उपयोग करते थे। उस पर कोई नियन्त्रण प्रतिबन्ध इसलिये नहीं था कि दान के श्रद्धासिक्त धन का श्रेष्ठतम उपयोग क्या किया जाय, किस तरह किया जाय, इसका सर्वोत्तम निर्णय वे धर्म पुरोहित स्वयम् ही कर सकने में समर्थ थे।

समय की गति ने धर्म तन्त्र को दुर्बल कर दिया और निकम्मा भी। राजतन्त्र की परिधि बढ़ती गई। अब शासन केवल सीमा सुरक्षा और अपराधियों को दण्ड देने तक सीमित नहीं रहा, उसका क्षेत्र बढ़ते-बढ़ते जीवन के हर क्षेत्र और समाज के हर कार्य के साथ जुड़ता चला आ रहा है। शिक्षा का पूरी तरह निर्धारण और प्रबन्ध सरकार करती है। चिकित्सा, परिवहन, यातायात, डाक-तार, बैंक, बीमा, व्यवसाय, उत्पादन आदि पर प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रीति से सरकारी नियन्त्रण ही स्थापित है। करनीति सरकार के हाथ में चली जाने से अब किसी भी व्यवसाय का बढ़ना घटना पूर्णतया सरकार की इच्छा पर निर्भर है। अन्न, वस्त्र तक के लिए हमें सरकारी इच्छा का अनुसरण करना पड़ता है। धीरे-धीरे यह नियन्त्रण अधिक व्यापक होता चला जा रहा है और व्यक्ति तथा समाज की सभी गतिविधियों पर शासन की नीति का प्रभाव बढ़ता चला जा रहा है। वह दिन दूर नहीं, जब समस्त सम्पत्ति और सुविधा साधनों पर सरकारी नियन्त्रण ही दिखाई देगा और व्यक्ति को मात्र मशीन की तरह शासन की इच्छा पर गतिविधियाँ निर्धारित करनी पड़ेंगी। साम्यवाद ऐसी ही स्थिति का प्रतिपादन करता है। प्रजातन्त्र हो या कोई और शासन तन्त्र, अब सम्मान इसी ओर है।

ऐसी दशा में सरकार का अधिक परिष्कृत होना आवश्यक है। अन्यथा उसमें घुसी हुई विकृतियाँ सारी प्रजा की गतिविधियाँ विकृत कर देंगी। राजनीति से कोई सीधा सम्बन्ध रखें या न रखें पर उसे इतना ध्यान तो रखना ही होगा कि शासन का स्तर और स्वरूप भ्रष्ट न होने पावे। इससे कम सतर्कता रखे बिना आज का नागरिक कर्त्तव्य पूरा नहीं होता। इस सन्दर्भ में हमें वोट का अधिकार बहुत ही सावधानी से बरतना चाहिए और हर समीपवर्ती को इस राष्ट्रीय अमानत का श्रेष्ठतम उपयोग पूरी समझदारी और दूरदर्शिता के साथ करने के लिये सजग करना चाहिए। चुनाव के समय बरती गई उपेक्षा, अन्यमनस्कता जन समाज के भाग्य भविष्य के साथ खिलवाड़ ही कही जायेगी। हमें चरित्रवान्, आदर्शवादी, लोक सेवी और परिष्कृत दृष्टिकोण वाले व्यक्तियों को ही वोट देना चाहिए। भ्रष्ट लोग—चुनाव के समय जन साधारण को प्रलोभन-बहकावे एवं भ्रान्तियों से उलझाकर वोट ले जाते हैं और चुने जाने पर अपने स्वार्थों के लिये शासन तन्त्र का दुरुपयोग करके ऐसी भ्रष्ट परम्परायें और रीति नीतियाँ चला देते हैं जिनका भारी दुष्परिणाम देश को भोगना पड़ता है।

शासन के बढ़ते हुए क्षेत्र एवं प्रभाव को रोका नहीं जा सकता। आवश्यकता प्रजाजनों को इतना प्रशिक्षित करने की है कि वे अपने वोट का मूल्य समझ सकें और बिना किसी प्रलोभन बहकावे के उसका राष्ट्र हित में सर्वोत्तम उपयोग कर सकें। यह सतर्कता न बरती जा सकी, वहाँ प्रजातन्त्र अभिशाप ही बनकर रह जायेगा। भ्रष्ट और धूर्तों के हाथ शासन सौंप देने पर अगणित दुष्प्रवृत्तियों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पनपेगी और प्रजा को अनेक जाल-जंजालों में फँसकर तरह तरह के कष्ट उठाने पड़ेंगे। अस्तु जिन्हें राजनीति से सीधा सम्बन्ध न हो उन्हें भी वोट और उसके सदुपयोग के सम्बन्ध में तो अधिकतम जागरूक रहना ही चाहिए।

इन दिनों राष्ट्रीयकरण की चर्चा जोरों पर है। बैंक, बीमा, भूमि, परिवहन आदि कई बातों का राष्ट्रीयकरण हो चुका है और कई के होने की तैयारी है। इस सन्दर्भ में सबसे अधिक आवश्यक राष्ट्रीयकरण उन साधनों का करने की जरूरत है, जो लोक मानस को प्रभावित करते हैं। साहित्य, सिनेमा, चित्र आदि के अधिकार उन लोगों के हाथ से छीन लिये जाने चाहिए जो उनको भ्रष्ट करने में लगे हुए हैं। इन शक्तियों को केवल उन व्यक्तियों के नियंत्रण में दिया जाये जो उन्हें केवल लोक मंगल के लिए ही प्रयुक्त करने के लिये प्रतिज्ञाबद्ध हों। प्रस्तावों द्वारा, प्रदर्शनों द्वारा, हस्ताक्षर आन्दोलनों द्वारा, पत्र-पत्रिकाओं द्वारा, सरकार को यह बताया जाना चाहिए कि जनता लोक मानस को विकृत किये जाने वाले प्रयत्नों से क्षुब्ध है। चुनावों के समय हर उम्मेदवार से प्रतिज्ञा करानी चाहिए कि वह चुन जाने पर इस बौद्धिक भ्रष्टाचार को रोकने के लिए शक्ति भर प्रयत्न करेगा।

अपराधों को रोकने के लिए अभी और कड़े कानूनों की जरूरत है। हम देखते हैं ८० प्रतिशत अपराधी कानूनी पकड़ से बच निकलने में सफल हो जाते हैं। पुलिस अदालत, कानून और दण्ड की सारी प्रक्रिया ऐसी हो, जो अपराधी को कानूनी पकड़ से न बचने दे और उसे ऐसा पाठ पढ़ाये जो भविष्य में वैसा करने का साहस ही न कर सके। दूसरे लोग भी वैसा करने के लिये आतंकित हों, हमारी न्याय व्यवस्था ऐसी कठोर होनी चाहिए। इस दिशा में मुलायमी बरतने, ढील छोड़ने या गुंजायश रखने से अपराधी तत्वों के हौंसले बढ़ते चले जायेंगे और सदाचरण की उपेक्षा बढ़ जायेगी। सरकार चाहे तो दुष्प्रवृत्तियों के प्रति अधिक कठोर रुख अपनाकर अपराधों का विस्तार रोक सकती है। सज्जनता को सम्मानित और पुरुषकृत करके भी सत्प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन दिया जा सकता है। राजसत्ता जितने अंशों में लोक मानस को स्पर्श और प्रभावित करती हो उतने अंशों में उसे सुधारात्मक रुख अपनाने के लिए अधिकाधिक प्रेरित प्रभावित और विवश किया जाना चाहिए।

—×—

रचनात्मक कार्यों के लिये जन उत्साह जगाया जाय

उच्च आदर्शों की चर्चा करते भर रहने से कुछ काम चलने वाला नहीं है। पढ़ना, सुनना, मनन-चिन्तन करना इसलिये आवश्यक होता है कि उनसे मनोभूमि प्रभावित होकर सत्कर्म करने की प्रेरणा उत्पन्न हो और क्रिया रूप में कुछ ऐसा करते बन पड़े जो अन्तःकरण में संस्कार बनकर उभरे। विचारों की सार्थकता तभी है जब उनके द्वारा कर्म करने का साहस हो सके। अन्यथा आदर्शवादिता की लम्बी-चौड़ी बातें करते रहना—कथा पुराणों का पढ़ना—और लच्छेदार प्रवचनों को सुनते रहना--मात्र मनोविनोद एवं समय क्षेप ही होकर रह जायगा। हमारी विचारणा इतनी प्रखर होनी चाहिए जो कार्य रूप में परिणत एवम् प्रस्फुटित हो सके।

व्यक्तिगत जीवन में उत्कृष्टता—धार्मिकता—आध्यात्मिकता एवं आदर्शवादिता का अभिवर्धन करने के लिए ऐसे कर्मों को जीवन क्रम में महत्वपूर्ण स्थान मिलना चाहिये जो हमारे सद्गुणों को सक्रिय बनायें और भावनात्मक स्तर को ऊँचा उठायें। ऐसे सत्कर्मों की सामाजिक जीवन में भी बड़ी आवश्यकता है। क्योंकि श्रेष्ठ कर्मों की परम्परा चल पड़े तो उसका अनुकरण करने की अनेकों की सहज इच्छा होगी। जिस प्रकार बुरे कर्म होते देखकर लोगों को वैसा ही करने की इच्छा उत्पन्न होती है, उसी प्रकार श्रेष्ठ कर्म भी अनेकों दर्शकों में वैसा ही उत्साह उत्पन्न करते हैं। समाज राष्ट्र और विश्व की प्रगति एवम् सुख-शान्ति सत्कर्मों पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अवलम्बित है इसलिये लोक-मंगल की दृष्टि से भी यह आवश्यक है कि शुभ कर्मों की परम्परा को अधिकाधिक गतिशील बनाया जाय।

लोक-मंगल के लिये किये गये रचनात्मक पुण्य प्रयोजन की शृङ्खला में जितनी तीव्रता उत्पन्न होगी उतना ही नव-निर्माण का—धरती पर स्वर्ग अवतरित करने का स्वप्न निकट आता जायगा। इसलिए हम सबका प्रयत्न यह होना चाहिए कि हर व्यक्तिके जीवन क्रममें लोक-मंगल के लिये प्रयत्न पुरुषार्थ—त्याग और बलिदान करने की मात्रा दिन-दिन बढ़ती चली जाय। इसके लिए हमें योजनाबद्ध रीतिसे रचनात्मक कार्यक्रमोंका अधिकाधिक विस्तार करना चाहिये जिससे जन-साधारण में सृजन के लिए आवश्यक उत्साह उत्पन्न कर सकना सम्भव हो सके। अपनी शतसूत्री योजना इसी आवश्यकता को ध्यानमें रखकर बनाई गई है। इनमें से शिक्षा और कला के माध्यम से लोक मानस में परिवर्तन लाने की चर्चा पिछले पृष्ठों पर की जा चुकी है। इसके अतिरिक्त स्थानीय परिस्थितियों को देखते हुए जहाँ जैसा संभव हो वहाँ उस प्रकार के रचनात्मक कार्यों के लिये जनउत्साह जगाया जाना चाहिए और सामूहिक रूप से ऐसे रचनात्मक कार्यों का ढाँचा खड़ा किया जाना चाहिए जिससे व्यक्तिकी परमार्थ भावनाएँ जग सकें और समाजमें स्वस्थ परम्पराएँ उभर सकें। यों इस वर्ष (१) ज्ञान-यज्ञ का विस्तार, (२) सदस्यों का संगठन, (३) अभिनव शिक्षा योजना (४)कला भारती, (५)सत्साहित्य का प्रकाशन, (६)गायत्री यज्ञों में मिले युग सम्मेलन जैसे कार्यक्रमों में ही हम सब को व्यस्त रहना पड़ेगा पर अगले वर्ष इन रचनात्मक और संघर्षात्मक कार्यक्रमों को भी हाथ में लेना पड़ेगा सो इनकी रूपरेखा भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

समाज का पिछड़ापन दूर करने के लिये हममें से हर व्यक्ति को अपनी योग्यता,क्षमता और परिस्थिति के अनुरूप कुछ न कुछ प्रयत्न करने चाहिये। देश सभी का है, उसके उत्थान-पतन में सभी की लाभ हानि हैं। हर नागरिक पर देशभक्ति की पवित्र जिम्मेदारियाँ हैं और उन्हें अपना निजी काम छोड़कर भी पूरा किया जाना चाहिए। सरकार के भरोसे सब बात छोड़ बैठनेसे काम न चलेगा। हम सभी को अपने इस परम पवित्र कर्त्तव्य का ध्यान रखना चाहिये कि अपने देश का पिछड़ापन दूर करने के लिए हम कुछ न कुछ रचनात्मक कार्य करने के लिये अपने समय, श्रम एवम् धन का एक अंश लगाया करें। विभिन्न परिस्थितियों और योग्यताओं के व्यक्ति विभिन्न प्रकार के रचनात्मक कार्य अपने ढङ्ग से कर सकते हैं। उनकी विस्तृत चर्चा 'शतसूत्री योजना' में प्रस्तुत की गई है, उनमें से ही कुछ की चर्चा नीचे की पंक्तियों में की जा रही है।

अपने देश में शिक्षा २० प्रतिशत है, ८० फीसदी बिना पढ़े हैं। प्रगति के लिए शिक्षा अति आवश्यक है। इसलिये निरक्षरता को दूर भगाया जाना चाहिये। सरकारी स्कूल, कालेजों में आधे चौथाई अल्प वयस्क बालकों के पढ़ाने का ही इन्तजाम है, शेष बालकों तथा वर्तमान प्रौढ़ों और महिलाओं की साक्षरता भी आवश्यक है। इन्हीं तीस वर्षों में संसार के भविष्य का निर्माण होना है, इसलिए वर्तमान निरक्षरों की उपेक्षा इस आशा पर नहीं की जा सकती कि स्कूलों में पढ़ने वाले लड़के बड़े होकर सब कार्य संभाल लेंगे। प्रौढ़ शिक्षा की जन स्तर पर व्यापक व्यवस्था बनानी पड़ेगी। इसके लिये शिक्षित लोग विद्या-ऋण चुकाने के लिये जगह-जगह प्रौढ़ पाठशालाएँ, रात्रि पाठशालाएँ खोलें, जिनमें दिन भर व्यस्त रहने वाले लोग अवकाश के समय शिक्षा प्राप्त कर सकें। महिलाओं के लिए दिन के तीसरे पहर की पाठशालाएँ चलें। किसान मजदूरों के बच्चे जो दिन भर काम में लगे रहते हैं रात्रि पाठशालाओं में ही पढ़ सकते हैं। सेवा-भावी शिक्षित व्यक्ति ऐसी पाठशालाएँ आसानी से चला सकते हैं।

बेकारी दूर करने के लिये कुटीर उद्योगों का शिक्षण, प्रचलन और उत्पन्न माल को खपाने वाले यन्त्र खड़े किये जाना चाहिये। जापान ने कुटीर उद्योगों को बिजली से चलाने की व्यवस्था बनाकर बड़े कारखानों से अधिक सस्ता उत्पादन किया है और हर नागरिक को काम दिया है। हमें भी इस स्तर के प्रचलन करने चाहिये तथा उद्योग शालाएँ एवम् संगठित उत्पादन विक्रय व्यवस्थाएँ बनानी चाहिए ताकि शिक्षितों और अशिक्षितों की बेकारी दूर हो और आर्थिक स्थिति सुधरे।

अन्न, शाक, फल,वृक्ष एवं पुष्प अपने देश में यह सभी कम उत्पन्न होते हैं। पौष्टिक खाद्य मिलनेकी समस्या जटिल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होते जाने से दिन-दिन दुर्बलता और अस्वस्थता बढ़ रही है। इसके लिये घरों में शाक-वाटिका लगाने, फूल उगाने का आम रिवाज चलाया जाय। फूलों के बगीचे लगाये जायें, कृषि में अधिक श्रम, साधन लगाकर अधिक अन्न उत्पादन पर ध्यान दिया जाये खाली जगहों पर जलाऊ लकड़ी के वृक्ष लगाये जायें और गोबर जैसी बहुमूल्य खाद को ईंधन बनने से बचाया जाय। किसानों को शाक उत्पादन के लाभ तथा उपाय बताये जायें। जूठन न छोड़ने, बड़ी दावतें न करने तथा सप्ताह में एक समय आहार न करने की परिपाटी चलाकर भी खाद्य-समस्या सुलझाई जा सकती है और विदेशों से अन्न मँगाने की लज्जा से बचा जा सकता है।

स्वास्थ्य संरक्षण एवं मनोबल बढ़ाने के लिये गाँव गाँव व्यायामशालाएँ खुलनी चाहिये। कसरत, ड्रिल, खेलकूद के साथ साथ लाठी, तलवार, बन्दूक आदि चलाना सिखाने की भी व्यवस्था उनमें रहे। स्वास्थ्य, गोष्ठियाँ तथा परामर्श प्राकृतिक जीवन एवम् प्राकृतिक चिकित्सा का प्रबन्ध भी इन स्वास्थ्य केन्द्रोंमें रहा करे। खेलकूद प्रतियोगिताएँ तथा अच्छे स्वास्थ्य वालों को पुरस्कार देनेके सार्वजनिक आयोजनों की योजनायें बनाई जायें।

लोक शिक्षण के लिए सभा,सम्मेलन, विचार-विनिमय, कथा, प्रवचन आदि की व्यवस्थाएँ समय-समय पर होती रहें। वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ, कविता-सम्मेलन, संगीत-सम्मेलन आदि के द्वारा विचारोत्तेजक साधन जुटाये जांय। भारतीय समाज के पर्व और त्यौहार इस दृष्टि से बहुत ही उपयोगी तथा प्रेरणाप्रद हैं। सोलह संस्कारों के माध्यम से परिवारों का शिक्षण हो सकता है। अपनी सत्यनारायण कथा इस दृष्टिसे बहुत सारगर्भित है। विवाह दिन और जन्म दिन मनाने के लिए रिवाज चल पड़ें, तो जीवनोद्देश्य की पूर्ति तथा पारिवारिक जीवन की सफलता केलिये लोगों को निरन्तर स्वच्छ मार्ग दर्शन मिलता रहे। उपरोक्त प्रकार या अन्य प्रकार के जन-सम्मेलनों के आयोजनों की इन दिनों भारी आवश्यकता है, जो विचार क्रान्ति की आवश्यकता पूर्ण कर सकने में समर्थ हों। गायत्री यज्ञों के साथ जुड़े हुए युग-निर्माण सम्मेलन उसी शृङ्खला में जोड़े जा सकते हैं। सत्कर्म करने वाले आदर्शवादियों का सार्वजनिक अभिनन्दन तथा महापुरुषों की जयन्तियाँ मनाने की बात भी उसी क्षेत्र में आती है।

सेवादलों का संगठन कई उद्देश्यों से आवश्यक है। बढ़ती हुई गुण्डागर्दी से निपटने और सुरक्षा की भावना उत्पन्न करने के लिये साहसी युवकों का संगठित दल बहुत काम कर सकता है। गन्दगी की अपनी आदत ने गाँव नगरों को बुरी तरह अस्वस्थ बना रखा है। यह सेवा दल लोगों को साथ लेकर सफाई अभियान चलायें। स्वच्छता के महत्व समझायें और गन्दगी फैलाने वालों को रोकें। सामूहिक श्रमदान संगठित करके ग्राम, नगरोंमें रास्ते एवम् तालाब साफ रखने कुँए,स्कूल आदि बनाने का बहुत काम विना कुछ खर्च के ही हो सकता है। सहकारी भण्डारों द्वारा उपयोग की वस्तुएँ सस्ती और सही मिल सकती हैं। इस तरह की सत्प्रवृत्तियों का सञ्चालन करने के लिये सेवा भावी सज्जनोंके संगठित प्रयासों की सर्वत्र बड़ी आवश्यकता है, उनकी पूर्ति की जाय। स्वच्छता अभियान सुरक्षा दल, सहकारी समितियाँ, सेवा समितियाँ आदि कितने ही सहयोगात्मक कार्य हर जगह चल सकते हैं।

पुस्तकालों, वाचनालयों की इस देश में भारी आवश्यकता है। इन्हें सच्चे देव मन्दिर या ज्ञान मन्दिर कहना चाहिये। कूड़े कवाड़े की तरह आज छपता-बिकता तो बहुत साहित्य है पर व्यक्ति तथा समाज निर्माण करने वाला साहित्य ढूँढ़े नहीं मिलता,न उसके पढ़ने की लोगों में रुचि ही है जब कि इसी साहित्य के प्रचार एवं अवगाहन पर समाज का भविष्य निर्भर है। गरीब देश के लोग अभी बौद्धिक भूख बुझा सकने योग्य साहित्य खरीद भी नहीं सकते। यह भारी आवश्यकतायें ऐसे पुस्तकालय पूरी कर सकते है जिनमें केवल प्रेरणाप्रद चुनी हुई पुस्तकें ही रहने का नियम हो, घर-घर पुस्तकें पहुँचाने तथा वापस लाने का प्रबन्ध हो, जहाँ अशिक्षितों को सुनाने की भी व्यवस्था हो। ऐसे पुस्तकालयों की शृङ्खला गली-गली, गाँव-गाँव फैलाई जाने की आवश्यकता है।

ऊपर केवल थोड़े से रचनात्मक कार्यक्रमों की चर्चा की गई है। ऐसे १०८ कार्यक्रम अपनी शत-सूत्री योजना के अन्तर्गत आते है। उनमें से जहाँ जैसी सुविधा हो, वहाँ उस स्तर के कार्यक्रम आरम्भ किये जाने चाहिये, ताकि लोगों को उन सत्प्रवृत्तियों का महत्व समझने और अपनाने का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अवसर मिले । ध्वंस सरल है, निर्माण कठिन । स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये संघर्ष करना सरल था । अब केवल आलोचना, निन्दा से कुछ काम न चलेगा । देश की सर्वतोमुखी प्रगति के लिये हमारा ध्यान रचनात्मक कार्यक्रमों की ओर जाना चाहिए और उन्हें पूरे उत्साह, साहस तथा त्याग बलिदान की भावना से चलाया जाना चाहिए ।

—☼—

ज्ञान-यज्ञ इस युग का महानतम अभियान

मनुष्य की मूल शक्ति विचारणा है । उसी के आधार पर इतनी प्रगति कर सकना उसके लिये सम्भव हुआ है । विचारों की उत्कृष्टता और निष्कृष्टता ही उसे ऊँचा उठाती एवं नीचा गिराती है । समस्याएँ विचारों की विकृति से उत्पन्न होती हैं और उनका समाधान दृष्टिकोण बदलने से निकलता है । हम जो कुछ भले-बुरे काम होते देखते हैं उन्हें विचार पद्धति की प्रतिक्रिया मात्र कहा जा सकता है । हम रोज ही देखते हैं कि एक प्रकार के विचार एक को देवता बनाते हैं और दूसरे प्रकार के विचार दूसरे को दानव की पंक्ति में लाकर खड़ा कर देते हैं । सचमुच जो जैसा सोचता है, वह वैसा ही बनकर रहता है । सोचने की दिशा में ही क्रिया बनती है और उसी की परिणति परिस्थितियों के रूप में सामने आती है । परिस्थितियों का अपने आप में कोई स्वतन्त्र आधार नहीं है । वे हमारे कर्तृत्व का परिणाम मात्र हैं । इसी प्रकार कर्तृत्व भी अपने आप नहीं बन जाता है विचारों की प्रेरणा ही हमारी कार्य पद्धति के लिये पूरी तरह उत्तरदायी होती है । इस तथ्य को समझ लेने पर ही आज की मानवीय समस्याओं का कारण और निवारण ठीक तरह समझा जा सकता है ।

खेद है कि अब तक इस प्रकार का चिन्तन नहीं के बराबर हुआ है जो हुआ है उसको महत्व नहीं दिया गया । हमारे मूर्धन्य व्यक्ति इतना भर सोचते रहे हैं कि शासन तन्त्र के माध्यम से-सुविधा साधन बढ़ा देने से मनुष्य सुखी रहने लगेगा और अपनी उलझनें सुलझा लेगा । पर देखते हैं कि वह मान्यताएँ गलत सिद्ध होती चली जा रही हैं । शासन तन्त्र को सुधारने के लिये जितने हाथ पैर पीटे जाते हैं उतनी ही उससे विकृतियाँ उत्पन्न होती चल रही हैं । अर्थ-तन्त्र ने निःसंदेह कई प्रकार की सुविधाएँ उत्पन्न की हैं पर परिणाम उलटा ही हो रहा है । बढ़े हुए धन का दुरुपयोग बढ़ रहा है और उससे अपराधों, रोगों की एवं विद्वेष भरी घटनाएँ तीव्र होती चल रही हैं । विलासिता की बढ़ती हुई आकांक्षा के सामने बढ़ी हुई आजीविका निरन्तर छोटी पड़ती चली जा रही है और व्यक्ति अपने आपको अधिक दरिद्र अधिक अभाव ग्रस्त-अधिक दुःखी अनुभव कर रहा है । विज्ञान, शिक्षा, चिकित्सा, शिल्प, कला, परिवहन, यातायात, उद्योग, मनोरञ्जन, अस्त्र-शस्त्र सभी साधन बढ़ रहे हैं, पर इसके फलस्वरूप व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक स्वस्थता में रत्तीभर भी योगदान नहीं मिला है वरन् विकृति ही बढ़ी है । इसी प्रकार कानून का ढाँचा बढ़ाने—सुरक्षा व्यवस्था बनाने—आदि के लिये जो प्रयत्न किये जा रहे हैं वे भी समाज गत सद्भावना, संगठन, सुव्यवस्था, समर्थता एवं प्रगति में सहायक सिद्ध नहीं हो रहे हैं । बाहर से कलेवर लम्बे-चौड़े खड़े किये गये देखते हैं पर भीतर पोल ही पोल मिलती है । तथाकथित प्रगति की जड़ें बिलकुल खोखली हैं किसी भी धक्के में वह लड़खड़ा सकती है ।

स्थायी प्रगति और सुदृढ़ समर्थता के लिये चरित्र बल होना चाहिए और वह उत्कृष्ट विचारणा की भूमि पर ही उग सकता है । ऐसी कृति न किये जाने के लिये अपना नेतृत्व और चिंतन समान रूप से दोषी है । दोनों ने ही तथ्य की उपेक्षा की । और ऐसे ही लुभावने क्रिया-कलाप एवं ढाँचे खड़े करके वह प्रवंचना संजो ली । दौड़-धूप बहुत हुई पर बालू में से तेल निकालने की तरह कुछ हाथ न लगा । तथ्यों का तकाजा था कि मानव समाज के सम्मुख उपस्थित सर्वतोमुखी, सर्वभक्षी संकट को देखा समझा जाय और विनाश की दिशा में तेजी से बढ़ते हुए कदमों को रोकने के लिये कुछ ठोस प्रयास किया जाय ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समय की पुकार और युग की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए युग निर्माण योजना अपने ढङ्ग की एक अनौखी रीति-नीति कार्य पद्धति लेकर सामने आई और प्रसन्नता की बात है कि उसका हर क्षेत्र में स्वागत हुआ है। योजना के ज्ञान-यज्ञ अभियान ने एक चमत्कार ही प्रस्तुत किया है। व्यक्ति और समाज की समस्याओं का मूलकारण समझाने की दिशा में जो प्रयत्न हुए हैं जो समाधान प्रस्तुत किये गये हैं, उन्हें आरम्भ में ही उपहासास्पद बताया गया है, अब जबकि गहराई से विचार किया गया है और तथ्यों को ठीक तरह समझा गया है तो वास्तविकता सामने आ गई है। लोग यह अनुभव करने लगे हैं कि विचार पद्धति में विकृति आने से ही अधःपतन के अगणित आधार उत्पन्न हुए हैं। अभाव, दारिद्र, शोक-संताप, विग्रह, विद्वेष की विभीषिकाएँ विकटतम होती चली जा रही हैं उनका मूल-कारण विचारणा का स्तर गिर जाना भर है। कारण को ढूँढ़ने और निवारण करने के लिये जब ध्यान ही नहीं दिया गया—प्रयत्न ही नहीं किया गया तो सुख-शान्ति और प्रगति समृद्धि के स्वप्न सार्थक कैसे होते ?

आज व्यक्ति को अनेक व्यथा वेदनाओं में डूबा हुआ और समाज की अनेक समस्याओं में उलझा हुआ पाते हैं। सर्वत्र अशान्ति, आशङ्का और असन्तोष का जो वातावरण देखते हैं, उनके पीछे एक ही कारण है—मानवीय दुर्बुद्धि का बढ़ जाना और उसका दुष्प्रवृत्तियों की ओर मुड़ जाना। यदि यह प्रवाह रोका जा सके, लोगों को उच्च आदर्शवादिता की रीति-नीति समझाने के लिये तैयार किया जा सके, तो परिस्थितियाँ बिलकुल उलट सकती हैं। जो क्षमता आज विघटनात्मक—अनीतिमूलक क्रिया-कलापों में लगी हैं, वे यदि उलट कर सृजनात्मक और सद्भाव संवर्धन में लग जायें तो देखते—देखते जादू की तरह सारी परिस्थितियों का काया—कल्प हो सकता है। वर्तमान नारकीय वातावरण देखते-देखते स्वर्गीय सुषमा में बदल सकता है।

धन सम्पदा और साधन सुविधायें बढ़ाकर मानवीय सुख-शान्ति बढ़ाने के प्रयत्नों में दूसरे लोग हुए हैं वह सराहनीय हैं। पर हमें सोचना यह है कि दुर्बुद्धि का वर्तमान क्रम यदि इसी तरह चलता रहा तो कुबेर की तरह सम्पत्ति और इन्द्र की तरह साधन बढ़ जाने पर भी दुर्बुद्धि के रहते विपत्तियाँ ही बढ़ेंगी। सद्बुद्धि ही अभावग्रस्त जीवन को भी सुख-शान्ति से भरपूर रख सकती है। इस—लिये इस महत्वपूर्ण तथ्य की ओर दूसरों का ध्यान नहीं है, उसे अपने हाथ में लेना चाहिए और दुर्बुद्धि के उन्मूलन एवं सद्बुद्धि के संस्थापन में प्राणपण से जुट जाना चाहिए, यह प्रयास आँखों से दिखाई न पड़ने के कारण सस्ती वाह-वाही भले ही न दिला सके, पर अपनी उपयोगिता के कारण उसका महत्व इतना बड़ा है कि उसके ऊपर पुण्य परमार्थ वह जाने वाले समस्त कार्यों को निछावर करके फेंका जा सकता है।

युग-निर्माण योजना का 'ज्ञान-यज्ञ अभियान' इतिहास में उपलब्ध अब तक के सबसे महान्, सृजनात्मक कार्यों में से एक ही है। इसकी कार्य-पद्धति यह है कि घर-घर, जन-जन से संपर्क स्थापित कर व्यक्ति और समाज के सामने प्रस्तुत अगणित समस्याओं का स्वस्थ और सही समाधान समझाया जाय। हजार वर्ष की गुलामी के बाद भारतीय जनता की विचार पद्धति में बड़ी विकृति आई है और उसमें से अधिकांश मान्यताएँ निरर्थक ही नहीं अनर्थ-मूलक भी बन गई हैं। पर लोग उन्हें परम्परा मान के छाती से चिपकाये बैठे हैं। और तरह-तरह के कष्ट सहते हैं। ज्ञान-यज्ञ का प्रयोजन व्यक्ति की विवेकशीलता का जागृत करना है जो उचित-अनुचित का भेद समझ सके और जो अवांछनीय है उसे हटाने तथा औचित्य को स्वीकार करने का साहस जगा सके।

औचित्य, न्याय और विवेक से सम्पुटित एक प्रगतिशील विचारधारा का सृजन युग-निर्माण योजना द्वारा किया गया है। अत्यन्त प्रखर प्रकाश से परिपूर्ण व्यक्ति और समाज की हर समस्या का महत्वपूर्ण हल प्रस्तुत करने वाला अत्यंत सस्ता साहित्य प्रचुर मात्रा में प्रकाशित किया जाता है। ज्ञान-यज्ञ का एक भाग यह सृजन है जिसे केन्द्र द्वारा देश की हर भाषा में प्रचुर परिणाम में लिखा और छापा जा रहा है। दूसरा भाग उसका प्रसार है। भावनात्मक नव-निर्माण का महत्व समझने वाले हर विचारशील व्यक्ति को इसके लिये आमंत्रित किया गया है। प्रसन्नता की बात है कि ऐसे परमार्थ प्रेमियों की संख्या दिन-दिन बढ़ती जा रही है और वे अपने समय तथा साधनों का एक अंश नियमित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रूप से लगाने लगे हैं कि घर-घर जाकर जन-जन से संपर्क स्थापित करें और उनकी मनोभूमि तथा आवश्यकता को देखते हुए नव-निर्माण का वह सृजनात्मक साहित्य पढ़ने को दें जो छोटे-छोटे ट्रैक्टों, विज्ञप्तियों एवम् अखण्ड-ज्योति, युग-निर्माण पत्रिकाओं के रूप में उपलब्ध है। जो पढ़े नहीं हैं,उन्हें सुनाने का कार्य करना होता है। चूँकि देश में ८० प्रतिशत लोग अशिक्षित हैं, इसलिये सुनाना भी इस देश में पढ़ाने से भी अधिक आवश्यक है।

ज्ञान-यज्ञ के होता उद्गाता वे लोग हैं जिनने जन-मानस में विचार परिष्कार के सर्वोपरि परमार्थ का महत्व समझ लिया है और उसके लिये कुछ अनुदान नियमित रूप से देते रहने का व्रत धारण कर लिया है। ऐसा अनुदान न्यूनतम एक घण्टा समय और दस पैसा नित्य का होना चाहिए। दस पैसा देने में नियमितता बनी रहे और उसे एक दैनिक अनिवार्य नित्यकर्म की तरह स्मरण रखा जा सके इसके लिये ज्ञान-यज्ञ के धर्मघट (गुल्लकें) पैसे जमा करने के लिए बना दी गई हैं। इन्हें पूजा की वेदी पर स्थापित करना होता है और दस पैसे नित्य उसमें डालने पड़ते हैं। ताला-कुञ्जी उसमें रहने से महीने पर या जब आवश्यकता पड़े तभी उसे खोला जा सकता है। इस पैसे से वह सारा साहित्य मँगाया जाता रहता है, जो विचार क्रान्ति, नैतिक क्रान्ति और समाज क्रान्ति के लिये युग-निर्माण योजना के अन्तर्गत मथुरा से निरन्तर प्रस्तुत किया जाता रहता है। इस प्रकार एक घरेलू पुस्तकालय बनता चला जाता है जिसे हर घर की सच्ची सम्पत्ति कहना चाहिए।

एक घण्टा समय का अनुदान इसलिये है कि दस पैसा रोज देकर जो साहित्य उपलब्ध किया गया है उसे अपने घर के परिवार के हर सदस्य को नित्य थोड़ा-थोड़ा कर पढ़ाया सुनाया जाया करे। तथा पड़ौसी, मित्र, परिचित, सम्बन्धी जो भी अपने प्रभाव तथा परिचय क्षेत्र में आते हैं, उन्हें इस साहित्य से परिचित कराने, महत्व माहात्म्य समझाने रुचि उत्पन्न करने और पढ़ाने के लिए बार-बार सम्पर्क स्थापित किया जाता रहे। जिनमें थोड़ी सी—भी विचारशीलता है उनके साथ किया हुआ परिश्रम सफल भी होता है। जो लोग यह पढ़ने सुनने में रुचि लेने लगते हैं उनमें से अधिकांश को इस प्रखर विचारधारा से प्रभावित होना पड़ता है और वे उस प्रकाश को जीवन में उतारने तथा अपने सम्पर्क क्षेत्र में फैलाने का साहस भी करते हैं। उस प्रकार भावनात्मक नव-निर्माण की विचार क्रान्ति की यह पुण्य प्रक्रिया दिन-दिन आगे बढ़ती चली जाती है।

एक घण्टा समय और दस पैसा नित्य ज्ञान-यज्ञ के लिए नियमित रूप से देने का व्रत लेने वाले भावनाशील लोगों को युग-निर्माण योजना का सदस्य माना जाता है और उन्हीं का संगठन इस प्रकार अभियान के अतिरिक्त शतसूत्री रचनात्मक एवं संघर्षात्मक कार्यक्रमों को हाथ में लेकर भावनात्मक नव-निर्माण के पुण्य प्रयोजन को आगे बढ़ाता है। हर सदस्य को कम से कम दस व्यक्तियों तक इस विचारधारा के प्रसार का प्रयत्न करना पड़ता है। इसलिये कि दस हजार कर्मठ सदस्य एक लाख को निरन्तर प्रभावित, प्रोत्साहित करते रह सकते हैं। यह प्रक्रिया चक्रवृद्धि ब्याज के क्रम से बढ़ती हुई चार पाँच छलाँगों में भारत को ही नहीं सारे विश्व को अपने प्रसाव क्षेत्र में ले सकती है, ले भी रही है।

झोला पुस्तकालय ज्ञान—यज्ञ का महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। जहाँ कहीं भी जाया जाय,एक झोले में युग निर्माण के ट्रैक्ट, पत्रिकाएँ और विज्ञप्तियाँ लेकर जाया जाय, और जहां उपयुक्त अवसर जान पड़े वहीं अपने मिशन की चर्चा छेड़ दी जाय। जितना परिचय साहित्य के माध्यमसे कराया जा सकता हो कराया जाय। लोगों के घरों पर जाकर पुस्तकें देना और फिर जाकर वापस लाना ऐसा क्रम है, जिससे किसी को भी प्रभावित और आकर्षित किया जा सकता है। झोला पुस्तकालय अपने नगर में सारे शिक्षित समाज को इस विचारधारा से परिचित और प्रभावित कर सकता है। इतना ही नहीं वह रेल मोटर के सफर, प्रवास या जहाँ भी जाया जाय साथ रह सकता है, और इन चिनगारियों को कहीं भी बखेरता रह सकता है। वे अवसर पाकर कहीं भी अनीति एवम् अविवेक का उन्मूलन करने में प्रचण्ड दावानल की भूमिका सम्पादित कर सकती हैं। जहाँ सम्भव हो चल पुस्तकालय धकेल गाड़ी के रूप में चलाया जा सकता है। उनके द्वारा लोगों को पढ़ने की यह चीजें दी जाती रहें और जिन्हें पसन्द आयें उन्हें बेची भी जा सकती हैं। इस तरह उस कार्य में लगे व्यक्ति को थोड़ी आजीविका भी मिल सकती है और वह इस अति उपयोगी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कार्य में लगा भी रह सकता है । सेवाभावी लोग अवैतनिक रूप में भी यह चल पुस्तकालय चलाने में अपना योगदान दे सकते हैं ।

ज्ञान-यज्ञ देखने सुनने में छोटी बात लगती है, पर उसकी सम्भावनाएँ उतनी विशाल है कि यदि ठीक तरह इस अभियान को चलाया जा सका तो विश्वास है कि लोक-मानस में विवेकशीलता और सत्प्रवृत्तियों की गहरी स्थापना सम्भव हो सकेगी और नये युग के अवतरण का स्वप्न साकार किया जा सकेगा ।

युग-निर्माण योजना ने ज्ञान-यज्ञ अभियान के अन्तर्गत जन-मानसको झकझोरकर रख दिया है । उसने विचार करने के नये आधार और समस्याओं के नये समाधान प्रस्तुत किये हैं, जिनमें सोचने की क्षमता थी उनने समझा है कि वास्तविकता यही है और यदि अपकर्ष का अन्त और उत्कर्ष का आरम्भ होना है तो इसी प्रकार होगा जैसा कि सुझाया जा रहा है । 'जादू वह जो सिर पर चढ़कर बोले' वाली उक्ति अपने आन्दोलन के सम्बन्ध में अक्षरशः लागू होती है । कुछ वर्ष पूर्व जहाँ हमारे प्रयत्नों का मूल्य समझने वालों की संख्या सैकड़ों हजारों तक सीमित थी वहां इन्हीं दिनों लाख तक पहुँची है और करोड़ों तक पहुंचने जा रही है । मात्र विचारों की प्रशंसा ही नही हुई उसका समर्थन भी जोरोंसे हुआ है और समर्थन भी नपुंसक नहीं रहा वरन् उसमें सक्रियता इतनी मात्रा में उत्पन्न हो गई कि कार्यकर्त्ताओं और सहयोगियों की एक बड़ी शृङ्खला कार्यक्षेत्र में उतरती चली आ रही है । अब अपना ज्ञान-यज्ञ मात्र प्रचार तन्त्र नहीं रहा वरन् उसने एक समर्थ आन्दोलन के रूप में अपनी जड़ जमाली है और लगता है कि जिन दिनों सर्वत्र ध्वंसकी प्रक्रिया चल रही है उन्हीं दिनों सृजन के रचनात्मक आधार लेकर उस नव-निर्माण का क्रम भी अनुगामी होता चला आ रहा है । आश्चर्य नहीं वह अगले दिनों इतना प्रबल हो जाय कि ध्वंस की उद्दण्डता सृजन की सार्थकता के आगे ठहर न सके । यह भी सम्भव है कि लोग ध्वंस की अनुपयोगिता जाने और सृजन के लिए पूरी शक्ति के साथ जूट पड़ें । ऐसी सम्भावनाएँ दिन-दिन अधिक उज्ज्वल और प्रखर होती चली आ रही हैं यह देखकर किसे सन्तोष न होगा ।

समय की पुकार है कि इन प्रयासों में और अधिक तीव्रता लाई जाय । युग की माँग है कि जिन्हें मनुष्यता से प्यार हो वे नव-निर्माण के प्रयत्नों का ईश्वर की पूजा से अधिक महत्व मानें । धर्म, दर्शन और अध्यात्म की चुनौती है कि जिनमें इस उत्कृष्टता की प्रकाश किरणें सचमुच विद्यमान हों वे युग परिवर्तन के लिये धरती पर देवत्व का अवतरण सम्भव करने के लिए अन्यमनस्क होकर चिन्ह पूजा करते हुए नहीं भागीरथ प्रयत्नों में जुटे हुए दिखाई पड़ें । साहस कर्त्तव्य और पुरुषार्थ की कसौटी आज इस रूप में सामने आई है कि हम बढ़ चढ़कर ऐसे त्याग, बलिदान का परिचय दें जिससे मानवीय आदर्शों का पुनरुत्थान सम्भव हो सके ।

ज्ञान-यज्ञ और उसकी महान् सम्भावनाएँ

ज्ञान के अन्तर्गत 'एक से दस' का विकास क्रम चलाने के जो प्रबल प्रयत्न हो रहे हैं, वे कुछ ही समय में अपना आश्चर्यजनकस्वरूप प्रकट करने लगेंगे । एक घण्टा समय देने की जो प्रतिज्ञा युग-निर्माण योजना के सदस्य करते हैं उसका उपयोग इसी प्रकार करते हैं कि यह महान आलोक अपने तक ही सीमित न रहकर सुदूर देशों तक फैले । योजना के अन्तर्गत जो विज्ञप्तियाँ तथा ट्रैक्ट मालाएँ छापी गई हैं उन्हें स्वयं पढ़ने,अपने परिवार को पढ़ाने तथा पड़ौसी परिचितों तक पहुँचाने में लगने वाला यह समय इतना परिणाम तो प्रस्तुत कर ही देता है कि अपनी ही भाँति कम से कम दस अन्य व्यक्ति भी लाभ उठा सकें और वे भी उसी तरह प्रभावित हो सकें । यों लगनशील व्यक्ति अपनी कसक, संवेदना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और प्रेरका सैकड़ों हजारों तक पहुँचा सकता है पर न्यूनतम इतना तो हर सदस्य कर लेता है कि उसके साहित्य द्वारा न्यूनतम दस व्यक्ति तो लाभान्वित हो ही सकें।

निस्संदेह यह प्रखर विचारधारा जिन्हें नियमित रूप से पढ़ने सुनने को मिलेगी वे इससे प्रभावित हुए बिना न रह सकेंगे। इसमें बहुत जीवन—बहुत प्राण—बहुत तथ्य-बहुत प्रकाश और बहुत प्रेरणा भरी पड़ी है। जिस मनःस्थिति में यह सब लिखा जाता है वह उतनी घटिया नहीं है कि पढ़ने या सुनने वाला उपेक्षा पूर्वक ऐसे ही इसे टाल दे और कोई प्रभाव ग्रहण न करे। अब तक का निष्कर्ष यही है कि युग-निर्माण साहित्य में जिसे रस आया वह उसी रंग से रंग गया। भावना-पूर्वक जन-सपर्क बनाने और बार-बार इस साहित्य को देने तथा वापस लेने का प्रभाव आसान जान पड़ता है। इस व्यक्तिगत सौजन्य को भी लोग भुला नहीं सकते। साहित्य की प्रखरता और प्रचारक की सज्जनता दोनों मिलकर इतना प्रभाव डालते है कि पढ़ने वाला आकर्षित हुए बिना नहीं रह सकता। अन्यमनस्क से जाना और बेगार की तरह किसी पर किताब फेंककर चले आने की बात दूसरी है, उसकी उपेक्षा भी हो सकती है, पर सच्ची लगन और गहरी आस्था को निष्फल जाने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। एक घण्टा समय ज्ञान यज्ञ के लिये नियमित रूप से लग ये जाने का परिणाम इतना तो होता ही है कि वर्ष में दस व्यक्ति ऐसे तैयार हो जाँय जो उस साहित्य और कार्य पद्धति में अपने ही समान रस लेने लगें। एक बीज जब सैकड़ों हजारों दाने उत्पन्न कर सकता है तो कोई कारण नहीं कि एक लगनशील व्यक्ति अपने समान दस नये व्यक्ति पैदा न कर सके।

एक वेश्या अपने जीवन में सैकड़ों हजारों दुराचारी तैयार कर देती है। एक शराब का दुकानदार सैकड़ों नये नशेबाज उत्पन्न कर लेता है। जुआरियों के संपर्क में कितने नये लोग जुआरी बन जाते हैं। बुरी बातें जब इतनी फैल सकती है तो अच्छी बातें फैलने में क्यों असफलता मिलेगी? प्रश्न केवल लगन का है। जिस रंग में व्यक्ति स्वयं रँगा होता है उसमें दूसरों को भी रंग लेता है। हाँ स्वयं ही रँगा हुआ न हो ऐसे ही चिह्न पूजा जैसी बनावट बनाता हो तो बात दूसरी है। अच्छाई में बुराई की अपेक्षा हजार गुनी शक्ति अधिक होती है इसलिये अच्छाई को बुराई की अपेक्षा सफलता भी हजार गुनी अधिक मिलनी चाहिये। मिलती भी है। न मिलती तो बुद्ध, गाँधी, महावीर, नानक, विवेकानन्द, तिलक, मालवीय, दयानन्द आदि को अपने ही जैसे असंख्य साथी अनुयायी कहाँ से मिल गये? आज से पचास वर्ष पूर्व जब चाय का नाम भी लोग नहीं जानते थे, प्रचार करने वालों ने घर-घर जाकर मुफ्त में चाय पिलाई और एक-एक पैसे के पैकिट बेचे। उसी पुरुषार्थ भरे प्रचार का फल है कि आज निपट देहाती और गली-कूचों में चाय की दुकानें मिलेंगी और हर व्यक्ति को चाय की जरूरत लगेगी। इसी स्तर पर यदि विचार क्रान्ति की चिनगारियाँ बखेरी जाँय तो कोई कारण नहीं कि उसकी ज्वाला दशों दिशाओं में फूटती दिखाई न पड़ें।

अब तक के हुए प्रयत्नों का बारीकी के साथ सिंहावलोकन करने पर हम इस निष्कर्ष पर हुँचे हैं कि 'एक के दस' के रूप में विकसित होने वाली अपने परिजनों की आस्था में बहुत दम है और वह सफलता बहुत ही आसानी से मिलती चलती रह सकती है। एक लगनशील व्यक्ति दस नये व्यक्ति तैयार न करदे, इसका कोई कारण नहीं। जिसने भी इस प्रकार का सङ्कल्प किया है उसे शत प्रतिशत सफलता मिलकर रही है। यदि ऐसा न होता तो कुछ वर्ष पूर्व अपना छोटा-सा परिवार जो सैकड़ों हजारों की संख्या में सीमाबद्ध था आज लाखों का परिधि कैसे लांघने लगता और हम नव निर्माण के—धरती पर स्वर्ग अवतरित होने के—मनुष्य में देवत्व उदय होने के—सपनों का साकार होना कैसे देख पाते?

एक से दस वाला क्रम चार पाँच छलाँगों में समस्त संसार को अपने प्रभाव प्रकाश से आच्छादित कर सकता है। यह न तो कल्पना है और न असंभव अत्युक्ति। इसके पीछे ठोस तर्क तथा तथ्य काम करता है। हममें से प्रत्येक सदस्य ने प्रतिज्ञा की कि हर एक दस नये व्यक्ति अपने रंग में रंग कर रहेगा और उन्हें सदस्य बनाकर छोड़ेगा, तो उसका सच्चा संकल्प निश्चित रूप से सफल होकर रहेगा और इसमें एक वर्ष से अधिक का समय भी नहीं लगेगा। यह कोई असंभव कल्पना नहीं वरन् नितान्त सरल, स्वाभाविक और सम्भव है। लगनशील व्यक्तियों ने संसार में न जाने क्या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्या किया है। फिर इतनी तनिक सी सफलता प्राप्त कर लेना किसके लिए क्यों कठिन पड़ेगा। यह क्रम चल भी रहा है इसलिए उसके न चलने में कोई विशेष कठिनाई भी दिखाई नहीं पड़ती।

मान लीजिये अभी हम लोग केवल एक लाख सदस्य हैं। 'एक से दस' का क्रम अपनाकर दूसरे वर्ष सहज ही १० लाख हो सकते हैं। तीसरे वर्ष १० लाख व १० गुने होकर एक करोड़ हो जायेंगे। चौथे वर्ष उनकी १० गुनी संख्या १०० करोड़—एक अरब होगी। संसार में कुल मिलाकर ३।। अरब के करीब आबादी इन दिनों है। उनमें से वयस्क और समर्थ १ अरब ही हैं। छोटे बच्चे, वृद्ध, रोगी, असमर्थ और अशिक्षित मिलाकर २—२।। अरब हो जाते हैं। उन तक अपनी विचारधारा अभी न पहुँच सकेगी। जिन समर्थों तक हमें अपनी बात पहुँचानी है उनकी संख्या १ अरब के लगभग ही हो सकती है। इतने लोगों तक यह एक से दस वाला क्रम यदि नियमित रूप से चल पड़े तो चार पाँच छलाँगों में—चार पांच वर्षों में—समस्त संसार के समर्थ लोगों तक प्रकाश पहुँचाया जा सकता है।

कहने सुनने में ही यह बात अचम्भे जैसी लगती है वस्तुतः वह न तो कठिन है और न अस्वाभाविक केवल कर्मठता और लगन की जरूरत है। यदि यह तत्व विद्यमान रहे तो हम लोग 'एक से दस' के क्रम पर अधिक बल देते हुए इस विचारधारा को व्यक्ति से व्यक्ति तक पहुँचाने की रीति-नीति अपनाकर देश-व्यापी ही नहीं विश्व-व्यापी क्षेत्र में इन विचारों का आरोपण कर सकते हैं और उनकी लहलहाती हरी-भरी फसल फलती फूलती देख सकते हैं। ईसाइयों ने गत २ वर्षों में एक डेढ़ करोड़ से बढ़कर अपना विस्तार सौ गुना कर लिया और वे एक डेढ़ अरब तक जा पहुंचे तो अपने लिये भी वैसी सम्भावना विद्यमान है। युग-निर्माण की विचारधारा इतनी प्रबल प्रखर और आज की परिस्थितियों के लिये इतनी उपयुक्त है कि प्रजातन्त्र और संस्कृति को जीवित रखते हुये समस्याओं के सुलझाव प्रस्तुत करने की दृष्टि से उसे अनुपम और अद्वितीय ही कहा जा सकता है।

प्रजातन्त्र के प्रतिपादनकर्त्ता रूसो—साम्यवाद के आविष्कर्ता—कार्ल मार्क्स के बाद सर्वोदय के उद्गाता गाँधी के बाद युग-निर्माण की विचारधारा और कार्य-पद्धति है जो हर कसौटी पर—हर स्तर पर कसी जा सकती है और आज की परिस्थितियों में उसे सर्वोत्तम कहा जा सकता है। ऐसी प्रखर विचारधारा तथा योजना को सुनने, समझने और अपनाने में यदि आज का बुद्धिवादी समाज रस लेने लगे तो उसमें कुछ भी आश्चर्य की बात नहीं है। आश्चर्य इतना भर ही है कि अपने समय के व्यक्तियों और प्रवृत्तियों के लोग उपहास उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं। पर पीछे जब उन्हें सर्वत्र सराहा अपनाया जाता है तब चेतते हैं। यदि यह जन दुर्बलता न होती तो अपने समय की हर अच्छी बात को लोग सहज ही अपनाते और सराहते पर उस दुर्भाग्य को क्या कहा जाय जो किसी बात का महत्व तभी स्वीकार करने देता है जब वह अपनी विशेषताओं के कारण सफलता के समीप जा पहुँचता है।

हम एक से दस का क्रम निष्ठा पूर्वक चलाते रहें और उसमें एक घन्टा रोज का समय नियमित रूप से लगाते रहें तो इसकी प्रतिक्रिया इतनी बड़ी होगी कि हम स्वयं आश्चर्य चकित रह जाँय और सारे विश्व को स्तम्भित रह जाना पड़े। इस छोटी बात का महत्व हमें गहराई से समझना चाहिए और उस पर पूरा बल देना चाहिये। स्वयं भी इस प्रयत्न में रहें और अपने साथियों को इसके लिये अधिकाधिक उत्साह तथा सहयोग देकर ऐसी ही प्रक्रिया अपनाने के लिये बाध्य करें। इस प्रकार के प्रयास आज की स्थिति में मानवता की महानतम सेवा के रूप में ही स्मरण किये जाते रहेंगे।

दस पैसा रोज निकालने वाले क्रम से इतना साहित्य मँगाया जाता रह सकता है जिसमें अपनी ही नहीं—समीपवर्ती—सम्बन्धित दस अन्य व्यक्तियों की भी भूख बुझाई जाती रह सके। अखण्ड-ज्योति और युग-निर्माण पत्रिकाएँ ट्रैक्ट माला, विज्ञप्तियाँ आदि इस दस पैसे से ही इतनी बड़ी मात्रा में आते रह सकते हैं कि एक महीने तक बौद्धिक खुराक का समुचित साधन जुटाया जाता रहे। कहना न होगा कि प्राचीनतम से लेकर अर्वाचीन काल तक के सभी मनीषियों और शास्त्रों के प्रतिपादन का निष्कर्ष प्रस्तुत करने में युग-निर्माण योजना के रुसते साहित्य की तुलना में और कोई सफल नहीं हुआ। इतनी सस्ती, इतनी सुलझी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुई और इतनी प्रखर विचारधारा जो आजकी परिस्थितियों में फिट बैठती हो और बुद्धिवाद की कसौटी पर सोलहों आना सही बैठती हो अन्यत्र मिलना कठिन है। छोटा और सस्ता होने से ही उसका सहत्व कम नहीं हो जाता। यह प्रतिपादन इतना अनूठा है कि आज लोग भले ही उसका महत्व न समझें कभी इसे भूरि-भूरि सराहा जायगा और कहा जायगा कि नवयुग के सृजन में इस साहित्य की भूमिका ऐसी रही, जिसे अनुपम के अतिरिक्त और कुछ कहा ही नहीं जा सकेगा।

दस पैसा प्रतिदिन निकाल कर हम अपने घर में एक बहुमूल्य सम्पदा ही इकट्ठी करते हैं। इसे किसी भी बहुमूल्य सम्पत्ति से बढ़कर माना जाना चाहिए। जमीन, जायदाद, सोना, चाँदी, नकदी, कारोबार आदि को ही लोग सम्पदा मान बैठे हैं। असली सम्पदा तो ज्ञान की पूँजी है जो अच्छे पुस्तकालयों के रूपमें ही संग्रहीत की जा सकती है। इसके प्रकाश और प्रभाव में अपने को, अपने परिवार को और स्वजन सम्बन्धियों को चिरकाल तक ऐसा प्रकाश मिलता रह सकता है जो नारकीय परिस्थितियों को बदल कर स्वर्गोपम सुख शान्ति तक पहुंचा सकने में पूर्णतया समर्थ है। घरेलू पुस्तकालय ऐसी ही स्थापना है जो हर विचारशील व्यक्ति के घर में एक अनिवार्य आवश्यकता की तरह रहना चाहिए। इसमें कंजूसी किसी को भी नहीं करनी चाहिए। रोटी कपड़े में कटौती करनी पड़े तो भी इस ज्ञान सम्पदा का—आत्मिक आहार का संग्रह किया जाना चाहिए। दस पैसा रोज जमा करना किसी बाहर के व्यक्ति को दान देने के लिए नहीं हैं। वरन् अपने घर में ऐसे ज्ञान मन्दिर पुस्तकालय की स्थापना के लिए है जो परिवार की अति महत्वपूर्ण सम्पदा कही जा सकती है। सदस्यता की दो शर्त 'दस पैसा और एक घण्टा समय' देना देखने में नगण्य-सी बातें मालूम पड़ती हैं पर उनके परिणाम बहुत ही दूरगामी होंगे। दस पैसे में रोज विचार क्रान्ति का गोला बारूद खरीदते रहना कुछ मँहगा सौदा नहीं है। एक घण्टा समय देकर हम 'एक से दस' वाला क्रम चला सकते हैं और सारे विश्व को अगले कुछ ही वर्षों में इस विचारधारा से प्रभावित कर सकने में समर्थ हो सकते हैं।

झोला पुस्तकालयों का क्रम बहुत दिनों से चल रहा है। दस पैसे और एक घण्टे का समय सभी सदस्य प्रायः इसी प्रयोजन में लगाते हैं। पर परिवार के तथा सम्बन्ध सम्पर्क के लोगों को यह साहित्य पढ़ने देने वापस लेने एवं अशिक्षितों को सुनाने का जो क्रम चलता है उसे झोला पुस्तकालय संज्ञा दी जाती है। वास्तव में बड़े पुस्तकालय खोलने की अपेक्षा यह छोटी व्यवस्था अति महत्वपूर्ण है। बड़े पुस्तकालयों में लोग अपनी कुरुचि तृप्त करने वाले उपन्यास ही माँगते पढ़ते हैं। रजिस्टर देखने से ऐसे ही पाठकों की संख्या पुस्तकालयों में मिलेगी। सुरुचि पूर्ण साहित्य वहाँ सड़ता रहता है। आवश्यकता सुरुचि जगाने और सृजनात्मक साहित्य में दिलचस्पी लेने की है। अभी अपने देश में यह प्रवृत्ति एक प्रकार से मरी हुई ही पड़ी है उसे पुनर्जीवन देना है। इसके लिए व्यक्तिगत सम्पर्क ही एकमात्र रास्ता रह जाता है। बहुत प्रयत्न करने पर ही लोग इधर रुचि लेना आरम्भ करेंगे। पहला काम तो हमें रुचि जागरण का ही करना है। पढ़ने की बात तो पीछे चलेगी। इस प्रयोजन में झोला पुस्तकालय बहुत ही सफल हो रहे हैं। यह छोटा दीखने वाला कार्य विवेक की कसौटी पर इतना बड़ा सिद्ध होता है कि अन्य बड़े-बड़े प्रदर्शनात्मक एवम् आडम्बरात्मक कर्मकाण्डों को इस पर न्यौछावर किया जा सकता है। ज्ञानयज्ञ की सफलता में झोला पुस्तकालय से बढ़कर अच्छी भूमिका और किसी माध्यम से सम्पादित नहीं की जा सकती।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नव-निर्माण के लिए समग्र शिक्षा नितान्त आवश्यक

मनुष्य का व्यक्तित्व ढालने और समाज की दिशा निर्धारण करने में सबसे महत्वपूर्ण माध्यम शिक्षा है। निरक्षर व्यक्ति के ज्ञान चक्षु एक प्रकार से बन्द ही रहते है। जितने सीमा तक उसे देखने सुनने का अवसर मिलता हैं,उतनी ही उसकी ज्ञान वृद्धि परिधि सीमित रहती है। जीवन और विश्व अब इतना जटिल हो गया है कि उसकी गुत्थियों को सुलझाने के लिए बहुत जानने और समझने की आवश्यकता रहती है। यह प्रयोजन शिक्षा के बिना सम्भव नहीं हो सकता इसलिये व्यक्तित्व मस्तिष्क और दृष्टिकोण परिष्कृत करने के लिए शिक्षा की महती आवश्यकता सदा बनी रहेगी। परिस्थितियों की जटिलता जितनी बढ़ी उसी क्रम में शिक्षा की आवश्यकता और उपयोगिता बहुत बढ़ गई है।

अपना देश दुर्भाग्यवश शिक्षा की दृष्टि से बहुत पिछड़ा है। अभी लगभग २३ प्रतिशत व्यक्ति साक्षर हो पाये है। निरक्षर तीन गुने से भी अधिक हैं। बौद्धिक दृष्टि से समर्थ हुए बिना न अपने आप में सफल समर्थ कहा जा सकता है और न राष्ट्र का गौरव बढ़ा सकने योग्य क्षमता संजो पाता है। इस कमी को पूरा करने के लिए प्रबल प्रयत्न किये जाने चाहिये और वयूवा जैसे उन प्रगतिशील देशों का अनुकरण करना चाहिये जिनने अपने यहाँ निरक्षता के साथ युद्ध स्तर पर लड़ाई लड़ी और पाँच वर्ष के भीतर उसे मारकर भगा दिया। यह सब दूरदर्शी सरकार और प्रखर लोकमत के संयुक्त प्रयत्नों से ही सम्भव हो सकता है।

अपनी सरकार इन दिनों जिस जाल-जंजाल में फँस गई है उसके लिये उसी उलझन को सुलझाना कठिन पड़ रहा है। कोई बड़ी सूझ-बूझ प्रदर्शित करने या साहसिक कदम उठाने की उससे आशा करना व्यर्थ है। वह बनी रहे, चलती रहे, इतना भी बहुत है। हमें बड़े कदम जन स्तर पर उठाने पड़ेंगे अन्यथा, समय तेजी से निकलता जायगा और प्रगति की दौड़ में हम पिछडते चले जायेंगे। निरक्षरता, निवारण के लिये हम में से प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति को 'ज्ञान ऋण' चुकाने के लिये कुछ न कुछ करने की कसम खानी चाहिये और जितना कुछ बन पड़े अधिक से अधिक बड़ा अनुदान लेकर भारत माता के चरणों में उपस्थित होना चाहिये।

बच्चे स्कूलों में पढ़ते हैं। यह स्कूल भी इतने अपर्याप्त हैं कि उनमें सभी विद्याध्यन के अभिलाषी बालकों के लिये जगह नहीं। देहातों में मीलों तक स्कूल नहीं होते। छोटे बच्चे दूर चलकर प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने कैसे पहुँचे? हाईस्कूल, कालेजों का बुरा हाल है। तीसरी श्रेणी में उत्तीर्ण छात्र जो आधे से अधिक होते हैं कोई विद्यलय में भरती करने को तैयार नहीं होता। उसे अपना परीक्षाफल बढ़िया जाने और पुरस्कार प्राप्त करने की अभिलाषा रहती है। बच्चों के भविष्य की नहीं। ऐसी दिशामें किसी कारण वश जिसका डिवीजन बिगड़ गया उस सुयोग्य बालक को भी मन मसोस कर आगे पढ़ने से वंचित रहना पड़ता है। जो पढ़ जाते है वे नौकरी कर सकने भर की योग्यता प्राप्त करके निकलते हैं। आजीविका के लिए नौकरी ढूँढ़ते हैं सो मिलती नहीं। बेकार शिक्षितों की संख्या आकाश छूने लगी है और जोशीले नये खून की वह बेरोजगारी बेचैन समाज में भयङ्कर विकृतियाँ लेकर उग्र हो रही हैं। इसके दुष्परिणाम हम आये दिनों आँख के आगे देखते हैं।

सरकार सूझ-बूझ के साथ शिक्षा प्रणाली की दिशा निर्धारित करती तो कितना अच्छा होता। जापान की शिक्षा में शिल्प, उद्योग और कला-कौशल अविछिन्न रूप में जुड़ा हुआ है। वहाँ के छात्र या तो अपना कुटीर उद्योग चलाते हैं या पड़ौस की फैक्टरी में सम्मानपूर्ण आजीविका प्राप्त करते हैं। उन्हें नौकरी केलिये जूती चटकाने दरवाजे-दरवाजे पर ठोकरें खाते नहीं फिरना पड़ता। यूगोस्लेवियामें कृषि, नार्वे में पशु पालन जैसे उद्योगों को प्रधानता देकर अपने नव-युवकों के लिए आजीविका का पथ प्रशस्त किया है। अपने देश में भी कुछ ऐसा ही हो सकता था,हो सकता है।

राष्ट्रों के निर्माण–लोक मानस का निर्धारण शिक्षा के माध्यम से होता है। जर्मनी ने दो बड़े युद्ध आरम्भ किये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वहाँ की जनता को उस प्रकार की आक्रामक बनाने का श्रेय वहाँ की शिक्षा को है। विलियम कैसर ने शिक्षा में ऐसे तत्व मिलाये थे कि वहाँका लोक-मानस विश्व विजयका स्वप्न देखने लगा। वह भावना इतनी प्रबल हुई कि प्रथम विश्व युद्ध उन्हीं लोगों ने आरम्भ कर दिया। दूसरा महा-युद्ध भी जर्मनों ने ही शुरू किया हिटलर ने सारे शिक्षा तन्त्र को इस प्रकार सँजोया कि लोग प्रथम युद्ध की पराजय को भूलकर सौ गुने उत्साह से दूसरे युद्ध की तैयारी करने लगे। दोनों महायुद्ध ऐतिहासिक महायुद्ध हैं। लगभग सारा विश्व यदि जर्मनी के प्रतिरोध में खड़ा न हुआ होता तो उसकी विश्व विजय वाली अभिलाषा न जाने कितनी आगे बढ़ गई होती और न जाने कितनी सफल हो गई होती। परिस्थितियों का पाँसा पलटा और जर्मनी दूसरी बार भी हारा यह दूसरी बात है। यहाँ प्रसंग शिक्षा के प्रभाव का चल रहा था। शिक्षा में यदि प्राण घुला हो तो उसके माध्यम से विनाशों से लेकर विकास तक का—असुरता से लेकर देवत्व तक का—सृजन किया जा सकता है। मनुष्य की शक्ति अनन्त है और उसे उभारना तथा दिशा देने का काम शिक्षा के माध्यम से ही तो सम्पन्न होता है। यही कारण है कि हम सदा से शिक्षक की—गुरु की महिमा अति श्रद्धा पूर्वक स्मरण करते आ रहे है।

जर्मनी का तो एक उदाहरण मात्र दिया गया है। बारीकी से देखा जाय तो संसार के सभी प्रगतिशील देशों में छोटी स्थिति से बढ़कर ऊपर उठने तक के प्रत्येक कदम की सफलता शिक्षा प्रणाली में आवश्यक परिवर्तन करके ही सम्पन्न की है। अमेरिका, इंगलैण्ड,फ्रांस, इटली, जापान, रूस, चीन आदि में जो चमत्कार भीतर ही भीतर हुए उनकी सम्पन्नता का श्रेय वहाँ की शिक्षा पद्धति निर्धारण कर्त्ताओं को ही दिया जा सकता है। काश हमारे देश में भी ऐसी ही सूझ-बूझ रही होती तो विगत २३ वर्षों में अपने-अपने साधनों के कारण उससे कहीं आगे होते जहाँ तक कि हमसे भी ३ वर्ष बाद साम्यवादी शासन हाथ में लेकर आज चीन निवासी पहुंच गये है।

हमें हर काम के लिये सरकार का मुंह नहीं ताकते रहना चाहिए। बहुत से कार्य ऐसे हैं जो जन स्तर पर बड़ी सफलता से किये जा सकते हैं। धर्म को ही लीजिये। मन्दिरों, तीर्थों और धार्मिक कर्मकाण्डों में जनता का हर वर्ष ३०० अरब रुपया लगता है और लगभग १ करोड़ व्यक्तियों का श्रम उसमें नियोजित है। ५६ लाख सन्त महात्मा जन गणना के आधार पर गिने गये हैं। आधा-चौथाई या एक दो घण्टे उस प्रयोजन में लगे रहने वाले के समय का लेखा-जोखा लिया जाय तो वह भी मिलाकर इतना ही बैठेगा और यह स्पष्ट दिखाई देगा कि १ करोड़ व्यक्तियों का समय उसमें निरन्तर लगता है। इन धर्म संस्थानों में जो स्थायी सम्पत्ति लगी है उसका मूल्य कूता जाय तो सरकारी इमारतों से कम नहीं अधिक बैठेगा। यह सब जन स्तर पर—बिना सरकार की एक पाई सहायता के सम्भव होता है। जनता जिसे पसन्द करती है उसके लिये विपुल धन, जन साधनों का जुटाया जा सकना कुछ भी कठिन नहीं है।

शिक्षा की समस्या को हम जन स्तर पर लें। जनता को उसकी उपयोगिता एवं आवश्यकता उसी प्रकार समझावें जैसी कि धार्मिकता की समझाई गई है तो कोई कारण नहीं कि इस पुण्य प्रयोजन के लिये जन सहयोग न मिल सके। यह हो सकता है और होना चाहिये। जन स्तर पर बड़े-बड़े काम हो सकते हैं वह आत्म-बोध, आत्म-विश्वास पनप सके इस दृष्टि से भी निरक्षता—निवारण जैसे आन्दोलनों को चलाया और सफल बनाया जाना चाहिये।

युग-निर्माण योजना ने अपने रचनात्मक कार्यक्रमों में शिक्षा प्रसार को प्रथम स्थान दिया है। सोचा यह गया है कि दो तिहाई से अधिक अशिक्षितों की संख्या उनकी है जो प्रौढ़ हैं—काम से लगे हैं—व्यस्त हैं। स्कूलों में तो बच्चे पढ़ रहे हैं इन वयस्कों के पढ़ने का कोई प्रबन्ध नहीं। इनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। अगले २० वर्ष मनुष्य जातिके भाग्य का फैसला करने वाले निर्णायक वर्ष हैं। इनमें प्रधान भूमिका उन्हीं की होगी जो इन दिनों प्रौढ़ हैं। स्कूलों में जो बच्चे इन दिनों पढ़ रहे हैं वे जब तक वयस्क होकर अपने हाथ में उत्तरदायित्व संभालेंगे तब तक दुनियाँ इधर से उधर हो चुकी होगी। नई पीढ़ी सुयोग्य बनकर जब काम संभालेगी तब तक केलिए इन्तजार करने की अब कतई गुंजायश नहीं। महत्वपूर्ण निर्णय तो उन्हें करने होंगे जो आज वयस्क हैं और इन्हीं दिनों महत्वपूर्ण भूमि-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

काएँ प्रस्तुत करने में समर्थ हो सकते हैं। "इतने बड़े हो गये, अब तक न पढ़े तो आगे क्या पढ़ सकेंगे" यह निरर्थक सङ्कोच छोड़कर हमें आज से ही सारे राष्ट्र को शिक्षित और सुसंस्कृत बनाने में लग पड़ना चाहिए। बौद्धिक क्षमता—भावनात्मक उत्कृष्टता बढ़ने से ही व्यक्ति समर्थ बनेगा और समर्थ व्यक्तियों का सुगठित राष्ट्र ही शक्तिशाली एवं प्रगतिशील कहला सकने का अधिकारी बन पायेगा।

हमें गली-गली मुहल्ले-मुहल्ले गाँव-गाँव प्रौढ़ पाठशालाओं की अति व्यापक शृङ्खला बखेर देनी चाहिए। पुरुषों के लिये रात्रि पाठशालाएँ और महिलाओं के लिये तीसरे पहर की अपराह्न शालाएँ ठीक रह सकती हैं। इनमें प्रधानता वयस्क नर-नारियों की हो। बालक भी आना चाहें तो वे भी आवें। यों जन स्तर पर पाँच वर्ष से कम आयु के शिशु संस्कार मन्दिरों की भी आवश्यकता है पर उन्हें अधिक सुयोग्य व्यक्ति ही चला सकते हैं। जहाँ जैसा प्रबन्ध हो सके वहाँ वैसा किया जाय, अन्यथा पुरुषों की रात्रि पाठशालाओं और महिलाओं की अपरान्ह शालाओं का तो क्रम चल ही पड़ना चाहिए।

अध्यापक के लिये रिटायर्ड लोग आगे आवें तो उनकी ढलती आयु सार्थक हो जाय। अपने धर्म में, ढलती आयु जनता की सम्पत्ति मानी गई है और उसे लोक सेवा में नियोजित कर, वानप्रस्थ स्तर का जीवनयापन करने के लिये जोर दिया गया है, यह लुप्तप्राय धर्मपरम्परा पुनःजीवित और जागृत करने की आवश्यकता है। पारिवारिक उत्तरदायित्वों से छुटकारा प्राप्त—सेवा निवृत्त--जिनके पास गुजारे के लिये आजीविका के साधन मौजूद हैं—ऐसे लोग इस प्रकार से विद्या दान में अपना पूरा समय दे सकते हैं। यही उनके अवशेष जीवन का सर्वश्रेष्ठ उपयोग है। अन्य सेवा-भावी व्यक्ति भी रोजी रोटी कमाने में आठ घण्टे का समय देने के उपरान्त शेष समय का कुछ भाग इस पुण्य प्रयोजन में लगा सकते हैं। आमतौर से दिन में ही नौकरी, दुकान, कृषि आदि करनी पड़ती है। रात्रि का समय प्रायः सभी के पास खाली रहता है। इस समय को रात्रि पाठशाला के लिये कोई भी भावनाशील-देश भक्त व्यक्ति बड़ी आसानी से लगा सकता है। शिक्षित कुमारियाँ, विधवाएँ, अध्यापिकाएँ तथा खाते-पीते घरों की वे महिलाएँ जिन्हें घरेलू काम कम रहते हैं, तीसरे पहर की महिला पाठशालाएँ चला सकती हैं। यदि देश भक्ति और लोक-मंगल की भावनायें तनिक भी उभार लेने लगें तो बड़ी आसानी से लाखों सुशिक्षितों की सेवा सेना इस निरक्षरता विरोधी संघर्ष में अगणित मोर्चे संभाल सकती है। युग-निर्माण की इस पुण्य घड़ी में शिक्षित वर्ग ने भी यदि अपना कुछ कर्त्तव्य न समझा और इतने सामान्य से काम के लिये थोड़ा-सा समय दान देने से भी इनकार कर दिया तो समझना चाहिए हमारा दुर्भाग्य जो हजार वर्ष से पीछे पड़ा हुआ था, उसका अन्त अभी नहीं हुआ। क्षुद्रता, संकीर्णता और स्वार्थपरता के पाप पंक में आकंठ व्यक्ति जो लोक-मंगल के लिये तनिक भी त्याग न कर सके एक प्रकार से मनुष्यता को कलंकित ही करता है और वह समाज को विविध विधि पीड़ा प्रताड़ना में ही धकेलता है। पिछले दिनों हमारे व्यक्तित्व इसी ओछे स्तर के बने रहे, फलस्वरूप राजनैतिक परतन्त्रता, उत्पीड़न, फूट विग्रह, अभाव, दारिद्रय, शोषण एवं पद-दलन की विभीषिकाएँ सहते रहे। अब वह स्तर बदला जाना चाहिये। शिक्षितों में लोक-मंगल के लिये सक्रिय उत्साह उत्पन्न होना चाहिए। उस उत्साह का सर्वोत्तम प्रकार जन-जागरण के लिये शिक्षा प्रसार में ही प्रयुक्त हो सकता है।

निरक्षरों को साक्षार बनाने के लिये किसी विशेष पाठ्यक्रम या पाठ्य पुस्तकों की जरूरत नहीं है। इस स्तर की पुस्तकें हर जगह मिलती हैं। पट्टी, खड़िया, स्लेट, पेन्सिल, कापी, कलम, स्याही जैसे उपकरण सर्वत्र मिल जाते हैं। अक्षर ज्ञान, गिनती, पहाड़े, किन्हीं भी प्रारम्भिक पुस्तकों से आरम्भ कराये जा सकते हैं। इस प्रयोजन के लिये गीता प्रेस गोरखपुर ने आरम्भिक साक्षरता की ३-४ बालपोथी बहुत अच्छी छापी हैं। इसके कुछ आगे बढ़ने पर आर्य समाज विचारों की धर्म शिक्षा नामक प्रश्नोत्तर पुस्तक कई भागों में बिकती है आरम्भिक पुस्तकों की कमी नहीं। जहाँ जो उपलब्ध हो सके उसके आधार पर निरक्षरों को इतना ज्ञान कराया जाना चाहिए कि वे पढ़ने लिखने में भली-भाँति समर्थ हो सकें और हिसाब, भूगोल, इतिहास, नागरिक शास्त्र एवं सामान्य ज्ञान की साधारण जानकारी प्राप्त कर सकें। यह शिक्षण छै महीने का पर्याप्त हो सकता है। प्रौढ़ आयु के लोग छै महीने में इतना पढ़ लिख सकते हैं कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उन्हें निरक्षरों की पंक्ति से हटाकर साक्षरों की श्रेणी में बिठाया जा सके । अपनी प्रत्येक शाखा में इस प्रकार साक्षरता प्रसार के प्रयत्न आरम्भ किये जाने चाहिए और अपने घर परिवार, पड़ौस तथा परिचय क्षेत्र में कोई निरक्षर न रहने देने की मुहीम सँभालने में जुट जाना चाहिए । इस प्रयत्न से हम अगले तीन चार वर्ष में ही आज की समस्त प्रौढ़ जनता को साक्षर बनाने में सफल और समर्थ हो सकते हैं ।

जो काम सरकार करोड़ों अरबों रुपया खर्च करके नहीं कर सकती,उसे हम लोक-सेवा में विश्वास करने वाले व्यक्ति थोड़ा-थोड़ा समय दान देकर देखते-देखते सम्पन्न कर सकते हैं, और अपना निरक्षर देश जादू की तरह शिक्षा के आलोक से आलोकित हो सकता है ।

साक्षरता प्रसार के अतिरिक्त शिक्षा का मूल प्रयोजन आदर्श और उद्देश्य पूरा करने की बात आती है । मात्र साक्षरता ही पर्याप्त नहीं । हमें यह भी करना ही चाहिए कि अशिक्षितों से लेकर शिक्षितों तक को व्यक्ति, परिवार और समाज के सम्मुख प्रस्तुत वर्तमान समस्याओं की जानकारी करायें और उनके समाधान प्रस्तुत करें । पिछली हजार वर्षकी राजनैतिक गुलामी ने हमें इतने अधिक बौद्धिक अभिशाप दिये हैं कि एक प्रकार से अपना विचार तन्त्र लगभग उलटा और विकृत ही हो चला है । अज्ञानान्धकार में भटकते हुए हमने स्वस्थ विचार पद्धति को लगभग गँवा ही दिया है । सोचने का अपना जो आज का ढङ्ग है वह ऐसा अनुपयुक्त है कि यदि उसे ज्यों का त्यों बनाये रखा गया तो उज्ज्वल भविष्य की किरण कभी भी प्रकट न हो सकेंगी । इस तथ्य को भुलाया नही जाना चाहिये कि व्यक्ति और समाज का उत्थान पतन पूर्णतः उसकी चित्त प्रणाली पर निर्भर रहता है । आस्थाएँ, मान्यताएँ, अभिरुचियाँ एवम् विचारणाएँ ही अपने स्तर के अनुरूप भली या बुरी परिस्थितियाँ उत्पन्न करती हैं और उन्हीं के जाल जंजाल में उलझते, सुलझते हम दुःखी-सुखी दिखाई पड़ते हैं । अपकर्ष से उत्कर्ष की ओर चलना हो तो सबसे प्रथम कार्य यही करना पड़ता है कि अपनी चिन्तन पद्धति में जहाँ भी विकृतियाँ आगई हों, उन्हें समझें और सुधारें । इस परिवर्तन के बिना पतन को उत्थान में परिणत कर सकना किसी भी प्रकार सम्भव न हो सकेगा ।

प्रखर प्रेरणा भरे साहित्य का सृजन और प्रसार आवश्यक

मनुष्य का मन कोरे कागज की तरह है,उस पर जो कुछ छाप या लिख दिया जाता है वैसा ही दीखने लगता है । जो कुछ हम पढ़ते, सुनते, देखते और सोचते हैं उसी का प्रभाव ग्रहण करते हैं और उसी ढाँचे में ढलते चले जाते हैं । यों प्रभाव तो आस-पास के वातावरण का भी पड़ता है पर उसे प्रखर विचारधारा उपलब्ध हो जाय तो काटकर भी रख सकती है । वातावरण का प्रभाव अस्थायी होता है । चिन्तन मनन का स्थायी । असंख्य उदाहरण ऐसे सर्वत्र मिल सकते हैं जिनसे यह सिद्ध हो जाता है कि मनुष्य की चिर-अभ्यस्तता, रुचि, आदत और मान्यता को किसी प्रखर विचारणा ने उलट-पुलटकर रख दिया और उसकी दिशा में आश्चर्यजनक परिवर्तन कर दिया । प्रेरक विचारधारा में सामर्थ्य बहुत है । यदि उसका प्रवाह तीव्र हो तो विशाल जन समूह को देखते-देखते किसी दिशा से हटाकर किसी दिशा में गतिशील किया जा सकता है ।

बुद्ध की विचारधारा ने लाखों युवक-युवतियों को घर छोड़कर लोकमंगलके लिए सर्वस्व त्याग करके भिक्षु-भिक्षुणी बनने जैसे कष्टसाध्य मार्ग को अपनाने में तत्पर कर दिया । गाँधी जी की प्रेरणा से लाखों व्यक्ति स्वतन्त्रता संग्राम में कूदे और धन और प्राणों का उत्सर्ग करने के लिये उत्साह पूर्वक आगे आये । दार्शनिक रूसों के प्रजातन्त्र प्रतिपादन से संसार की अधिकाँश प्रजा ने प्रेरणा ली और प्रजातन्त्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शासन पद्धति को मान्यता मिली। कार्ल्स मार्क्स की भाग्य-वादी विचारधारा के प्रभाव में आज आधी से अधिक दुनिया आ गई अतीत से भी ऐसे ही होता रहा है। समर्थ व्यक्तित्वों द्वारा प्रखर विचारणाओं का प्रतिपादन यदि कभी ठीक ढङ्ग से किया गया तो उसका परिणाम आश्चर्यजनक निकला। शङ्कराचार्य ने एकाकी खड़े होकर उस समय की मूढ़ मान्यताओं में पलीता लगाया और जनता को अपने प्रतिपादन की छाया में खींच बुलाया।

क्या सामूहिक,क्या व्यक्तिगत सभी क्षेत्रों में प्रखर विचारणा जादू का काम करती है। वाल्मीक, अंगुलिमाल, अजामिल, मदन कसाई, अम्बपाली आदि अगणित जीवन के काया-कल्प की प्राचीन और आधुनिक कथायें ही पग-पग पर सुनने देखने को मिल सकती हैं। यह एक सुनिश्चित तथ्य है कि यदि कोई सार गर्भित विचारधारा हृदयग्राही, बुद्धि संगत और तथ्य तर्क के साथ प्रतिपादित की जाय—उस प्रतिपादन के पीछे समर्थ व्यक्तित्व और सक्रिय अनुभव जुड़ा हुआ हो-तो उसका प्रभाव पड़े बिना रह नहीं सकता। जब ओछे, उथले, निकृष्ट और भ्रान्त विचार—प्रचार के माध्यम से लोगों को आकर्षित एवं प्रभावित कर लेते हैं तो कोई कारण नहीं कि तथ्य पूर्ण आदर्शवादी एव उत्कृष्ट विचारों की अच्छी प्रतिक्रिया उत्पन्न न हो।

इन दिनों पशु प्रवृत्तियों को भड़काने वाले कुमार्गगामी और भ्रम जंजालों में भटकाने वाले साहित्य की बाढ़ आई हुई है। लालची लेखकों, प्रकाशकों, विक्रेताओं की इस दुरभिसधि से जनता का भाव संस्थान दिन-दिन विकृत और दूषित होता चला जा रहा है, परिणाम सामने है। व्यक्ति का चारित्रिक अधःपतन समाजमें अगणित समस्यायें उत्पन्न कर रहा है और शोक-संताप के अगणित कारण उत्पन्न होते चले जा रहे हैं। इस विभीषिका का सामना करने के लिये हमें जहाँ इस अवांछनीय साहित्य सृजन को रोकना है वहाँ उसके प्रतिद्वन्दी ऐसे साहित्य का सृजन भी करना है जो अब तक की फैलाई हुई भ्रान्तियों का निराकरण कर सके, उसके दुष्परिणामों से सर्व-साधारण को सचेत कर सके और साथ ही यह भी बता सके कि सचाई क्या है।

बिगाड़ने की अपेक्षा बनाने में अधिक श्रम और साधनों की जरूरत पड़ती है। मकान गिराना है तो सौ रुपये में गिर जायगा पर बनाने के लिये हजारों चाहिये। बिगाड़ने वालों ने गन्दी चीजें देखकर बुद्धि स्तर को विकृत करने में जितने श्रम,साधनों से सफलता पाई हो हमें उसका दुष्प्रभाव मिटाने का ही नहीं स्वरूप, प्रेरणा देने का सृजन कार्य भी करना है ऐसी दशा में अपनी प्रयत्नशीलता का स्तर भी कई गुना बढ़ा चढ़ा होना चाहिए।

साहित्य जो भावनात्मक प्रेरणा की दृष्टि से सर्वोपरि महत्व रखता है, आज दयनीय स्थिति में पड़ा है। जीवनका स्वरूप, मर्म, उद्देश्य उपयोग समझाने के लिए हर स्तर के साहित्य की जरूरत है। निबन्ध, कथा, उपन्यास, दर्शन, समीक्षा विवेचना,कविता सभी वर्गों का ऐसा साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होना चाहिए जिसे आसानी से—सस्ते मूल्यमें सर्वत्र प्राप्त किया जा सके। इसी प्रकार व्यक्ति और समाज की अगणित समस्याओं पर प्रकाश डालने वाला—उनके कारणऔर समाधान प्रस्तुत करने वाला ऐसा साहित्य चाहिये जो आज की परिस्थितियों पर सही विश्लेषण करते हुए बुद्धिसंगत और हृदयग्राही शैली में आज के बुद्धिवादी पाठक को ठीक तरह समझा सकने में समर्थ हो।

गत २०० वर्षों में विज्ञान, उद्योग, शिक्षा, अन्वेषण आदि सभी विषयों में भारी प्रगति हुई है और उसके कारण मनुष्य के सामने नये-नये कारणों से नई-नई समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। इनके समाधान आज की परिस्थितियों का अध्येता मनीषी ही कर सकता है। प्राचीन काल के समाधान आज की परिस्थितियों में कूड़े हो गये। सदा होता भी यही रहा है, परिस्थितियाँ बदलने पर समस्याओंका स्वरूप बदल जाता है फलस्वरूप समाधान बदलना भी अनिवार्य हो जाता में। भगवान समय-समय पर ऐसे सुधारक, विचारक, पथ-प्रदर्शक और समर्थ व्यक्तित्व भेजते भी हैं जो अपने समय की आवश्यकता को अपने ढङ्ग से समाधान का पथ-प्रशस्त कर सके। साहित्य क्षेत्रमें आज के अन्धकार को चीर सकने वाली प्रकाश किरणों की नितान्त आवश्यकता अनुभव की जा रही है सो उसकी पूर्ति भी होकर रहेगी।

हमें ऐसे साहित्य के सृजन प्रकाशन, मुद्रण,विक्रय एवं प्रसार की व्यवस्था करनी चाहिये जिससे उसका विस्तार हो सके और सर्व साधारण को सुविधा पूर्वक उसे प्राप्त कर सकना उपलब्ध हो सके। इस सन्दर्भ में ईसाई मिशन की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कार्य-पद्धति बहुत ही उपयुक्त और अनुकरणीय है। ईसाई धर्म का जन्म हुए १९७० वर्ष हुए हैं। इतने दिनों में उनकी संख्या एक अरब हो गई। अर्थात् ३ अरब की जनसंख्या वाले विश्व में एक तिहाई जनता ईसाई धर्म में दीक्षित हो चुकी। वे लोग यह योजना लेकर चलते हैं कि आगामी दो शताब्दियों में सारे संसार को ईसाई धर्म के अन्तर्गत दीक्षित किया जा सकेगा। इस प्रकार विस्तार का कारण यह नहीं है कि उनका धर्म, दर्शन या अध्यात्म दूसरों से ऊँचा है। वरन् यह है कि उसके कार्यकर्ताओं ने ईसाई धर्म की महत्ता उपयोगिता को सर्व साधारण तक हृदयग्राही और बुद्धि गम्य ढङ्ग से समझाने की अधिक चेष्टा की है।

ईसाई मिशनों ने धर्म के विभिन्न पहलू जन-साधारण को समझाने के लिए इतना सुलभ, समर्थ, सुन्दर, सस्ता साहित्य छापते हैं कि उसे पढ़ने वाला प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। यह साहित्य पुस्तकालयों में रख देने या किताबों की दुकान खोल देने से काम नहीं चल सकता था। उथले लोग केवल अपना साहित्य खरीदते हैं। विचारोत्तेजक साहित्य पढ़ने में किसी विरले को ही रुचि होती है। इसलिये ऐसा साहित्य सदा व्यक्तिगत आग्रह अनुरोध के आधार पर लोगों तक पहुँचाने और गले उतारने का प्रयत्न करना पड़ता है। ईसाई धर्म के कार्यकर्ता यही करते हैं। वे घर घर जाकर—हाट बाजार में खड़े होकर लोगों को उस साहित्य को पढ़ने की प्रेरणा करते और बेचते सर्वत्र देखे जा सकते हैं। ऐसा साहित्य लिखने और छापने भरसे काम नहीं चल सकता। उसे पढ़ने, खरीदने के लिए व्यक्तिगत आग्रह, अनुरोध का दबाव डालना आरम्भिक स्थिति में अनिवार्य ही होता है। मिशनरी यही करते रहे है। उन्होंने घर-घर जाकर यह साहित्य पहुँचाने में रत्ती भर भी झिझक नहीं की है। वरन् इसे धर्म सेवा का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष माना है। कीमती गिरजाघर बनाने और उन्हें खर्चीले आडम्बरों के साथ चलाने में पैसा खर्च करने की तुलना में पिछले दिनों यही उत्तम समझा गया है कि गिरजे का संदेश घर-घर आत्म धर्मावलम्बियों तक पहुंचाया जाय। सो उस धर्म के लोगों ने प्रचुर धन बाइबिल सुसाइटी को दिया है फलस्वरूप संसार भर की छोटी-बड़ी लगभग ६०० भाषाओं में बाईबिल के अति सस्ते संस्करण छपे हैं और अन्य छोटा बड़ा साहित्य इतना छपा है इतना बिका बँटा है कि उसकी कल्पना भर से आश्चर्य होता है। ईसाई मिशन प्रायः ३०० अरब रुपया प्रति वर्ष इस प्रकाशन प्रचार कार्य में खर्च कर देते हैं।

कम्युनिस्ट साहित्य के बारे में भी यही बात कही जा सकती है। साम्यवादी विचारधारा का परिचय और लाभ समझाने वाला साहित्य आँधी तूफान की तरह छपता है। आज की स्थिति और मनोभूमि को समझते हुए उसके साथ तालमेल बिठाने वाला—हृदय और बुद्धिवादी साहित्य प्रस्तुत करने में अनेक लेखक और प्रकाशक प्राण-पण से जुटे हुए हैं। इस मान्यता पर विश्वास करने वाले इस साहित्य के प्रसार में अपने मिशन की सफलता सन्निहित देखते हैं, सो उसके लिये बड़ी लगन और तत्परता के साथ उसे आग्रहपूर्वक बेचते और पढ़ाते हैं। ईसाइयों का तरीका कम्युनिस्टों ने भी अपनाया है और प्रचार के बल पर वे भी थोड़े समय में आधी से अधिक विश्व-जनता को अपने प्रभाव में एक शताब्दी के अन्दर ही ले आये है। चीन, रूस, हंगरी, पोलेण्ड, चेकोस्लोवाकिया, रूमानियाँ यूगोस्लेविया, अलबीनिया आदि साम्यवादी देशों की आबादी डेढ़ अरब अर्थात् दुनिया की आधी है। इसके अतिरिक्त अन्य देशों में भी बड़ी संख्या में कम्युनिस्ट मौजूद हैं और बढ़ रहे हैं। इस अभिवृद्धि का कारण उस विचारणा की महत्ता ही नहीं—उस पार्टी के सदस्यों की प्रचार क्षमता भी है। साम्यवादी प्रकाशन ईसाई प्रकाशन की तुलना में पीछे नहीं है। कम्युनिस्ट देश इस प्रकार का प्रकाशन न केवल अपनी प्रजा की विचारणा परिपक्व करने के लिये छापते हैं वरन् समस्त विश्व में—विभिन्न देशों की मनोदशा के अनुरूप, भाव और भाषा में अनुवादित करके उसका निर्माण करते हैं।

हर समझदार आदमी जानता है कि प्रचार के बल पर मामूली चीजों को भी बहुमूल्य सिद्ध किया जा सकता है प्रचार के बिना मूल्यवान वस्तुयें भी अवज्ञा के कूड़ेदान में पड़ी रहती हैं और प्रचार के द्वारा जरा-सी दवा अमृत-धारा और सुधा-सिन्धु बन जाती है। सच्ची, अच्छी और महत्वपूर्ण वस्तुओं को भी प्रचार की आवश्यकता है। लोक-मानस को आदर्शवादिता और उत्कृष्टता की दिशा में प्रोत्साहित करने के लिये—आज की मनोदशा और स्थिति को ध्यान में रखते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुए प्रखर प्रेरणाओं से भरे साहित्य का सृजन अनिवार्य रूप से आवश्यक है। सृजन के साथ-साथ प्रकाशन, विक्रय और प्रचार का विशालकाय तन्त्र खड़ा किया जाना भी आवश्यक है। विश्व का भावनात्मक नव-निर्माण इस तथ्य की उपेक्षा करके सम्भव नहीं हो सकता। जनता को सचाई का जब तक पता ही न चले, लोग प्रकाश की किरणें देख ही न पायें तब तक उनके लिये पुराने अभ्यस्त ढर्रे से विरत होना कठिन है। नैतिक क्रान्ति, विचार क्रान्ति और सामाजिक क्रान्ति की त्रिवेणी विनिर्मित करने के लिये हमें ज्ञान गंगा के अवतरण का भागीरथी प्रयत्न करना ही चाहिए। इन प्रयत्नों में युग साहित्य के सृजन को प्रथम स्थान दिया जाना चाहिये।

हम इस दिशा में एक छोटी शुरूआत कर चुके हैं। युग-निर्माण योजना द्वारा छोटी विज्ञप्तियां, छोटे ट्रैक्ट, पत्रिकाएँ छपने का ढर्रा आरम्भ किया गया है। स्वल्प साधनों से इसका प्रकाशन भी चलाया है और अन्य भाषाओं में भी हाथ-पैर फैलाये हैं। यह शुभारम्भ एवं मार्ग-दर्शन मात्र है। अपने परिवार के सदस्यों द्वारा झोला पुस्तकालय के रूप में इस साहित्य के प्रचार का भी क्रम चलाया गया है। यह एक मार्ग-दर्शक ढाँचा मात्र है। बात को केवल कहने की अपेक्षा उसे व्यावहारिक रूप--चाहे वह प्रयोग छोटा ही क्यों न हो--करके दिखाना अधिक स्पष्ट कल्पना दे सकता है इस दृष्टि से युग निर्माण प्रकाशन एवं प्रचार संस्थान का कलेवर खड़ा किया है और उसका प्रकाश जन-मानस तक पहुँचाने का प्रयत्न इस दृष्टि से किया है कि लोग प्रत्यक्ष देखें कि इतने स्वल्प साधनों से--छोटे परिमाण में किये जा सकने वाले प्रयत्न भी यदि सारगर्भित हों तो कितने कारगर सिद्ध हो सकते हैं।

इस प्रक्रिया को अधिक व्यापक बनाया जाना चाहिए। समस्त विश्वमें बिखरी हुई मानव जाति की अनेक संस्कृतियाँ, मान्यताएँ, भावनाएँ, परम्पराएँ, भाषाएँ एवं समस्यायें हैं। उनको स्पर्श करते हुए आदर्शवादिता एवं उत्कृष्टता धर्म एवं संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर विभिन्न ढङ्ग से--अनेक माध्यमों से प्रकाश डाला जाता है। इसके लिये बहुत कुछ बहुत ढंगों से--बहुत माध्यमों से लिखा और छापा जाना चाहिए। चूँकि विश्व का भावनात्मक निर्माण--ईसाई धर्म और कम्युनिस्ट दोनोंकी तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। इस लिये उसका स्वरूप समझाया जाना भी उतना ही आवश्यक है। इसके लिये विशालकाय सृजन तन्त्र खड़ा किया जा सकता है और किया जाना चाहिए। यदि साधन जुटाये जा सकें तो यह अच्छी शुरूआत जो युग-निर्माण योजना द्वारा आरम्भ की गई है-बहुत आगे बढ़ सकती है और ईसाई एवं कम्युनिस्ट प्रचार को बहुत पीछे छोड़कर अपनी वास्तविकता के कारण विश्व मस्तिष्क पर जादू की तरह आच्छादित हो सकती है। जरूरत साधनोंकी है। यदि लोग उसकी उपयोगिता और आवश्यकता सच्चे मन से समझ सकें तो आज जिन साधनों का जुटना कठिन लगता है कल ही वह अति सरलता पूर्वक इकट्ठे हो सकते हैं।

इस प्रकार का बौद्धिक अनुदान मानव जाति की महानतम सेवा सिद्ध हो सकता है। पेट के लिए खाद्य-पदार्थों के उत्पादन की ओर सबका ध्यान है, उसकी स्वच्छता और पौष्टिकता को भी महत्व दिया जाता है पर आत्मा की भूख-बुद्धि की क्षुधा--भावना की खुराक की आवश्यकता पूरी कर सकने वाले साहित्य का कितना अकाल पड़ रहा है उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता। कैन्टीन, होटल, मिठाई घर, गली, मुहल्ले में खुलते जा रहे हैं, अन्न, शक्कर, दूध, शाक, फल आदि के उत्पादन का भी बहुत जोर है पर कोई यह नहीं सोचता कि मनुष्य में आत्मा भी है--बुद्धि भी है और उसे भी स्वच्छ तथा पौष्टिक आहार की जरूरत है। इस अभाव की पूर्ति की ही जानी चाहिए। जिस विषाक्त बौद्धिक भोजन ने जन-मानस को पतित स्तर पर ले जाकर पटक दिया है उसे हटाने के लिए केवल विरोध ही पर्याप्त न होगा वरन् उसकी तुलना में सृजनात्मक उपयुक्त वस्तु सामने रखनी होगी। इसके बिना जनता को अवांछनीय साहित्य को पढ़ने और उसके दुष्प्रभाव से प्रभावित होने को रोका नहीं जा सकेगा।

हमें सृजन को ध्यान में रखकर सोचना चाहिए और इस सृजन में ऐसे प्रखर सत् साहित्य के निर्माण को अग्रिम पंक्ति में रखना चाहिए जो लोक-मानस का भावनात्मक काया-कल्प कर सकने में समर्थ सिद्ध हो सके।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कला की शक्ति लोक मंगल में लग जाय

शिक्षा की भाँति ही कला का प्रभाव मानव मन पर पड़ता है। उसमें भावनायें—सम्वेदनायें उभारने—प्रवृत्तियों को ढालने तथा चिन्तन को मोड़ने एवं अभिरुचि को दिशा देने की अद्भुत क्षमता भरी पड़ी है। संगीत गायन, अभिनय, चित्र, साहित्य, कविता आदि के माध्यम से कला विकसित होती है। इसमें मनोरञ्जन, सौन्दर्य-प्रवाह उल्लास न जाने क्या-क्या तत्व भरे पड़े हैं जो मानव मन को सम्मोहित कर बदलने पलटने में अत्यधिक समर्थ सिद्ध होते हैं। कलाकारों ने राष्ट्रों और संस्कृतियों को उठाया और गिराया है। कला अमृत भी है और विष भी वह अपने जमाने के व्यक्ति और समाज को पतन के गर्त में भी डुबो सकती है और उत्थान के शिखर पर भी पहुँचा सकती है। शिक्षा से भी कला में अधिक सामर्थ्य है। शिक्षा का प्रभाव वर्षों में दीख पड़ता है, पर कला अपना जादू तत्काल दिखाती है और व्यक्ति को बदलने में लोहा पिघला कर पानी बना देने वाली भट्टी की तरह मनुष्य की मनोवृत्तियों में भारी रूपान्तर प्रस्तुत करती है।

रचनात्मक कार्यों में दूसरा मोर्चा कला का है। कला की जितनी दुर्गति इन दिनों हुई है, इतिहास साक्षी है कि पृथ्वी की स्थापना से लेकर आज तक वैसी कभी नहीं हुई। साहित्य के आधार पर किसी समय के समाज संस्कृति तथा मनोभूमि का मूल्याङ्कन किया जाता है आज विचित्र परिस्थिति में पड़ा हुआ है। प्रेस जो छापता है, बुकसेलर जो बेचता है, पाठक जो पढ़ता है इसका विवरण इस प्रकार है—

कामुकता भड़काने वाले उपन्यास	४८ प्रतिशत
मनोरञ्जन	८ ”
अन्ध विश्वास तथा साम्प्रदायिक प्रतिपादन	६ प्रतिशत
राजनीति	३ ”
समाज	३ ”
आध्यात्म धर्म दर्शन	”२
जीवन-निर्माण	१ ”
स्कूली शिक्षा	२६ ”

यह आंकड़े बताते हैं कि हमारे साहित्यकार—कवि, प्रकाशक, मुद्रक, पुस्तक विक्रेता मिल जुलकर क्या वस्तु समाज को दे रहे हैं। साहित्य बौद्धिक अन्न है। उसे पचाकर ही जन मानस का सृजन होता है। शिक्षितों की सार्वजनिक मनोभूमि का अन्दाजा इसी से लगाया जा सकता है कि उसमें क्या बोया और क्या उगाया जा रहा है। फल भी बीज के अनुरूप ही हो सकते हैं।

प्रेरक साहित्य जन मानस को हिला कर रख सकता है। सुधारात्मक और सृजनात्मक साहित्य ने युगान्तरकारी सामाजिक काया-कल्प प्रस्तुत किये हैं। अति प्राचीनकाल में शस्त्रों से क्रान्तियाँ होती थीं, आज साहित्य की शक्ति से युग बदलते हैं। रूसो के प्रतिपादित प्रजातन्त्र सिद्धान्त और कार्ल मार्क्स के प्रतिपादित साम्यवाद सिद्धान्त ने आज संसार की ८३ प्रतिशत प्रजा के मस्तिष्कों पर अपना शासन जमाया हुआ है। और भी अधिक खुलासा करना हो तो यों कहा जा सकता है कि यह रूसो और मार्क्स ही असली मानी में विश्व की शासन व्यवस्था चला रहे हैं। साहित्य की शक्ति अपार है। उसे प्रयुक्त करके साम्यवाद के प्रयोक्ताओं ने लगभग आधी दुनिया को उसी ढाँचे में ढाल दिया जिसमें कि वे चाहते हैं। हम इस साहित्य की महाशक्ति को फूहड़ कामुकता भड़काने—भोंड़े मनोरञ्जन में उलझाने और बुद्धिभ्रम फैलाने में प्रयुक्त कर रहे हैं। स्कूली साहित्य की जानकारी मात्र मान लें तो सृजनात्मक और प्रेरक साहित्य केवल ६ प्रतिशत रह जाता है। जिसे मूल पूँजी की तुलना में बैंक ब्याज की बराबर ही माना जाना चाहिए। बौद्धिक खुराक इतनी कम हो तो जन मानस में प्रेरणात्मक उमंगें उठने की कैसे आशा की जाय?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वक्तित्व, संगीत, वाद्य, अभिनय का एक वर्ग है । कला के यह जादू भरे चारों पाये हमें न जाने कहाँ उड़ाये लिये जा रहे हैं । पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली, पुस्तकों में छपने वाली और वैयक्तिक तथा सामूहिक रूप में गाई जाने वाली कविता का स्तर और भी दयनीय है । कामुकता, कामुकता, कामुकता—शृंगार, शृंगार, शृंगार हर दिशा में कविता यही सब गुंजार रही है । दिल के मरीज, आँखों के बीमार, बुलबुल, परवाने, मजनू दीवाने, यही वह धुरी है जिसके आस-पास आज की कविता चक्कर काट रही है । बेचारे प्रेम की आत्मा कोस रही है कि मेरे नाम पर इन कवि नाम धारियों में वासना की उच्छृङ्खलता एवं विषाक्त वारुणी को किस चतुराई से लाकर प्रतिष्ठापित कर दिया और प्रेम का तत्व ज्ञान लगता है इस दुनिया में से उठ ही जायगा । जब उसे समझने, समझाने की कहीं जरूरत ही न समझी जायगी तो वह बेचारा इस वहशी दुनियाँ में जीकर करेगा भी क्या ?

सिनेमा इस युग में एक नये जादू की तरह आया है । उसने कोमल भावना वाले उदीयमान नवयुवकों को अपने सम्मोहन पाश में कसकर जकड़ा है । यह सस्ता मनोरंजन जन साधारण को अच्छा लगा है और एक प्रकार से सर्वत्र उसका स्वागत हुआ है संगीत सम्मेलन, कवि सम्मेलन, अभिनय, नृत्य, नाटक आदि के क्षेत्र सिकुड़ने सिकुड़ते मरणा-सन्न होते जा रहे हैं, सबकी आत्मा धीरे-धीरे सिनेमा में समाती चली जा रही हैं । विज्ञान का यह जादू जन मानस पर सीधा प्रभाव डाल रहा है और उसकी गहरी छाप पड़ रही है । कला की चर्चा करनी हो तो अब सिनेमा को प्रमुख स्थान देना पड़ेगा ।

यह सिनेमा यदि आदर्शवादिता, उत्कृष्टता, समाज—निर्माण, समस्याओं के हल एवं विश्वशांति की ओर उन्मुख रहा होता तो स्वस्थ मनोरञ्जन के साथ लोक मंगल की आशाजनक सम्भावनायें प्रस्तुत कर सकता था । पर 'मरे को मारे शाह मदार' वाला दुर्भाग्य यहाँ भी आ विराजा । हजार वर्ष की पराधीन, पिछड़ी और पथ भ्रष्ट कौम को स्वस्थ मार्ग दर्शन देने की उपेक्षा सिनेमा उलटी दिशा में ही घसीटने लग पड़ा । अपने फिल्मों में जो कथानक, अभिनय, गायन, नृत्य होते हैं उनमें प्रेरक प्रसंग तो यदा-कदा ही दिखाई देंगे । अधिकतर कामुकता, अश्लीलता, उग्रता, उच्छृङ्खलता एवम् पशु प्रवृत्ति को भड़काने वाले प्रसंग ही मिलेंगे । इन्हें रुचि पूर्वक देखने वाली जनता किधर चल रही है, इसे सहज ही परखा जा सकता है । सर्व साधारण में विशेषतया नव-युवक नव-युवतियों में जो चर्चा न करने योग्य दुष्प्रवृत्तियाँ आंधी-तूफान की तरह पनप रही हैं और जिनकी प्रतिक्रिया अगले दिनों प्रचुर मात्रा में घटित होने वाली है, अवांछनीय घटनाओं के रूप में सामने आ रही हैं । उसे हमारा एक दुर्भाग्य ही कहना चाहिए ।

रेडियो दिन भर सिनेमा के गीत गाता है, हम सब उन्हीं को गुन-गुनाते है, लाउडस्पीकरों से यही सब सुनाई पड़ता है । सिनेमा संगीत ही वस्तुतः आज का युग गायन हैं । सब ठुमरी, कजली, भैरवी कव्वाली तो गुजरे जमाने की चीजें हो गईं । कवि सम्मेलन, कविता पुस्तकें, तो एक कोने में पड़ी यदा-कदा देखने में आने वाली चीजें हैं । पत्र-पत्रिकाओं ने भी अब नया ढंग इस झंझट से पीछा छुड़ाने का आरम्भ कर दिया है । कुछ दिन पहले तक तुकान्त कवितायें छपती थीं जो गाई-बजाई, गुन-गुनाई जा सकती थीं । पर अब अतुकांत कविताओं का फैशन चल पड़ा जिन्हें न लिखने वाला समझता है और न पढ़ने वाला । गायन के प्रयोजन से तो उनका पल्ला छूट ही जाता है । नाटक मर चले, नृत्य अभिनय वारांगनाओं के पल्ले बँध गये । कला का महत्वपूर्ण क्षेत्र गायन, संगीत, वाद्य, अभिनय के साथ जुड़ा हुआ था और उसके द्वारा स्वस्थ मनोरञ्जन के साथ लोक रुचि को परिष्कृत करने में भारी योगदान मिलता था, पर अब तो लगता है गंगा उलटी बहेगी और सूरज उलटा घूमेगा कला जैसी मानव अन्तःकरण की अभिव्यञ्जना जब इस प्रकार अधः पतित होती चली जायगी तो मानवीय आदर्शों का प्रवाह भी पतनोन्मुख होने से क्यों रुकेगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कला के चित्र-पक्ष की भी यह दुर्दशा है। औघड़ देवी-देवताओं के अतिरिक्त ९० प्रतिशत चित्र अर्धनग्न, फूहड़ भाव-भङ्गिमा भरे कामुक और अश्लील चित्र, रमणी और रूपसी के रूप में नारी को चित्रित करने वाले ही मिलेंगे। वेश्यायें जैसे हाव-भाव लम्पटों को फुसलाने के लिये बनाती हैं, लगभग उसी स्तर की तस्वीरों से बाजार पटा पड़ा है। कला और सुसज्जा के नाम पर यदि एकमात्र आधार यह कुत्सा ही रह गई हो तो बात दूसरी है अन्यथा सौंदर्य के अगणित आधार, चित्रकला की मार्मिकता विकसित करने के लिये अभी जीवित हैं। सब ओर से मन हटाकर केवल नारी के शील पर आँच लाने वाले और उसके प्रति कुदृष्टि भड़काने वाले चित्रों का चित्रण, प्रकाशन, मुद्रण और विक्रय की दुरभिसन्धि से क्या कुछ बनने वाला है। लोगों के भीतर बैठे हुए असुर की तृप्ति करके इस प्रकाशन से पैसे बटोरने के साथ यह भी सोचना चाहिए कि इस कला की दुर्गति का परिणाम हमारी संस्कृति और नैतिकता को कितना मँहगा पड़ेगा।

सुरुचि और शालीनता का तकाजा है कि नारी की पवित्रता और उत्कृष्टता को बनाये रखा जाय। उसे माता, भगिनी और बेटी के रूप में ही चित्रित किया जाय। रमणी और कामिनी का भी उसका रूप हो सकता है, पर उसकी सीमा दाम्पत्य-जीवन की मर्यादाओं तक ही सीमित रहनी चाहिए। उसका सार्वजनिक प्रदर्शन तो वेश्या ही कर सकती है। हमारे लिये यह अनुचित होगा कि हम अपनी माता, भगिनी और पुत्री का ऐसा चित्रण करें जो कुत्सायें भड़काये और कुमति उत्पन्न करे। कला के लिये अगणित क्षेत्र खुले पड़े हैं। उनमें से अनेक तो ऐसे हैं, जो पशु को मनुष्य और मनुष्य को देवता बना सकने में समर्थ हो सकते हैं। क्यों न चित्रकला इस कुत्सा को छोड़कर ९९ प्रतिशत विश्व में फैले पड़े सुरुचिपूर्ण सौन्दर्य को चित्रित करके अपने स्तर को ऊँचा रखे।

हम जानते है कि लोगों की डाढ़ में वह चस्का लग गया है, जो जन-मानस की दुर्बलता से लाभ उठाकर अपनी तिजोरियाँ जल्दी-जल्दी भरली जायें, लोगों का, समाज का अहित होता है तो हो, इसी प्रकार लोक-रुचि के निकृष्ट तत्व अपनी कुत्सा की तृप्ति जहाँ देखते हैं, वहीं गन्दगी पर भिनकने वाली मक्खी की तरह टूट पड़ते हैं और यह नहीं देखते कि हम पैसा और समय खर्च करके राजी-खुशी उस विष को खरीद रहे हैं जो उनके नैतिक, पारिवारिक, मानसिक एवं शारीरिक स्वस्थता को नष्ट कर देगा। पर इस अज्ञान-अन्धकार की जोड़ी पर कुड़मुड़ाते रहने से काम क्या चलने वाला है। हमें बुरी वस्तु की तुलना में अच्छी वस्तु रखकर लोगों की विवेक बुद्धि को यह अवसर देना चाहिए कि वे दो में से एक को चुन सकें। जब एक ही प्रवाह है-एक ही हवा है, तो उसमें भले-बुरे सभी बहेंगे। बुरे के मुकाबिले में अच्छे की प्रतिद्वन्द्विता का ही मार्ग शेष रह जाता है और सरकार में कुछ दम होता तो कलम के एक झटके में यह सारी खुराफातें बन्द हो सकती थीं बैंक की तरह कला का भी राष्ट्रीयकरण किया जा सकता था और शिक्षा तथा कला को लोक-निर्माण की दिशा में प्रयुक्त किया जा सकता था। पर अभी ऐसी आशा करना व्यर्थ है। हमें जन-स्तर पर ही शिक्षा की भाँति कला का भी निखरा रूप जन-साधारण के सामने रखना होगा। सरकारी स्तर पर न सही-जनता के विवेक का स्तर अभी शेष है। हमें उसी को जगाना और प्रयुक्त करना है।

'कला कुत्सा के लिये नहीं' का नारा लेकर हम आगे बढ़ेंगे और सुरुचिपूर्ण कला को परिष्कृत रूप में प्रस्तुत करेंगे। ऐसा सुगठित साहित्य-तन्त्र खड़ा किया जाना चाहिए जो व्यक्ति और समाज की मूलभूत समस्याओं के समाधान की सामग्री हर दृष्टि से प्रस्तुत करे। निबन्ध, कविता, कथा, विवेचना, परिहास आदि विभिन्न स्तरों की विभिन्न प्रकृति के व्यक्तियों की आवश्यकता पूरा करने वाला साहित्य सृजा जाना चाहिए। इसके लिये आदर्शवादी साहित्यकारों एवं कवियों का सहयोग भी मिल सकता है। अपने नाम को कलङ्कित करके एक रुपया कमाने की अपेक्षा अपना सम्मान पीछे के लिये छोड़ जाने वाले आठ आने लेकर भी शायद वे काम चला लें। ऐसा साहित्य प्रकाशित करने के लिये पूँजी की आवश्यकता पड़ेगी। ऐसी वस्तुएँ पढ़ने के लिए लोक रुचि जागृत करनी पड़ेगी तथा वे सर्वत्र उपलब्ध हो सकें—ऐसा प्रबन्ध करना होगा। कुरुचि ने ऐसे साहित्य के प्रति सर्वत्र उपेक्षा एवम् अवज्ञा के भाव उत्पन्न कर दिये हैं, इसलिये न तो वैसी चीजें लेखक लिखते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है-न प्रकाशक छापते हैं और न विक्रेता बेचते हैं। क्योंकि बिक्री कम होनेसे उन्हें पूरा लाभ नहीं मिलता। हमें साहित्यकारों को ही इधर आमन्त्रित नहीं करना होगा वरन् प्रकाशन और विक्रय के लिये भी एक स्वतन्त्र सङ्गठन खड़ा करना होगा। लोक-मानस को आदर्शवादिता की ओर मोड़ने के लिये यह व्यवस्था जुटानी नितान्त आवश्यक है, भले ही वह कितनी ही कष्ट-साध्य एवम् जटिल क्यों न हो।

युग-निर्माण योजना के केन्द्रीय कार्यालय मथुरा से यह प्रवृत्ति छोटे रूप में आरम्भ भी हुई है। व्यक्ति, परिवार और समाज के नव-निर्माण के लिये--स्वस्थ-शरीर, स्वच्छ मन और सभ्य समाज की अभिनव रचना के लिये-सस्ती ट्रैक्ट माला अभी प्रारम्भ की गई है, जिसमें लगभग २०० निबन्ध पुस्तिकाये तथा १०० कथा, कविता, जीवन चरित्र आदि की पुस्तिकायें छपी हैं। दस पैसा रोज निकालने वाले इन्हें मँगाते हैं और अपने सम्पर्क-क्षेत्र में इन्हें पढ़ाते हैं,। बुक सेलर इन्हें पसन्द नहीं करते, क्योंकि बिक्री भी कम और लाभ भी कम हो तो कोई दुकानदार क्यों इस झंझट में पड़े। अपनी विक्रय-व्यवस्था घरेलू ज्ञान-मन्दिरों के माध्यम से है। आगे धकेली जाने वाली छोटी गाड़ियों में गतिशील रहने वाले 'चलपुस्तकालयों' की योजना भी इस साहित्य के लिये अभिरुचि तथा क्षेत्र उत्पन्न करेगी। प्रयोग छोटा है, क्योंकि अपने साधन छोटे है। पर तरीका यही है। नव-निर्माण के लिए उपयुक्त साहित्य का सृजन और प्रसारण इन्हीं तरीकों से होगा।

अभी इस दिशा में बहुत काम करना बाकी है। अनेक विषयों के माध्यम से लोक-रुचि को आदर्शवादिता की ओर मोड़ने के लिए अनेकों पत्र-पत्रिकाओं की जरूरत है। अनेक भाषाओं में अनेक विषयों की उत्कृष्टता का समावेश करने वाला साहित्य छपना चाहिए और विक्रय का व्यापक तन्त्र खड़ा किया जाना चाहिए। पूँजी के अभाव में राष्ट्र की यह महती आवश्यकता आज तो एक प्रकार से रुकी ही पड़ी है, पर आशा की जा सकती है कि भविष्य में प्रकाश की किरणें भी कहीं से उदय होंगी और इस कुरुचिपूर्ण साहित्य की प्रतिद्वन्दिता हम समग्र नव-निर्माण के अति महत्वपूर्ण साहित्य का सृजन करके जन-मानस का कायाकल्प कर सकने में समर्थ होंगे। ऐसे ही प्रयत्न और लोग भी कर सकते हैं। अपना तो मार्गदर्शन प्रयोग है।

कविता, गायन, संगीत, वाद्य और अभिनय के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो सकता है। अब समय बदल रहा है कितनी उच्चस्तरीय फिल्में कुरुचिपूर्ण और बदनाम फिल्मों से भी अधिक सफल सिद्ध हो रही हैं। इससे आभास मिलता है कि कुरुचि के विरुद्ध तीव्र प्रतिक्रिया होने वाली है और अगले दिनों सुरुचिपूर्ण कला को उचित स्थान और सम्मान मिलने वाला है।

हम सहयोग-समितियों के माध्यम से अथवा किन्हीं साधन-सम्पन्न व्यक्तियों को नव-निर्माण की आवश्यकता पूर्ण कर सकने वाली फिल्में बनाने के लिए प्रोत्साहन देकर युग की आवश्यकता पूरी कर सकने वाली फिल्में बनाने वाला एक तन्त्र खड़ा कर सके तो निश्चय ही उससे आशा जनक परिणाम निकलेगा। आर्थिक दृष्टि से इस प्रकार के उद्योगों में कोई घाटा होने वाला नहीं है। लोगों का भय अगले दिनों सर्वथा निर्मूल सिद्ध होगा कि आदर्शवाद को सुनने-देखने वाला कोई नहीं। वस्तुतः कुत्सा भरी कला के विरुद्ध अब घृणा इतनी गहरी हो चली है कि यदि कोई उत्कृष्ट कला-उत्कृष्ट निर्देशन में प्रस्तुत की जाय तो उस पर जनता टूट पड़ेगी। आवश्यकता केवल साहस और पूँजी एकत्रित करने की है। घिनौना समझा जाने वाला आज का सिनेमा कल भावनात्मक नव-निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत कर सकता है।

आजकल फिल्मों की लागत मँहगे नट-नटियों के तथा निर्माण कार्य में अन्धाधुन्ध साज-सज्जा करने के कारण बहुत मंहगी पड़ती है। कुशलता के साथ यदि उन्हें बनाया जाय तो वे चौथाई लागत में बन सकती हैं। मठाधीश कलाकारों को छोड़कर सेवाभावी और आदर्शवादी नए पात्रों की माँग की जाय तो इस क्षेत्र में स्वयंसेवक की तरह अपने को खपा देने वाली कितनी ही ऐसी प्रतिभायें सामने आ सकती हैं, जिनके करतब दर्शकों को चकित करके रख दें।

लाउडस्पीकरों पर बजने वाले रिकार्ड राष्ट्र की एक महती आवश्यकता पूर्ण करेंगे। ग्रामोंफोन तो अस्त होगया, पर लाउडस्पीकरों के लिये आज भी उनकी जरूरत है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रेडियो स्टेशनों से भी रिकार्ड बजाये जाते हैं। पर अभी जो रिकार्ड उपलब्ध हैं, उनमें दस-पाँच ही ऐसे मिलेंगे जो जन-जागरण का प्रयोजन पूरा करते हों। शेष तो उसी लकीर को पीटते हैं, जिस पर कला का हर घोड़ा दौड़ लगा रहा है। एक ऐसा तन्त्र खड़ा किया जा सकता है, जो प्रेरणाप्रद और दिशा-दर्शक रिकार्ड बनाये और उन्हें बाजार में खपाये। सहयोग समितियों अथवा व्यक्तिगत उद्योग के रूप में, जैसे भी यह कार्य किया जाये, पूँजी पूर्ण सुरक्षित रहेगी और लोक–मंगल का प्रयोजन भी पूरा होगा।

फिल्म और रिकार्डों का निर्माण युग परिवर्तन का प्रयोजन पूरा करने में एक सीमा तक बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है। यदि व्यवहार-कुशल लोगों का ध्यान इस ओर चला जाय तो आर्थिक लाभ भी मिलेगा और समाज की महती सेवा भी होगी। घाटे की तो कोई सम्भावना है ही नहीं। धनी व्यक्तियों को यदि इधर बढ़ाने का साहस न हो तो लिमिटेड कम्पनी या सहयोग समिति का कोई कुशाग्र व्यक्ति गठन कर सकता है और उस आधार पर भी यह गाड़ी आगे बढ़ सकती है।

यही बात चित्रों के सम्बन्ध में है। महापुरुषों के, धार्मिक मार्मिक घटनाओं के, सौजन्यतापूर्ण अभिव्यक्ति के चित्रों की इतनी तो खपत हो ही सकती है कि कुरुचिपूर्ण तस्वीर बनाने-बेचने वालों की तुलना में एक उद्योग जीवित रह सके। विभिन्न स्तर की आवश्यकताएँ पूर्ण करने वाले आदर्श विकल्प प्रस्तुत करके भी चित्रों द्वारा की जाने वाली सुसज्जा को स्थानापन्न-प्रतिद्वन्दी आधार प्रस्तुत किया जा सकता है। युग-निर्माण योजना ने ऐसा कुछ हल्का-सा आयोजन आरम्भ भी किया है।

शहरी क्षेत्र तो सिनेमा ने जकड़ लिया, फिर भी जीवित अभिनय की सम्भावना अभी सर्वथा मृत नहीं हुई है। सजीव पात्रों के व्यक्तित्व, कण्ठ तथा सान्निध्य में जो आकर्षण है वह सदा बना रहेगा, यदि सजीव अभिनय की आज की परिस्थिति एवं सुसज्जा के साथ पुनः सक्रिय किया जा सके तो उसका भी स्वागत होगा। मथुरा क्षेत्र में लगभग १०० रास-मण्डलियाँ हैं और उनमें १०-१५ से कम की कोई टोली नहीं होती। लगभग हजार डेढ़ हजार व्यक्ति केवल रासलीला को सौ वर्ष पुराने ढङ्ग-ढर्रे पर अपने अभिनय क्रम को चलाते हुए आजीविका कमा रहे हैं। उसकी माँग सदा देश के विभिन्न प्रान्तों में बनी रहती है। यह ठीक है कि उनके पीछे कृष्ण भगवान की लीला देखने की एक धार्मिक प्रवृत्ति भी जुड़ी रहती है। पर यह भी स्पष्ट है कि संगीत, वाद्य, अभिनय का आकर्षण भी कम नहीं हैं। एकाकी कृष्ण-लीला को ही आकर्षण मानें और सङ्गीत-अभिनय रहित उसे बना दें तो उसका आकर्षण कदाचित् ही स्थिर रह सके

कला का नाटक और अभिनय वाला पहलू काफी आकर्षक है। इसे सुयोग्य और सधे हुए हाथ अपने ढङ्ग से सजायें, सँभालें और बदलें तो ८० फीसदी देहातों में बसे हुए भारत को जहाँ एक स्वस्थ मनोरञ्जन मिल सकता है, वहाँ लोक-मानस की दिशाएँ बदलने का क्रान्तिकारी उद्देश्य भी पूरा हो सकता है। पूरे नाटक, एकांकी नाटक, नृत्य-नाटिका, कवि-दरबार, छाया-अभिनय आदि अनेकों एक से अधिक आधार ढूँढ़े जा सकते हैं और उन्हें टैपरिकार्डर में भरी हुई दूसरों की अधिक सुन्दर स्वर-लहरियों तथा वाद्य-विशेषता के साथ जोड़कर और भी अधिक आकर्षक बनाया जा सकता है।

इस प्रकार सङ्गीत, वाद्य और अभिनय की त्रिवेणी मिलाकर जन-भावनाओं को लहराने और ऊँचा उठाने का प्रकाश दिया जा सकता है। इस सरंजाम के साथ मनुष्य को वर्तमान अवांछनीयता के दुष्परिणामों से परिचित कराने और उनके विरुद्ध संघर्ष करने के लिये सहज ही उत्तेजित किया जा सकता है।

आवश्यकता एक ऐसे कला-केन्द्र की है, जो सङ्गीत, वाद्य और अभिनय की त्रिवेणी को तीर्थराज बनाकर व्यक्ति और समाज के पाप-तापों को धोने के लिये अथक काम कर सके। समुचित प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति ही इस क्षेत्र में प्रवेश कर आशाजनक परिणाम उत्पन्न कर सकेंगे! इसलिये सबसे पहले आवश्यकता उपयुक्त छात्रों को प्रशिक्षित करने की है, और यह काम कोई साधन-सम्पन्न विद्यालय ही कर सकता है।

इस संदर्भ में हम चाहते हैं कि अपने परिवार की कला-प्रवृत्ति एक केन्द्र पर इकट्ठी हो। जिनके कण्ठ-स्वर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मीठे हैं, उन्हें अपनी उस प्रतिभा को राष्ट्र-माता के लिये अर्पित करना चाहिए। जिनको वाद्य बजाने में प्रवीणता है, उन्हें अपनी क्षमता लोक-मंगल के लिये भेंट चढ़ानी चाहिए। नृत्य, अभिनय के उपयुक्त लचक और कोमलता जिनमें है, वे भी उस विशेषता से विश्व-मानव को लाभान्वित करने का संकल्प करें। ऐसी विभूतियाँ मथुरा इकट्ठी हो सकती हैं और उनके प्रशिक्षण का प्रबन्ध किया जा सकता है। विभिन्न स्तर के प्रदर्शनों के लिये मण्डलियाँ गठित की जा सकती हैं और उन्हें समय-समय पर देश भर में चलते रहने वाले युग-निर्माण सम्मेलनों के साथ जोड़ा जा सकता है। अलग से भी उनकी माँग हो सकती है। इस प्रकार कलाकारों का एक बहुत बड़ा संघ खड़ा हो सकता है, जो बौद्ध-संघों की तरह कला के माध्यम से जन-जागरण का महान् प्रयोजन पूरा करने में जुटा रहे। यह उपलब्धि मनोरंजन मात्र नहीं है। यदि उसे भावनात्मक बनाया जा सके तो क्रान्तिकारी परिवर्तन प्रस्तुत किया जा सकता है।

—०—०—

लोक-रंजन और लोक-मंगल का अनुपम संगम

नव-निर्माण की दिशा में हमारे जो महत्वपूर्ण कदम इन दिनों उठ रहे हैं, उन्हें देखते हुए लगता है सृजन का देवता अब अपना प्रयोजन पूरा करने पर ही तुल गया है और उसे पूरा करके ही रहेगा।

कितने दिनों का स्वप्न था कि कला के माध्यम से जन-मानस को गुदगुदाने उसे भाव-विभोर करने और उस जागरण को सृजन की ओर मोड़ने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। वह कल्पना अब स्वप्न न रहकर साकार बनने जा रही है यह कितने हर्ष और सन्तोष की बात है।

गायत्री तपोभूमि में कला भारती का कक्ष बन रहा है। यह अङ्क छपने और पाठकों के हाथों में पहुँचने तक वह लगभग तैयार भी हो चुकेगा। इसका क्रिया-कलाप १ जनवरी ७१ से आरम्भ हो जायगा। तब तक जो दो महीने शेष हैं, उनमें आवश्यक उपकरण जुटानेकी व्यवस्था बनाली जायगी।

योजना यह है कि लोक-रंजन और लोक-मंगल को समन्वित कर दिया जाय। कला भारती यही करेगी। इस योजना के अन्तर्गत कई कार्य हाथ में लिये जा रहे हैं।

(१) छाया चित्रों के माध्यम से लोक शिक्षण। इसके लिए 'स्लाइड प्रोजेक्टर'—सिनेमा प्रोजेक्टर तथा ऐपीडेस्कोप नामक तीन प्रकार के विद्युत संचालित यन्त्र काम में लाये जायेंगे जो सिनेमा जैसे छाया चित्र पर्दे पर प्रदर्शित करेंगे। चित्रों का तात्पर्य लाउडस्पीकर से वक्ता समझाता चलेगा। चूँकि अभी अपने साधन बोलती तस्वीरें बनाने के नहीं हैं इसलिए उसकी अलग से व्यवस्था बनानी पड़ रही है। पीछे यदि साधन बढ़े तो टेप रिकार्डर के माध्यम से अथवा फिल्मों में आवाज भरकर भी यह आवश्यकता पूरी की जा सकती है।

चूँकि मनोरंजन मनुष्य जीवन की एक महती आवश्यकता है। उसके लिए लोग बहुत पैसा खर्च करते हैं। यदि बिना पैसे के वैसे साधन सुलभ हों तो शिक्षित, अशिक्षित सभी वर्ग की जनता उसका लाभ लेने के लिए सहज ही एकत्रित हो सकती है। अपना देश ८० प्रतिशत देहातों में बिखरा पड़ा है। शहरों की आबादी २० प्रतिशत है। बोलता सिनेमा जैसे कीमती और खर्चीले मनोरंजन शहरों में सम्पन्न लोगों द्वारा ही खड़े किये जाते हैं। देहातों में उनका कोई प्रवेश नहीं। पर वहाँ की जनता भी कुछ तो चाहती ही है। स्वाँग, भगत, धनुष-यज्ञ, कजली, रसिया, रास, रामलीला, गरबा, भांखरा जैसे कुछ आयोजनों द्वारा वहाँ यदा-कदा मनोरंजन होता तो रहता है, पर उसमें न तो कोई क्रम रहता है और न व्यवस्था। व्यवस्था इसलिये नहीं कि वैसे कोई नियमित कलाकार तो उधर होते नहीं, ऐसे ही शौकिया लोगों ने जो कुछ सीख लिया है, उसे परस्पर दिखा कर हल्का सा मनोरंजन कर लेते हैं। सिनेमा की माँग आवश्यकता वहाँ भी है। चलते-फिरते कैम्प सिनेमा अक्सर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस आवश्यकता को पूरा करते भी रहते हैं। अब अपनी योजना में इसे व्यवस्थित स्वरूप दिया जा रहा है।

उपरोक्त प्रकाश चित्र जिनका वर्णन ऊपर किया गया है। देहातों के लिए यह प्रयोजन पूरा करते हैं। काँच या स्लोलाईड पर अपनी मनमर्जी के चित्र बनाये जा सकते हैं उन्हें यह स्लाइड प्रोजेक्टर लगभग ७ फुट ऊँचे और ५ फुट चौड़े साइज के पर्दे पर दिखा देगा। यह चित्र सादे भी हो सकते हैं और रङ्गीन भी। इनका परिचय और प्रयोजन लाउडस्पीकर द्वारा अपना वक्ता अलग से बताता चला जायगा। पाँच मिनट एक चित्र का परिचय कराया जाय तो दो घण्टे में २४ चित्र दिखाये जा सकते हैं और अति महत्वपूर्ण २४ विषयों पर प्रकाश डाला जा सकता है। यह शिक्षण इतना सधा हुआ, सारगर्भित और हृदयग्राही होगा कि जनता इससे बहुत कुछ सीख समझकर जायगी। बिना खर्च का सिनेमा देखने कौन नहीं पहुँचेगा। मार्मिक प्रवचनों में किसे रुचि न होगी। उपस्थिति की कमी रहने वाली नहीं है।

सामान्य सभा,सम्मेलनों के आयोजनोंका खर्चीला ढाँचा खड़ा करके बहुत प्रयत्न करने पर भी थोड़ी-सी जनता आती है, पर इस प्रयत्न के द्वारा कम खर्च में अधिक से अधिक जनता को इकट्ठा करने का प्रयोजन पूरा किया जा सकता है सबसे बड़ी सुविधा यह है कि यह सारा काम एक व्यक्ति ही कर सकता है। अपना प्रचारक दिन में जहां जाय वहाँ स्वयं अपने स्थानीय स्वयं सेवकों की मदद से गांव भर में मुनादी करा सकता है। लोगों को अवगत करा सकता है कि अमुक स्थान पर—अमुक समय—उपरोक्त छाया चित्र प्रदर्शन होगा। स्थान की समुचित व्यवस्था स्थानीय लोगों की सहायता से की जा सकती है। वही अपना आदमी जो दिन में मुनादी करने और स्थान संबंधी व्यवस्था में जुटा रहा रात को स्वयं ही चित्र दिखाने की मशीनों का संचालन और स्वयं ही लाउडस्पीकर पर प्रवचन करने का काम साथ-साथ करता रह सकता है। यह सारा काम अकेले आदमी का हुआ। बहुत हुआ तो एक सहायक साथ रखा जा सकता है अथवा किसी स्थानीय व्यक्ति का सहयोग लिया जा सकता है। इस प्रकार बिना किसी पूर्व तैयारी, खर्चीली व्यवस्था या दौड़-धूप के एक महत्वपूर्ण सम्मेलन एक दिन में ही पूरा हो गया और एक ही वक्ता ने—हँसी-खुशी के वातावरण में—वह बातें सिखा दीं जो देश वक्ता भी नहीं कर सकते थे। यह माध्यम एक ओर तो अति सस्ता है दूसरी ओर अति प्रभावशाली है। दोनों संगतियाँ मिल जाने से इस प्रयोग को देहाती क्षेत्र के लिए एक वरदान ही कहा जा सकता है। मनोरंजन का साधन जुटाने की दृष्टि से भी और लोक-शिक्षण की दृष्टि से भी।

यह तन्त्र जो उपरोक्त प्रयोजन में प्रयुक्त होंगे। सस्ते और चलाने में सरल हैं। बिजली और बैटरी दोनों से चल सकते हैं। जहाँ बिजली नहीं पहुँची है वहाँ बैटरी से काम चलाया जा सकता है। अपने लक्ष्य और प्रयोजन के उपयुक्त स्लाइड अपने द्वारा ही बनेंगे। 'स्लाइड प्रोजेक्टर' यह काम बहुत खूबी के साथ कर सकता है। ऐपीडैस्कोप यन्त्र की विशेषता यह है कि उसमें स्लाइडें बनाने की जरूरत नहीं है। छपे हुए चित्र या पुस्तक आदि के पन्ने ही ज्यों के त्यों पर्दे पर आ सकते हैं। यह मशीनें बहुत भारी भी नहीं है और मँहगी भी नहीं। मोटा अनुमान इस व्यवस्था में दो हजार रुपया लगने का है।

जिस प्रकार शाखाओं ने चल पुस्तकालयों के लिये ढकेल गाड़ियों की व्यवस्था करनेमें एक-एक हजार रुपये की पूँजी जुटाई है उसीप्रकार उपरोक्तप्रयोजन के लिये इतने उपयोगी कार्य के लिए इतना पैसा जुटा लेना कुछ बहुत कठिन बात नहीं है। ऐसी व्यवस्था बन जानेपर शाखायें अपने कार्यक्षेत्र में दूर-दूर तक की देहातों को लेकर निरन्तर प्रचार का साधन जुटा सकती हैं। और उस प्रदेश में विचार क्रान्ति की एक महान भूमिका प्रस्तुत कर सकती हैं। इस कार्य के लिये सेवाभावी अवैतनिक वानप्रस्थी कार्यकर्त्ता न मिलें तो वेतन पर भी रखे जा सकते हैं। बिजली,सफर तथा कार्यकर्त्ता का वेतन मिलाकर भी प्रतिदिन का खर्च बहुत थोड़ा आवेगा और उसेजहां प्रदर्शन हों वहां की शाखा पारस्परिक सहयोग से बहुत ही सरलता पूर्वक जुटा सकती हैं। इस प्रकार यह प्रचार कार्य बहुतही आकर्षकमनोरञ्जक तथा हृदयग्राही लोक-शिक्षण के साथ निरन्तर चलता रह सकता है। एक कार्यकर्त्ता यदि साल के ३६५ दिनों में से केवल २५० दिन ही काम करे और २५० ही प्रदर्शन करे और यदि कम से कम एक हजार व्यक्ति ही इसे देखने सुनने हर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिन आते रहें तो २५० × १०००=ढाई लाख व्यक्तियों का प्रशिक्षण नियमित रूप से चलता रह सकता है । ऐसी १००० शाखायें भी यदि कटिबद्ध हो जांय तो अपना संदेश हरवर्ष २५ करोड़ जनता तक निरन्तर पहुँचता रह सकता है । सो भी उस जनता तक—जिसके पास पहुंचने के लिये किसी ने प्रयत्न नहीं किया और जो सच्चे अर्थों में ८० फीसदी भारत है । वोट की चाभी भी इसी जनता के पास है वह पलट जाय तो देश की प्रत्येक परिस्थिति में देखते-देखते क्रान्तिकारी परिवर्तन उपस्थित हो सकता है ।

(२) कला भारती का दूसरा कार्य है । संगीत शिक्षण । कहना न होगा कि संगीत में संवेदनाओं को भड़काने लोक-मानस को तरंगित करने—कोमल भावनाओं को छूने—और सोचने की शैली बदलने का आधार प्रस्तुत करने की अद्भुत क्षमता है । पिछले दिनों संगीत,वाद्य,गायन,अभियान का प्रयोग केवल कामुकता भड़काने में किया गया है । जो कुछ भी गाया गया है वह कुत्सा के नरक में जन-मानस को धकेल देने के लिये गाया गया है । ९५ प्रतिशत यही रही है कला की सीमा । आप कहीं संगीत सुनने जाइये, नृत्य देखिये नारी के प्रति पैशाचिक वितृष्णा उभारने वाले उपरोक्त प्रयोजन के अतिरिक्त और कुछ भी देखने सुनने को न मिलेगा । इस विभीषिका ने लोक-मानस का जितना पतन इस शताब्दी में किया है उसे एक दुर्घटना भरा अभिशाप ही कह सकतेहैं । माता सरस्वती को इस वेश्यालयमें से निकाल कर उसकी पुनीत स्थापना करनी है तो हमें कला को नई दिशा देनी होगी ।

अपना प्रयत्न इसी दिशामें है । तेजी से हम सृजनात्मक साहित्य जन-जन की जीभ से गुन-गुनाने और कानमें गूँजते हुए देखने का वातावरण विनिर्मित करना चाहते हैं इसलिये कला भारती के अन्तर्गत संगीत शिक्षा को इस ढङ्ग से रखा जा रहा है कि वह अति सरलता पूर्वक अति स्वल्प काल में अति विस्तृत क्षेत्र पकड़ सके । अत्यन्त मधुर १०ध्वनियों का चयन कर लिया गया है । चूँकि हमें भाव परक संगीत का आमूल-चूल नवीन सृजन करना है, इसलिये अपनी सीमित ध्वनियाँ स्वयं ही निर्धारित कर रहे हैं । राग-रागनियाँ हजारों हैं उन्हें सीखने के लिये दस-बीस जन्म चाहिए । हम इस जंजाल में नहीं पड़ना चाहते । अपना प्रयोजन लोक-शिक्षण है । कला की गहराई में उतरने का काम दूसरों के जिम्मे छोड़देंगे । आपत्ति धर्म की तरह अपने को तो सरल संगीत जो स्वल्प काल में अति व्यापक हो सकता हो इतना ही ध्यान में रखना है । सो इसके लिये १० ध्वनियाँ पर्याप्त समझी गई हैं । आवश्यकता हुई तो उसमें कुछ घटा बढ़ा भी सकते हैं । अपना संगीत विद्यालय जो १ जनवरी से आरम्भ होने जा रहा है । उपरोक्त ध्वनियाँ ही बजायेगा-सिखायेगा ।

१० ध्वनियों की तरह १० बाजे भी सीमित कर दिये गये हैं । जो सस्ते सर्व सुलभ और सीखने में सरल हैं उन्हें ही मान्यता दी गई है । १० ध्वनियों का गायन १० बाजों का बजाना, नृत्य की १० थिरकन इस प्रकार तीस पाठ्य-क्रम रखे गये हैं । और उन्हें सिखाने की अवधि ६ महीना निर्धारित करदी गई है । १ जनवरी से आरम्भ होने वाला सत्र ३० जून को समाप्त होगा और १ जुलाई से आरम्भ होने वाला ३१ दिसम्बर को । जरूरत समझी गई तो दोनों सत्रों के बीच में १५-१५ दिन के अवकाश भी रखे जा सकते हैं । पर इस वर्ष तो चूँकि आरम्भ का वर्ष है और हमें भी जाना है इसलिये अवकाश नहीं रखा गया है । इस वर्ष तो १ जनवरी और १ जुलाई से ही सत्र चलेंगे । जिनमें गायन वाद्य, नृत्य तीनों की इतनी शिक्षा दे दी जायगी कि निकले हुए छात्र अपने क्षेत्र में संगीत सम्मेलनों को—कविता सम्मेलनों को तथा दूसरे सांस्कृतिक कार्यक्रमों को चला सकने की योग्यता प्राप्त करलें और आवश्यकता पड़ने पर यहाँ का जैसा संगीत विद्यालय स्वयं भी अपने क्षेत्र में चलाकर वैसे कलाकार स्वयं तैयार करने में लग सकें जैसे कि यहां मथुरा में किया जा रहा है ।

(३) नाट्य मंच—हमारी तीसरी योजना है । पौराणिक, ऐतिहासिक, कथानकों को आधार मानकर ऐसे ड्रामे तैयार कराये जा रहे हैं जिनके घटनाक्रम में व्यक्ति निर्माण और समाज निर्माण के सारे सूत्र जुड़े हुए हों पात्रोंके मुख से जो सम्वाद कहलवाये जायेंगे उनमें विचार-क्रान्ति के सारे संकेतों को जोड़कर रखा जायगा । यह नाटक पूरे के पूरे संगीतमय होंगे । संगीत अपनी निर्धारित ध्वनियों के अन्तर्गत गाये जायेंगे । लगभग दो घण्टे में सम्पन्न हो सकने वाले यह नाटक देश भर में दिखाये जायेंगे । पहले उनका

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रचलन अपनी चार हजार शाखाओं में उनके वार्षिकोत्सवों के समय पर ४-४ दिन के लिए हर साल होते रहने की परम्परा पड़ेगी। पीछे इन्हें अन्यत्र भी लोगों की माँग के अनुसार दिखाये जाने की व्यवस्था चलेगी। इस प्रकार लोकरंजन का एक नया केन्द्र जिसके साथ लोक-शिक्षण की स्वस्थ प्रक्रिया जुड़ी हुई होगी—सारे देश को प्रभावित करेगा। यह नाटक मण्डलियाँ देहातों में अपना पूरा कार्य विस्तार करेंगी और शहर, कस्बों में भी उनकी सर्वथा उपेक्षा न होगी। रासलीला, रामलीला, नौटंकी आदि के माध्यम अभी भी जीवित हैं और वे पुराने ढर्रे के टूटे-फूटे ढर्रे पर अपनी गाड़ी चला रहे हैं तो अपना यह प्रयत्न देश-व्यापी क्यों न होगा ?

इस नाट्य मञ्च को अधिक सस्ता और सरल बनाने के लिए एक विशेष पद्धति का प्रयोग किया जायगा। सारा नाटक टेप रिकार्ड रहेगा। अभिनय नृत्य केवल मूक रहेंगे पात्र केवल शारीरिक हलचल करते और होट चलाते रहेंगे। आवाज पूर्व प्रस्तुत टेप रिकार्डर बोलेगा। दर्शक यही अनुभव करेंगे कि पात्र बोल रहे हैं। इस प्रकार पात्रों का गला मीठा होना आवश्यक न रहेगा और संगीत मंडली में कम से कम ५-७ व्यक्तियों की जरूरत पड़ती है वह न रहेगी। १ यन्त्र संचालक ५-६ अभिनय कर्त्ता कुल ६-७ व्यक्तियों की मण्डली बड़ी सरलता से अपना कार्य-क्रम प्रस्तुत करती रहेंगी। यह सस्ता तो पड़ेगा ही साथ ही अधिक आकर्षक इसलिए होगा कि इनमें मधुर कण्ठ और अधिक से अधिक आकर्षक वाद्य यन्त्र उच्च कलाकारों द्वारा नियोजित करके टेप कराये जायेंगे और उस बहुमूल्य एकत्रीकरण का लाभ सर्व साधारण को सहज ही मिलता रहेगा। कला भारती कक्ष में इस प्रकार की नाट्य व्यवस्था के शिक्षण का प्रबन्ध किया गया है। ताकि यहाँ से निकले छात्र सम्पूर्ण भारत की प्रचलित १४ भाषाओं में यही कार्यक्रम चलाकर जन-जन तक नव-जागरण का सन्देश पहुँचा सकने में समर्थ हो सकें।

(४) चित्रकला के माध्यम से चित्र प्रदर्शनियों की व्यवस्था संजोई जायगी। जगह-जगह मेले, समारोह या अन्य जन-समूह के एकत्रीकरण के अवसर पर ऐसी प्रदर्शनियों की व्यवस्था की जायगी जिनमें दर्शक मनोरंजन के साथ-साथ नवीन प्रेरणा और प्रकाश भी उपलब्ध करते रहें, चित्रकला सिखाने का प्रबन्ध तो शायद इस वर्ष न हो सके पर चित्र प्रदर्शनियाँ लगाने और चलाने की व्यवस्था भली प्रकार सिखा दी जायगी।

इस प्रकार यह चार पाठ्य-क्रमों में बँटा हुआ कार्य-क्रम जमाने की तैयारी में पूरी तत्परता इन दिनों बरती जा रही है। कला भवन लगभग तैयार होने को है। वाद्ययन्त्र, छाया चित्र प्रदर्शन में प्रयुक्त होने वाले यन्त्र खरीदे जा रहे हैं। टेप रिकार्डरों के आर्डर दिये गये हैं। चित्र प्रदर्शनियों के लिए चित्र बनाने का कार्य एक प्रसिद्ध चित्रकार ने अपने हाथ में ले लिया है। उत्सवों पर बजाये जाने वाले बैण्ड बाजे का शिक्षण भी जोड़ा गया है ताकि शिक्षार्थी आवश्यकतानुसार छोटे-बड़े आयोजनों की आवश्यकता पूरी करते हुए अपनी आजीविका भी कमाते रह सकें। पैसे की तङ्गी इन दिनों बहुत है, पर किसी प्रकार इस अति महत्वपूर्ण कार्य को उधार कर्ज लेकर भी खड़ा तो किया ही जाना था, सो किया भी जा रहा है।

साहित्य की भाँति ही संगीत अभिनय भी लोक-शिक्षण का अति उपयोगी माध्यम है। भगवती वीणापाणि सरस्वती के चित्रों में एक हाथ में पुस्तक, दूसरे में वीणा है। यह दोनों ही माध्यम समान रूप से उपयोगी हैं। आज तो उनकी नितान्त आवश्यकता है युग-निर्माण योजना अपने प्रबल प्रयासों से भगवती सरस्वती को धरती पर पुनः अवतरित कर मंगलमयी ज्ञान गँगा प्रवाहित करने में कटिबद्ध है। अपने भागीरथी प्रयत्न इसी दिशा में आगे बढ़ते चल रहे हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन उद्योगों में पूँजी लग सके तो सृजन की संभावना बढ़ेगी

अगणित उलझनों और समस्याओं से भरी इस सड़ी-गली दुनिया का काया कल्प करने के लिए प्रादुर्भूत नव-निर्माण आन्दोलन समय की सबसे बड़ी आवश्यकता पूर्ण करने जा रहा है। इसकी सफलता के लिए किया गया योग-दान विश्व मानव की सर्वोपरि सेवा साधनामें गिना जायगा, इसलिए जन-शक्ति,धन-शक्ति,धर्म शक्ति,राज-शक्ति, प्रतिभा उत्कण्ठा और श्रम शक्ति का अधिकाधिक उपयोग किया जाना चाहिए। हममें से प्रत्येक को यह सोचना चाहिए कि किन साधनों को किस प्रकार इस महान अभियान में नियोजित किया जा सकता है ? जो उपाय सूझ पड़ें वे कार्यान्वित किये जाने चाहिए। व्यक्ति की तृष्णा और विलासिता के लिए प्रयुक्त किये जाने वाले साधन यदि लोक मंगल के लिए लग सकें तो उन साधनों की सार्थकता ही मानी जायगी। व्यक्ति विलास और अहंकार, मोह और लोभ के पाप भर से बचेगा और सुदुद्देश्य का साधन मिल जाने से जन कल्याण का पथ-प्रशस्त होगा।

जिसका जितना समय, श्रम, धन, मनोयोग, ज्ञान, पुरुषार्थ विश्व-मानव की सेवा में लग गया उतना ही व्यक्ति और उसके साधन सराहनीय गिने जा सकेंगे। समय की पुकार है कि विवेकवान लोग कम से कम अपनी गुजर करें और जो कुछ उनके पास है उसका बड़ा हिस्सा लोक-हित के लिये समर्पण करदे। इस त्याग,बलिदान के आधार पर ही विश्व-कल्याण की आधार शिला रखी जायेगी। यदि हम बातून और कंजूस ही बने रहे—लोभ और मोह की परिधि से आगे कदम न बढ़ा सके तो इन नारकीय परिस्थितियों से छुटकारा न पाया जा सकेगा जिनमें आज-कल हम जल-भुन रहे हैं।

महाकाल ने जन-शक्ति और धन-शक्ति का आह्वान किया है। समय ने त्याग,बलिदान की माँग की है। इसका अनुकूल उत्तर दिया जाना चाहिए। हम जन-शक्ति पर्याप्त मात्रा में जुटायें और धन की कमी न रहने दें। अपनी रोटी में विश्व-मानव को भी हिस्सेदार बनाया जाना चाहिये और अपनी आवश्यकताओं में कमी करके भी लोक-मानस को परिष्कृत करने वाले साधनों की आवश्यकता पूरी करनी चाहिए। जो पूँजी दान के रूप में नहीं जा सके उसे उधार कर्ज के रूप में प्राप्त किया जाना चाहिए। व्यक्ति के पास पैसा सड़ता रहे या विकार अहङ्कार पैदा करता रहे उससे अच्छा यह है कि वह धरोहर के रूप में—ब्याज या लाभ पाने की सुविधा के साथ सृजनात्मक कार्यों के लिए दे दिया जाय। यह उधार या कर्ज भी महत्वपूर्ण प्रयोजन सिद्ध कर सकता है।

लिमिटेड कम्पनियाँ आजकल बड़े-बड़े व्यापार कर रही हैं। टाटा, बिड़ला, मफतलाल, सिंहानिया, डालमिया आदि के उद्योग संस्थान लिमिटेड कम्पनियों के आधार पर शेयरों से साझीदारों की पूँजी प्राप्त करके ही चल रहे हैं। शेयर होल्डर लाभ, बोनस, ब्याज आदि प्राप्त करते हैं और उस पूँजी से ऐसे उद्योग चल निकलते हैं जिनसे लाखों को रोजी रोटी मिलती है और जनता की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं। यह शैली उन उद्योगों के लिए अपनाई जा सकती है जो लोक-मानस को प्रभावित कर सकते हों। यदि प्रभावशाली अर्थ शास्त्री, उद्योगपति इस प्रकार का कार्य हाथ में लें तो भागीदार पूँजी सुरक्षित रखने-बढ़ाने के साथ-साथ समाज की महती सेवा कर सकते हैं और नव-निर्माण कार्य में महत्वपूर्ण हाथ बँटा सकते हैं।

साहित्य, शिक्षा, कला द्वारा लोक-मानस प्रभावित किया जाता है। यह सभी साधन आज उन पूँजीपतियों के हाथ में है जो अनुचित मार्ग से भी अपनी आमदनी बढ़ाने में संलग्न हैं। यदि इन सभी माध्यमोंको आदर्शवादी दृष्टि-कोण के लिये प्रयुक्त करने के लिए पूँजी मिल जाय तो उसका परिणाम आश्चर्यजनक हो सकता है। अच्छी चीज मुकाबले में न होने पर एकमात्र बुरी चीज ही सामने रह जाती है, फिर उसी का सर्वाधिकार रहता है। उसी की तूती बोलती है, उसे ही झकमार कर जनता अपनाती है। पर यदि मुकाबिले की अच्छी चीज उपलब्ध हो तो कोई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कारण नहीं कि सुरुचि को प्रोत्साहन न मिले। दुनिया में केवल ओछे और निकृष्ट स्तर के लोग ही नहीं रहते, सुरुचि भी जीवित है। यदि सुरुचि पूर्ण साहित्य, शिक्षण कला का अस्तित्व मौजूद रहे तो कोई कारण नहीं कि उसे अपनाया न जाय। जिस प्रकार दुष्ट साधनों ने जन-मानसविकृत किया है उसी प्रकार यदि सत्साधन प्रस्तुत किये जा सकें तो जन रुचि अवश्य ही परिष्कृत होगी और फलस्वरूप सत्प्रवृत्तियाँ बढ़ती पनपती दृष्टि गोचर होंगी।

ऐसे साहित्य की भारी आवश्यकता है जो उपन्यास, कथा, नाटक, कविता, विवेचना, बाल पुस्तकें, जीवनी, महिला साहित्य, स्वास्थ्य, मनोरंजन, राजनीति, धर्म, सदाचार, समाज दर्शन, अध्यात्म आदि विभिन्न विषयों को लेकर प्रेरणाप्रद प्रकाशन प्रस्तुत कर सके। हिन्दुस्तान में १४ मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं। हर भाषा में ऐसे साहित्य की जरूरत है। यदि उसे सस्ता, सुन्दर और उत्कृष्ट स्तर का बनाया जासके तो हर भाषा में उसे अपनाया और खरीदा जायगा। स्कूली किताबों को छोड़कर अन्य लोक रुचि के विषयों की पुस्तकें प्रायः ५ अरब की बिकती हैं। उनमें २० अरब की पूँजी लगी है। हम उसका सौवाँ हिस्सा भी यदि सत्साहित्यके प्रकाशन में लगा सकें तो उससे दुबुद्धि उत्पन्न करने वाली पुस्तकों का विष घटेगा और व्यक्ति एवं समाज को आदर्शवादिता की ओर बढ़ने की सम्भावना स्पष्ट होकर सामने आवेगी। यह उद्योग ऐसा है जिसमें करोड़ों रुपया लगाया जा सकता है और वह पूर्णतया सुरक्षित रहकर अपने जमा करने वालों को लाभ, यश और पुण्य तीनों ही प्रचुर मात्रा में दे सकता है।

शिक्षा गैर सरकारी चल सके इसकी बहुत गुंजायश है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग महिला विद्यापीठ, राष्ट्र भाषा प्रचार समिति आर्यकुमार परिषद जैसी संस्थाएँ बहुत समय से बिना सरकारी सहायता के अपना प्रचार एवं परीक्षा कार्य जारी रख सकी हैं और अपने प्रभाव से लाखों को प्रभावित करने में समर्थ हो सकी हैं। ऐसी शिक्षा और परीक्षा समितियाँ सार्वजनिक संगठन के रूप में चल सकती हैं अथवा बाइबिल सोसाइटी की तरह एक छोटा संघ भी उन्हें चला सकता है कोचिंग स्कूल, रात्रि पाठशालाएँ, बाल मन्दिर, फीस लेकर चलाये जा सकते हैं। व्यस्त व्यक्ति जो स्कूल नहीं जा सकते और अवकाश के समय प्राईवेटरूप से पढ़ना चाहते हैं ऐसे स्कूलों से पूरा लाभ उठा सकते हैं। फीस से उनका खर्च चल सकता है। टाइप शार्टहेण्ड रेडियो टेलीग्राफी आदि सिखाने वाली इन्स्टीटयूट हर जगह व्यक्तिगत प्रयत्नों से चल रहे हैं और अपने संचालकों की आजीविका चला रहे हैं।

गृह-उद्योग, कुटीर शिल्प तथा विभिन्न स्तर की शिक्षा का माध्यम लेकर हर जगह छोटे बड़े स्कूल खोले जा सकते हैं। इनमें आजीविका उपार्जन वाली शिक्षा भी रहे और जीवन निर्माण तथा समाज निर्माण के प्रशिक्षण भी जुड़े रहें। यह गैर सरकारी शिक्षा पद्धति देश में विकसित होने की पूरी-पूरी गुञ्जायश है। सरकारी स्कूलों में जगह कम पड़ रही है, दाखिला कठिन हो रहा है। फिर पढ़ाई में नाम पर लकीर भर पिटती है। छात्र ट्यूशन लगाने पर ही पास होते हैं। इससे पढ़ने वाले प्रसन्न नहीं। यदि प्राइवेट स्कूल ठीक तरह पढ़ाने की व्यवस्था बनालें तो छात्रों की कमी न रहेगी। यह शिक्षा व्यवस्था यदि कोई संगठित शिक्षा संस्थान हाथ में लेलें तो लगभग उतने ही छात्र मिल सकते हैं। जितने सरकारी स्कूलों में पढ़ते हैं। व्यक्तिगत प्रयत्नोंसे जब हर जगह ऐसे स्कूल चल रहे हैं तो कोई कारण नहीं कि सुव्यवस्थित योजना के अन्तर्गत देश भरमें एक स्तर पर चलाये गये यह शिक्षा संस्थान सफल न हों।

परीक्षाएँ सरकारी भी, यह छात्र दे सकते हैं और गैर सरकारी—बिना मान्यता प्राप्त परीक्षाओं का प्रचलन भी हो सकता है। सरकारी नौकरी तो प्रमाण-पत्र प्राप्त लोगों को भी नहीं मिलती। फिर योग्यता ही सबसे बड़ा प्रमाण पत्र है। पास शुदा इन्जीनियर से अनुभवी मिस्त्री यदि ठीक तरह तैयार किया गया हो तो अधिक सफल हो सकता है। अनुभवी कारीगर गैरसरकारी स्कूलों में अधिक अच्छी तरह ढल सकते हैं। ये साथमें जीवन-निर्माण और समाज-निर्माण का शिक्षण जुड़ा रहने—छात्रावास व्यवस्था अनिवार्य रहने से इनमें ऐसे छात्र निकलेंगे जो केवल आजीविका ही नहीं कमावें वरन् राष्ट्र का सफल नेतृत्व भी कर सकें।

इस प्रकार का शिक्षा तन्त्र खड़ा करें उसकी शाखा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रशाखाएँ स्थापित करने के लिए शिक्षा तंत्रव्यावसायिक आधार पर भी खड़ा किया जा सकता है। छात्रावासों की लागत बोर्डिंग फीस से निकल सकती है। होस्टल अपने आप में स्वावलम्बी होंगे,पाठ्य पुस्तकें कुछ लाभ ही देंगी, शिक्षा की फीस से अध्यापकों का खर्च चलेगा, उद्योग और शिल्प सिखाने का खर्च वहाँ विनिर्मित वस्तुएँ तथा की हुई मरम्मतें निकाल लेंगी। इस प्रकार यह शिक्षा क्रम एक प्रकार से स्वावलम्बी होगा। उसे दान दक्षिणा के ऊपर निर्भर रहने की अपेक्षा व्यवसायात्मक स्तर पर भी चलाया जा सकता है। लिमिटेड कम्पनियों के ढङ्ग के संस्थान शिक्षा योजना को देश-व्यापी एवं स्वावलम्बी बना सकते हैं। इसमें लगी हुई पूँजी डूबने की कोई आशङ्का नहीं है।

कला क्षेत्र में व्यवसाय पद्धति पूर्णतया सफल हो सकती है। फिल्म उद्योग में अरबों रुपया लगा है। लोक-मंगलका प्रयोजन पूरा कर सकने वाली फिल्मों में यदि पूँजी लगाई जा सके तो वह उद्योग भी अपेक्षाकृत लाभदायक ही सिद्ध होगा और लाखों करोड़ों व्यक्तियों को नव-जीवन की प्रेरणा देगा। अपना निर्माण अपेक्षाकृत सस्ता पड़ेगा। इन दिनों नव नर्तक, अन्धाधुन्ध पैसा लेते हैं। इनके स्थान पर स्वयं सेवक शिक्षित किये जा सकते हैं और उन सेवा-भावी कलाकारों को प्रशिक्षित कर सिनेमा के अतिरिक्त अन्य कामों में भी नियुक्त किया जासकता है। वेतन पर रखे हुए कलाकारों की सेवा साधना सस्ती भी पड़ेगी और उनकी उच्च भावना के अनुरूप प्रभावशाली एवं आदर्शवादी भी होगी। अनावश्यक अपव्यय से बचाकर ऐसे फिल्मअपेक्षाकृत बहुत सस्ते बन सकते हैं और कला का स्तर भी ऊँचा रख सकते हैं।

नैतिक क्रांति, सामाजिक क्रान्ति और विचार क्रान्ति के प्रयोजन से बनाये गये उच्च भावनाओं से ओत-प्रोतफिल्म जन-मानस को प्रभावित करने में अपनी अनुपम भूमिका प्रस्तुत कर सकते हैं।

देहातों के लिये चलते-फिरते १६ मिली मीटर के सिनेमा तन्त्र खड़े किये जा सकते हैं। वे हलके होने के कारण आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान को जासकेंगे एक बैलगाड़ी सारा सामान इधर से उधर ढोकर ले जा सकती है। प्रोजेक्टर, जनरेटर, टेपरिकार्डर, लाउडस्पीकर चार यन्त्र पंडाल और बैलगाड़ीतनी चीजें लगभग १५ हजार रुपये की पूँजी से बनसकती हैं। हर सिनेमा प्रतिदिन १००० को दिखाया जाय तो महीने में ३० हजार साल में ३।। लाख को अपनी बात समझा सकेगा। ऐसे १०० सिनेमा देश भर में भ्रमण करने के लिए काफी हो सकते हैं। इनमें १५ लाख की पूँजी लगेगी। इनके लिए फिल्म अपने ढंग की बनाई जायें और उनमें सम्वाद गायन टेप रिकार्डर द्वारा अलग से बनाये जाँय तो ऐसा फिल्म संस्थान भी १५ लाख की पूँजी से चल सकता है और उन सभी १००चलते फिरते सिनेमा घरों की आवश्यकता पूरी कर सकता है। ३० लाख की यह पूँजी करोड़ों मस्तिष्कों को इधर सेउधर पलट सकती है।

भारत देहात में रहता है। छोटे देहात में जहाँ अभी सिनेमा पहुँचा नहीं है। १६ मिली मीटर के फिल्म भी कम महत्व के सिद्ध नहीं होंगे। बोलते फिल्म मँहगे पड़ते हैं। यदि फिल्म बिना बोलते बनाये जायें और सम्वाद तथा गायन अलग टेपरिकार्डरों से भरे रहें, लाउड्स स्पीकारों से सुनाये जाँयतो उस क्षेत्रके लिये यह विधान भी कम आकर्षक न रहेगा। वहाँ इसका भी स्वागतकिया जायगा। और इतने टिकट आसानी से बिकते रहेंगे। जिसमें इस प्रदर्शन का खर्च निकलता रहे। यह उद्योग छोटे सिनेमा के रूप में एक नई दिशा ही दे सकता है और जिस देहाती क्षेत्र में अभी प्रचार के अन्य साधन नहीं पहुँचे हैं, इसके द्वारा बहुत बड़ा काम किया जा सकता है।

नाटक का मंच सिनेमा ने छीन लिया था अब पुनः उस ओर लोक रुचि सजग हो रही है। रासलीला, रामलीला, नौटङ्की, स्वांग आदि अभी जीवित हैं। यदि प्रेरणाप्रद और सुरुचि पूर्ण उद्देश्य को लेकर इस मंच को उद्योग के रूप में हाथ में लिया जाय तो उसका प्रभाव भी जनता पर कम न पड़ेगा।

कला प्रचार में काम आने वाले अनेक यन्त्र और साधन सस्ते मूल्य पर—किस्तों पर सर्व साधारण की संस्थाओंको मिल सकें इसके लिये ऐसे निर्माणतन्त्र खड़े किये जा सकते हैं जिसमें मेजिक लालटेन, स्लाईड प्रोजेक्टर, लाउडस्पीकर, टेपरिकार्डर, स्लाइड आदि बनने लगें। संगीत के उपकरण, पर्दे, बाजे आदि का निर्माण यदि बड़े पैमाने पर किया जाय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चे तो सस्ते भी बहुत पड़ेंगे और आजीविका भी कितने ही कारीगरों को मिलेगी।

लाउडस्पीकर के माध्यम से बजने वाले ग्रामोफोन के रिकार्ड अभी भी हर उत्सव आयोजन में—दुकानों पर बजते रहते हैं। उनमें प्रेरणाप्रद संगीत भरे हों तो उनका बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ सकता है। इनका निर्माण बड़ी योजना के साथ किया जाय तो भी जन-मानस को प्रभावित करने का एक नया मार्ग मिल सकता है इसमें तब पूँजी भी कहाँ डूबने वाली है।

चित्र प्रकाशन आज की एक महती आवश्यकता है। दिवाली जैसे त्यौहारों पर हर कोई घर सजाने के लिये चित्र खरीदता है। व्यापारियों का काम कलेण्डर छपाये बिना नहीं चलता। सुरुचि पूर्ण प्रेरणाप्रद चित्र ढूँढ़े नहीं मिलते इस अभाव की पूर्ति के लिए कितने ही समर्थ चित्र प्रकाशन संस्थान चल सकते हैं।

इसके अतिरिक्त भी अनेक ऐसे उद्योग ढूँढ़े जा सकते हैं जो सीधे लोक-मानस को प्रभावित करते हों। बच्चों की आँख से दिखने वाली छोटी सिनेमा तस्वीरें, बच्चों को दिखाये जाने वाले चित्रों के फोक्स वक्स आदि कितनी ही चीजों से प्रेरणा भरी जा सकती है। प्रदर्शनियों के रूप में दिखाये जाने वाले बड़े साइज के रंगीन चित्र नकशे आदि भी इन प्रयोजनों के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

हर विषय की पत्र-पत्रिकाएँ यों साहित्य के अन्तर्गत ही आती हैं पर यदि उन्हें अलग से गिना जाय तो उसे भी एक अलग उद्योग के रूप में विकसित किया जा सकता है और हर विषय के पत्रों को हाथ में लेकर जन-मानस को दिखा देने से अति महत्वपूर्ण सफलता पाई जा सकती है। इस उद्योग के अन्तर्गत छपाई के प्रेसों की स्थापना आदि उनके लिए टाइप ढालने तथा मशीनें बनाने का प्रक्रिया भी जोड़ी जा सकती है।

ऊपर जिन उद्योगों की चर्चा की गई हैं वे सभी ऐसे हैं जो व्यक्तिगत प्रयत्नों से सफलता पूर्वक चलाये जा रहे हैं और अच्छी आजीविका दे रहे हैं। इनमें से एक भी ऐसा नहीं है जिसके बारे में न चलने की आशङ्का की जा सके। यह सभी लाभदायक भी हैं और चलने वाले भी। हमें इनके सम्बन्ध में विचार इसलिये करना पड़ रहा है कि यह सभी उद्योग जन-मानस को प्रभावित करने की क्षमता से भरे हुए हैं। इन दिनों जिन लोगों के हाथों में है वे उनका उपयोग इस प्रकार कर रहे हैं जिससे लोक-मानस का अधःपतन ही होता है। इस गिरावट को उठाने के लिये यही उचित है कि इन साधनों को उत्तरदायी लोक-सेवी हाथों में लाया जाय और वे उनका इस तरह उपयोग करें जिससे लोक-मंगल की सम्भावनाएँ उज्वल होती चली जांय।

पूँजी लोगों के पास है। उद्योगों की भी तलाश की ही जाती है। फिर क्यों न उन उद्योगों को हाथ में लिया जाय जिनसे 'गो रस बेचन हरि मिलन' की कहावत पूरी होतीहो आजीविका उपार्जन के साथ-साथ जन-कल्याण का साधन बनता हो तो इसे स्वर्ण सुयोग ही कहा जाना चाहिए। इन उद्योगों को बड़े या छोटे पैमाने पर पूँजी के अनुपात से आरम्भ किया जा सकता है और उससे हजारों लाखों व्यक्तियों के लिये रोजी रोटी का साधन जुटाते हुए उस श्रम को उपयोगी दिशा में नियोजित किया जा सकता है।

आवश्यकता इस बात की है कि ऐसे अनुभवी लोग आगे आयें जिनमें उद्योगों को चलाने की क्षमता है। आवश्यकता ऐसे लोगों की है जिनके पास पैसा है उसे काम में लगाना चाहते हैं, सुरक्षित रखना चाहते हैं और साथ-साथ उचित लाभांश पाकर सन्तुष्ट हो सकते हैं। और साथ ही ऐसा कार्य करना चाहते हैं जो दूसरों को ऊँचा उठाने का—आगे बढ़ाने का प्रयोजन सिद्ध करे। ऐसे विचारशील लोगों को उपरोक्त उद्योगों में पूँजी लगाना स्वार्थ और परमार्थ दोनों ही दृष्टि से बड़ा महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। नव-निर्माण अभियान में तो उससे स्पष्टतः बड़ी सहायता मिलेगी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सक्रिय सदस्यों की सुगठित सृजन सेना

देवता यद्यपि दिव्य गुणों से ओत-प्रोत थे, पर वे सदा हारते इसलिये रहे कि उन्होंने संघ शक्ति की उपेक्षा की। मिल-जुलकर काम करना नहीं सीखा और आक्रमण की विपत्ति जब तक सिर पर नहीं आ गई तब तक पूर्ण सजग होकर बढ़ती हुई असुरता का उन्मूलन करने के लिए अग्रसर नहीं हुए। देव गुणों की-सात्विकता और सज्जनता की-अधिक मात्रा होना जीवधारी का सराहनीय सौभाग्य है पर इतने से ही काम नहीं चल जाता! उस सौभाग्य की रक्षा कर सकने योग्य सजगता, समर्थता और हिम्मतभी होनी चाहिए। इसके अभाव में देवत्व भी गरिमा रहित हतप्रभ सिद्ध होता है। इस अभाव के कारण देवता बार-बार असुरों से हारते और सताये जाते रहे।

असुरता के साथ जुड़े हुए तमोगुण को निन्दनीय ही कहा जायगा। दुष्टता का पतन निश्चित है। पाप का अन्त दुःखद ही होता है। सृष्टि व्यवस्था के अनुसार असुरता को हारना ही चाहिए, पर इतिहास बताता है कि हर देवासुर संग्राम के आरम्भ में असुर जीतते और देव हारते रहे हैं। इस विपर्यय का एक ही कारण है कि असुरों ने संघबद्धता का महत्व समझा, वे संगठित रहे, मिल-जुलकर काम किया और अपनी सामर्थ्य बढ़ाने के लिये कठोर परिश्रम करने से चूके नहीं। हिम्मत को उन्होंने अपना सहचर बनाया और जो करना था वह बिना आलस्य प्रमाद किये, यथा समय कर गुजरे।

असुरों को जिताने का श्रेय उनकी दुष्टता या पाप वृत्ति को नहीं मिल सकता। उसने तो अन्ततः उन्हें विनाश के गर्त में ही गिराया और निन्दा के नरक में जलाया। विजय चाहे आरम्भिक या क्षणिक ही क्यों न रही हो पर वह उन्हें इसलिए मिली कि उन्होंने संगठन, साहस और पराक्रम को अपना सहचर बनाया और अवसर चूकने का आलस्य प्रमाद नहीं किया। इतने अंशों में जो सजग समर्थता उनमें थी उसी को देवत्व की एक नन्हीं किरण कहा जा सकता है, उतने ही अंशों में वे विजेता भी होते रहे हैं।

देवों की पराजय का दोष उनके देवत्व अथवा सद्गुणों को नहीं दिया जाना चाहिए। उन विशेषताओं के कारण तो वे स्वर्ग लोक के अधिपति, लोक पूजित, यशस्वी और अजर-अमर बन सके हैं। इन्हीं विभूतियों के कारण वे अन्ततः विजयी बने और अपनी सत्ता पुनः प्राप्त कर सकने में सफल होते रहे है। पराजय का दोष तो उन थोड़े अंशों में पाई जाने वाली उस असावधानी और अदूरदर्शिता को ही दिया जायगा जिसके कारण उन्होंने परस्परिक संगठन, सहयोग को सुदृढ़ बनाने और अवाँछनीयता से आरम्भ में ही निपटने की आवश्यकता ही भुला दी, जब तक उनने अपनी यह भूल सुधारी नहीं, तब तक उन्हें पराजय, उत्पीड़न और अपयश ही मिलता रहा।

पौराणिक गाथा के अनुसार एकबार अति संत्रस्त और परास्त हतप्रभ देवता प्रजापति के पास अपनी व्यथा गाथा सुनाने और सहायता प्राप्त करने गये तो उन्हें संगठन और साहस का ही मन्त्र पढ़ाया गया। प्रजापति ने देवताओं को इकट्ठा कर उनकी शक्तियाँ इकट्ठी कीं और उस एकत्रीकरण से देवी दुर्गा को विनिर्मित किया। उस संघ शक्ति दुर्गा ने असुरों को पछाड़ा और देवताओं को बताया कि वे अपनी सुरक्षा के लिए संघ शक्ति की आराधना को देवत्व का अनिवार्य अंग मानकर चला करें।

आज देवत्व हारता और असुरत्व जीतता दीखता है। इसका एकमात्र कारण यह है कि सात्विकता और सज्जनता को पर्याप्त मान लिया गया और बढ़ते हुए असुरत्व से आरंभ में ही जूझने के लिये आवश्यक सतर्कता और संगठन की उपेक्षा की जाती रही है। यह भूल जब तक सुधारी न जायगी देवत्व को पग-पग पर अपमानित होना पड़ेगा और पराजय का आये दिन मुँह देखना पड़ेगा। इस अवांछनीय स्थिति से उबरने का एक ही उपाय है कि सज्जनता अकेली न रहे वरन् उसके साथ संगठन, सतर्कता और समर्थता को भी जोड़ रखा जाय।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह युग संगठन का है। 'संघ शक्ति कलौयुगे' के सूत्र में वर्तमान काल की सर्वोपरि शक्तिका रहस्योद्घाटन किया गया है। बुद्धिबल, शस्त्रबल, धन बल का अपना महत्व है पर उनका लाभ विशेषतः व्यक्तिगत मर्यादाओं तक ही सीमित रहता है। जहाँ तक जन-समाजका सम्बन्ध है उसमें जन-शक्ति ही प्रधान मानी गई है। भगवान् राम ने लङ्का विजय में रीछ,वानरों का सहयोग लेकर और भगवान् कृष्ण ने गोवर्धन धारण में ग्वाल-बालों की सहायता पाकर सर्व साधारण के सामने इसी तथ्य का उद्घाटन किया था कि लोक-मङ्गल के विशाल जन-समूह को प्रभावित करने वाले बड़े काम जन सहयोग के आधार पर ही सम्पन्न हो सकते है। हम यह प्रत्यक्ष देखते है कि वोट देने की छोटी सी प्रक्रिया राज पलट देने और सिंहासन हिला देने में किस प्रकार सफल और समर्थ हो सकती है।

सरकारें और कुछ नहीं जनता की स्थापित और संचालित एक संस्था मात्र हैं। ऐसी अनेक संस्थाएँ जनता ही चलाती है। धर्म-तन्त्र को ही लीजिये खरबों रुपये की पूँजी से खड़ी हुई—हर साल अरबों खर्च करने वाली यह संस्था जनता के ही सहयोग, समर्थन और अनुदान से चल रही है। ५६ लाख संत बाबाजियों की विशाल जन शक्ति का निर्वाह जन-शक्ति के आधार पर ही होता है। अर्थतन्त्र को गतिशील रखने वाले कल कारखाने, विविधविधि यन्त्र वाहन, मनोरंजक आदि का अस्तित्व जनता के सहयोग, समर्थन पर ही टिका हुआ है। यदि लोक रुचि उनमें से किसी भी कार्य से हट जाय तो उनके समाप्त होने में तनिक भी देर न लगे। लोक रुचि में तनिक भी बदलाव आते ही अनेकों क्रिया-कलाप ठप्प हो जाते हैं और अनेकों प्रवृत्तियाँ नये कलेवर में देखते-देखते खड़ी होती और आकाश चूमने लगती हैं। मनुष्यत्व के ज्ञाता जानते हैं कि जनता का महा दैत्य कितना विशाल—कितना सबल और कितना समर्थ है। उसकी अकूत क्षमता का कोई लेखा—जोखा नहीं लिया जा सकता।

युग परिवर्तन एवम् नव-निर्माण की हमारी सारी कल्पना—सारी योजना—जन सहयोग पर अवलम्बित है। ज्ञान-यज्ञ के माध्यम से जन-जागरण का अपना प्रथम प्रभाव इसी दृष्टि से है। जन-मानस तक विचार क्रान्ति का प्रकाश पहुंचाकर हम सर्व साधारण को 'सही जानने' और 'सही सोचने' में समर्थ बनना चाहते है। इतना बन पड़ा तो अगला कदम 'सही करना' नितान्त सरल हो जायगा। विचारणा और क्रिया-कलाप में से अवांछनीयता निकल जाय—विवेक एवम् औचित्य को ही प्रथम मिलने लग जाय तो फिर स्वर्गीय सुख शान्ति की आनन्द उल्लास भरी परिस्थितियाँ उत्पन्न होने में कुछ भी देर न लगेगी। अविवेक के स्थान पर विवेक की और अनौचित्यके स्थान पर औचित्य की स्थापना ही वह आधार है जिससे युग-निर्माण का असंभव दीखने वाला प्रयोजन सहज ही संभव हो सकता है।

जिन लोगों ने ज्ञान—यज्ञ के प्रकाश में विवेक और औचित्यका महत्व स्वीकार कर लिया है उन्हें युग परिवर्तन की अग्रिम पंक्ति में सृजन सैनिकों की तरह सहज ही खड़ा किया जा सकता है। इस दृष्टि से युग-निर्माण योजना परिवार के परिजनों को इस प्रकार के संगठन के लिए सबसे उपयुक्त समझा जा सकता है। जिन्हें लम्बी अवधि से अखण्ड-ज्योति, युग-निर्माण पत्रिकाएं तथा हमारा साहित्य निरन्तर पढ़ने को मिलता रहा है जो इस विचारणा में रुचि लेते रहे हैं उनमें प्रगति शीलता के तत्व असाधारण मात्रा में सञ्चित होने की कल्पना कोई भी कर सकता हैं। विखराब से शक्ति बर्बाद होती रहती है पर यदि उसे संगठित कर दिया जाय तो उसकी क्षमता आश्चर्य चकित कर देने वाले रूप में सामने आ सकती है। और उस शक्ति को वर्तमान काल की कुत्साओं तथा कुण्ठाओं से भरे दम घुटने जैसे वातावरण को सन्तोष की साँस ले सकने वाली परिस्थितियों में बदला जा सकता है।

अब हम यही करने जारहे हैं। जिनने हमारी विचारधारामें रस लेना और समर्थन देना आरम्भ किया था वे ही धीरे-धीरे हमारे इर्द-गिर्द इकट्ठे होते चले गये। कुछ हमारी तपश्चर्या साधना से अपने कष्टों को हलका करने और सुविधाओं को बढ़ाने की दृष्टिसे भी आये और आकर्षित हुए थे। उन्हें हमने अपनी सेवा परिधि में सम्मिलित रखा पर परिवार में सम्मिलित नहीं किया। अध्यात्म में उपभोग के लिए गुंजायश कम और अनुदान की माँग अधिक हैं। जो लेना बहुत चाहते हैं देने से कतराते हैं वे आध्यात्मिकता को कसौटी पर खोटे सिक्के माने जायेंगे। उदारता, मानवता और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आध्यात्मिकता मनुष्य को लोक-मङ्गल के लिए बढ़-चढ़कर अनुदान देने और अपने कषाय कल्मषों को धोने की ही प्रेरणा दे सकती है । आदर्शवादिता और उत्कृष्टता की ओर ही सद्विवेक प्रेरित करता है सो जो लोग अपने विचारों से प्रभावित होकर समीप आये उनने लोक-मङ्गल के लिये कुछ अनुदान देने के लिए उत्साह ही प्रकट किया । भगे वे लोग जो लूट-खसोट की प्रवंचना में उलझे रहने के अभ्यस्त थे और देवता भगवान, गुरु सन्त, जो भी पकड़ में आ जाय उसी से उल्लू सीधा करने के ताने-बाने बुनते थे । अब जब से हमने लोक-मङ्गल के लिए अपने स्वर ऊँचे करने शुरू किये हैं तब से अनुपयुक्त व्यक्ति ही साथ रह गये हैं । जो थोड़े बहुत जंजाली शेष थे वे अब परीक्षा की घड़ी सामने आ जाने पर इधर-उधर मुँह छिपाने और धीरे-धीरे खिसकने लगे हैं । परिवार में संख्या इन दिनों कुछ घटी हो यह हो सकता है पर निश्चत रूपसे उसका स्तर बढ़ गया है । एक वाक्य में यों कहा जा सकता है कि विदाई के इन अन्तिम दिनों में हमारे साथ केवल वे लोग रह गये है जिन्हें 'ज्ञान-पुत्र' कहा जा सकता है और जिनसे नव-निर्माण के पुण्य प्रयोजन में कुछ सहयोग मिलने की आशा की जा सकती है ।

अपने परिवार के सामने एक और कसौटी इन दिनों रखकर उनकी सक्रियता को जांचा गया । प्रसन्नता की बात है कि इस बार भी अधिकांश खरे ही सिद्ध हुए । विचारों में रुचि लेना, उनका समर्थन करना और यथा सम्भव अपनाना तो देर से चल रहा था । अब जरूरत इस बात की पड़ी कि यह देखा जाय कि उन विचारों को कार्य रूप में परिणित करने का साहस कितने लोग करते हैं । इसकी परख एक घण्टा समय और दस पैसा' नित्य देने की कसौटी पर की गई और जो उस पर खरे उतरे उनके बारे में यह मान्यता बना ली गई है कि हमारे ६० वर्षके समुद्र मंथन का नवनीत इतना भर है । समुद्र मंथन का घोर परिश्रम करके देवताओं ने १४ रत्न प्राप्त किये थे । हम भी एक प्रकार से विशाल जन-समूह में अपने विभिन्न क्रिया-कलापों द्वारा एक प्रकार का समुद्र मंथन ही करते रहे हैं । उसका निष्कर्ष देखने के लिए लोगों की उदारता और साहसिकता ही जानी जा सकती थी सो उपरोक्त कसौटी आवश्यक हो गई । इससे हमें वस्तुस्थिति समझने में बहुत सरलता हुई है ।

इस सक्रिय परिवार को संगठित बनाना आवश्यक था । क्योंकि संगठन बिना शक्ति उत्पन्न नहीं होती । बिखरे धागे टूटते फूटते भर रहेंगे । उनका मजबूत रस्सा तभी बनेगा जब इकट्ठे होने की व्यवस्था बन जाय । संघ शक्ति के महत्व को समझते हुए यह निश्चय किया गया कि अपने परिजनों को संघबद्ध करके एक शक्तिशाली ऐसी 'यूनिट' के रूपमें परिणत किया जाय जिसे युग परिवर्तन के महान अभियान की आधार शिला के रूप में प्रस्तुत किया जा सके । सो ही इन दिनों किया जा रहा है ।

समय और पैसे नित्य देने वाली बात चल तो बहुत दिन से रही थी पर अब उसे बिलकुल नियमित व्यवस्थित क्रमबद्ध कर दिया गया है । पैसे जमा करने वाले ज्ञान-यज्ञ के धर्मघट बना दिये गये हैं । बच्चे पैसे जमा करने के लिए जैसे रंग–बिरंगे डिब्बे--गुल्लकें–स्तेमाल करते हैं यह लगभग उसी तरह के हैं । अपने पूजा स्थान पर इन्हें रख लिया जाय और नित्य दस पैसे डालने वाली बात को नित्य-कर्म मान लिया जाय तो नियमितता और निरन्तरता ठीक तरह चलती रह सकती है । यह ज्ञान घट इस दृष्टि से बहुत ही उपयुक्त सिद्ध हुए हैं । अधिकांश परिजनों ने उन्हें मँगा लिया है जिनने नहीं मँगाये हैं वे सम्भवतः इस महीने जरूर मँगा लेंगे । इस दस पैसे से जो युग-निर्माण साहित्य आता रहेगा उसे स्वयं पढ़ने, अपने परिवार को पढ़ाने, सम्बन्धित लोगों तक पहुँचाने में एक घण्टा रोज लगाने के लिए कहा गया है । एक व्यक्ति कम से कम दस को यह विचार धारा पहुँचावे, पढ़ावे या सुनाये । दोनों ही क्रम नियमित रूप से चल पड़ें तो ज्ञान-यज्ञ की प्रौढ़ता आँकी जा सकती है । प्रसन्नता की बात है कि अब यह प्रक्रिया अधिक व्यवस्थित रूप से चल पड़ी ।

इन सक्रिय परिजनों को संगठित करना आवश्यक था सो उन्हें शाखाओं के रूपमें परिणत कर रहे हैं । जहां जिनने ज्ञान घट रखे हैं उन्हें सक्रिय सदस्य घोषित किया है । अन्य लोग सहायक, सहयोगी कहे जायेंगे । संगठन के प्रधान अंग सक्रिय सदस्य ही रहेंगे और शाखा में सहायकों और सहयोगियों की भी सूची रहेगी और उन्हें अधिक प्रोत्साहन देकर निरन्तर समय और पैसा लगाने वाले सक्रिय वर्ग में सम्मिलित होने के लिये प्रोत्साहित किया जाता रहेगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सक्रिय सदस्यों की शाखा का पदाधिकारी एक ही रहेगा—कार्यवाहक—इसे व्यवस्थापक या भार वाहक भी कह सकते हैं। जो अधिक सक्रिय, उत्साही, निरभिमानी समय देने वाला और मधुर स्वभाव का हो, उसी को उस पद पर नियुक्त किया जायगा। यह नियुक्ति मथुरा केन्द्र से होगी वह केन्द्र का प्रतिनिधि माना जायगा। पर उसकी नियुक्ति सक्रिय सदस्यों के परामर्श से ही की जायगी। बस, एक ही पदाधिकारी पर्याप्त है। बहुत से सभापति, उप सभापति, मन्त्री, उप मन्त्री कोषाध्यक्ष, निरीक्षक नियुक्त करके व्यर्थ ही झूठी वाहवाही के लिये ललचाना और फिर परस्पर सिर फुटौअल करना हमें बिल्कुल पसन्द नहीं। इसी चुनाव बाजी ने इन दिनों सभी उपयोगी संस्थाओं को गृह-कलह का अखाड़ा बना दिया है और मित्रों को शत्रु बना देने का द्वार खोल दिया है। हमें इस जंजाल में पड़ने की जरूरत नहीं है। किसी कारणवश कार्य वाहक बदलना पड़ा तो उसे सदस्यों के परामर्श के अनुसार बदल देंगे। एक वर्ष पीछे सदस्यगण उस नियुक्ति की पुष्टि करते रहेंगे। यदि किसी कारण वश परिवर्तन करना पड़ा तो किया जायगा अन्यथा अच्छा यही है कि कार्यवाहक बहुत समय तक एक ही बना रहे।

इन दिनों प्रयत्न यह चल रहा है कि (१) जहाँ-जहाँ ज्ञान घट अभी स्थापित नहीं हुए हैं वहाँ जल्दी से जल्दी स्थापित हो जाँय। किसी आते-जाते के हाथों अथवा डाक से उन्हें मँगाकर चालू कर दिया जाय। (२) जहाँ बहुत थोड़े ज्ञान घट गये हैं वहाँ शेष सक्रिय सदस्यों से मिलकर उनकी आवश्यकतानुसार और मँगा लिये जाँय और स्थापना करके सदस्यों की बड़ी से बड़ी टीम पूरी करली जाय। (३) जिनने ज्ञान घट रखे हैं वे इकट्ठे होकर एक 'कार्य वाहक' की सिफारिश भेजें ताकि उनकी नियुक्ति यहाँ से कर दी जाय। और शाखा कार्य नियमित रूप से चलने लगे।

यह कार्य-वाहक ही हर महीने झोलों की जमा राशि इकट्ठी करके और उसी से रेल द्वारा इकट्ठा साहित्य मँगाकर इन सब सज्जनों के पास पहुँचाया करेंगे। इसके अतिरिक्त समय-समय पर शाखा सदस्यों की गोष्ठियाँ बुलाने और रचनात्मक कार्यों के लिये व्यवस्था जुटाने में वे ही अग्रगामी रहा करेंगे। उत्साही कार्य वाहक सचमुच बहुत कम कर सकते हैं। अभिनव शिक्षा पद्धति की रात्रि पाठशाला तथा दूसरी तरह के आयोजन उत्साही लोग मिल-जुलकर सहज ही खड़े कर सकते हैं और चलाते रह सकते हैं।

पत्रिकाओं और विज्ञप्तियों का मूल्य लागत से कम है इसलिये उन पर कुछ कमीशन दिया जा सकना संभव नहीं। पुस्तकों में जो राई रत्ती गुंजायश है वह शाखाओं के खर्च के लिये अनुदान के रूप में दी जाती रहेगी। पुस्तकों पर २५ प्रतिशत कमीशन शाखाओं को मिला करेगा। रेल या डाक से भेजने का खर्च उनके जिम्मे पड़ेगा। इस प्रकार कमीशन में से खर्च कटकर जो बचेगा वह शाखा के लिए आवश्यक उपकरण जमा करने में लगाया जाना चाहिए। सामान्य खर्च के लिए सदस्यगण परस्पर मिल-जुलकर ही कुछ इकट्ठा करते रहा करें। अगले दिनों कला भारती योजना के अन्तर्गत कितने ही उपकरण तैयार कराये जा रहे है। चित्र प्रदर्शनियों की स्थापना के लिए २५ बड़े साइज के चित्र बनाये जा रहे हैं। छाया चित्र दिखाने के स्लाइड और प्रोजक्टर बनेंगे। लाउडस्पीकर हर जगह चाहिये। नवयुग के सन्देश वाहक १ ग्रामोफोन रिकार्डों पर ३० गाने तैयार कराये जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त भी ऐसी कितनी ही संगीत वाद्य आदि की वस्तुएँ है जो शाखा के लिए बड़े उपयोग की हैं। धकेल गाड़ियों से चल पुस्तकालय हर शाखा को अपने क्षेत्र में चलाना चाहिये। ऐसी वस्तुएँ तपोभूमि में बन सकें या मिल सकें उसका प्रबन्ध किया जा रहा है। इस प्रकार के प्रयोजनों के मद्दे वह कमीशन वाला पैसा भी काम आ सकता है वैसे वह थोड़ा ही होगा जरूरत तो इसके लिये बहुत अधिक ही पड़ेगी। फिर भी न कुछ से कुछ अच्छी वाली कहावत के अनुसार इससे भी शाखा के किन्ही न किन्ही कार्यों में कुछ न कुछ मदद ही मिल सकती है।

शाखाओं के संगठन कार्य और उनके कार्य वाहकों की नियुक्तियाँ इन दिनों बहुत तत्परता के साथ ही जा रही है। जिन्हें इस संगठन की उपयोगिता पर विश्वास है उन संगठन कर्ताओं से विशेष अनुरोध किया जा रहा है कि अपने क्षेत्रों में निकल पड़ें और ज्ञान घटों की स्थापना कार्य वाहकों की नियुक्ति के कार्य सम्पन्न कराते हुए उन क्षेत्रों की संगठन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यवस्था पूरी करा दें। आशा की जा रही है कि दिसम्बर के अन्त तक यह कार्य भी पूरा हो जायगा और युग-निर्माण परिवार के सक्रिय सदस्यों की यह सृजन सेना कर्तृव्य से आशा और उल्लास भरा एक नया वातावरण विनिर्मित कर सकेगी।

लोक निर्माताओं की सेवा सेना और उसका निर्वाह

राज तन्त्र चलाने में लाखों सरकारी कर्मचारी लगते हैं। अर्थ तन्त्र चलाने में मिल, उद्योग, कारखाने, दफ्तर आदि में लाखों व्यक्ति खपते हैं। धर्म तन्त्र का जैसा भी कुछ उल्टा सीधा ढाँचा खड़ा है, ५६ लाख धर्म जीवी नियुक्त हैं। स्वास्थ्य सेवा में—शिक्षा तंत्र में भी लाखों व्यक्तियों का श्रम लगा हुआ है। साहित्य प्रेस प्रकाशन में भी कम व्यक्ति लगे नहीं हैं। कोई भी महत्वपूर्ण प्रवृत्ति जन शक्ति की अपेक्षा रखती है। लंका विजय में भगवान राम को रीछ वानरों की गोवर्धन धारण में भगवान कृष्ण को भी ग्वाल-वालों की जन शक्ति जुटानी पड़ी थी। पिछले दिनों बुद्ध और गान्धी के द्वारा इस देश में जो बड़े आन्दोलन चलाये गये थे, दोनों में ही विशाल जनसंख्या को प्रयुक्त किया गया था।

मानव जाति का भाग्य निर्माण—विश्व का कायाकल्प—युग परिवर्तन—जन मानस का परिष्कार—जैसे महान प्रयोजनों को लेकर चलने वाला युग निर्माण अभियान संसार का अनुपम और अद्वितीय अभियान होगा। इसका आरम्भ ही छोटे व्यक्ति द्वारा-छोटे स्थान में—छोटा कार्य क्रम लेकर हुआ है। पर यह नहीं सोचना चाहिए कि यह आगे भी छोटा ही बना रहेगा। बीज को छोटा देखकर यह अनुमान नहीं लगाना चाहिए कि उससे उत्पन्न होने वाला वृक्ष भी इतना ही छोटा रह जायगा। अपना आन्दोलन अगले दिनों अति विशालता और विस्तारके साथ विकसित होगा। युग चेतना इसकी उपयोगिता अनुभव करेगी। मानव अंतराल में रहने वाली महत्ता आवश्यकता अनुभव करेगी और परिस्थितियाँ झखझोरेंगी कि विनाश को विकास में परिवर्तन कर सकने वाला यह आन्दोलन सक्रिय और समर्थ बनाया जाय। समय आरहा है, जब उसे समर्थन मिलेगा और सहयोग भी। आज उपेक्षा दिखाई जाती है, उपहास किया जाता है, उससे किसी को निराश नहीं होना चाहिये। आरंभ हर महान आन्दोलन का इन्हीं परिवर्तनों में होता रहा है। वास्तविकता और उपयोगिता को अन्ततः समर्थन ही मिलता है और सचाई के साथ, सच्चे आधार पर—सही व्यक्तियों द्वारा किये गये काम सदा सफलता प्राप्त करते हैं। इस आन्दोलन का भविष्य निश्चित रूप से उज्वल है।

इतने विशाल और महान कार्यक्रम के लिये जनशक्ति की नितांत आवश्यकता है। वह जितनी अधिक और उत्कृष्ट होगी, प्रगति की सम्भावना उतनी ही बढ़ेगी। पिछले पृष्ठों पर यही चर्चा की गई है कि किस तरह लोभ मोह, आलस्य प्रमाद के संकीर्ण बंधनों में बँधे हुए प्रभावशाली लोगों को जाल जंजाल में से छुड़ाकर, नव निर्माण की दिशा में अग्रसर किया जाय। जन जागरण के सन्देश का स्वर हमें तीव्र करना होगा और अन्तरात्मा में प्रस्तुत परमार्थ प्रवृत्ति का सजग करना होगा—दिशायें मोड़नी होंगी—विश्वास किया जाना चाहिए कि यज्ञ का प्रारम्भ अभियान एक सिहरन लेकर चला आ रहा है और वह विवेकशील लोगों को पेट प्रजनन के कोल्हू में पिसते रहने की अपेक्षा लोक मंगल के लिये अधिक अनुदान देने की प्रेरणा ग्रहण करने और जनशक्ति का प्रवाह इस महान आन्दोलन की जड़ें सींचने के लिए उपलब्ध हो सकेगा। वानप्रस्थी परम्परा को नव जीवन दिया जायगा और लोग पेट भरने की व्यवस्था जुटा कर परमार्थ प्रयोजन में लगने के लिये भावना पूर्वक अग्रसर होंगे।

अभी काम कम दीखता है। क्योंकि साधन अति स्वल्प

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं । न हाथ धन शक्ति है, न जन शक्ति । साधन जुटाने के लिये अपने कुटुम्बियों पर ही बरस पड़े हैं और उन्हें एक घन्टा समय, दस पैसा छोटा अनुदान अनिवार्य रूप से देने के लिए विवश कर रहे हैं । अभी इतनी भर उपलब्धि के माध्यम से आन्दोलन चल रहा है । लेकिन यह दशा सदा न रहेगी । वस्तुतः स्थिति निखरती चली जायेगी और आज जो आचार्य जी का अनुरोध लगता है, वह विश्व मानव का—अन्तरात्मा का आग्रह दीखने लगेगा और अन्तरात्मा का आवेग, आवेश इतना तीव्र होगा कि किसी भी भावनाशील व्यक्ति को उसे रोक सकना असंभव हो जायेगा । उत्साह से उत्साह बढ़ेगा । त्याग को देखकर त्याग की उमंगें उमड़ेंगी और देखते-देखते एक विशाल जन शक्ति इस आन्दोलन को अग्रसर करने में जुट पड़ी, दृष्टि-गोचर होने लगेगी । तब कार्यक्रमों की संख्या वृद्धि और विशालता देखते ही बनेगी । दिन-दिन बढ़ती हुई जन शक्ति भी कम ही पड़ती दीखेगी, क्योंकि कार्य की विशालता और सीमा इतनी बड़ी है कि उसमें एक करोड़ कार्यकर्ता भी कम ही पड़ेंगे ।

शतसूत्री कार्यक्रम की रूप-रेखा हम बहुत पहले ही प्रस्तुत कर चुके हैं । मनुष्य जाति के सामने अगणित समस्यायें मौजूद हैं और वे सभी अपना हल माँगती हैं । हर व्यक्ति की क्षमता, अभिरुचि और परिस्थिति में थोड़ी भिन्नता रहती है, उसकी सेवा वृत्ति को प्रयुक्त करने के लिए अनेक कार्यक्रमों की जरूरत है । हर योग्यता और हर स्थिति के व्यक्ति को नव सृजन में योगदान करने का अवसर मिल सके, इसके लिये स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रमों को हाथ में लेना पड़ेगा । इन्हीं लक्ष्यों को ध्यान में रखकर शतसूत्री योजना प्रस्तुत की गई थी । उसे स्थानीय लोगों द्वारा हर जगह कार्यान्वित किया जा सकता है ।

इन दिनों कुछ विशेष कार्यक्रम हाथ में लिए गये हैं । ज्ञान यज्ञ के लिए एक घन्टा और दस पैसा लगाने वाली बात अब परिवार की सदस्यता की अनिवार्य शर्त बना दी गई हैं । इस आधार पर एक से दस तक इस विचारधारा के विस्तार करनेका जनसम्पर्क कार्यक्रम तेजीकी ओरभावना पूर्वक चल रहा है । यह उत्साह इसी क्रम से चलता रहा तो विश्वास है कि अगले ही दिनों हमारा कार्य क्षेत्र और प्रभाव क्षेत्र देखते-देखते कई गुना अधिक बढ़ जायेगा और आज की सीमित प्रवृत्तियाँ कल असीम बनती दिखाई पड़ेंगी । सदस्योंका संगठन-शाखा संचालकोंकी नियुक्तिकरनी पड़ेंगी । सदस्यों का संगठन—शाखा संचालकों कीनियुक्ति इन्हीं दिनों पूरी हो जायेगी और एक सुव्यवस्थित संघ-शक्ति का स्पष्ट स्वरूप सामने आ जायेगा ।

अगले दिनों हर जगह रात्रि पाठशालाओं और अपराह्न पाठशालाओं की स्थापना की जायेगी और इस विचार पद्धति का क्रमबद्ध शिक्षण चलने लगेगा । कला भारती का आन्दोलन नई उमंगों के साथ आगे आने को आतुर है। यह अण्डा अब फूटने वाला ही है, जो बच्चा निकलेगा, उसकी शोभा सुषमा देखकर लोग चकित रह जायेंगे । रचनात्मक और संघर्षात्मक कार्यक्रमों की रूप-रेखा सामने है । जन मानस की चेतना उलट देने वाला साहित्य अति विशाल परिमाण में प्रस्तुत और प्रचारित किया जाना है । इन प्रवृत्तियों को गति देने के लिये हजारों लोक सेवियों की सेना देशव्यापी भ्रमण करेगी और विदेशों तक धावा बोलेगी । नैतिक और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध हम संघर्ष खड़ा करेंगे । शुरू में प्रचार आन्दोलन भले ही रहे अन्ततः दुष्टताओं को अपना रास्ता बदलने के लिये विवश और बाधित होना ही पड़ेगा । जिनकी दाढ़ में खून लग गया हैं, वे निहित स्वार्थ, अनुनय विनय, की भाषा समझने वाले नहीं हैं । लक्ष्मण ने परशुराम जी को और समुद्र को जिस तरह प्रबोधा था, हमें भी संव्याप्त अवांछनीयता को इसी तरह ललकारना पड़ेगा और हरकतें छोड़ने के लिये विवश करना पड़ेगा । हमें निश्चित रूप से संघर्ष खड़ा करना होगा । उसका स्वरूप अभी निश्चित नहीं करते, क्योंकि वह अति व्यापक होगा और इञ्च-इञ्च भूमि पर भाई-भाई के बीच महाभारत की तरह लड़ा जायेगा । अनीति और अविवेक के असुरों की अति विशाल सेना के साथ लड़ा गया यह अन्तिम युद्ध ही संसार में युद्धों की अन्तिम समाप्ति करेगा । इसे अन्तिम विश्व युद्ध कहा जा सकेगा । इसमें अवांछनीय की ताड़का और औचित्य का रावण अपनी मौत मरेगा । सतयुग का राम राज्य इसके बाद ही अवतरित होगा । तभी हम धरती पर स्वर्ग और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य में देवत्व का उदय देखेंगे ।

यह सारा कार्य विस्तार, विशाल जन शक्ति की अपेक्षा करता है । सो उपलब्ध की जानी चाहिए । ज्ञान यज्ञ का अभियान जितना तीव्र होता जायेगा, प्रतिभायें सङ्कीर्णता के बन्धनों को तोड़कर लोक मङ्गल लिये कर्त्तव्य पालन के लिये आगे आयेंगी और एक विशाल जन शक्ति इस अभियान में संलग्न दिखाई पड़ने लगेगी । इस जन शक्ति में कुछ लोग ऐसे हो सकते हैं, जो अपनी संचित पूँजी से अथवा कमाऊ बच्चे भाई आदि के सहयोग से गुजर चलालें। पर सभी ऐसे नहीं हो सकते । आंशिक समय दान भी अपनी आजीविका उपार्जन के साथ दिया जा सकता है । ऐसे स्वावलम्बी लोक सेवी भी बहुत कुछ कर सकते हैं, पर उतने से ही काम न चलेगा । पूरा समय देने वाले लोग ही पूरा उत्तरदायित्व सँभाल पाते हैं और परिभ्रमण जैसे उत्तरदायित्वों को सँभाल सकते है । इसलिये एक बड़ा वर्ग ऐसा भी चाहिए जो पूरा समय देकर इस प्रकार के कार्यों में अपना जीवन खपाने और भावना तथा क्रिया से पूरी तरह अभियान में तन्मय हो जाये ।

ऐसे लोगों की निर्वाह व्यवस्था जुटाने का काम भी हाथ में लेना होगा । शरीर से काम लेना हो तो वह अन्न, वस्त्र तो माँगेगा ही । जो अपना पूरा समय निर्माण के लिये देगा उसके निर्वाह की व्यवस्था समाज को जुटानी ही होगी । अगले दिनों एक विशाल जन शक्ति अपने आंदोलन में आने वाली है, उसके लिये निर्वाह का प्रश्न हल करने को और साधन जुटाने की अभी से आवश्यकता पड़ेगी । शुरूआत तो हो भी गई है, कितने ही भावनाशील व्यक्ति अपना जीवन दान देने को आतुर है । उन्हें गायत्री तपोभूमि में बुला भी लिया गया है, आगे और भी आने वाले हैं तथा बुलाये जाने वाले हैं । इनमें से थोड़े से लोगों की निर्वाह व्यवस्था तो युग निर्माण विद्यालय, प्रेस आदि के माध्यम से चल सकती है, पर आगे तो कुछ अधिक बड़ी और व्यवस्थित बात ही सोचनी पड़ेगी ।

प्राचीनकाल में लोक सेवियों का निर्वाह साधन भिक्षा वृत्ति से जुटता था । उन दिनों भिक्षा एक पवित्र कर्म था । केवल लोक सेवी ही उसे अपनाते थे, इसलिये सर्वत्र श्रद्धा पूर्वक भिक्षा दी जाती थी । आज अवांछनी भिक्षुओं की इतनी बड़ी सेना समाज की गर्दन पर चढ़ बैठी है कि उसकी प्रतिक्रिया भिक्षुओं के प्रति घृणा के रूप में सामने है । जनता की आर्थिक स्थिति भी वैसी नहीं । फिर भिक्षुकों की गति-विधियों ने उस वृत्ति को अपमान जनक बना दिया है । ऐसी दशा में लोक सेवियों की सेना स्वयं भिक्षा माँगे यह तो हो नहीं सकेगा । काम तो जन सहयोग से ही चलेगा पर उसका स्वरूप दूसरा ही हमें सोचना चाहिए ।

एक तरीका यह है कि लोक मंगल में विश्वास रखने वाले लोग अपनी आजीविका में कम से कम एक दिन की कमाई अपने उन भाइयों के लिए दिया करें, तो सारी सुविधायें छोड़कर अपना सारा समय लोक मङ्गल के लिये दे देने का दुस्साहस कर रहे है । एक-एक दिन की आमदनी तीस व्यक्ति दें तो उतने भरसे एक कार्यकर्ता का निर्वाह जुट सकता है । ऐसी उदारता ३० हजार व्यक्ति दिखाने लगे, तो उससे १००० व्यक्तियों की एक पूरा समय देने वाली कार्यकर्त्ता सेना बन सकती है । जो पूरा समय दे सकने की स्थिति में नही हैं वे महीने में एक दिन अपनी ओर से किसी दूसरे की कार्य करने की सुविधा जुट कर आंशिक रूप से अपने प्रतिनिधि से काम कराने का लाभ समाज को दे सकते हैं । बात कठिन कुछ भी नहीं हैं । मन की सङ्कीर्णता थोड़ी हलकी करने भर की बात है । तीस दिन की आमदनी से गुजारा करने वाला, २९ दिन की आमदनी से भी काम चला सकता है । एक दिन वाली कमी को किसी भी किफायत से सहन किया जा सकता है । प्रश्न उदारता भर का है । प्रश्न नव निर्माण के प्रयत्नों की महत्त समझने भर का है । यह समझ में आ जाये तो इतना छोटा त्याग कर सकना किसी के लिए भी कठिन न पड़ेगा । पर यदि पत्थर जैसे मन में त्याग और सेवा की बात घुसे ही नहीं—स्वार्थ परता और तृष्णा ममता पहले से ही फाटक बन्द करके बैठ जाये तब भी दस पैसा रोज देने वाली शर्तभी पहाड़ जैसी भारी और समुद्र जैसी दुस्तरप्रतीत होगी । तंगी पैसे के नहीं होती—तंग दिल हुआ करता है । जो ओछी तबियत की हैं उनसे दो पैसा भी परमार्थ के लिये छोड़ना कठिन पड़ेगा । मूर्खता पूर्ण बातों में तो लोग दौलत उड़ाते ही रहते हैं । सदुद्देश्य के लिये तो विवेकशील अन्तःकरणों में उदारता जागती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमें आशा और चेष्टा करनी चाहिए कि युग-निर्माण परिवार के लोग अगले दिनों ज्ञान यज्ञ के लिये दस पैसा रोज निकालना ही पर्याप्त न समझें वरन् एक कदम आगे बढ़ कर कम से कम एक दिन की आमदनी देने लगें। जो इससे अधिक देने की स्थिति में है जिनमें उदारता का अंश अधिक है, वे अधिक साहस करें। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ५००) मासिक वेतन पाते थे। उसमें से अपने परिवार का खर्च ५०) में चलाते थे और ४५०) मासिक नियमित रूप से असमर्थ छात्रों की शिक्षा सुविधा जुटाने में खर्च करते थे। ऐसी उदारता ऐतिहासिक नहीं रह जानी चाहिए। मनुष्य में देवत्व का उदय या स्वप्न देखना या उपदेश करना ही पर्याप्त न होगा, उन आदर्श को हमें अपने जीवन में उतारना चाहिए। आगे बढ़कर अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करने वाले व्यक्ति ही तो सच्चे अर्थों में लोक शिक्षा का प्रयोजन पूरा करते हैं। वाणी से नहीं अपने आचरण से ही हम लोगों को उद्दात्त गतिविधियाँ अपनाने के लिए प्रेरित और प्रभावित कर सकते हैं। यह परम्परा यदि हम लोग आरम्भ कर सके तो उसके दूरगामी परिणाम होंगे और कार्यकर्त्ताओं की एक बड़ी सेना खड़ी कर सकना सम्भव हो जायेगा। इतना हो सका तो युग-निर्माण योजना एक मूर्तिमान वास्तविकता के रूप में अगले ही दिनों सामने खड़ी दिखाई देगी।

इसके अतिरिक्त साधन सम्पन्न लोगों को अधिक उदारता का परिचय देना चाहिए। सम्पन्नता का उत्सर्ग करने का इससे अच्छा समय नहीं आ सकता और इस अभियान से बढ़कर अनुदान देने के लिए और कोई श्रेष्ठ माध्यम नहीं मिल सकता। यह एक तथ्य है कि अगले दिनों व्यक्तिगत सम्प्रदायें न रहेंगी, सम्पत्ति समाज की होगी व्यक्ति श्रमिक मात्र रह जायेगा। औलाद की दौलत छोड़ मरने की तृष्णा समय से पहले ही छोड़ दी जाय तो अच्छा है। अब उत्तराधिकार से मिली हराम की कमाई के ऊपर कोई बेटा गुलछर्रे न उड़ा सकेगा। हर किसी को अपनी श्रम उपार्जित आजीविका पर ही निर्भर रहना होगा। यह न तो स्वप्न है और न अनिश्चित सम्भावना। यह एक सचाई है, जो अगले ही दिनों हर किसी की आँखों के आगे खड़ी दिखाई देगी, सो बुद्धिमत्ता इसी में है कि जिनके पास सम्पदा है उसे लोकमंगल के लिए वे उदारता पूर्वक दे दें। इससे वे आत्म सन्तोष और प्रशंनीय और परमार्थ का दूसरा लाभ प्राप्त कर सकेंगे। यदि इसकी हिम्मत न पड़ी तो दौलत तो न उनके पास रहने वाली है न उनके बेटे पर। केवल पश्चाताप, रुदन और मल ल ही हाथ रह जायेगा।

यह वास्तविकता जो समझ सकते हों और जिनके पास गुजर से अधिक पैसा हो उनके लिये बुद्धिमानी का एक ही रास्ता है कि उसे अपने हाथों परमार्थ के लिए दे दें। परमार्थ का प्रश्न सामने हो तो धर्मशाला, कुआँ, बावरी, मन्दिर आदि के द्वारा अपने नाम का पत्थर लगवाने की--यश खरीदने वाली दुकानदारी नहीं करनी चाहिए। मानवीय अन्तःकरण को परिष्कृत करने से बढ़कर उत्कृष्ट स्तर का पुण्य परमार्थ इस संसार में दूसरा नहीं हो सकता तो यदि देने की बात सोचनी हो तो इस पुण्य प्रवृत्ति को नव-निर्माण आन्दोलन की जड़ें मजबूत करने में लगाने की बात ही सोचनी चाहिए। ऐसे अनुदान--सम्पत्ति दान यदि मिल सकें तो सृजन के लिये जीवन उत्सर्ग करने वालों के अन्न, वस्त्र का प्रबन्ध सहज ही हो सकता है और पूरा समय दे सकने वाले कार्यकर्त्ताओं की एक बड़ी सेना उपलब्ध हो सकती है।

भामाशाह बुद्धिमान थे। राणा प्रताप के हार जाने पर मुसलमान हमला करते और वह दौलत कष्ट पूर्वक छिन जाती। उनने समय रहते बात सोचली। संग्रहीत धन राणा प्रताप को दे दिया। उस-धन से सेना बनाई गई। भामाशाह को यश मिला और आजीवन राणा प्रताप का सहयोग भी। आज उन सबको भामाशाह की तरह सोचना चाहिए, जिनके पास संग्रहीत संपदा है। कंजूसी उन्हें अगले दिनों बुरी तरह रुलायेगी। समझदार के लिए इतना इशारा ही पर्याप्त माना जाना चाहिए।

कितने ही व्यक्ति ऐसे हैं, जिनके बेटे भी नहीं है। किसी से वे बेटा गोद लेकर अपनी दौलत उसे देना चाहते हैं और वंश चलाने का सपना देखते हैं। कितने ही देना किसी को नहीं चाहते। मरने के बाद मुकदमेबाजी, फौजदारी का रास्ता खुला छोड़ जाना चाहते हैं। कितनों के ही उत्तराधिकारी मरने के इन्तजार में अधीर होकर गरदनें दबोचने की तैयारी कर रहे हैं। कदमों पर फुसलाने वाले खुशामद भरे जाल फेंके जा रहे हैं। इन तरीकों से दौलत लुटाने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाले यदि परमार्थ के लिये उसे खर्च कर सकने का साहस इकट्ठा कर सके होते तो कितना अच्छा होता। बेटे को दौलत छोड़ मरने की बात से यदि अपना और बेटे का अहित समझ में आ जाये तो निस्सन्देह दौलत के पहाड़ जो लोगों ने व्यर्थ ही दबा रखे हैं—लोक मंगल के लिए उपलब्ध हो सकते हैं और उसकी एक-एक पाई श्रेष्ठतम परमार्थ में प्रयुक्त हो सकती है।

नव-निर्माण की सेवा सेना के लिये ऐसे आजीविका साधन भी जुटाये जा सकते हैं, जिनसे उनकी स्वावलम्बन पूर्वक गुजर होती रहे और वे निश्चिन्तता पूर्वक समाज सेवा का कार्य करते रह सकें। कृषि की बड़ी जोतें कहीं से मिल जायें तो स्त्री, बच्चों के मिले-जुले श्रमसे गुजार का प्रबन्ध हो सकता है और पुरुष निश्चिन्त होकर सेवा कार्य करते रह सकते हैं। दयाल बाग आगरा की तरह उद्योग बस्तियाँ भी बन सकती हैं और उपार्जन का प्रबन्ध हो सकता है। साम्यवाद के प्रवर्तक कार्ल मार्क्स की पत्नी पुराने कोटों में से काटकर नये छोटे कपड़े सीतीं थीं और उन्हें बेचकर घर चलाती थीं। पति,सेवा कार्य में लगे रहते थे। उद्योग धन्धों का ऐसा क्रम भी चलाया जा सकता है, जिसमें लगे हुए स्त्री, बच्चे रोटी कमायें और पुरुषों को समाज सेवा का अवसर मिल जाये। कृषि, उद्योग आदि के आधार पर ऐसे सेवा ग्राम बसाये जा सकते हैं, जिनमें हमारा पारिवारिक और सामाजिक जीवन कैसा हो इसका नमूना बनाकर खड़ा किया जा सकता है। इस प्रकार की व्यवस्था साधन चाहती है। साधन अमीरों के पास हैं, सरकार के पास हैं, मन्दिरों-मठों के पास हैं, निहित स्वार्थों के पास हैं। अपने कार्यक्रम उनकी हाँ में हाँ मिलाने वाले-उनके स्वार्थों का समर्थन करने वाला कहाँ है ? ऐसी दशा में हमें साधन कौन उपलब्ध करा सकेगा।

आज तो केवल हम उन्हीं को झखझोर सकते हैं जिनमें भावनात्मक नव निर्माण की महत्ता समझने की शक्ति है। ऐसे लोगों को अधिक त्याग अधिकाधिक त्याग करने के लिए हम युग चेतना के प्रतिनिधि रूप में अनुरोध, उद्बोधन कर रहे हैं। जो इसे सुन सकेंगे, स्वीकार कर सकेंगे केवल वे ही अपनी दूरदर्शिता पर सन्तोष और गर्व गौरव कर सकेंगे। अनसुनी करने वालों के हाथ पश्चाताप के अतिरिक्त और कुछ न रहेगा।

—०—०—

भावी महाभारत जो नव निर्माण के लिये लड़ा जायेगा

भगवान का निज अवतरण अधर्म के संहार और धर्म की स्थापना के लिये होता है। कच्छ-मच्छ से लेकर भावी निष्कलंक अवतार तक की सारी गाथा, इसी केन्द्र पर केन्द्रित है। देवताओं को असुरों के साथ असंख्य बार युद्ध करने पड़े हैं। सारा पौराणिक साहित्य इन्हीं चर्चाओं से भरा है शक्ति के अवतार का एक ही प्रयोजन था—दुष्टता का उन्मूलन। शुंभ-निशुम्भः मधुकैटभ महिषासुर आदि का वध करने के लिए देवी दुर्गा प्रकटीं। उनका वाहन सिंह है। उसे भी असुरता के उदर विदारण में योग देना पड़ता है। अलंकारिक रूप से इस कथा गाथा का रहस्य यह है—कि शक्ति का प्राकट्य जब कभी हो तो तब उसका विनियोग अनौचित्य का दमन शमन करने के लिए ही होना चाहिए। शक्ति का वाहन जो कोई सिद्ध होना चाहता है, उसे भी अपनी आराध्या भगवती की तरह उसी विदारण क्रिया में लगना चाहिए। अलंकार है कि देवी पशुओं को खाती है। यहाँ पशुओं से मतलब भैंसे, बकरे जैसे निरीह प्राणियों से नहीं वरन् पशुता से है, जो मनुष्य को असुर कर्म करने के लिये प्रेरित करती है।

अवतारों ने स्वयं ही संघर्ष नहीं किये हैं, वरन् अपने अनुयायियों को भी वैसाही करने की प्रेरणा दी है। भगवान राम ने अपने समस्त प्रिय पात्रों को उसी प्रयोजन में लगाया। अपने परम प्रिय भक्त हनुमान से लंका कांड में बड़ी से बड़ी भूमिका सम्पन्न कराई। लक्ष्मण से लेकर सुग्रीव, अङ्गद, नलनील, जटायु, रीछ वानरों से लेकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गिलहरी तक को संघर्ष में निरन्तर निरत रहना पड़ा। श्रीकृष्ण भगवान के जीवन का अधिकतर समय युद्ध में गया। बालकपन से ही अनेकों दुर्दान्त असुर मारे और अन्त तक अपनी लीलाओं से पाञ्चजन्य का ही युद्ध घोषण करते रहे। महाभारत का अविस्मरणीय महा समर उनकी सबसे बड़ी देन थी। यदि वह महान आयोजन न किया गया होता तो विश्वव्यापी असुरता के उन्मूलन की, दुःशासन के निराकरण की व्यवस्था बन ही न पाती। अर्जुन उनका परम मित्र था। उसे वे संसार का सबसे बड़ा श्रेय, अनीति के उन्मूलन में प्रचंड पराक्रम प्रदर्शित कर सकने का दिलाना चाहते थे। अर्जुन इस देखने में क्रूर कर्म लगने वाले उपक्रम से बचना चाहता था वह भजन पूजन जैसे सस्ते तरीके से जीवनोद्देश्य की पूर्ति चाहता था। भगवान ने अपना समस्त बुद्धि कौशल खर्च करके उसे अभीष्ट प्रयोजन में लगाया था। उससे युद्ध का नेतृत्व कराके ही छोड़ा, इस कार्यमें उसे पूरा सहयोग दिया। यहां तक कि उसके रथ के घोड़े स्वयं चलाये। भगवान राम और कृष्ण इन दो अवतारों को प्रधान माना जाता है। दोनोंकी प्रमुख लीलायें युद्ध नियोजन की हैं।

भगवान परशुराम ने २१ बार पृथ्वी भर के दुर्बुद्धि ग्रस्त शिरों को काटा। यहाँ सिर काटने से मतलब विचार बदलने से है। भगवान बुद्ध का संघर्ष अहिंसक था पर उन्होंने अपने युग में अपने ढङ्ग से हिंसा के विरुद्ध पूर्व अवतारों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण लड़ाई लड़ी। शंकर दिग्विजय में भी अविवेक के परास्त करने की ही पृष्ठभूमि है राजा मान्धाता की सेनाओं ने "शास्त्रादपि शरादपि" प्रयोजन पूरा करके शंकर दिग्विजय को सर्वांग-पूर्ण बनाया। राजा परीक्षित के पुत्र जन्मेजय का नागयज्ञ भी उन्मूलन की आवश्यकता का ही प्रतिपादन करता है। धर्मयुद्ध से बचा नहीं जा सकता। बचा नहीं जाना चाहिए। विशेषतया तब जबकि अनीति ने अपना सिर आसमान तक उठा रखा हो।

गीता महान अध्यात्म धर्म ग्रन्थ है। उसने साधना को एक विशुद्ध समर के रूपमें प्रस्तुत किया है। गीता का महापात्र अर्जुन है उसे अनेक कारण, तर्क और आधार बताते हुए भगवान ने निश्चित निर्देश दिया 'तस्मात् युद्धाय यजस्व' अर्थात् इसलिए तू युद्ध ही कर। हार जाने पर स्वर्ग और जीत जाने पर यश दोनों हाथों में लड्डू इस जुए में मिलने की बात उन्होंने कही और अन्ततः अनिच्छा रहते हुए भी अर्जुन को लड़ने के लिए ही तत्पर होना पड़ा। यह एक अर्जुन की बात नहीं—अध्यात्म मार्ग पर चलने वाले हर साहसी साधक के लिए यही मार्ग है! समर्थ गुरु रामदास ने अपने परमप्रिय शिष्य शिवाजी को आजीवन लड़ते रहने के लिये भगवती से तलवार प्रदान कराई। गुरु गोविन्द सिंह के शिष्यों ने कृपाण को अपनी जीवन सहचरी बनाया और एक हाथ में माला, एक हाथ में भाला लेकर सिर का सौदा करने का व्रत ठाना। गांधी ने अपने शिष्यों को सत्याग्रह संग्राम में जोत दिया और इस संदर्भ में जिसने जितना पराक्रम दिखाया उसे ही अपना सच्चा अनुयायी माना। उनका यह शिष्य विनोबा इस वृद्धावस्था में भी अवांछनीयता के विरुद्ध बगावत का झण्डा उठाये इस जीर्ण-शीर्ण शरीर को वृद्धावस्था में भी अश्वमेध के घोड़े की तरह दशों दिशाओं में परिभ्रमण करा रहा है।

श्रुति कहती है—"नायमात्मा बल हीनेन लभ्यः" आत्मा बल हीनों को प्राप्त नहीं होता। दुर्बल लोग न लोक में कुछ पाते है न परलोक में। इसलिये सर्वव्यापी दुर्बलता का निराकरण करना ही साधना का एकमेव प्रयोजन है। आचरण की दुर्बलता को दूर करने के लिये यम नियम, शरीर की दुर्बलता हटाने के लिए आसन, प्राणायाम। मन की दुर्बलता मिटाने के लिये प्रत्याहार धारणा ध्यान तथा आत्मा की दुर्बलता निवारण के लिए समाधि का अभ्यास किया जाता है। पहलवान जानते हैं कि शरीर को परिपुष्ट करने के लिए अखाड़े में जाकर अपने आपसे कितना लड़ना पड़ता है। विद्वान् जानते हैं कि पुस्तकों के साथ मनको लगाने के लिए उन्हें कितनी लम्बी अवधि तक एक विकट संघर्ष में जूझना पड़ा है। योग-साधना एक प्रत्यक्ष समर है—जिसमें अपनी इन्द्रियों से, गतिविधियों से पग-पग पर कट-कटकर लड़ना होता है। जो लड़ने से कतराते हैं और गुरु, ईश्वर, देवता या भाग्य के उपहार स्वरूप लम्बे-चौड़े मनोरथ पूरे करने के रंगीन स्वप्न देखते रहते है उन्हें अन्ततः सर्वथा खाली हाथ ही रहना पड़ता है।

अध्यात्म का मानवीय प्रगति का प्रथम सोपान है—साहस। साहस भी वह जो उत्कृष्टता एवं आदर्शवादिता के लिए प्रयुक्त किया जा सके। जो दुष्कर्मों के लिये- अनीति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के लिये—आतंक के लिए प्रयुक्त किया जाता है उसे तो दुस्साहस मात्र कहना चाहिए। सत्साहस वह है जो अनौचित्य एवं अविवेकी के सामने सिर झुकाने से इनकार कर दे और बड़ी से बड़ी हानि होने का खतरा उठकर भी सन्मार्ग पर दृढ़ता पूर्वक आरूढ़ बना रहे। आत्मिक एवम् भौतिक प्रगति सदा साहस का वरण करती रही है। दुनिया वाले लोग तलवार चलाने वालों को शूरमा कहते हैं और जो जितनों के सिर काट सके उसे उतना ही बड़ा वीर बताते हैं। अपनी दृष्टि में यह कोई वीरता का चिन्ह नहीं, यह कार्य तो मछियारे और कसाई भी निपुणता के साथ बड़ी मात्रा में करते रहते हैं। शौर्य का चिन्ह है-अनौचित्य को अंगीकार करने से स्पष्ट इनकार कर सकने की हिम्मत और साहस का चिन्ह है आत्मा की पुकार का अनुसरण करते हुए वह कदम उठाना जो व्यक्ति और समाज का स्तर ऊँचा बनाने की दृष्टि से वाँछनीय है। आमतौर से इस प्रकार की हिम्मत को प्रोत्साहन नहीं मिलता। जमाना जिस रास्ते पर चल रहा है वैसी ही मूर्खता और धूर्तता अपनाये रहने के लिये सभी तथाकथित 'शुभ चिन्तक' और 'परिजन' सलाह देते हैं। पूर्व संचित कुसंस्कार और वातावरण के प्रभाव द्वारा भी उत्कृष्टता की दिशा में चलने का मार्ग पग-पग पर अवरुद्ध किया जाता है। जो इन अवरोधों को कुचलता हुआ विवेकशीलता, दूरदर्शिता और वांछनीयता का पल्ला पकड़े रह सकें उन्हें ही सच्चे अर्थों में साहसी और शूरमा कहा जायगा। आत्मिक प्रगति प्रचण्ड मनोबल की अपेक्षा करती है और ऐसे साहस का विकास चाहती है जो सत्य को धारण कर सकने में फौलाद जैसा मजबूत सिद्ध हो सके।

व्यक्तिगत जीवन को असंयम, आलस्य, आवेश लालच, अविवेक जैसे दुष्ट दुर्गुण धन की तरह चुपके-चुपके खोखला करते रहते हैं। इनके द्वारा पहुँचाई जाती रहने वाली क्षति का पता भी चल नहीं पाता कि जीवनोद्देश्य को पूर्णतया नष्ट-भ्रष्ट होने का अवसर आ पहुँचता है और अनन्त काल तक पश्चात्ताप करते रहने के अतिरिक्त और कुछ शेष नहीं रहता। इन आन्तरिक दुर्गुणों से पग-पग पर लड़ना और उन्हें येन केन प्रकारेण परास्त किया जाना आवश्यक है। सहज ही इनसे पिण्ड नहीं छूटता। निरन्तर आत्म-निरीक्षण आत्म-चिन्तन आत्म-सुधार, आत्म-निर्माण एवं आत्म-विकास की साधना में निरत रहने पर भी आत्म कल्याण का पथ प्रशस्त होता है। जीवन साधना निसन्देह एक महाभारत है, जिसमें प्रत्येक श्रेयार्थी को अर्जुन की भूमिका सम्पादित करने के लिए गीता ज्ञान को व्यावहारिक जीवन में समाविष्ट करना होता है। जो इस लड़ाई से डरा-भागा उसे वाह्य जीवन में भर्त्सना और आँतरिक जीवन में आत्म प्रताड़ना की पीड़ा सहनी पड़ती है। आत्म कल्याण के लिए आत्म निर्माण आवश्यक है और आत्म-निर्माण आन्तरिक कषाय कल्मषों से घोर संघर्ष करने पर ही संभव है। जीवन एक संग्राम है जिसमें शूरवीर योद्धा ही सफलता की विजय लक्ष्मी वरण करते हैं।

श्रेयार्थी के मार्ग में अन्तर्द्वन्दों से आगे बढ़कर तथा कथित "परिजन और हित—चिन्तक बाधा पहुँचाते हैं। हमारे कुटुम्बी सम्बन्धी और मित्र रक्त संबन्ध और भौतिक शृंखला के कारण एकत्रित होते हैं। आम तौर से इनमें से दूरदर्शी और भावना सम्पन्न नहीं ही होते हैं। उनकी दृष्टि में अधिक उपार्जन और अधिक सुखोपभोग यही, दो जीवन के लक्ष्य होते हैं। अतएव उनकी इच्छा यही रहती है कि हम अधिक कमायें खायें और समय का जो भाग उपार्जन से बचता है, उसे उन लोगों की खुशी तथा सुविधा के लिए खर्च करते रहें। जब तक उनकी इस इच्छा की पूर्णतया तृप्ति होती रहती है तब तक वे कुछ नहीं कहते। पर जब कभी परमार्थ के लिए हमारा राई रत्ती समय या धन खर्च होने लगता है तो वे आग-बबूल हो उठते हैं। वे सोचते हैं अभीष्ट आमदनी, तथा उनके इच्छानुवर्ती होने से सारा विघ्न इस राई रत्ती परमार्थ से ही उत्पन्न होता है। यों कोई परमार्थ के लिए कुछ न करे तो भी उनकी आकांक्षायें कहाँ पूरी होती हैं। पर तब वे उसका भाग्य दोष को देकर चुप हो जाते हैं पर जब हम परमार्थ के लिए कुछ करना चाहते हैं तो उनकी अतृप्ति का सारा रोष इसी में दिखाई पड़ता है और वे इसी केन्द्र विन्दु पर अपना रोष प्रकट करते हैं। आमतौर से परमार्थ की तनिक रीति-नीति अपनाने लगने पर हमारे तथाकथित कुटुम्बी, प्रेमी, निज सम्बन्धी, पूर्णतया विरुद्ध हो जाते हैं और अपना रोष, असहयोग प्रतिरोध व्यक्त करके यह चेष्टा करते हैं कि हमारी परमार्थ प्रवृत्तियां पूर्ण बन्द करदी जाँय।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संयमी, परमार्थी एवं श्रेयार्थी गतिविधियों से भरा हुआ जीवन ही आध्यात्मिक जीवन है। स्वर्ग, मुक्ति, शान्ति और विभूतियों की उपलब्धि प्राप्त करने के लिए वासना और तृष्णा के दायरे से कुछ तो बाहर निकलना ही पड़ता है। कुछ समय, मन, श्रम, धन तो आत्म-कल्याण के लिए लगाना ही पड़ता है। पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी तरह निभाया जाना चाहिए। आश्रितों का भरण पोषण और उनके विकास का प्रयोजन पूरा करने के लिए सामर्थ्य भर प्रयत्न किया जाना चाहिए पर इसका अर्थ यह तो नहीं है कि चन्द व्यक्तियों की तृष्णा और मोह ममता भर पूरी करने के लिए जीवनोद्देश्य को पैरों तले रौंदकर रख दिया जाय। प्रेमीजनों की इच्छायें तथा आवश्यकतायें पूरी की जानी चाहिए पर इसका अर्थ यह तो नहीं है कि मानव जीवन जैसे अमूल्य अवसर को इसीलिये उत्सर्ग कर दिया जाय। कुटुम्बियों की प्रगति एवं सुव्यवस्था को ध्यान में रखा जाना चाहिए पर उतनी ही सीमा में सीमा बद्ध देश, धर्म, समाज और संस्कृति के प्रति-आत्मा और परमात्मा के प्रति जो परम पावन कर्तव्य हैं उन्हें भुला नहीं दिया जाय।

इस अनावश्यक मोह ममता से संघर्ष आवश्यक है। परिवार की प्रगति के लिए व्यक्ति अपने कर्तव्य की पूर्ति करे यह उचित है पर ऐसा नहीं होना चाहिए कि परिवार अजगर बनकर व्यक्ति की समस्त श्रेष्ठ संभावनाएँ निगल कर बैठ जाय। आज की स्थिति ऐसी ही है जिसे बदला जाना चाहिए। इस परिवर्तन से यदि सम्बद्ध परिजन रुष्ट होते या निष्ठुरी करते हैं तो उसकी उपेक्षा ही की जानी चाहिए। भरत ने माता की, प्रह्लाद ने पिता की, विभीषण ने भाई की, बलि ने गुरु की अवज्ञा की थी और उसे अनुचित नहीं माना गया। बड़ों का आदर करना चाहिए, छोटों को स्नेह-पर यदि वे अनुचित आग्रह करें तो उनकी पूर्ति के लिए कदापि विवश नहीं होना चाहिए। आज अगणित प्रतिभायें और विपुल सम्पदाएँ इसी माया, मोह एवं संकोच की वेदी पर बलि दी जा रही हैं। सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में सबसे बड़ी बाधा इन रूढ़िवादी परिवारी लोगों ही की है। विचारवान व्यक्ति जानते हैं कि विवाहों में होली की तरह धन फूँके जाने की कुरीति अनावश्यक ही नहीं अनैतिक भी है। वे अपना तथा अपने स्वजनों का विवाह करना भी सुधरे ढंग में चाहते हैं, पर तथाकथित बड़े बूढ़ों की नाराजी का ध्यान रखकर चुप हो जाते हैं और ऐसी कुरीतियाँ जिन्हें एक क्षण के लिए भी सहन नहीं किया जाना चाहिए चिरजीवी बना बैठी रहती हैं अवज्ञा का संकोच यदि इसी प्रकार बना रहा तो कुरीतियों का कोढ़ कभी भी दूर होने वाला नहीं है इस मोर्चे पर लड़ना ही पड़ेगा, लड़ना ही चाहिए। औचित्य के लिए यदि घर परिवार के लोगों को नाराज करना पड़ता है तो इसे धर्म युद्ध का एक अंग ही माना जाय। गीता का तत्व-ज्ञान पग-पग पर ऐसे ही संघर्ष का समर्थन करता है।

कोमल और सौम्य तत्वों को इशारे से समझाकर विवेक एवं तर्क द्वारा औचित्य सुझाकर सन्मार्गगामी बनाया जा सकता है। पर कठोर और दुष्ट तत्वों को बदलने के लिये लोहे को आग में तपाकर पिटाई करने वाली लुहार की नीति ही अपनानी पड़ती है। दुर्योधन को समझाने-बुझाने में जब श्रीकृष्ण जी सफल न हो सके, तब उसे अर्जुन के बाणों द्वारा रास्ते पर लाने का प्रबन्ध करना पड़ा। हिंसक पशु नम्रता और औचित्य की भाषा नहीं समझते उन्हें तो शस्त्र ही काबू में ला सकते हैं। भगवान को बार-बार धर्म की स्थापना के लिये अवतार लेना पड़ता है, साथ ही वे असुरता के उन्मूलन का रुद्र कृत्य भी करते हैं।

सामूहिक जीवन में समय-समय पर अनेक अनाचार उत्पन्न होते रहते हैं और उन्हें रोकने के लिये सरकारी तथा गैर-सरकारी स्तर पर प्रबल प्रयत्न करने पड़ते हैं। पुलिस, जेल, अदालत, कानून, सेना आदि के माध्यम से सरकारी दण्ड-संहिता अनाचार को रोकने का यथा सम्भव प्रयत्न करती है। जन-स्तर पर भी अवांछनीय और असामाजिक तत्वों का प्रतिरोध आवश्यक होता है। यदि वह रोकथाम न हो, उद्दण्डता और दुष्टता का प्रतिरोध न किया जाय तो वह देखते-देखते आकाश-पाताल तक चढ़ दौड़ें और अपने सर्वभक्षी मुख में शालीनता और शान्ति को देखते-देखते निगल जायें।

इन दिनों नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्षेत्र में अवांछनीय तत्वों का इतना अधिक बाहुल्य हो गया है कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शान्ति और सुव्यवस्था के लिए एक प्रकार से सङ्कट ही उत्पन्न हो गया है। छल, असत्य, बनावट और विश्वास-घात का ऐसा प्रचलन हो गया है कि किसी व्यक्ति पर सहज ही विश्वास करना खतरे से खाली नहीं रहा। विचारों की दृष्टि से मनुष्य बहुत ही संकीर्ण स्वार्थी, ओछा और कमीना होता चला जाता है पेट और प्रजनन के अतिरिक्त कोई लक्ष्य नहीं। आदर्शवादिता और उत्कृष्टता अब कहने-सुनने भर की बात रह गई है। व्यवहार में कोई विरला ही उसे काम में लाता हो। सामाजिक कुरीतियों का तो कहना ही क्या? विवाहोन्माद, मृत्यु-भोज, ऊँच-नीच, नारी-तिरस्कार, बाल-विवाह, वृद्ध विवाह आदि न जाने कितने प्रकार की कुरीतियाँ अपने समाज में घुसी बैठी हैं। यदि उन्हें ज्यों का त्यों ही बना रहने दिया गया तो हम संसार के सभ्य देशों में पिछड़े हुए और उपहासास्पद ही न माने जायेंगे वरन् अपनी दुर्बलता के शिकार होकर आप अपना अस्तित्व ही खो बैठेंगे।

अगले दिनों इस बात की आवश्यकता पड़ेगी कि व्यक्तिगत, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र में संव्याप्त अगणित दुष्प्रवृत्तियों के विरुद्ध व्यापक परिणाम में संघर्ष आरम्भ किया जाय। इसलिए हर नागरिक को अनाचार के विरुद्ध आरम्भ किये गये धर्म-युद्ध में भाग लेने के लिए आह्वान करना होगा। किसी समय तलवार चलाने वाले और सिर काटने में अग्रणी लोगों को योद्धा कहा जाता था, अब माप-दण्ड बदल गया। चारों ओर संव्याप्त आतंक और अनाचार के विरुद्ध संघर्ष में जो जितना साहस दिखा सके और चोट खा सके उसे उतना ही बड़ा बहादुर माना जायगा। उस बहादुरी के ऊपर ही शोषण-विहीन समाज की स्थापना संभव हो सकेगी। दुर्बुद्धि से, कुत्सा और कुण्ठा से लड़ सकने में जो लोग समर्थ होंगे उन्हीं का पुरुषार्थ पीड़ित मानवता को त्राण दे सकने का यश संचित कर सकेगा।

भारतीय समाज को बेईमान और गरीब बनने के लिए विवश करने वाले सत्यानाशी विवाहोन्माद असुर से पूरी शक्ति के साथ जूझना पड़ेगा। अभी प्रचार, विरोध, प्रतिज्ञा पत्र आदि के हलके कदम उठाये गये हैं, आगे चलकर असहयोग सत्याग्रह और घिराव जैसे बड़े कदम उठाकर इस कुप्रथा को गर्हित और वर्जित बनाने के लिए, घृणित और दुष्ट समझे जाने के लिए विवश करेंगे। अगले दिनों ऐसा प्रबल लोकमत तैयार करेंगे, जिसमें विवाहों के नाम पर प्रचलित उद्धतपन को जीवित रह सकना असम्भव हो जाय। पूर्ण सादगी और स्वल्प खर्च के विवाहों का प्रचलन होने तक अपना संघर्ष चलता रहेगा।

मृतक भोज के नाम पर घृणित दावतें खाने की निष्ठुरता, पशु बलि की नृशंसता, ऊँच-नीच के नाम पर मानवीय अधिकारों का अपहरण, नारी को पद-दलित और उत्पीड़ित करने की क्रूरता, हमारे समाज पर लगे हुए ऐसे कलङ्क हैं जिनका समर्थन कोई भी विवेकशील और सहृदय व्यक्ति कर ही नहीं सकता। मूढ़ परम्परा ने इन कुरीतियों को धार्मिकता के साथ जोड़ दिया है, इस स्थिति को कब तक सहन किया जाता रहेगा? इस मूढ़ता के विरुद्ध इस मोर्चे से आगे बढ़कर हमें कोई और ऐसे सक्रिय कदम उठाने पड़ेंगे, जिन्हें भले ही अशांति उत्पन्न करने वाले कहा जाय परन्तु रुकेंगे तभी जब मानवता के मूलभूत आधारों को लोग स्वीकार करने को तत्पर हो जायें, हम लोगों से कहें कि घृणा फैलाने वाले और झगड़ालू कहलाने का खतरा मोल लेकर भी वे अनीति से हर मोर्चे पर जूझने के लिये कमर कस लें—भले ही इस संदर्भ में उन्हें भी खतरा क्यों न उठाना पड़े।

वैयक्तिक दोष-दुर्गुणों से लड़ने और जीवन को स्वच्छ पवित्र, निर्मल बनाने के लिये अगर कुसंस्कारों से लड़ना पड़ता है, तो वह लड़ाई लड़ी ही जानी चाहिए। परिवार में कुछ सदस्यों को दास-दासी की तरह और कुछ को राजा रानी की तरह रहने की यदि परम्परा का पालन माना जाता है तो उसे बदल कर ऐसी परिपाटी स्थापित करनी पड़ेगी जिनमें सबको न्यायानुकूल अधिकार लाभ तथा श्रम, सहयोग करने की व्यवस्था रहे। आर्थिक क्षेत्र में बेईमानी को प्रश्रय न मिले। व्यक्तिगत व्यवहार में छल करने और धोखेबाजी की गुंजायश न रहे। ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करने के लिए प्रबल लोकमत तैयार करना पड़ेगा और अवांछनीय तत्वों के उग्र प्रतिरोध को इतना सक्रिय बनाना पड़ेगा कि अपराध, उद्दण्डता और गुण्डागर्दी करने की हिम्मत करना किसी के लिए भी सम्भव न रहे। हराम की कमाई खाने वाले, भ्रष्टाचारी, बेईमान लोगों के विरुद्ध इतनी तीव्र प्रति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्रिया उठानी होगी, जिसके कारण उन्हें सड़क पर चलना और मुँह दिखाना कठिन हो जाय। जिधर से वे निकलें उधर से ही धिक्कार की आवाजें इन्हें सुननी पड़ें। समाज में उनका उठना-बैठना बन्द हो जाय और नाई, धोबी, भंगी, दर्जी कोई उनके साथ किसी प्रकार का सहयोग करने के लिए तैयार न हों।

सार्वजनिक संस्थाओं में, स्वार्थपरता और नेतागीरी लूटने के लिये जिन दुरात्माओं ने अड्डा जमा लिया है उन्हें दूध में से मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिया जाय। धर्म और अध्यात्म का लबादा ओढ़कर जो रँगे सियार अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं, उनकी असलियत चौराहे पर नंगी खड़ी करदी जाय। ताकि लोग उन्हें भरपूर धिक्कारें। भोले लोगों को उनके हाथों लुटने से बचाना एक ऊँची और श्रेष्ठ सेवा होती है। ५६ लाख भिखमंगे नाना प्रकार के ढोंग बनाकर जिस तरह ठगी और हरामखोरी करने में जुटे हुए हैं, आखिर कैसे कब तक सहन किया जाता रहेगा। स्वच्छ शासन प्रदान करने के लिये राजनैतिक नेता और विधायकों, शासकों और अफसरों को सोचने के लिये बाध्य किया जायगा कि वे निजी लाभ के लिये नहीं, लोक-मंगल के लिये ही शासन तन्त्र का उपयोग करें।

इस प्रकार सङ्घर्ष की बहुमुखी प्रचण्ड प्रक्रिया अगले दिनों युग-निर्माण योजना आरम्भ करेगी। उसके साधन जैसे-जैसे विकसित होते जायेंगे, संघ शक्ति जितनी मात्रा में उसके हाथ लगेगी उसी अनुपात से वह शान्त, अहिंसक, सज्जनोचित सांस्कृतिक कार्य के अथक सम्पादन में जुटेगी और पग-पग पर अनौचित्य के अन्याय के साथ लड़ा जाने वाला यह धर्म-युद्ध तभी समाप्त होगा जब मानवता के आदर्शों की विजय पताका सारे विश्व में फहराने लगेगी।

अगले दिनों एक ऐसा महायुद्ध होने जा रहा है जिसकी तुलना में इतिहास में वर्णित अब तक के सारे युद्ध फीके पड़ जायेंगे। इस युद्ध में बन्दूकों और बमों का प्रयोग हो भी सकता है, और नहीं भी। इस भावी महाभारत में आग्नेयास्त्रों का प्रयोग अनिवार्य नहीं। क्योंकि उसे जिस धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में लड़ा जाना है वह अति व्यापक मानवीय चिन्तन की रणस्थली के रूप में ही सामने आता है। शस्त्रों से शस्त्र, हिंसा से हिंसा और घृणा से घृणा ही उत्पन्न हो सकती है। इसलिए सैनिकों द्वारा लड़े जाने वाले हथियारों की अपेक्षा अगले महायुद्ध में उन अति नवीन किन्तु अति प्राचीन शस्त्रों का प्रयोग होना है जो आँखों से न दीखने वाली किन्तु जन-जन के मन-मन पर आच्छादित तमिस्रा को पद-दलित कर सकने में समर्थ हो सके।

हम कितने दिन से कहते चले आ रहे हैं कि नये युग का निर्माण एकता, समता, शुचिता और ममता की आदर्शवादी आस्थाओं के आधार पर ही होगा और विभेद की वर्तमान सारी चहार दीवारियाँ टूट कर चकनाचूर हो जायेंगी। इस मार्ग में व्यक्ति का संकुचित एवं स्वार्थवादी दृष्टिकोण ही प्रधान बाधा है। इस युग का यही असुर है। इसके साथ पग-पग पर इञ्च-इञ्च भूमि के लिये लड़ा जायगा और घमासान युद्धके ऐसे दृश्य दिखाई देंगे, जिनकी किन्हीं ऐतिहासिक या प्रागैतिहासिक संघर्षों के साथ तुलना न की जा सकेगी। मनुष्य जितना बुद्धिमान है उससे ज्यादा मूर्ख है। वह अवांछनीयता का अनौचित्य तो स्वीकार कर लेता है पर अपनी आदतों में समाई हुई अवांछनीय मूढ़ता को छोड़ने का जब अवसर आता है तो मौखिक रूप से जिस बात का विरोध कर रहा था व्यवहार में उसी का समर्थन करने लगता है। अनीति की निन्दा करने में अग्रसर लोग अग्रिणी पाये जाते हैं पर जब उनके द्वारा बरती जा रही अनीति को छोड़ने के लिए कहा जाता है तो इसके लिये टस से मस नहीं होते। यही मूर्खता है जो संघर्ष की दुखद प्रक्रिया को अनिवार्य बनाती है। युग-परिवर्तन के साथ ऐसे ही भावी महाभारत की सम्भावना अनिवार्य रूप से जुड़ी हुई है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

युग-निर्माण योजना से सम्पर्क और उसकी भागीदारी

आध्यात्मिक, धार्मिक, नैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिये १० वर्ष से चल रही युग-निर्माण योजना का संचालन गायत्री तपोभूमि मथुरा से हो रहा है। समीक्षाकार इसे महाभारत के बाद की सबसे बड़ी घटना मानते हैं। निकट अतीत में भगवान् बुद्ध और जगद्गुरु शङ्कराचार्य दो महा-पुरुष ऐसे हुए हैं जिन्होंने धार्मिक नव-निर्माण कार्य को व्यापक रूप दिया था। उनके लाखों अनुयायी सारे देश में उमड़ पड़े थे किन्तु उनकी सम्मिलित शक्ति भी इतनी बड़ी नहीं थी जितनी इस मिशन के पास है। ५० लाख सदस्यों की टीम, ६ हजार शाखाओं में देश के कोने-कोने में विचार क्रान्ति अभियान के लिये कमर कस कर तैयार खड़ी है।

युग-निर्माण योजना का जो स्वरूप और कार्यपद्धति इस पुस्तक में दिया गया है उसके प्रत्येक अङ्ग (१) आस्तिकता देववाद (२) उपासना-साधना (३) नव-निर्माण का दर्शन और मार्गदर्शन (४) व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज-सुधार (५) स्वास्थ्य-आरोग्य (६) धर्म-मंच (७) कला-मंच आदि विषयों के एक-एक सूत्र की व्याख्या करने वाले लगभग ४०० ट्रेक्ट और इतनी ही अन्य विविध पुस्तकें लिखी गई हैं। जो मानव-जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर प्रकाश डालती हैं।

आन्दोलन की विचार धारा का प्रचार करने के लिए (१) अखण्ड ज्योति और युग-निर्माण योजना दो पत्रिकायें निकलती हैं। अखण्ड-ज्योति भारतीय धर्म व संस्कृति के बुद्धि संगत स्वरूप का प्रति-पादन विज्ञान, घटना, तर्क और प्रमाणों के द्वारा करती है। ३५ वर्ष से लगातार बिना एक भी अङ्क रुके निकलने वाली इस पत्रिका के ५० हजार ग्राहक और उससे लाभ उठाने वाले एक करोड़ लोग सारे विश्व में फैले हैं। युग-निर्माण योजना अखंड-ज्योति में दिये गये सिद्धान्तों का रचनात्मक स्वरूप दर्शाती है। उच्चकोटि के जीवन चरित्र, संस्मरण घटनायें और प्रेरक समाचारों को पढ़कर लोगों को आत्मिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं आर्थिक समुन्नति के हर क्षेत्र का मार्गदर्शन मिलता है। इन पत्रिकाओं ने लाखों व्यक्तियों की जीवन दिशायें मोड़ी हैं। अन्य भाषा-भाषी प्रान्तों की व्यापक मांग पर दोनों का सम्मिलित स्वरूप युग-निर्माण योजना के नाम से अब पाँच भाषाओं में छपता है। (१) अँग्रेजी (२) गुजराती (३) उड़िया (४) मराठी (५) बँगला इनके सदस्यों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। तामिल, तेलगू, कन्नड़, गुरुमुखी, सिन्धी भाषा में भी छपाने की योजनायें हैं जिन्हें शीघ्र क्रियान्वित किया जायेगा।

गायत्री महाविद्या पर अद्भुत ग्रन्थ लिखे गये हैं। वेद, उपनिषद, दर्शन, स्मृति, पुराण आदि आर्ष ग्रन्थों के सरल व सुबोध हिन्दी में भाष्य छापे गये हैं देश विदेश के विद्वानों ने इनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

शिक्षा को लोकोपयोगी और व्यक्तित्व के विकास में सहायक बनाने के लिए युग-निर्माण विद्यालय चल रहा है। जिसमें साधना, उपासना, पौरोहित्य, जिन्दगी जीने की कला—आत्म-निर्माण, भाषण, लेखन और जन-नेतृत्व के शिक्षण के साथ ही विविध उद्योगों का प्रशिक्षण भी दिया जाता है जिससे छात्र घर जाकर आर्थिक—औद्योगिक उन्नति भी कर सकें। प्रेस व्यवसाय, विद्युत, रेडियो बनाना, ठीक करना, रासायनिक वस्तुयें बनाना, मोजे बुनना, खिलौने बनाना, रबर स्टैम्प, मोमबत्ती, साबुन बनाना, फाउन्टेन पैन, चश्मे के लेन्स बनाना लाँण्ड्री आदि के काम सिखाये जाते हैं। शिक्षण निःशुल्क दिया जाता है केवल आवास व्यवस्था का खर्च लिया जाता है। इसी के अन्तर्गत धर्म प्रचारकों को शिक्षण, संगीत, अभिनय और कला शिक्षण भी किया जाता है।

इन सब प्रवृत्तियों के—युग-निर्माण योजना के सम्पर्क में आया हुआ हर व्यक्ति नई जागृति अनुभव करता है सम्भव है यह जानकारियाँ आपके जीवन में भी एक नया प्रकाश ला सकें और आपको भी इस महान् ईश्वरीय प्रयोजन की पूर्ति का भागीदार बना सकें।

पता—युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि मथुरा।
वृन्दावन रोड, मथुरा (उ० प्र०)

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

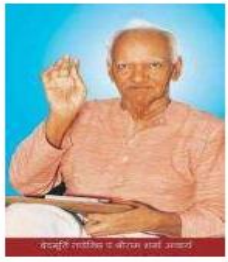

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org